पूना गायन समाज.

(संगीतसार

जयपूराधीश महार... ...कृत.

बलवंत ...

सेक्रेट...

...

पुस्तकका सर्वथ... ...नें

अ...

पूना ...

१९१०.

संपूर्ण ग्रन्थका मूल्य रु. १०॥.
और प्रत्येक भागका मूल्य रु. २.

नंदकिशोरस्तवन।

दोहा ॥ नमो नमो आनंदघन सुंदर जुगलकिसोर ॥ वृंदा विपुलै विसालजुत-सवरसि कनि सिरमोर ॥ १९ ॥ मुकटमनोहर सीसपर उर वैजंतीमाल। श्रीप्रतापकें हिय वसौ यहै ध्यानगोपाल ॥ २० ॥ विधिवछ लषि अचरज भये वरसल जे सुरइंद। जुगलरूप नवरस भये जय राधेगोविंद ॥ २१ ॥ कों न तें न कमलापती केसो राय कल्यान कूरमपतिकी कीर्तिकों करहु कृपाकुलमान ॥ २२ ॥ ॥ **कवित्त** ॥ हात-मधिजिनके लसत नवनीत अरमेषलानीतं वरमें ॥ अतिसरसीरहै ॥ तिलकललाखघ-दतकेकठुलाउ रकन चिंत अंगक गुलाल सार ह ॥ अलक कपोल वनसांवल वर-नत्पोंही नासा ॥ अग्रमोतिमुषमंद हि हसीर हैं ॥ संतसुषदाई मैरैं सुभगसदाई उर-वालकगुविंदजूकी मूरली वसी रहै ॥ २३ ॥ ललितक सूभीं पाषलुकी है विसार भार तुरग कलंगीर ये चरन भारेकी ॥ केसरिकीषोरिकांत कुंडल लसनीके मंद मु-सिकां निकरैनंन नि निजारेकी घेरदार जामा उपरें नाजरिछोरटारवाजयहु वीसु-कंठवनमाल वारेकी ॥ कोटिकामवारें वनें देषतनिहारें ऐसी वसौ छवि हियमांहि गोविंद पियारेकी ॥ २४ ॥ चाराचमकायोषोरिके सरिवनायो नकवे सरिसुहायो कांनकुंडल दिपायो है ॥ हारदरसायो नीमाचुस्त अगला योवूटीसूथ नदिषायो सौं धैं अंगसरसायो है ॥ राधेरंगछायो वृजकुल हकहायो वंसीसुर मंद गायो सुरनउ-लसायो है ॥ कुंजनीरसायो राममंडल रचायो रसलरव रसायो सो गुविंदमनभायो है ॥२५॥ सरद निसामें सुवचादिनीअमंदसुचित सुनासमीप नीप कुंज सुषकारि है ॥ विविध सिंगार अंग अंगन सुंठार तहां करत उदार केलिमें न रसभारि है ॥ न्यारि न्यारि रीति दरसावें हावभाव नमें नेहरसभानें दोऊ प्रीतम पियारी हैं ॥ कोटिका-मवारी छवि जाननविसारी ऐसे जुगलविहारी परतनमनवारी हैं ॥२६॥ ॥ **दोहा** ॥ सातसुरनके देव मुनि कुल छंदजाति सुग्राम ॥ श्री सवाई प्रतापके पुरवो मनके काम ॥ २७ ॥ सेस सुरेस महेस गुरु गिरा गनेस दिनेस ॥ वरदीये यह नृपति-कौं भक्तिऊजे सहमस ॥ २८ ॥

राजवर्णन.

(भानुवंशवर्णन.)

राजवर्णन ॥ **छप्पै** ॥ देवश्रेष्ठ हरि देव गिरनमेंरु वषाना ॥ नदियनमें सुरसारिय धातुमें कंचनजानां ॥ तपजपसें सुरज्ञान ज्ञानदानमें धरती मंहीरकुलमें

ब्रम्हप्रधान ब्रम्हकुल कश्यपमुनि सुर देव दैत्य चरथिरजगतताते उतमभानकुल ॥ राजाधिराज तावंसमें उपजे राघव बल अतुल ॥ २९ ॥ ॥ दोहा ॥ रविकुल वरनन करतही होय सकल मनकोंम ॥ भाषे वेदपुरानमें साषे आठों जोंम ॥ ३० ॥ ॥ छप्पै ॥ कश्यपकुल उद्योत कियो त्रिभुवनपति सूरज ॥ वैवस्वत मनु ताभये बाजे नभ तुरज ॥ तिहिं कुलसगर नरेस ताहिसवनीके जान्यौं भो दिलीप तिहिंवस राज मारगयहि बान्यौं ॥ तिहि वंस अंसर ॥ वंसमभये नृपति भगीरथ धर्मवर ॥ तप आपकीन सुरलोक तें गंगायुहमि आनिधर ॥ ३१ ॥

भानुवंशी राजवर्णन ।

दोहा ॥ रविवंसी राजा नवें कुलभुजाद्यहरीति ॥ वेद धनुध्य भोजन सवदरेहरै न दिनभीत ॥ ३२ ॥ फिर उपजेता वंसमें राजा रघु अवतंस ॥ सात दकार कीये प्रगट सुरनर करत प्रसंस ॥ ३३ ॥ दीक्षादान दया सुदम देव दिवाकर नाथ ॥ दरसन मुनिगन धेनुद्विज रहें निरंतर साथ ॥ ३४ ॥ तापे नृपवर अज भये तासुत दसरथ भूप ॥ तिनकें घर अवतार लिय च्यारी सरूप अनूप ॥ ३५ ॥ रामचंद्र लछमन प्रभु भरतसत्रुघन भ्रात ॥ इनके दरसन ध्यान तें मिटे सकल उतपात ॥ ३६ ॥ रामायनमें रामके वरनें चरित अनूप ॥ रामनाम पावन करत जिनकीये आपसरूप ॥ ३७ ॥ विश्वामित्र मुनिंद्रकों जगि पूरनप्रभुकीन ॥ तारी गौतमनारिकों सिवधनुतोरि प्रवीन ॥ ३८ ॥ जनकसुताब्याही प्रभु रामचंद्र अवतार ॥ तिनके उपजे दोइ सुत कुसलव राजकुवार ॥ ३९ ॥ कुसकुमारतें भो प्रगट कूरमकुलविसतार ॥ उपजे जाके कुलनृपति कछ वाहे सिरदार ॥ ४० ॥ अवधि दिलीपत यागपर रोहितास आमेर ॥ गोपाचलनरवर पुरी राज थानआ मेर ॥ ४१ ॥ जैसें सूरजकी किरन पूरें सकलहि थानं ॥ तैसें कूरमनृपतिकी सब जग फिरै सुआंन ॥ ४२ ॥ कूरमकुल राजा भये किये सुरनउपगार ॥ कोलगि कविवरनन करें होय ग्रंथ विस्तार ॥ ४३ ॥ ॥ सोरटा ॥ पुरी आमेर अजित मत्सवदेव नके वीचमें कलिसों क्षौभय भीति तहा धरम निजकाल किय ॥ ४४ ॥ दोहा ॥ जहां दांन तप जग्य जप वरन २ निजधर्म ॥ जथा जोम सवहीकरत तजत धर्म ॥ ४५ ॥ रविवंसी राजै तहां कूरम कुलके चंद ॥ पृथिराज पृथुरूप

छाप गोविंद ॥ ४६ ॥ ताकें सुरवरवीर भो भारा मल्ल हरिसेव ॥ ढुंढाहर नि-सवसिकीयौ तासुत भगवत देव ॥ ४७ ॥ ले कृपान निज हातमें जीति लई गुज-रात ॥ तासुत राजा भान भो देस बिदेश निष्यात ॥ ४८ ॥ अटक कटक रिपु काटिकें सालकोट किये हद्द ॥ कालि लगट आसामलों जीतीमानमरद्द ॥ ४९ ॥ सागर खड्ग पषारिकें रही न अरिपै रीस ॥ मूठ काठकी जवन कर दीनी मान महीस ॥ ५० ॥ कासी पुस्कर आदियें कीने मंदिरमान ॥ महादान दीने सुजन सब जगमें किय आंन ॥ ५१ ॥ तासु तनय जगतेस नृप हने जवनदल वृंद ॥ जगत शिरोमणि प्रभु थपे गाये जस कवि छंद ॥ ५२ ॥ महा सिंव्हताकें भये जीते वहु संग्राम ॥ ताकें जयसिंह नृप भये किये साहके काम ॥ ५३ ॥ जयमंदिर सुंदर महल जयति वास किय वाग ॥ दछिन पति लेकें सिवा मिले साह अनु-राग ॥ ५४ ॥ रामसिंहताके प्रगट सब विद्यापरवीन ॥ सिवा भूप जहँ सरनलषि अद्भुत जस जग लीन ॥ ५५ ॥ किसनसिंह जँहँ अवतरे तेग त्याग जग कीन ॥ तासुत नृपविसने सभो जद्दथ दृघट कीन ॥ ५६ ॥ गनपति हरिहर कीया पूजि दिय द्विज दाँन ॥ ताकेउग्र प्रभावते भो जयसिंह नृप आँन ॥ ५७ ॥ पुहमीके राजा नमें भये सवाई आप ॥ ब्रम्हपुरी रचि द्विजनकौं दीनें दान अमाय ॥ ५८ ॥ जग्य दान सवविधि किये जीतिलये सब देस ॥ जयपुर सब नगरीकौ दूलहव्यो नरेस ॥ ५९ ॥ थायनुथप दिल्लीस की कूरम करत अपार ॥ च्यारेंबेद अठारहौं सुने पुरान विचार ॥ ६० ॥

जैपूरवर्णन ।

अथ जैपुर वर्णन ॥ दोहा ॥ पोरि अगकी कोट छवि सबनगरनी सिरताज ॥ रागर नरनारी सुषदरराजे सकल समाज ॥ ६१ ॥ **॥ नीसान ॥** सच्चा नगर सराईया सब नगरिन ऊपर ॥ जयपुर मार्नोह दुसराया जगमें भूपर ॥ जामें भौन अनूपेंह अमरावति लाजें चार वरन चहु आश्रमा रिद्धि-सिद्धिसो राजें ॥ अपने ॥ २ ॥ इष्टके मंदिर छविछाजे ॥ चोपरके वाजा-रमें कुंडेंवेंवा राजे ॥ गह महली अपारहें नो निधिसिद्धि गाजें ॥ अगरनि चं-दनको धुवा घर २ में ताजै ॥ वापी कूप तडागत्यों आराम अपार जहा स्मान गुन गांनके नरनारि उदारा ॥ दीनकों देते फिरे धनधान सुताजे राजें महल कु-

बेरसे सुवनसे साजे ॥ सोहें महल कईलासज्यों ओपमे सुभकाजें ॥ चक्रवर्ती महा-राजकें बहु वाजनि वाजें ॥ षरे राजके चोकमें चतुरंग समाजें ॥ राज राजके हु-कमकी जय ॥ २ ॥ निधि गाजें ॥ ६२ ॥ इति जयपुर वर्णन ॥

राजसंवर्तन ।

अथ राजसंवर्तन ॥ दोहा ॥ तिनके रतन समानह्वै ॥ ईश्वर मधुर कर साह ॥ महाराज ईश्वर कीयो राजसुजस करि चाह ॥ ६३ ॥ गये ईस जगदीसपै बैठे मधुकर राज ॥ तिनको वर दाता भये सकल देव सुषसाज ॥ ६४ ॥ जाचकके समये सदा माधव माधव इंद ॥ नाक्षर रसनानपटिके हत सकल कँविवृंद ॥ ६५ ॥ जाचे-राजा जानिकें आपस्वारथी दीन ॥ नटत भूप पग लगत जव धरा कंप वहु लीन ॥ ६६ ॥ तिनकें देव समानहूभंह्वै महाराज कुवार ॥ पृथ्वीसिंह महाराज पुनी श्रीप्रताप अवतार ॥ ६७ ॥ करी पुहमीको राज पृथु वसे सुरगके वास राजपाट बैठे अटलैं श्रीप्रतापसै विलास ॥ ६८ ॥ सिवर विदस रथ पुत्र ज्यों माधव त-नय वषाँन ॥ तासों चहु दिस नृपति जुत आयमिले सुलतान ॥ ६९ ॥ सकल वेद विद्यानिपुन राजनीत पृथुरूप ॥ विरुद वदन श्रीरामसे सव जग कहत अनूप ॥ ७० ॥ कहत मरहटी हट चढी निजपियसों नितवेंन ॥ भेटो भूप प्रताप जव होय परसपर चेंन ॥ ७१ ॥ भूमिभार छिमसे षसे साई रसो गंभीर ॥ धरमयुधिष्ठिर ज्यों क-रत अरजनज्यों रनधीर ॥ ७२ ॥ देषोया कलिकालमें अचिरजि होइ अनूप ॥ मेटेंमन संदेहकों ध्यान दरस दिय भूप ॥ ७३ ॥ छंद ॥ कंपत सायर आपत पनके ताप चढत अति सीत सुधाकर होत अनल मुषमलिन रहत मति ॥ कमलाहरि उरधरि यदांमबुद्धि छूटा देवा ॥ स्याम वरन रविपुत्र पवनलषिचंच लभेवा ॥ राजा-धिराज परतापनितदान करहिं वरसत रहेत ॥ हयगय अपार धन वसन्मने जनक विधन अगनित लहत ॥ ७४ ॥ दोहा ॥ पूजि पंचाईनदेवता वर मागोंनित एह ॥ मोपै भूप प्रतापकि कृपादीठ कर देह ॥ ७५ ॥ साजें भूप प्रताप जवव्है चेतन जड छंद ॥ सकल दोई इकठोर मिलि परसत पर अरविंद ॥ ७६ ॥ नृपति सवनिसिर मुकटमनि श्रीप्रताप महाराज ॥ जाकें दानसों लगी हिंदु वानकी लाज ॥ ७७ ॥ कवित्त ॥ सुरन हीमो सर गोविंद भूकी आरतीकौं दरवरदोनि जय दरसन पागें हैं ॥ हाजर हजारन नरेस सगहोंद लहिकें सुदृष्टि तेवे सु

अनुरागेंहे ॥ वेरदार वार २ वागैं कोंइ कैठौलषि कविनकें आइयों विचार जिय जागे हैं ॥ जैसें ओर भूप दौरि लागत हें पायत्यों दौरी करिदौरहुयताके पाय लागें है ॥ ७८ ॥ उमग चलत श्रीप्रताप भूप तव दौरइक ठौरन्हे पगनपरसत हें ॥ यह लषिकवि आप आपनी सुमति वलउ मगति जुगति कहिवेकों हुलसत हें ॥ आइ इन लागी हिंदवानेंकी सरमसोई सुकर निमिस परगठ दरसत हें ॥ कैधों जडरूप येतो चारु पग कंजनमें नेहर सवसुहने अरसतेंहं ॥ ७९ ॥ सुनि सपनेमे आई वलिकी अबाई तन छाई विकलाई सुधिबुद्धि विसरति हें ॥ वूडे तें कहें नवें नमूक जोवर तावेंसें नेंनन ॥ अछे हमेह असुवाट रति हैं ॥ हियधरकात जिय भूलि २ जात पुनी वातकी दवीसी ॥ धुकी मरन गिरत है ॥ तुव अरिनारि अकुल ॥ इवार २ इसि कुरम प्रताप तुव नामसों डरति हें ॥८०॥ संपति सुरिंद असुरिंद जछरछनकी नाग नाहर्कीन्हं नाना भांति करिदेषियेंनुज्जलनुजासवारे सुमग सुवा सवारें नूतन अवासवारेनितअवरे षिय ॥ रुचिर चदोवा त्यौंविछा इति दिवालगीरीसाईवानपरदादमकीपुंजयेषियै ॥ अमल षवास दासिदासम विलास जुतसी प्रताप भौंन अनकान्हतें विसेषियै ॥ ८१ ॥ धरम धुज धीर कवि पंडित विवेकी विर नीति लोकरीति प्रीतिज सके सथाय जू दां न दया मांन उपगारसतसीलग्यान विक्रमनुदारतावडाईमें अमापजूवसन सुगंध सुचिरुपमति आभूषनवेंनचतुराई भरेहरेंहियतापजूतेंइनरयावेंजहमोंसरहनेसऐमी सभामें सुरे सप्रमसोहें श्रीप्रतापजू ॥ ८२ ॥ ताराइंदु विंवके ओर गंगा हिमगिरिके ऊदिगाज निमिसदास दिसहि महानि है ॥ मुकतानुदधिहंस गनभानहंसपुनि पुंडरीक रूपनीरनीरनुलहानी है ॥ चितसतो गुण मद दया निज धर्म कर्मन सुरमालहरव्हेकै निवहाना हैं ॥ नृपति प्रताप तुव जससरिताकी ऐसें लोक ॥ २ ॥ देस ॥ २ ॥ कहत कहानी है ॥ ८३ ॥ अटक विट कटक कटीले भटना महीं सोंन्ह कैं सटपट रटें चलचल ॥ मरदहेलावेरुहेलाओचदेलावीरवांकेन्हउदेला उठेहाकनसोंहलहल ॥ लछन विचछलछोपछन सहितदछदछनकोई सकेईवारडास्वो मलमल ॥ उमर राज रहो राजा ॥ श्रीप्रताप जाके कता जिभियता कलक ताकीयोषलभल ॥ ८४ ॥ संगतिको गुन फीरचरन्हलहत यह जगत विदित भाषे लोक वेद टेर हैं ॥ चंदन समीप तरु चंदनही होत त्योंहां विष मिलिपय होत विषति हिवेंर हैं ॥ अचिरजि मोहि एक कुरम प्रताप भू तुव करसरल दयालता देरे रहैं ॥

तामेंवसि कैसेंईनकठिनकरालतेगविनहिदेरगकीनो ॥ अरिगनजेर है ॥ ८५ ॥ अंग हरषतनितगिरिजालसतहांकें रेनर देवसे वभेयनलहतहें ॥ भासत विभूति राजराज हितकारी गनमोहत अनेक नाग वंदनी वहत हैं ॥ लोचन विसाल नुम्रसकति सुमंत्र लीन दीन वंधुताहि हरजोईसो कहत है ॥ नीलकंठरतिथनपालकप्रताप भूपमेरेजां-निसंभुसमताई सीचेहेतहें ॥ ८६ ॥ मांनकूलभांनभयोतूही भूवमंडल मेंवर्मधुरंधारी-द्वजो देष्यो नहि आंनमें ॥ दछिनकी भोज सव छिनमें हि डारीकाटि हारे देस मुगल पठान जे जमांनमें ॥ फिरंगे फिरंगी तेऊ जंगी महि भंगा किये दिल्लीपति न्हंजू ॥ भयो तेरि आज आनमें ॥ श्रीप्रतापआन नृपकी जैकी तरसम तेरी आज आंन फिरै सकल जिहानमें ॥ ८७ ॥ काविलष धार वीजापुर अर पट्टण सों भाग तेरद छिनमें परिजायपाजे हें ॥ नृप जे अराज जिल्हें मिलते सुराजदीनें वि-मुष हिराजकीनें तुरत अराजे हें ॥ कहांलो कनाऊं जग छानुन हिवोस आज दिल्लीपति हा तपस्वो जाके अन काजे हें ॥ क्यों न होई एतौ श्रीप्रतापकों प्रताप जग जा कें सीसकी कर गुविंद कर राजें हें ॥ ८८ ॥ घटअरको टटाहि डारहो गनीम न के पालिवो सुजन जोग पस्वोजेन पत्री है ॥ वरसें ज्यों इंद्र निसदिन ज्यो कनक लर दीन दुज जाचक निकारिकें सुपत्रि है ॥ रूप अति रूपोपन परो रनसूरोजाकी रसनां रटत नाम गोविंद इकात्रि है ॥ हेरेबहु तेरे जगछत्री वेनछत्री ऐ प्रताप सम छत्रीकोंन छत्री जगछत्री है ॥ ८९ ॥ कहां भयो जौये मह कुलमें जनम पापो पाया सुत बंधु दारा रूप धन लाह हें ॥ कहा भयो जो येकरे मोती सिरेपच लहेंह ॥ हयगयपालकी सुरथ सरसाह हें ॥ कहां भयो सुद्ध मन याइकें सुबुद्धिकीने जप तप दान व्रत तीरथनु छाह हें ॥ एते भये होत कहा है सुत नपारो जोपै रीझे नही जायें श्रीप्रताप नरनाह हें ॥ ९० ॥ जग जस फैलीजाकी कीर्तीचारुचांदि निसी राजप्रताप सभान ग्रीष्म समाजकें ॥ राधे कृष्ण नाम जाकी रसना रटन नीत वटत वधाई धर्म होत सुषदाजकें ॥ कहां लोग नावों राज लछमी सुजाकी देषी पाई येन समताई धन सुसाजके ॥ मघवाज्यों राजताकें सुत-सिरताज आज सव सुषसाजश्री प्रताप महाराजकें ॥ ९१ ॥ सुंदर सरसवें नव-रसें सुधाकें ऊरकरें व ऊदानमांन राषत राजकें ॥ इष्ट परान पूरेभलसूरे स्वामिकारिजमें परउपगारी पर दार धन त्यागके रहत सुगंध सने कहने

सुवागे वने ॥ भने बहु ग्रंथ पंथ चले सत्य पाजके ॥ सिंगारबुद्धिबलके उदार ऐसे सेवक हें आज श्रीप्रताप महाराजकें ॥ ९२ ॥ अरिपुरजारि वेमें अनल-सबल महाविधि विलसाईवेमें संततिके येस हें ॥ बानि महारानि तुववानीमें वसी-हें सदा संपत्ति धनपरिपूरन उमेस हें ॥ रछामें रमेस बुद्धि देवोमें गनेस तुव प्रब-ल प्रताप साधिवेवें दिनेसहें ॥ श्रीप्रतापजूंके ऐसें मुषसरसावनकों सप्रसुर देव रहें हाजर हमेंसहें ॥ ९३ ॥ अर्जुनसे वीर रनधीर जहा रामसम विदुरसे मंत्री-ज्ञान शिवसे विराजहें ॥ करत प्रवेस तहा पाप होत दूरी महाहरत प्रतापलहें ॥ सुषके समानहें कवि अरुपंडितओ राग करि मंडितहें होत दिनरेंन तहां धर्मन काजहें ॥ रचिह सुधर्म जिमि भूपसतामें राजे धर्मसुत राजजों प्रताप महाराजहें ॥ ९४ ॥ **छंद** ॥ अंगनिब्रह्मसरस्वती सर्व हरि गणपति दिनपति ॥ प्रातसुमुख श्री ईस ग्यान नव बेद जग्पथिति राघव पुष्कर जीव युनि पंडव भारत रवि ॥ सुचिलिषनियसहाय रुचिर सिषुगिरि अवधि छवि सुबाहा त्रिपदगिरा जया रिधि-सिधि संज्ञा दुषहरो ॥ आनंदरूप मंगल वरनषडजादिक नृपवर न करो ॥ ९५ ॥ ॥ **काव्यछंद** ॥ षङ षडग वर रिषभ वेद गांधार अवाजें मध्यम हा सवठोर ॥ राजश्री पंचमराजें ॥ धैवतभेंटे विघन तेंज नीषाद समाजें ॥ मंगलरूप अनुप सात स्वर वरदेय राजें ॥ ९६ ॥ **दोहा** ॥ मंदिर सुंदरधर अनंत वृंदा विपिन निवास ॥ हवा महल नृप नव रच्यो तहविय जुगलविलास ॥ ९७ ॥ ॥ **छंद** ॥ एक घोस महाराज राजे सुरमंडन ॥ श्रीप्रताप रघुवंस सकल रिपुगनके खंडन ॥ आज्ञाकिय श्रति कंठन भेद ते ब्रह्महि यावे ॥ राधा कृष्ण विहार नित्य वृंदामन भावें ॥ ति-नंके रहस्य संगीत बिन या जगमें केसें लहत ॥ राधा गोविंद संगीततें ॥ स्वयं ब्रह्म लहि मुनि कहत ॥ ९८ ॥ ॥ **दोहा** ॥ व्यास वचन भागोतमें स्वयं कृष्ण भगवान् ओर कला अवतार हें मुनि नृपभक्ति प्रधान ॥ ९९ ॥ ॥ **श्लोक** ॥ एते चांश कलापुंसः । कृष्णस्तु भगवान्स्वयं ॥ १०० ॥ ॥ **दोहा** ॥ प्रीति सर्व आनंदसरस शशीनिवास सुखरास ॥ इंद धरम रघु कृष्णसम सजें तहां नृपराज ॥ १०१ ॥ चंद महल प्रिय भोंनमें साजें सभा समाज ॥ भरत भगीरथ भान समराजत नृपराज ॥ १०२ ॥ मंत्रीगनउमरावसबपास खवास अपार ॥ परम स्वामी धरमी प्रगट करत जगत उपगार ॥ १०३ ॥ हयरथ परमारथ करें

राज सभाकें लोग ॥ धरम करम परतावतें निसदिन किय सुभभोग ॥ १०४ ॥ गजपति रथपति अस्वपति हें पालकी नसीन ॥ एवत रावल राव धन राजराय पद-लीन ॥ १०५ ॥ फौजे भूप प्रतापकी मोंजे पावें नित ॥ भेदत गजरथ तुरी विजय करत रिपु जित ॥ १०६ ॥ राज मंडली मेलसें सुरपति समरन नाह ॥ खासादे बिखवास गन बोले करी उछाह ॥ १०७ ॥ ॥ **चौपई** ॥ सुनो तिवारी नंद किसोर लेनु लाइ पंडित इकठोर ॥ ग्रंथ सकल संगीत विचार कीजे भाषा प्रकट उदार ॥ १०८ ॥ राधा गुविंद संगीतसार ग्रंथनाम राखतऊ विचार ॥ भेद सम-लियेह सुनें सुनावें ॥ जे जन च्यार पदारथ पावे ॥ १०९ ॥ ॥ **दोहा** ॥ गुन आगर नागर नवल सागर हृदय अतोल ॥ वे राधागोविंदको पढे संगीत क-लोल ॥ ११० ॥ श्रीराधा माधव प्रगट कीनें रास विलास ॥ त्रिभुवन लिनुमोहि प्रभु नवरस जस परकास ॥ १११ ॥ हुकम सीस धरि जोरकर बोले नंद की-सोर ॥ पंडित कवि दरबारमें अगनित हें या ठोर ॥ ११२ ॥ मथुरा स्थित तैलंगभट सिरी किसनसुखदाई ॥ त्यों भट चुनीलाल हें कवि कुलसंपरदाय ॥ ११३ ॥ गौड मिश्र इंदोरिया रामराय कवि जान ॥ इनजुतकी जे ग्रंथकों व्रजभाषा परमांन ॥ ११४ ॥ अज्ञा कीये तव नावत बलेवनाइयहग्रंथ ॥ मन प्राचिन पुनितलखिगीतउदधिकों मंथि ॥ ११५ ॥ द्विज बोले करि जोरिकें भयो भाग धनि आज ॥ जनम सफलपायेसु अव आज्ञाकीये महाराज ॥ ११६ ॥ आज्ञा सुनि कवि सिरधरी फूलमाल ज्योंसीस ॥ लगें करन संगीत द्विजच्यारो ज-पनिजईस ॥ ११७ ॥ सामवेद गायोजु विधि शिवके कये संगीत ॥ भरत मतंग मुनिंद गनकियह ऊमतमतमुपुनीत ॥ ११८ ॥ पारिजात संगीत मत रतनाकर संगीत ॥ दरपन राग विवोधवर चंद्रोदय परतत ॥ ११९ ॥ त्यों अनुप अंकुस सुपथ लवे अनूप विलास ॥ रागमाल रतनावली तिरनें नृत्य मिमांस ॥ १२० ॥ कोलों ग्रंथ सुनामकों बरनन करो प्रकास ॥ सवको मत लेकें कियो जुगल स-रूप विलास ॥१२१॥ ॥ **अथ ग्रंथ प्रसंसा कबित्त** ॥ चुनि २ सवैग्रंथगुनि ॥२॥ हिये मांझ पंडित कविन सवही कौमतलीनोहें ॥ स्वर अर राग ताल धरिकें प्रबंध तहां वाद्य परकीर्ण ॥ नृत्यरसपरवीनोहें ॥ जगमे गहन हो सो प्रगट दिखायो जिन ऐसो बुद्धिबलकौनुकरिहैनकीनोंहै ॥ राधिका गुविंद भक्ति पाई ॥ श्रीप्रताप

आप राधिका गुविंदकी संगीतसारकीनीहै ॥ १२२ ॥ ॥ दोहा ॥ रंजन मन सब लछिन जुत वेद पुरान प्रमान ॥ पढत सुणत आनंदमय च्यार पदारथ खांन ॥ १२३ ॥ ग्रंथ जवाहर जगमगत ज्यौं हरि परख प्रवीन ॥ रतन अमोलक मोल तिहिं जानें हरि रस लीन ॥ १२४ ॥ परस्वर जामे ताल हैं ग्राम तीन नरीत ॥ देव लोक रागावली रूप विराट संगीत ॥ १२५ ॥ जो लौंभुवि गंगा समुद्र रवि तारा घन चंद ॥ तोलों सार संगीत यह बहुविध करो अनंद ॥ १२६ ॥ सज्जनकें आनंद हित कूरम नृपति प्रताप ॥ रच्यो ग्रंथ संगीत यह हर्‍यो सकल संताप ॥ १२७ ॥ नाग लोक तह नृत्यहै सुरवाजित्र विचार ॥ गान सुरग त्रयि लोकमें राजत त्रिक निरधार ॥ १२८ ॥ उदै भयो जग भांन ज्यों सार संगीत नि-वास ॥ लषि गुन मन सैचित कमल ज्यों अगनित धरौ प्रकास ॥ १२९ ॥ सिव-शिर तें प्रकट करि भरत भगीरथ रूप ॥ गीतमई गंगा विमल जग मल धूत अनूप॥ १३० ॥ धनि विधि सिववानि उमा धनि धनि भरत मुनिंद ॥ धनि मतंग रिषिवृंद धनि धनि हनुमान कपिंद ॥ १३१ ॥ विधि हरिहर अंबा रवि सुनि संगीत विचारि ॥ नारद परमानंद ह्वै गावै वीणाधारी ॥ १३२ ॥ वचन अनंद सुछंद किय सरसुति रचे अपार ॥ वीणाधार तरेंन दिन किय संगीत विचार ॥ १३३ ॥ हरत दुष्टके प्रानकों दुर्ग प्रगट प्रवीन ॥ रहे मत संगीत पुनि मुनि कास्यप रस लीन ॥ १३४ ॥ रिषि मतंग हनुमान कपि कर्ता ग्रंथ प्रवीन ॥ सार दुलोको हर मुनी रचे गीत गुन लीन ॥ १३५ ॥ कंवलास्वतरवाय मुनि हाहा हूहूरंभ ॥ राघव वानसतानुषा अरजुन आदि अभंग ॥ १३६ ॥ रामायण गाई सकल राम कुवार सुजाँन ॥ मारग देव अहोवलसुकल्लिनाथ गुन षाँन॥१३७॥ सोमनाथ रतनाकरसु दामोदर कविरास ॥ भाव भट्टबहुकद्दकरि यो सँगीत विलास ॥ १३८ ॥ ॥ दोहा ॥ इनकों सीसनवाइकें पूजि महेस गनेस ॥ करों सार संगीतको भाषा रचिकें वेस ॥ १३९ ॥ **इतिश्री राजवंसवरननग्रंथप्रसंसा संपूर्ण ॥ इतिश्री मत्सूरज कुलमंडनअरिगनखंडनमहीमंडलाषंडल सकल विद्या विसारद धरमावतार श्रीमन्महेंद्रमहाराजाधिराजमहाराज राजेंद्र श्री ७ सवाई प्रतापसिंह देव विरचिते श्रीराधागोविंदसंगीतसारे स्वराध्यायमंगलाचरन राजवर्नन ॥ ग्रंथप्रसंसानामप्रथमोविलास समाप्तमगमत् ॥ १ ॥**

श्रीगणाधिपतये नमः ॥ श्रीराधागोविंदो जयति ॥ अथ संगीतको लछन लिखते ॥ प्रथम गीत दुसरो वाजो तिसरो नृत्य ये तीनो मिलिकें जव होय तव संगीत कहावें ॥ तहां कितनेंक आचारीज यह कहें हेकि गीत ॥ अरुवाद्य ये दोनोही मिलिकें संगीत कहें हें ॥ ओर तीसरो ज्यो नृत्य सो तो गीत वाद्यको समीपी हैं यातें याको संगीतमें अंग कहें हे ॥ ओर संगीत ततो गीत अर वाद्य येहि दोनों हें ॥ ओर गीत नृत्य वाद्य ये तिन्यों मिलिकें तूर्यत्र कहोत हें ॥ **इति संगीतको लछन समाप्तम् ॥**

अथ तूर्यात्रकको लछन लिख्यते ॥ ज्यो कंठसों वाजेमें मिलिकें गावें ॥ ओर पावन सौं घुंघुराकी गति मिलाईके वाजेमे नाचे तव इन तीनोंनको तूर्य कहें हे ॥ ओर ताल ज्यो हे सोतो गीत नृत्य वाद्यकौ मूल है ॥ यातै ताल सहित गीत वाद्य नृत्य संगीत जानियै ॥ ओर तालकों जानिकें संगीत करे तो मुक्ति पावे ॥ या तैंताल मुख्य है ॥ अर या संगीतमें गीत मुख्य जानिये ॥ काहे तेंकि सिगरे देवता ॥ अर दैत्य गंधर्वये सिद्धिके लियें सिवजीकों सेवेहें ॥ ऐसे सवनके पूज्य शिवजी रात दीन गीत गावत ब्रह्मानंदमें मग्न रहें हे या तें गीत मुख्य है ॥ **इतिश्री तूर्यात्रकको लछन समाप्तम् ॥**

अथ गीतप्रसंसा लिखते ॥ या गीतकी महिमा शिवजीनें पार्वतीजी सों कही है ॥ हे भवानी तू सुनि जितनें दान संसारमें है ॥ तिनके दिये तें पुण्य है ताकीसंख्याको प्रमानमें जानों हों ॥ ओर भक्ति करिके ज्यो मनुष्य मेरे आगे वा विष्णुके आगे जो गीत गावै ॥ ताके पुण्यकी संख्यामें नही जानों हो ॥ या तें ज्यो कोई नर वा नारी लोभ करिकें ॥ वा आपनी जीवका करिकें ॥ अथवा मनके आनंदके ॥ अर्थ ॥ अथवा कपट करिकें ॥ शुद्ध वा अशुद्ध गीत गावे है ॥ सो नर वा नारी ॥ दिव्य हजार वरसताई मेरे शिवलोकमें ॥ सगरे गनको सिरदार होइ कें ॥ दिव्य हजार वरसताई मेरे पास रहै है ॥ यातै ज्यो गीत शिवजीकों परमप्यारे है ॥ ओर जाके गुग ब्रह्मासों कहेन जाय है वागीतके गुण साधारणमें मनुष्यतो कहांसों कहि सकै ॥ ओर ज्यो कोई मनुष्य गुरके पास गीतकौ तत्व जानिकें रिति सुपवित्र होईकें मुद्रावानी तालसुद्ध जुत ॥ गीत गावै श्रीनारायणकें रिझाइवेंसो

पुरख शिवलोक शिवजिके संग बहोतकाल ताई विहार करि ॥ पीछे शिवरूप होई ओर सब देवनमें शिरोमणि होय है ॥ श्रीकृष्णचंद्रजीकी बासुरीकी धूनिसों मग्न होई गोपीकों वा व्रजवासीनकों आनंद देत भये ॥ ओर गीतसों अत्यंत प्रसन्न भये ॥ ओर ऊस देवदानव यक्ष राक्षस मनुष्य आदि सबकों गीत सुख देते है ॥ अरुबालक अज्ञानऊ रोवेतो गीत सुनिकें ॥ आनंद पावे ॥ और वनवासी मृगया गीतकों सुनीकें ॥ अहेडीके बस होइ प्राण देहें माने ज्यो कोई मनुष्यजन्म पाय ॥ भले कुलकौ कहाय ॥ सरव संपति पाय ॥ संगीत शास्त्रवा रस शृंगार ॥ आदिशास्त्रकों न जानें है ॥ सोवह मनुष्यों विनासींग विनाँ पूछिकौ पसो सरूप है ॥ यातें ब्रह्माजी नित्य सामबेद गावे है ॥ ओर सरस्वतीजी वीणा वजावे है ॥ श्रीगोविंद प्रभुमहाराज मुरली बजावे है ॥ और शिवजी महाराज तो रागकी मूरतिही है ॥ या संगीतकों महातम श्रीवेदव्यासजीनें ॥ श्रीमद्भागवत पुरानमें वरनन कियो हेंसो कहुहु ॥ **श्लोक** ॥ शृण्वन् सुभद्राणि रथांगपाणेर्जन्मानि कर्माणि च यानि लोके॥ गीतानि नामानि तदर्थकानि गायन् विलज्जो विचरेदसंगम् ॥ १ ॥ याकी वचनीकी ज्यो कोइ प्राणि रथांगपाणि ज्यो श्रीभगवान् तिलके मंगलरूपजे ॥ अवतार जिनके जनम करम चरित्रनमें मतिनकों या मनुष्यलोकमें ॥ श्रीभगवानकी प्रीतिके अरथ गीत ॥ १ ॥ प्रबंध ॥ २ ॥ छंद ॥ ३ ॥ पद ॥ ४ ॥ वानी रतके लोभ तजि ॥ आनंदमें मगन होई गावे ॥ सोई पुरखको इण भूजनममें धन्य कहे है ॥ पदमपुराणममें कह्ये है ॥ श्रीविष्णुभगवानकौ वचन नारदजीसों ॥**श्लोक**॥ नाहं वसामि वैकुंठे योगिनां हृदयेन च । मद्भक्त्या यत्र गायंति तत्र तिष्ठामि नारद ॥ १ ॥ ऐसी लोककी वचनोक्ती ॥ श्रीमद्भागवताजीमें कहत हें ॥ यथा भगवान् कहत हैं हे नारदजी में ते सति बहु प्रसन्न होइ करिकें ॥ मेरो ज्यो वैकुंठनिजधामतामें समय पावतहों ओर बहोत जतन करिकें सिद्ध भये जें जोगी ॥ तिनके हृदयनमें ॥ समय पावतहों अरु ज्यो आठ पहरमेरे भक्त संगीतामृत सुगुणानु वादमेजो गावे है ॥ तहांमे आठ पहर निरंतर तिनमें रहत हों ॥ यातें नारदजी तुमहु मेरें गुणानुवादकौ गान करौ ॥ ओ धर्मशास्त्रहुमें गीतकों प्रकार याग्यवल्कमुनिश्वरनें कह्यो ॥**श्लोक**॥ हंहो विप्रा गुह्यमेतत् शृणुध्वं तत्त्वं दृष्टं वोस्ति यद्यत्र वांछा ॥ नानारूपैर्भाविता भावलेशैरंगोत्तीर्णा नर्तकी कामयध्वं ॥ ३ ॥ याकी

वचनीका है ॥ हे ब्राह्मणा इह गुप्त वात हम तुमकु कहें हैं ॥ सो तुम सब ब्राह्मण सुनौ ॥ जो तुमारि तत्त्व वस्तु जानिवेकी इच्छा है तौ ॥ अनेक प्रकारके भावन करिकें ॥ युक्ति जोना प्रताको देखौ ॥ आर विग्न्यानेश्वरके वचन ॥**श्लोक**॥ वीणावादनतत्त्वज्ञः श्रुतिज्ञातिविशारदः ॥ तालज्ञश्च प्रसादेन मोक्षमार्गं निगच्छति ॥ १ ॥ याकी वचनीका है ॥ जो कोइ वीणा बजायको तत्त्व जानें ॥ वाइसों श्रुति ॥ ओर श्रुतिनकी जातिकों जानें ॥ ताल मारगकों जानेंवि नहि वेद कहै ॥ मोक्ष मारगकों पावें ॥ ऐ देव देवनकौ गायौजो गीत ॥ ताहि मनुष्यजनम पाइकें शास्त्रकी रीतिसों गावै ॥

अथ गीतको स्वरूप वरनन कहते है ॥ गीतनाद सरूप जानियै ॥ सो नाद बाजेसों उत्पन्न होय ॥ वे दोऊ नाद बाजेसों मिलिकें नृत्य होय है ॥ यातै गीत वाद्य नृत्य ये तिनो नादके अधीन है सो वह नाद दोय प्रकारको है ॥ तहां प्रथम आहत ॥ १ ॥ दुसरो अनाहत २ याकों भाषामें ॥ अनहद कहत है ॥ सो वह दोनो तरहको नाद ॥ पुरषसरीरमे होत है ॥ यातें पुरषके सरीरकौ वरनन करत है ॥

अथ पुरुषसरिर वरनन लिख्यते ॥ तहां सबको प्रमान जो ब्रह्म चिदानंद हैं ॥ अर अजित कहै काहुसों जीत्योनहि जाय है ॥ चिदानंद कहें ग्यान सुखरूप है ॥ अरनिरंजन कहें मायासों दूरि है ॥ ईश्वर कहें सवनको स्वामी हैं ॥ सुरलिंगकहै ये नादको कारण है ॥ अर अद्वितीय कहि ये भेद रहित है ॥ अर निर्विकार कहि ये ॥जनम मरन आदिजे छह विकारि तिन करिके रहित हैं ॥ ओर निराकार कहि यै ॥ आकार जाको नहि है ॥ और सर्वेश्वर कहि यै सर्व कर्मनके फलको दाता है ॥ ओर विभु कहि यै ॥ सवमें व्यापक हो रह्यो है ॥ अनि सुर कहि है ज्याको ओर कोइ सम नही है ॥ ओर सर्व सक्ति कही यै ॥ सव सकति करिके जुक्त है ॥ अर सर्वज्ञ कहि यै सव जानै है ॥ वाहि ब्रह्मके अंस सव जीव हैं ॥ अर विद्याजुक्त है ॥ यातें आपको नही जानें हें ॥ जेसे वडी अगनिके टेंरतें छोटा चिनगाइ हें ॥ ऐसे अपने रूपकों नही जानें हें ॥ याहितें वडी देहादिक उपाधिनैं पडें है ॥ ओर बहोत दीननके सुख दुख देनें वारे पुण्यपापरूप जें कर्म

तिनको भोग करै है ॥ ब्राह्मण आदि जातिके हे देहको पायकें वडी वा छो.. आरवलसों पुण्य पापके फल जे सुख दुख तिनकों पावें हें ये तो स्थूल सरिरको भे कह्यो है ॥ अर ओर या स्थूल सरिरको कारन सुक्षम सरीर कहै है ॥ सो गुप्त है देखनेमे नहि आवे है ॥ वहै वासना रूप है ॥ या तै तत्वग्यानसौ सत्यं अंगसों भगवानकी भक्तिसों ॥ ओर सद जीवनके प्रतिपालसों ॥ दान पुण्यके वरनोसों जीवनपें दयासों वासनाको नास होय । तव मुक्ति होय है ॥ सो वह वासना सरीरके अनंत गुण है ॥ प्रभुकी कृपातें उनगुनकों जीत्ये है ॥ अथवा वासनारूप सूछिम सरीरको सरूप वरनन लिख्यते ॥ ज्यो सुक्षम पृथवि आदि पांच तत्व ॥ अर पांच इंद्रिया ॥ अर पांच रूपादिकविसय अर मनबुद्धिइनसंग्रह ॥ १७ ॥ तत्व नसों सुक्षम सरिर भयो है ॥ सो सुक्षम सरिर ॥ सुख दुख भोगवेंकों जीवके अर्थ प्राण सगति चेतना सगति जुत ॥ स्थूल सरीरको उपजावें हें ॥ सो यह स्थूल सरीर जहां ताई जीव मुक्त होयकें ब्रह्ममें लीन होय ॥ तहां ताई स्थूल शरीर रहैं ॥ ऐसे जगतको सृष्टि प्रलय वेरवेर होत है ॥ तहां ब्रह्मतें जीव आत्मा जुदो है ॥ जीवात्मा तें जगत जुदो है ॥ तोहू तेंसै सुवरनको कुंडल सुवरनही है ॥ अर व्यवहारमें न्यारो है ॥ ऐसे ब्रह्मही जगमें है ॥ ओर जगतमें न्यारो हू है तहा ब्रह्म है सो नाद रूप है ॥ सो वोहो ब्रह्म जगतमें व्याप्यो है ॥ यातें जगतहू नादरूप है ॥ तहां नादकें दोय भेद कहे है ॥ तिनमें प्रथम अनाहतनादताको लछन लिख्यते ॥ वहै अनाहतनाद निराकार है ॥ यातें निरंजन कहि ये ॥ उतपति अर नास करिकै रहित है ॥ सव जिवनमें व्याप रह्यो है ॥ ओर निरामय कहि यै एक है ॥ सो अनाहत लोकानु रंजन नहि करिनें सके हें ॥ योगमार्ग मै लियो है ॥ अब दुसरो ज्यो आहतनाद ताकी उतपति कहे है ॥ आहतनाद श्रुति स्वर ॥ आदिके द्वारेतें लोककों ॥ अनुरंजन करै है ओर देवताके ॥ आगै गांन किये तें मुक्ति देत हें ॥ अरु धरम अरथ कामना मोक्षही देत है ॥ ओर संपूरन सुख देवै ॥ यातें आहत मादकी ॥ उत्पति श्रुति स्वरकै नाम भेद कहे है ॥ तहा पुण्यपापके फल भोगवेकों ॥ यह जीव सुक्षम अर स्थूल देह जनम जनममें पावें हें ॥ सो सरिर जीवात्माकें ॥ सुख दुख देवेंकुं भ्रम रूप हें ॥ अर विचार करै तो मूवो है ॥ तहां आदिसों जगतकी जगतकी उतपति लिखे है ॥ पह लैई निरंजन ज्यों ब्रह्म

तमें मायाकौ ग्रहणकीयौ ॥ तव ब्रह्म तें आकास भयो ॥ आकास तें पोंन भयो पोंन तें अगनि भइ ॥ अगनि तें जल भये जल तें पृथिवी भई ॥ अर सबद १ परस । २ । रूप । ३ । रस । ४ । गंध । ५ ।-ये पांच तनमात्रा ॥ आकासादिक पंच तत्व तें भई ॥ ये पंच महाभूत आकासादिक अर सबदादिक पंच तन्मात्रा विराट पुरुषको सरीर ज्यों ब्रह्मांडताको रचत भये ॥ वा ब्रह्मांते ब्रह्मा जी उतपन्न भये ॥ वे ब्रह्माजी भगवानकी आज्ञातें वेद पायकें ॥ चौदें प्रजापतिनकों सृजत भये ॥ वे प्रजापति ब्रह्माजीसों वरपाईकें स्त्रिपुरुष मिलि मैथुना श्रष्टि उतपन्न करत भये ॥ तहां शरीर च्यार प्रकारको हें ॥ तहां प्रथम स्वेदज कही ये पसी-नासो भये ॥ जूवालिक आदिक जानिये ॥ और दूसरे उद्भीज कहि यें बृछ लतादिक जानि ये । २ । अर तिसरे अंडज कहीये पछी अर सर्प आ-दिका जानियें । ३ । चौथे जरायुक कहि ये ॥ मनुष्य आदि देह जानि ये । ४ । तहां लोकानुरंजन आहत नाद मनुष्यसरिरमें प्रगट होय है यातें ॥ मनुष्य सरिरको सरूप वरनन कहत हैं ॥ तहां जीवात्मा आकासमें विचेरें हें ॥ वाही आकासमें सूर्य देव अपनी किरननसों खेंचिकें पृथिवीकों जल मेघमें भरे हैं ॥ वहे मेघवरषा कालमें जीवात्मासहित जल पृथिवीमें वरषे है ॥ वहे जल जीवात्मासहित ॥ अन्नादिक वनस्पतिमें बैठे हैं ॥ वा अन्नादिकनको स्त्रीपुरुष भोजन करे हें ॥ वे स्त्रीरितुसमयें पुरुषसों संभोग करे है ॥ तव पुरषको वीर्य स्त्रीके गर्भ समयमें ॥ स्त्रीकें रजसों मिले हें ॥ ता तें गर्भ रहे हें बाह्यकों गर्भको पहले महिनामें कलल कहे है ॥ अर वेहि गर्भमें दुसरे महिनामें सघन होय हें फेर पिंड होय हैं ॥ अर इकठोरो होइ है ॥ फेर येषा कहियें जरीकी कोथरी होय है ॥ वा कोथलीमें एक वीरजकों वुदवुदासो होई है ॥ स्त्री वा पुरष वा नपुंसक तिनकी पहालि ॥ अवस्था है तदा पुरसको वीरज घनो होय ॥ अर स्त्रीको रज थोरो होय तो पुरषकी उत्पति होय ॥ अर स्त्रीको रज बहुत होय पुरषको विज थोरो होइ तो स्त्रीकी उत्पति होय ॥ अर पुरषको वि-जस्त्रीको रजत वरावर होय तो नपुंसककी उत्पति होय ओर वा गर्भके तीरसे महिनामें दोऊ हात दोऊ पाव माथेको चिन्ह होय है ॥ औरहु सब अंगनके सूक्षम आकार होइ है ओर चोथै महिनामें सारा गर्भकें सब अंगु पुष्ट होय हें ॥

ओर सूर विरता ॥ आदिपुरुषकें गुन अर भयादिक स्त्रीकें गुन ओर नपुंसककें मिले भये गुण होंइ हें ॥ ओर चोथे महिनामें वह बालक भोजनकी इछा करै है ॥ तब वांकीमाको तरह तरहकी घस्तमें खावेंमें मन चले हें ॥ ओर पांचवें महिनामें वा गर्भकें मांसरुधिरबितयें होय हें ॥ ओर छटे महिनामें वा गर्भके ॥ हाड नस नखरोम बल वर्ण ये होय है ॥ ओर सातवें महिनामें वा गर्भके सब अंग संपूर्ण होय है ॥ तब पूर्व जनमके कीये कर्मनको याद करत वा गर्भते निकसिबेंकों भगवानकों ध्यान करै है ॥ ओर आठवा महिनामें त्वचा अर सुमरन ॥ ओज कहिये हि मति ये होत हें ॥ याहां तें आठवें महिनामें उतपन्न भयो बालक ओजसो रहित होत हैं ॥ यातें नही जीवे हें ॥ ओर नवें महिनामें यह गर्भ जनम लेतहें ॥ तब याकें सरीरमें बल ॥ १ ॥ इंद्रिय ॥ २ ॥ प्राण ॥ ३ ॥ सगति ॥ ४ ॥ क्रिया सगति ॥ अंतःकरण ग्यानेंद्रिय कर्मेंद्रिय क्रमतें बुद्धि बी वे है ॥ अथ या देहके चक्र लिख्यते ॥ तहां सरिरके पावनकी पगथलीमें अनंतनामाचक्र हें ॥ ओर वा वैही पगथलीमें छाया नाम चक्र हैं ॥ अर दहिनें पावमें वातचक्र है ॥ तातें ऊपर गुदा अर लिंगकें बिचमें आधारचक्र है ॥ सो वही ॥ या चार दलको है ॥ तिनमें पहले पत्रमें परमानंद है ॥ १ ॥ अर दूसरे पत्रमें सहजानंद है ॥ २ ॥ अर तिसरे पत्रमें विरानंद है ॥ ३ ॥ अर चोथे पत्रमें योगानंद है ॥ ४ ॥ ओर वही आधारचक्रके नीचें ब्रह्मकुंडलनी है ॥ याकूं जो ब्रह्मरंध्रमें चढावै तो अमृतकूं दे[illegible] है ॥ अर लिंगकें [illegible] एक स्वाधिष्टानचक्र है ॥ वाके छह दल है ताहाके पहले दलमे नम्रता है ॥ १ ॥ अर दूसरे पत्रमें क्रूरता है ॥ २ ॥ अर तीसरे पत्रमें गरव नास है ॥ ३ ॥ अर चोथे पत्रमें मूर्च्छा है ॥ ४ ॥ अर पांचवें पत्रमें अवतार है ॥ ५ ॥ अर छटवें पत्रमें अविस्वास हें ॥ ६ ॥ यां चक्रमें का[illegible]को वास है ॥ अर तातें उपर नाभिमें दस पखुडिनको मणिपूरक नाम चक्र हें ॥ तहां ॥ १ ॥ पहले दलमें निद्रा हैं ॥ अर ॥ २ ॥ दूसरे दलमें तृष्णा है ॥ अर ॥ ३ ॥ तिसरे दलमें ईरसा है ॥ अर ॥ ४ ॥ चोथे दलमें चुगली है ॥ अर ॥ ५ ॥ पांचवें दलमें लज्जा है ॥ अर ॥६॥ छटे दलमें भय है अर॥७॥ सातवें दलमें दया है ॥ अर ॥ ८ ॥ आठवे दलमें मोह है ॥ अर ॥ ९ ॥ नवें दलमें कुटिलता है ॥ अर ॥१०॥ दसवे दलमें दारून्यता है ॥ रत्नाकरातपहीन है ॥ अर

यां चक्रमें श्रीसूर्य देवतको वासो हैं ॥ ता तें उपर हृदयमें अनाहत चक्र हैं ॥ याकी ओंकार कीसि तर है ॥ सोहं बारह पखुडीको है ॥ तहा ॥ १ ॥ पहले दलमें ममताको नास है ॥ अर ॥२॥ दूसरे दलमें छल हैं ॥ अर ॥३॥ तिसरे दलमें संदेह है ॥ अर ॥ ४ ॥ चोथे दलमें पछतावो हैं ॥ अर ॥५॥ पांचवें दलमें आसाको प्रकास है ॥ अर ॥ ६ ॥ छटवें दलमें चिंता है ॥ अर ॥ ७ ॥ सातवें दलमें कामनास है ॥ अर ॥ ८ ॥ आठवै दलमें समता है ॥ अर ॥ ९ ॥ नवमें दलमें छल हें पाखंड है ॥ अर ॥ १० ॥ दसवें दलमें विव्हलता है ॥ अर ॥११॥ ग्यारवें दलमें विवेकता है ॥ अर ॥ १२ ॥ बारवें दलमें अहंकार हें ॥ या चक्रमें शिवजीको वासो हें ॥ ताकें उपर कंठमें सोहलें पखुडीको विशुद्धि चक्र है ॥ तहां ॥१॥ प्रथम दलमें उंकार है ॥ अर ॥ २ ॥ दूसरे दलमें सामवेदकों गानउद्गीथ नाम साम है ॥ अर ॥ ३ ॥ तीसरे दलमें हुंफट् नाम चक्र है ॥ अर ॥ ४ ॥ चौथे दलमें वौशद मंत्र है ॥ अर ॥ ५ ॥ पांचवें दलमें ववषट् मंत्र है ॥ अर ॥ ६ ॥ छटे दलमें स्वधा शब्द है ॥ अर ७ सातवें दलमें स्वाहा शब्द है ॥ अर ८ आठवें दलमें नमो मंत्र है ॥ अर ९ नवमें दलमें अमृत मंत्र है ॥ ओर १० दसवें दलमें षड्ज है ॥ ओर ११ ग्यारवै दलमें रिषभ है ॥ अर १२ बारवें दलमें गंधार है ॥ अर १३ तेरवें दलमें मध्यम है ॥ अर १४ चोदवें दलमें पंचम है ॥ अर १५ पन्धरवें दलमें धैवत है ॥ अर १६ सोलवें दलमें निषाद है ॥ अर यह चक्र सरस्वतीको स्थान है ॥ अर कंठके ऊपर घेंटिमें ॥ ब[illegible] पखुडीको लल[illegible] नाम चक्र है ॥ तहां १ प्रथम दलमें मद हें ॥ अर २ दूसरें दलमें मान हें ॥ अर ३ तिसरें दलमें स्नेह है ॥ अर ४ चोथे दलमें शोक है ॥ अर ५ पांचवें दलमें स्वेद है ॥ अर ६ छटवें दलमें लोभ है ॥ अर ७ सातवें दलमें आज कहे है ॥ अर ८ आठवे दलमें संभ्रम कहे है ॥ अर ९ नवमें दलमें लोभ है ॥ अर १० दसवें दलमें श्रद्धा कहाते है ॥ अर ११ ग्यारवा दलमें संतोष है ॥ अर १२ बारवा दलमें अपराध कहे है ॥ यह ललना चक्र ऐसो जानिये ॥ इति ललनाचक्र समाप्तम् ॥

ता ललना चक्रके ऊपर जिव्हामें तीन पखुडीको लोल चक्र है वाकौ जलचक्र कहत हैं ॥ ताकें बिचमें पत्रमें ऱ्हस्वता रहे है ॥ अर ऊपरके पत्रमें सुक्षमता रहे है ॥ अर दाहिने पत्रमें दीरघता है वा चक्रमें स्वादू लीजीये है ॥ तातें ऊपर

तालुवामें वरुण चक्र है ॥ ताकी दोंय पखुडी है ॥ सों वे पखुडी निचे उपर है ॥ तीनके बिचमें तीन मारग है ॥ तहां ऊपरके मारगमें तों आहर कहिये पवनको रोकी वो होत है ॥ ओर नीचलें मारगमें प्राण वायौको रोकी वो है॥ अर साह-मको मारग है तामें सब उतपन्न होत है ॥ तहां उन तीनों मारमनमै लं कं खं ये तिनो बीजका अक्षर कहाते है॥ तातें उपर नासिकाकें दहिनें छिद्रमें सुगंध नामकों चक्र है॥ ओर नासिकाके बायें छिद्रमें दुरगंधि नामको चक्र है॥ ओर बायें कानमें निह सव्यनाम चक्र है ॥ दहिनें कांनमें सब्द नाम चक्र है ॥ ओर बाये नेत्रमें रूप नाम चक्र है॥ दहिनें नेत्रमें ज्योति नाम चक्र है ॥ ताकें ऊपर भ्रु-कुटीनके बीचमें तीन दलकौ ॥ अज्ञा नामकौ चक्र है ॥ ताकें प्रथम दलमें सता गुण प्रगट होय है ॥ ओर दूसरे दलमें रजोगुण प्रगट होय है ॥ ओर तीसरे द-लमें तमोगुण प्रगट होय है ॥ ता चक्र तें ऊपर कपालमें छह दलको मन चक्र है ॥ तहाका १ प्रथम दलमें स्वप्न है ॥ ओर दूसरे २ दलमें शृंगार आदि रस-कौ सेवन है ॥ अर तीसरे ३ दलमें आघ्रांन कहिये सुगंधको ज्ञान है ॥ ओर ४ चोथे दलमें रूपको ज्ञान है ॥ ओर ५ पांचवें दलमें ताती सीरि वस्तुको ज्ञान है ॥ ताके ऊपर सोहले पखुडीनको चंद्र चक्र है ॥ तहां वा चक्रमें सोलैहु दलमें मे चंद्रमा कीसि सोहले कला है॥ तहां १ प्रथम दलमें कृपा है अर २ दूसरे दलमें क्षमा है ॥ अर ३ तीसरे दलमें सुधापणें है ॥ अर ४ चोथे दलमें धीरजता है ॥ अर ५ पांचवां दलमें वैराग्यता कहे है ॥ अर ६ छटवा दलमें निश्चयता है ॥ अर ७ सांतवां दलमें हरष है ॥ अर ८ आठवां दलमें हसिवो है ॥ अर ९ नवमां दलमें रोमांच है ॥ अर १० दसमां दलमें ध्यान है ॥ अर ११ ग्यारवां दलमें सुस्थिरता कहते है ॥ भले प्रकारकी थिरता है ॥ अर १२ बारवां दलमें बोझिलपणों है ॥ अर १३ तेरवां दलमें उद्यम है सो कहिये है कारज करिवेकी इछा है ॥ अर १४ चोदवें दलमें निरमलता है ॥ अर १५ पन्धरवां दलमें चितको उदारपनौ है ॥ ओर १६ सोलवें दलमें चितकी एकता है॥ तहां ब्रह्मरंध्रमें भ्रमर नांमकी एक गुंफा है ॥ ताके ऊपर दीसाको सोवाको वरणन है ॥ ऐसो दीपक चक्र है ॥ ताकी सात पखुडी है ॥ तिन सात पखुडीनमें । यं। रं। लं। वं। शं। षं। सं। यें सात मात्राका है ॥ ओर सो। हं। ह्रं। सः।

यह अजपा मंत्रको प्राणशक्तिको वासो है ॥ अर वह हंस कहते परमात्मा देवता है ॥ अनुभव सक्ति है ॥ ओर स्वाचक्रमें । अनहद नाद होय है ॥ विसर्ग ॥ अर । स्वर । इनसों युक्त है ॥ ओर वा चक्रमें श्रीवागवादिनी सरस्वतीको वासो कहे हैं ॥ महापीठ कहिये समाधि ओर उनमनि विद्या कहिये ॥ संसारमें उदासीनता ॥ अर चोथी अवस्था कहियें ॥ जीवकी ब्रह्म रूपता ॥ अरू करुण रस है अर क्रियाकी उत्पति है सो सक्ति है ॥ ओर वित स्वरूप अर ज्ञान स्वरूप निराकारको वास है ॥ यहां समांन नांमकौ पवन है ॥ वांकी मध्य गति कहे है ॥ ओर ढेढी जो नाडी सुषुमनादिक तिनको वा कमलमें संभोग है ॥ अर वहां जीव सुखको विलास करै है । ओर तेजको समूह है ॥ सूक्ष्म पंचभूतको आसरो है ॥ अर वा कमलमें ॥ ब्रह्मावरतनी नाम गंगा है ॥ अर वहां ही एक दलको ब्रह्मचक्र है ॥ वादलमें एक ओंकार है ॥ याहीके पास मायाचक्र है ॥ स्यामजाको वर्ण है ॥ अर हजार ज्याकें पखुडी है ॥ उन पखुडीनमें हजार मात्रा कहैं बिंदु है ॥ ओर वहै चक्रमें ब्रह्मरंध्र है ॥ अमृतको वास है ॥ अब वह चक्र अमृतकी धारासों सब सरीरकों पुष्ट करे है ॥ वहाही प्रकासनामको चक्र है ॥ अनेक रंगके जामें दल है उन दलमें मात्रा कहतें ॥ बिंदूनके समूह हैं ॥ ओर अहंकारको रंग लालता करिकें युक्त है ॥ तहां हृदयमें जो अनाहत चक्र है ॥ ताके पहिलो दल ॥ ओर आठवों दल ॥ ओर ग्यारमों दल ॥ ओर बारमों दल ॥ इन ओर दलमें भ्रम तो जीव जब जायो है ॥ तब गीतादिक की सिद्धिको चाह है ॥ वाहि अनाहत चक्रमें ॥ चोथे दल ॥ छटनु दल अर दसवों दल ॥ इनमें जब भ्रमतो जीव होवै है ॥ तब गीतादिककी इछा नही करै है ॥ ओर विशुद्ध चक्रतें आठवें दलतें लेकें पधरवें दल ताई ॥ जे आठ दल तिनमें जब आवै है ॥ तब गीतादिककी सिद्धिको विचारै है ॥ ओर वांहि विशुद्ध चक्रकें ॥ सोलवें दलमें जब जीव आवै ॥ तब गीतकों नही चाहे है ॥ अर ललना चक्रके दसवें ग्यारवे दलमें जब जीव चाहे है ॥ तब गीतादीककी सिद्धि चाहे है ॥ अर यांहि चक्रके पहले दलमें ॥ अर चोथे दलमें ॥ अर पांचवें दलमें जीव आवै है तब गीतादिककी सिद्धि नही चाहे है ॥ इनही तीनों चक्रकें बाकी रहे ज्यो दल तिनमें ॥ अर चक्रहूके दलमें जब जीव आवे तब गीतादिकमें सुख नही पावें है ॥

अथ नादकी उत्पतिकौं प्रकार लिख्यते॥ तहां प्रथम ज्यों आधार-चक्रताकें दोय अंगुल ऊपर ॥ अर स्वाधिष्ठान चक्रतें दोय अंगुल नीचें एक अंगुल प्रमांन जो देह मध्य तहां सुक्षम रूप अगनिकी सिखा है ॥ कुंदनसिरसौंताको रंग हें ॥ सो वह अगनिकी सिखा दो अंगुल लंबी है ॥ ओर वह देवको जों कंद हें ॥ सो चार अंगुलको चोफूटो है ॥ जाको ब्रह्मग्रंथि नाम कहे है ॥ वा ब्रह्म ग्रंथिमे बारह दलको नाभिकमल हे ॥ ता चक्रमें यह जीव भ्रम रहे ॥ अर सुषुम्ना नाडीके मारग करिकै ॥ ब्रह्मरंध्रकों चढै है ॥ अर उतरे है ॥ प्राणवायु करके जुक्त जीव ऐसे चढै उतरे है ॥ जैसे जिवडापे नट चढै है ॥ अर उतरि आवे है ॥ ओर वायु सुषुम्ना नाडीके ओर पास ॥ ओरहू नाडी हें ॥ ब्रह्मरंध्र परयंत लंबी हें॥ ओर मूलाधारकें मध्यमें॥ सुषुम्नाके कंद कीसी नाई स्थित है ॥ वे ने सब सरीरको जिवावें है ॥ वे नाडी अनेक हें ॥ तिनमें चौदा ॥ १४ ॥ मुख्य है ॥ तिनमे ॥ १ ॥ प्रथम नाडी सुषुम्ना ॥ अर ॥२॥ दूसरी नाडी इडा ॥ अर ॥ ३ ॥ तिसरी नाडी पिंगला ॥ अर ॥ ४ ॥ चोथी नाडी कुहू ॥ अर ॥५॥ पंचमी नाडी पयस्वीनि ॥ अर ॥ ६ ॥ छटवी नाडी गांधारी ॥ अर ॥७॥ सप्तमी नाडी हस्तीजिव्हा ॥ अर ॥८॥ आठमी नाडी वारणा ॥ अर ॥९॥ नवमी नाडी यशस्विनी ॥ अर ॥ १० ॥ दसमी नाडी विश्वोदरा ॥ अर ॥ ११ ॥ ग्यारवी नाडी शंखिनी ॥ अर ॥ १२ ॥ बारमी नाडी पूषा ॥ अर ॥ १३ ॥ तेरवी नाडी सरस्वती ॥ अर ॥ १४ ॥ चोदमी नाडी अलंबुषा उन चोदा नाडीनमें ॥ प्रथम ॥ १ ॥ सुषुम्ना ॥ दूसरी ॥ २ ॥ इडा ॥ तिसरी ॥ ३ ॥ पिंगला ॥ ये नाडी तीन मुख्य है उन तीनों नाडीनमें सुषुम्ना नाडी मुख्य है ॥ विस नाडीको विष्णु देवता कहते है ॥ अर सुषुम्नाके बाई ओर इडा नाडी है ॥ दहिनी ओर पिंगला है ॥ तहांमें इडा नाडीनमें चंद्रमा विचमें रहे है ॥ अर पिंगलामें सूर्य देवता बिचमें रहे है ॥ वा बीचरे है सो ये इडा पिंगला दोनु नाडीमें जब स्वास विचरै ॥ तब या जिवको काल पकडी लेत है ॥ ओर सुषुम्नामें जब प्राणवायु रहै है ॥ तब काल नहीं पकड सके है ॥ ओर बाकीकी नाडी अपने अपने ठिकानें शरीरमें व्यापि रहि है ॥ यातें यह सरीर निकमा है ॥ यामें भोग वा मोक्ष साधना यही एक गुण है ॥ **इति पिंडोत्पति संपूर्ण ॥**

अथ नादको प्रकार लिख्यते ॥ या पिंडमें दोय प्रकारको नाद होत हैं ॥ तहां प्रथम अनाहतनाद है ॥ यांको लोकीकमें अनहतनाद कहत है ॥ सो यह अनहदको दोऊ कान मुंडे तब यह सुन्योंपरे है ॥ सो यह अनहद रूप है ॥ यातें यामें मन संसारि जीवकों नही लगे है ॥ जो परमेश्वरकी कृपा होई ॥ सरल चितमें दयालता होई ॥ तब वा नादकों पावे ॥ अर दूसरो जो आहतनाद ॥ सो लोकानुरंजन है ॥ यातें सहजही मनुष्यनके मनकूं एकता करे है ॥ यातें बडे बडे भरतादिक मुनिश्वर आहतनादकों ॥ श्रुतिस्वर विवेक करिकें सेवे है यातें ॥ ओर भूलोक भुक्तिमुक्तिके लिये ॥ अहनदनादकों मानें है ॥ तातें आहत-नादकों ॥ लोकानुरंजनके अरथ ॥ श्रुतिस्वर विवेक करिकै गानकें लिये सं-गीतशास्त्रकों ॥ सरूपक्रमसों कहे है ॥ ओर यामें श्रुतिस्वर आदिक जे कारन ते कहिये है ॥ ब्रह्मा विष्णु शिव आदिदेवता नादसों प्रसन्न होत है ॥ यातें देवता दैत्य नाग गंधर्व नर याके पार कोननही पावे है ॥ सो यहां नादसमुद्र अपरंपार है ॥ ताको पार सरस्वती हुनें नही पायो ॥ सो अबहु बुडावेको भय करि विणाकै मिससों तूं वा सरसती है ॥ अर शिव कहत है ॥ जे विणा बजाइये वारो ॥ अर श्रुति जाति ताल इनतीनोनके ॥ जानिवें वारो विनें वेदहीसों मोक्षमारगकों जात है ॥ या संसारमें धरम अरथ काम मोक्ष ४ ए च्यारौ पदारथ पावे है ॥ यातें ब्रह्महु नाद सरूप है ॥ या पिंडमें चैतन्य जो जीवात्मा ज्यो जब शब्द कीयो चाहे ॥ तब मनको प्रेरन करेहै ॥ सो मन सरीरमें रहेहै ज्यो अगिनताको प्रेरै है ॥ अर वह अगनि पवनकों प्रेरन करे है ॥ सो पवन ब्रह्म ग्रंथ मूळाधार च तें ॥ ऊपरकों चलतो नाम हृदय ॥ कंठमें हृदय ॥ कंठ मस्तक ओर मूखमें ध्वनि करै है ॥ तहा नाभिमें ॥ अति सुक्षम ध्वनि जानियै ॥ अर हृदयमें सुक्षम ध्वनि जानीयै ॥ कंठमें पुष्ट ध्वनि जानीयै ॥ अर मस्तकमें अपुष्टध्वनि जानियै ॥ मुखमें कृत्रिम ध्वनि जानियें ॥ तहां नकार प्राणको नाम है ॥ ओर दकार अग्निको नाम है ॥ यहां शब्द प्राण अग्निके संगतें उत्पन्न होय है ॥ यातें शब्दको नाद कहे है ॥ **इति नादकी उत्पत्तिको प्रकरण संपूर्णम्** ॥

अथ नादको स्थान लिख्यते ॥ तहां वा नादके तीन स्थान है ॥ पहिलो १ हृदय ॥ द्वितीय २ कंठ ॥ तिसरो ३ मस्तक ॥ तहां प्रथम हृदयमें मन्द्रनाद जानिये ॥ अर

कंठमें मध्यम नाद जानिये॥ मस्तकमें तारनाद जानियें॥ ये तिनो स्थान पहलेतें हुवें दुनें है वे एक एक, स्थान बाईस बाईस तरह तरहके है ॥ वे बाईस भेद श्रुति जानिये॥ तहा हृदयमें सुषम्ना ॥ आदिके चोहदे नाडी सूदि हैं॥ तिनेंमें बाईस नाडी तिरछी लगी है·॥ वीणाकी सारिकी तरे है॥ उनमें आर्द्र करिके पवन अहटे है ॥ तब वाईसवों श्रुतिको ग्यान होत हे ॥ अर वें वाईसवों श्रुति क्रमसों ऊंची ऊंची जानिय ॥ ऐसैहीकंठमें अर मस्तकमै बाईस बाईस श्रुतिनकी बाईस बाईस तिन छानमें जानि यै ॥ अथ श्रुतिनकें ग्यानके अर्थ बाईस तारकी श्रुतिवीणाको प्रकार लिख्यते ॥ तहां दोयवीणा कीजियै ॥ तामें एकतो ध्रुववीणा कीजियै ॥ अर दुंसरी चलवीणा कीजियै ॥ तहां चलवीणां बाईस तारकी कीनि तहां हलोतार अत्यंत ढीलो कीजियै ॥ परंतु तहां ताई ढीलि कीजियै ॥ तहां तांई वा तारमें ॥ अनुरण कही यै गंकार है ॥ अर गंकारहीन न कीजियै ॥ अर दूसरो तारयातें कछूक उंचो करियै ॥ जैसे तीसरै तारकी धूनिसू निची ॥ अर पहले तारकी धूनिसू उंचि ॥ अैसो दुसरो तार करनों ॥ अब ऐसे दुसरे तारकसो तीसरो तार ऊंचो कछूक कीजियै ॥ वासों चौथो तार कछूक ऊंचो कीजियै ॥ सो चौथे तारको इतनों ऊचो कीजियै ॥ जैसे षड्जस्वर रहे है ॥ ऐसेहि सातमें तारमें रिखब राखिये ॥ ऐसेहि नवमें तारमें गंधार राखियें ॥ याहि क्रमसों और तेरवे तारमें याहि क्रमसौ मध्यम राखियै ॥ अर सातवै तारमै याही क्रमसों पंचम राखिजे ॥ वीसवे तारमें याही क्रमसों धैवत राखीयै ॥ ओर बाईसवें तारमें यांहि क्रमसो निषाद राखीये ॥ तहां चौथे तारसों ऊंचो कछुक पांचवो तार कीजियै ॥ पांचवें तारसों ऊंचो कछुक छटो तार कीजियै ॥ अर छटें तारसु कछुक ॥ ऊंचों सातवों तार कीजियै ॥ अर सातवें तारसूं ऊंचो आठवो तार कीजिये ॥ आठवै तारसूं नवमों तार ऊंचो कीजिये ॥ नवमें तारसूं दसमों तार कछुक ऊंचो कीजियै ॥ दसवें तारसों ग्यारमों तार कछुक ऊंचो कीजियै ॥ ग्यारवें तारसूं बारमों तार कछुक ऊंचो कीजियै ॥ बारमें तारसों तेरमों तार कछुक ऊंचो कीजियै ॥ तेरमें तारसों चोदवों तार कछुक ऊंचो कीजियै ॥ चोदवें तारसों पंधरवों तार कछुक ऊंचो कीजियै ॥ पंधरवें तारसों सोलवों तार कछुक ऊंचो कीजियै ॥ सोलवें तारसों सतरवों तार कछुक ऊंचो कीजियै ॥ सतरवें तारसों अठारमों तार कछुक ऊंचो

कीजियै ॥ अठारवी तारसों उगणिसमों तार कछुक ऊंचो कीजियै ॥ उगणिसवां तारसों विसमों तार कछुक ऊंचो कीजियै ॥ विसमो तारसों इकविसउ तार कछुक ऊंचो कीजियै ॥ इकविसवें तारसों बाईसवों तार कछुक ऊंचो कीजियै ॥ ऐसे बाईसकी तारकी ध्वनिसों बाईसों श्रुति जानियै ॥ तैसै बाईसमी श्रुतिनके बाईस तार चलवीणामें चले जैसै क्रमसें ऊंचे ऊंचे कीने है ॥ ऐसेही ध्रुववीणां मे ॥ वाईसवों तार याहि क्रमसों राखियै ॥ फेरवां ध्रुववीणांके तार तो वैसैहि राखियै ॥ और चलविणांके तारकों उतारियें ॥

अथ चलविणाके उतारिवेंकों प्रकार लिख्यते ॥ वा चलविणामें बाईसवां जो तार ॥ तामें निषादकी दुसरी श्रुतिहै ॥ ता बाईसवें तारकों ध्रुववीणामें ज्यो इकवीसवो तार। तामें निषादकी पहली श्रुति है । सो बाईसवे तारकी बरोबर ॥ चलवीणांकों बाईसवों तार उतारि देनौ याहि क्रमसों चलविणांके सब तारनकौ उतारि देनौ ॥ याकौ प्रथम सारणा कहे है ॥ या प्रथम सारणामै ॥ एक तार घटतें ॥ चौथै तारकौ षड्ज तीसरे तारमें आवेहे ॥ ओर सातवें तारको रिखभ ॥ छटे तारमें आवे है ॥ अर नोवें तारको गंधार ॥ आठवे तारमें आवे है ॥ तेरवे तारको मध्यम बारमें तारमें आवे है ॥ अर तेरवें तारमें पंचम सोलवें तारमें आवे है ॥ अर विंसवे तारको धैवत उगणिसवे तारमे आवे है ॥ अर बाईसवै तारको निषाद इकवीसवे तारमें आवे है । फेर दुसरी सारणा कीजीये ॥ तहां चलवीणांकें अंतकें तारकों ध्रववीणांक विसवी तारकी बरोबर उतारनो । याहिसों क्रमसों चलवीणांकें । ओर भी सब तार उतारनें । यह दुसरी सारणां है । या दुसरी सारणाम । गांधार तो रिखभमें ॥ ओर निषाद धैवतमें लीम होत है ॥ तहां तबवीणांमें तीसरें तारकों षड्ज दुसरे तारपे आवें है ॥ ओर छटे तारकौ रिखभ पांचवे तारमें आवे है ॥ आठवें तारको गंधार सातव तारपे आवे है ॥ अर बारवें तारको मध्यम ग्यारवे तारमे आव है ॥ सोलवै तारकौ पंचम पंधरवै तारमै आवे है ॥ ओर उगणिसवें तारकौ धैवत ॥ आठवे तारपे आवे हैं ॥ इकविसवे तारको निषाद । वीसवै तारपे आवे है ॥ ऐस गंधारकौ निषाद रिखभ धैवतमें लीन होत है ॥ अब तीसरे सारणा कहे है । या तीसरि सारणांमें ध्रुववीणांमें उगणीसवें तारकी बरोबर । चलवीणांकौ अंतको तार उतारणे याहि क्रमसों चलवीणांकें।

ओर भी सब तार उतारणे । तब रिखभ षड्जमें लीन होत हैं । तहां चलवीणांके दुसरे तारपै षड्ज प्रथम तारमै आवै है। ओर पांचवें तारको रिखभ । चोथै तारपै आवै है ॥ गंधार छटवें तारपै आवै हैं । अर मध्यम दसवै तारपै आवै है ॥ अर पंचम चोदवे तारपै आवै है ॥ धैवत सतरैव तारपै आवै है ॥ और निषाद उगणिसवै तारपै आवै है ॥ अैसै रिखभ तो षड्जमें ॥ ओर धैवत पंचममें लीन होत है ॥ अथ चोथीसारणा लिख्यते ॥ या चोथी सारणांमें ॥ ध्रुववीणा कै आठवै तार कीं बरोबर चलवीणां के अंत को तार उतारणें ॥ याहि क्रमसों चलवीणां कें ॥ ओर सबतार उतारनें या चोथी सारणां मे चलवीणां कै प्रथम तारकौ ॥ षड्ज सुक्षम निषादमें लीन होत है ॥ अर चोथै तारको रिखभ तिसरे-तार पै आवै है । छटवै तारको गंधार पांचवै तार पै आवै है ॥ अर दसवै तारको मध्यम नवमें तारपें आवै है ॥ चोदवे तारकौ पंचम तेरवें तारपें आवै है ॥ अर सतरवें तारको धैवत सोलवै तारपै आवै है ॥ अर उगणिसवै तारकौ निषाद अठरवै तारपै आवै है ॥ या सारणमें षड्ज सूक्षम निषादमें ॥ अर मध्यम गंधारमें ॥ अर पंचम मध्यममें लीन होत है याहि चलवीणांमें श्रुतिनकों ग्यान होत हें ॥ तहां प्रथम तो वरणन हे सो श्रुति है॥ अर अनुरणन स्वर है ॥ यातें स्वरको कारन श्रुति है । जैसै दहीको कारन दूध है । ये श्रुति मंद्र मध्यम बाईसवां तार ॥ इन तीनों स्थानन की मिलिकें छोसट श्रुति होत है ॥ अथ श्रुतिनकौ लक्षण लिख्यते ॥ प्रथम स्वरकी आदिमें हातकों ओर तंत्री आदिनके संयोगसों भयो जो शब्दसो श्रुति कहि ये ॥ इति संगीत रत्नाकर मतसों ध्रुववीणां चलवीणां सरूप निरूपम श्रुतिलक्षण कह्यो है सो संपूर्णम् ॥

अथ संगीत दरपणकौ श्रुति लक्षण लिख्यते ॥ जो वीणादिकमें अंगुली कौ वा दंड ॥ आदिकके ताडनसों जो सब्द होय सो श्रुति कहि ये ॥ ओर ताडन सों सब्द भये उपरांत जो वीणादिकके तारमें जो गंकाकार होय है ॥ सो स्वर कहि ये है ॥ वा गंकारको कारन जो ताडनमें भयो जो सब्द सो श्रुति कहि ये हैं सो वे श्रुति बाईस है ॥ अथ श्रुतिकें उच्चारनकौ जो समय वाकौ लक्षण लिख्यते ॥ एक लघु अक्षरको उच्चार तिनके कालमें होई ॥ सो काल श्रुति जानि ये ॥ ये तिन्यो ग्रामसों श्रुति तिन प्रकारकी है॥ तहां एक एक ग्रामकी

बाईस बाईस श्रुति है। यातें तिन ग्रामकी ।६६। छासट श्रुति होत है ॥ तहां सरीरकी बाईस श्रुति है ॥ तेहू हृदय अर कंठ अर मस्तक ॥ इनतिनों स्थानमें तीन प्रकारकी है ॥ तातें सरीरकी श्रुतिहु । ६६ । छिहा सट है तहां सरीरकी बाईसबी श्रुतिनके नाम कोईक आचारि जन कहे है तिनके नाम लिख्यते ॥ नादांता । १ । निष्कला । २ । गूढा । ३। सकला । ४ । मधुरा । ५। ललिता । ६ । एकाक्षरा । ७ । भ्रंगजाति । ८ । रसगीतिका । ९ । रंजिका । १० । पूरणा । ११ । अलंकारिणी । १२ । वैणिका । १३ । वलिता । १४ - त्रिस्थाना । १५ । सुखरा । १६ । सौम्या । १७ । भाषांगीका । १८ । वार्तिका । १९ । व्यापिका । २० । प्रसन्ना । २१ । सुभगा । २२ । इनही नामनकौकी कितनैहु ॥ आचारि जन वीणांकी श्रुतिनके नाम कहे है ॥ ओर। तीव्रादिके नाम ॥ सरीरकी श्रुतिनके कहे है ॥ उंन श्रुतिनसों अनुरणन कहियै ॥ गंकार रूप सात प्रकारको स्वर होत है ॥ जैसै दूधको दधी होत है ॥ जैसै ओरसंवादि आदि स्वरकें च्यारि भेद श्रुतिनकौ फल जानियै ॥ अथ सातों स्वरमें रहे जो श्रुति तिनके तिव्रादिक नाभ लिख्यते ॥ तिव्रा । १ । कुमद्वति । २ । मंद्रा । ३ । छंदोवति । ४ । ये च्यार श्रुति षड्जकी हें ॥ दयावति । १ । रंजिनी । २ । रतिका । ३ । ये तीन श्रुति रिखभकी हें ॥ रौद्रि । १ । क्रोधा । २ । ये दोनो श्रुति गांधारकी हें । वज्रिका । १ । प्रसारीणि । २ । प्रीति । ३ । संमार्जिनी । ४ । ये च्यार श्रुति मध्यमकी हें । क्षिति । १। रक्ता । २ । संदिपिणी । ३ । आलापिणी । ४ । ये च्यार श्रुति पंचमकी हें । मदंति । १ । रोहिणी । २ । रम्या । ३ । ये तिन श्रुति धैवतकी है ॥ उग्रा । १ । क्षोभिणी । २ । ये दोय श्रुति निषादकी हें ॥ इति तिव्रादिक श्रुतिनके नाम ॥ अथ श्रुतिनकी पांच जाति लिख्यते ॥ तहां प्रथम दिसा जाति ॥ ओर दूसरी आयता जाति ॥ अर तिसरी करूणा जाति ॥ अर चोथी मृदु जाति ॥ अर पांचमी मध्या जाति ये पांचों जाति। श्रुतिनकी है ॥ तिनकें भेद कहत है ॥ तहां दिसाकी श्रुतिभेद चार श्रुति हें ॥ तिव्रा । १ । रोद्रि । २ । वज्रिका । ३ । उग्रा । ४ । ओर आपतांके भेद पांच श्रुति हैं ॥ कुमुद्वती । १ । क्रोधा । २ । प्रसारिणी । ३ । संदिपिणी । ४ । रोहिणी । ५ । करुणा जातिनके भेद तिन

श्रुति हें ॥ दयावति । १ । आलापिनी ।२। सदंतिका । ३ । ओर मृदुजातिनके भेद च्यार श्रुति है ॥ मंदा । १ । रतिका । २ । प्रीति । ३ । क्षिति । ४ । अब इन श्रुतिनके स्थानक स्वर हें ॥ इति श्रुति जाति संपुर्ण ॥ अथ स्वरलक्षण लिख्यते ॥ संगीत रत्नाकरकें मतसों ॥ जो श्रुति कहीये ॥ अंगुरी अर बीणांके ॥ तारमें संयोगतें भयो जो शब्द ॥ ता शब्द तें उत्पन्न भयो ओर स्निग्ध कहियै ॥ काननकौ प्यारो लगै ॥ अर अनुरणन कहियै गंकार रूप ॥ ओर आपहि ते श्रोतानेके चितको अनुरंजन करे ॥ सो अनुरणन करेंसो कहिये हें ॥ यहही लछन संगीत पारिजातमें कह्यो है ॥ शृंगारहारकों ग्रंथमै ॥ यह स्वर विष्णु स-रूप करिके वरणन कह्यो है ॥ श्रुतिनेतें तो स्वर भयो है ॥ स्वर तें तीन ग्राम भयो हें ॥ ओर ग्रामोमें जाति भई हें ॥ जातिन तें राग भयो हें ॥ अर कछून उत्पन्न भयो शब्द मात्र तामें स्वर व्यास होय रह्यो है ॥ अथ स्वर या शब्दको अरथ लिख्यते ॥ स्व कहिये आपस को कहिये सोभायमान होय तातें स्वर कहियै ॥ वह स्वर सात प्रकारका है ॥ तहां पहलो क्रमसों स्वर च्यार श्रुतिधारे है ॥ ओर दूसरे स्वरकी तीन श्रुति है ॥ तिसरे स्वरकी दोय श्रुति है ॥ अर चोथे स्वरकी च्यार श्रुति है ॥ पांचवे स्वरकी ४ श्रुति है ॥ ओर छहटे स्वरकी तीन श्रुति है ॥ अर सातवें स्वरकी दोय श्रुति हें ॥ ये सात स्वर हें इनमें ज्यो स्वर जितनी श्रुती कों धारन करे हें ॥ तिमनी श्रुतिनसों वा स्वरकी उत्पति जानिये ॥ अथ सातौ स्वरके नाम लिख्यते ॥ प्रथम षड्ज । १ । दूसरो रिषभ । २ । तीसरो गंधार । ३ । चोथो मध्यम । ४ । पांचवो पंचम । ५ । छटवो धैवत । ६ । सातवो निषाद । ७ । ये सातों स्वरकी संज्ञा जानियै ॥ अब इन स्वरनकी एक संज्ञा ओरहु कहि है ॥ षड्जको स कहियै ।१। रिषभकों री कहियै। २ । गांधारकों ग कहियै ॥ ३ ॥ मध्यमकों म कहियै । ४ । पंचमकों प कहियै । ५ । धैवतकौ ध कहियै । ६ । निषादकों नी कहिये । ७ । तातें सातोनकी सारिगमपधनि पिहवि संज्ञा है । तहां सरीरमें त्वचा । १ । रुधिर । २ । मांस । ३ । मेद । ४ । अस्थि । ५ । मज्जा । ६ । शुक्र । ७ । ये सात धातु है ॥ इनमें सात स्वर बसे है ॥ यातें सात स्वर है ॥ अरु सरिरमें मूलाधार । १ । स्वाधिष्ठान । २ । मणिपूर । ३ । अनाहत । ४ । विशुद्ध । ५ । आग्या । ६ । सहस्रादल । ७ । इन

सांतौ चक्रनमें सातों स्वरनकों क्रमतें बासों हें ॥ याहु तें सातों स्वर जानियें ॥ अथ मतंगरिषिके मतसों सातों स्वरनके नामकौ अरथ लिख्यते ॥ तहां ततकाल उत्पन्न होइ तांको षड्ज कहियै ॥ अथवा छह स्वर षड्जतें उत्पन्न होइ हें यातें षड्ज है ॥ अथवा ॥ कंठहृदयतालू जीभि नासिका मस्तक हैं ॥ इन छह स्थान तें जाकि जाकि उत्पति होयसो षड्ज कहीये है ॥ अथवा कंठतें षड्जकी उत्पति है ॥ अरु हृदयमें रिषभ भयौ है ॥ नासिकातें गांधार भयो है ॥ अरु नाभितें मध्यम जानि यें ॥ हृदयतें कंठतें मस्तकतें पंचम स्वर भयो है॥ अरु लिलाट तें धैवत भयो है ॥ अर सब अंगनकी संधिनसों निषाद स्वर भयो है ॥ इति सांतो स्वरके नाम उतपति संपूणम् ॥

अथ सांतों स्वरकों स्वरूप ध्यान लिख्यते ॥ तहां प्रथम षड्जको स्वरूपकों ध्यान लिख्यते ॥ छहजाकें मुख है ॥ अर चार जाकें हात हें ॥ तहां दोय हातनमें कमल लिये है ॥ ओर दोय हातनसों वीणा बजावे है ॥ लाल कमलसो जाकों रंग है ॥ ओर मोरपंच है ॥ इति षड्जस्वरकौ स्वरूपध्यान संपूणम् ॥

अथ रिषभस्वरको स्वरूप ध्यान लिख्यते ॥ एक जाको मुख है ॥ च्यारि जाके भुजा हें ॥ तिनमें दोय हातनमें तौ कमल है ॥ ओर दोय हातनमें वीणा बजावे है ॥ नीलोजांको वरण कहते हैं ॥ अर बैलपर चढौ हैं ॥ नाभितें पौंन उठिकें तालुवा ॥ अरु जिव्हाके अग्रमें अटके है ॥ तब रिषभ स्वरकों बैलनाद करे है ॥ इति रिषभ स्वरकौ स्वरूप ध्यान संपूर्णम् ॥

अथ गांधरकौ स्वरूप ध्यान लिख्यते ॥ एक जाकै मुख हैं गौरोजाको रंग है ॥ च्यार जाके हात है ॥ ओर च्यारौ हातनमें वीणां ॥ फल कमल घंटा ॥ ये लियें हैं॥ अर मेंढापर चढो है यह प्राणवायु नाभितें उठिकें कंठमें जिव्हाके अंतसों अटक है तब गांधारस्वरूपकौ स्वर उत्पन्न होइ है ॥ इति गांधार स्वरकौ स्वरूप ध्यान लिख्यते ॥

अथ मध्यमको स्वरूप ध्यान लिख्यते ॥ एक ज्यांके मुख है ॥ च्यार ज्याके भुजा हैं ॥ अर सोनें सरीसो जांको रंग है ॥ अर वीणा कालेसा कमल वरदान लियें है कुर दातरीपर चढरौहै ॥ अर सातौ स्वरनकें मध्यम ये स्वर हें ॥ तासों मध्यम कहत हे ॥ प्राणवायु नाभिसों उठिकें हृदय अर॥ ओठमें अटकें है॥

तब मध्यम स्वर प्रगट होत है ॥ यासौ मध्यम स्वर कहे है ॥ इति मध्यम स्वरको स्वरूप ध्यान संपूर्णम् ॥

अथ पंचमस्वरको स्वरूप लिख्यते ॥ जाकें एक मुख है ॥ अर छह भुजा है ॥ और विचित्र वरण है ॥ ओर दोनु हातनमें वीणा है ॥ बाकीके च्यारू हातमें संख कमलावर अभय धारन करै है ॥ कोयलीपर चढौ है ॥ और प्राणवायु नाभितें उठिखें हृदयतें ॥ कंठतें दोनु ओठ इनमें अटकें है ॥ तब पंचम स्वर उतपन्न होई है ॥ इति पंचमस्वरको स्वरूप ध्यान संपूर्णम् ॥

अथ धैवतको स्वरूप ध्यान लिख्यते ॥ एक ज्यांके मुख है ॥ गौरो जाको शरिर है अर च्यार जांके भुजा है ॥ अर वीणा कलस खट्वांगफल ये च्यारों हातनमें ॥ घोडापें चढौ है ॥ प्राणवायु नाभितें उठिकें हृदय दांत सिर मस्तक कंठ इनमें अटकै है तब धैवतस्वर उतपन्न होइ है ॥ ओर धी कहे तें बुध्दि जामें होई सो धैवत कहि यें ॥ इति धैवतको स्वरूप ध्यान संपूर्णम् ॥

अथ निषादकौ स्वरूप ध्यान लिख्यते ॥ हातीको जाकें मुख है ॥ अर च्यार जांके भुजा है ॥ च्यारौ हातनमें त्रिशूल । १ । कमल । २ । फरसी । ३ । विजोरो । ४ । लिये है ॥ हस्तिकें उपरि चढौ है ॥ ओर छहों स्वर यामें लीन होय है ॥ यातें याकों निषाद स्वर कहे है ॥ **इति सातों स्वरके स्वरूप ध्यान संपूर्णम्** ॥

अथ सांतो स्वरके स्थान लिख्यते ॥ षड्ज कंठमें, रिषभ, मस्तकमें, गांधार, नासिकामें, मध्यम, हृदयमें ॥ पंचम नाभिमें ॥ ललाटमें धैवत, ब्रह्मांडमें निषाद, रहे है ॥ इति सातो स्वरस्थान संपूर्णम् ॥ अब इन स्वरनकी आदिकें ॥ एक एक अक्षर करि कें ॥ ध्रुवपद आदिमें राखिवें को ॥ सातों स्वरनकी संज्ञा कीनि है ॥ मतंगके मतमै ॥ यातें स रि ग म प ध नि ॥ यह सातों स्वरनकी संज्ञा है ॥ तहां निषाद अरु गांधार ॥ ये दोनुं उंचे स्वर हैं ॥ अर धैवत रिषभ ये नीचे स्वर है ॥ षड्ज, रिषभ, पंचम ये समान स्वर है ॥ तहां बाजों ॥ और अंगुलीनके ताडनतें भई ज्यो ध्वनि सो श्रुति कहावे है ॥ वा श्रुतिके पिछे अनुरणन रूप कांनन कौं प्यारौ ॥ और मनुष्यनके मनकों आपनें हि वसकरै ऐसि जो ध्वनि सो शब्द कहियै ॥ तहां वह स्वर दोई प्रकारका कहते है ॥ एक

तो ध्वनिरूप कहते है ॥ अर दूसरो वरणरूप कहते हैं ॥ तहां वरणरूप स्वर चौदा ॥ १४ ॥ प्रकारका कहते है ॥ अ इ उ ए ओ ऐ औ ऋ लृ ये नपूंसक है ॥ ओर जिव्हा मूलिय । क ॅ । ओर उपधमानीय । प ॅ अरु विसर्ग कहियै। अः । अरु अनुस्वार कहियै मस्तक उपरि बिंदि होय तिनुनै । यथा ॥ अं ॥ ओर यम् कहियै यकारय । ये चौदा स्वर है ॥ अथ वरणस्वरके स्थान लिख्यते ॥ हृदय । १ । कंठ । २ । मस्तक । ३ । जिव्हाको मूल । ४ । दांत । ५ । नासिका । ६ । होट । ७ । तालवो । ८ । ये वरणस्वरकें उचार करिवेंके स्थान हें आठ ॥ इति वर्णध्वनिके उचार करिवेंके स्थान संपूणम् ॥ तहां वर्ण जो उकारादि सो सिवरूप हें ॥ ओर मात्रा स्वर जे अकारादि सो शक्तिरूप है ॥ ओर व्यंजन अक्षर जो खोडे अक्षर तीनकी अर्ध मात्रा है ॥ सो वर्णरूप ध्वनिकों विचार प्रबंधाध्यायमें कहेंगे ॥ इति सुद्धस्वरलक्षण उत्पतिस्थानस्वरूप संपूर्णम् ॥

अथ संगीतरत्नाकरकें मतसों सात स्वरनकें कुलजाति वर्ण द्विप ऋषि देवता छंदरस लिख्यते ॥ तहां प्रथम सात स्वरनके नाम कहेहें ॥ स । १ । रि । २ । ग । ३ । म । ४ । प । ५ । ध । ६ । नि । ७ । ॥ तहां प्रथम षड्जकों वरनन करै है ॥ यह षड्ज स्वरदेवताकुलमें उत्पन्न भयो है ॥ ब्राह्मणयांकि जाति है ॥ लाल कमलसो जाको रंग है ॥ अर जंबूद्विपयांकोस्थान है ॥ अर रिषि अग्नि है यांको ॥ अरयांको देवताही अग्नि हैं ॥ अर यांको अनुष्टुपछंद है ॥ वीर अद्भुत यांके रस है ॥ इति षड्ज ॥ अथ रिषभ स्वरवरणनं यह रिषभस्वर ऋषिकुलमें उतपन भयो है ॥ अर क्षत्रियांकी जाति है ॥ अर सुपेद यांको रंग है॥ साकद्विपयांको स्थान है ॥ अर ब्रह्मा देवता है यांको ॥ अर नायत्री यांको छंद हैं ॥ अर वीरअद्भुत ऐकरस है ॥ इति रिषभ ॥ अथ यांधारस्वरवर्णनं ॥ यह गांधारस्वर देवताकुलमें उतपन्न भयो है ॥ वैश्य याकी जाति है ॥ अर सुवरण सरीसो जांको रंग है ॥ अर कुशद्विप यांको स्थान है ॥ अर चंद्रमा देवता यांको ऋषि कहते है ॥ अर सरस्वती वाग्वादीनी यांको देवता हैं ॥ अर त्रिष्टुप यांको छंद है ॥ अर करुणा जामें रस हैं ॥ इति गांधार ॥ अथ मध्यमस्वर वरणनं ॥ यह मध्यमस्वर देवताकुलमें उत्पन्न भयो हैं ॥ अर ब्राह्मण यांकी

जाति है कुंदनके फूलकोसो रंग है ॥ क्रौंचद्वीप यांकौ स्थान है ॥ अर विष्णु यांकौ रिखि है ॥ अर सिव यांको देवता है ॥ अर बृहस्पति यांको छंद है ॥ अर हास्यजांमें रस है ॥ इति मध्यम ॥ अथ पंचमस्वर वरणनं ॥ यह पंचमस्वर पितृस्वरनके कुलनमें उत्पन्न भयो है ॥ ब्राह्मण यांकी जाति है ॥ श्याम यांको रंग है ॥ शाल्मलीद्वीप यांको स्थान है ॥ नारद यांको रिखि है ॥ लक्ष्मी महा-रानी यांको देवता है ॥ अर पंक्ति यांको छंद है ॥ अर शृंगारज्यांमें रस है ॥ इति पंचम ॥ अथ धैवतवरणनं ॥ यह धैवतस्वर ऋषि कुलमें उतपन्न भयो है ॥ अर क्षत्रि इनांकी जाति है ॥ अर पीतइताको रंग है ॥ अर स्वेतदीप यांको स्थान है ॥ अर इनीको विश्वावसु ऋषि है ॥ अर गणपती इनीको देवता है ॥ अर उल्मिक इनीको छंद है ॥ अर भीभत्सभयानक जांमें रस है ॥ इति धैवत ॥ अथ निषादस्वरवरणनं ॥ यह निषादस्वर असुर कुलनमें उतपन्न भयो है ॥ अर वैश्य यांकी जाति है ॥ अर कपूरकोसो यांको रंग है ॥ अर पुष्कर यांको द्विपस्थान है ॥ अर तुंबरू नामा यांको ऋषि है ॥ अर सूर्यनारायन यांको देवता है ॥ अर जगति यांको छंद है ॥ अर करुणयामें रस है ॥ इति निषाद ॥ अथ सप्त स्वरकी जनावरकी बोलि करी निश्चे लिख्यते ॥ जो संगीत रत्नाकरमेंतौयातरह लिखे है ॥ खड्ज स्वरकी मोरकी बोलि तें जांनियें ॥ १ ॥ ऋषभस्वर पपै याकी बोलि तें जांनिये ॥ २ ॥ गांधारस्वर बकराकि बोलि तें जानियें ॥ ३ ॥ मध्यम स्वर कुरुदांतलीकी बोलि तें जांनियें ॥ ४ ॥ पंचमस्वर कोयलीकी बोलि तें जांनियें ॥ ५ ॥ धैवत स्वर मीरगकी बोलि तें जांनियें ॥ ६ ॥ निषाद स्वर हातीकी बोलि तें जांनियें ॥ ७ ॥ अथ संगीत दर्पनमें यांतरेंहंलिपे हैं ॥ षड्ज स्वर मोरकी बोलि तें जांनियें ॥ १ ॥ रिषभ स्वर बहलकी बोलि तें जांनियें ॥ २ ॥ गांधार स्वर बकराकी बोलि तें जांनिये ॥ ३ ॥ मध्यम स्वर कुरदांतालिकी बोलि तें जां-नियें ॥ ४ ॥ पंचम स्वर कोइलकी बोलि ते जांनिये ॥ ५ ॥ धैवत स्वर घे मिमें ॥ बोलि तें जांनिये ॥ ६ ॥ निषाद स्वर हातीकी बोलि तें जांनिये नहीं ॥ इति संगीत दर्पनभेद संपूर्णम् ॥ इति सातस्वर समाप्तम् ॥ को विक्रत

अथ श्रीखड्गमंत्रस्य वन्हिऋषिरनुष्टुप् छंदः ॥ ब्रह्मा देवता सुपर्वजं कुल तिले है ॥ तब रो रसः गीतापावकः मयूरोवाहन। स्वरसप्तचर्थे जपे विनियोगः । ग्व तीन श्रुतिकौ

निषण्णुस्वश्वतर्हस्तोत्पलद्वयधारी सविणेस्तामरस प्रभुरवभरवभलय इति बीजं स्व-
णालयत्वादिति खड्गः ॥ १ ॥ अस्य श्रीऋषभमंत्रस्य वधा ऋषिः गायत्रीछंदः॥
अग्निर्देवता साकद्विप ऋषिगीता पद्मसुरसो हास्यवाहनं गोसर्वपापक्षयार्थे जपे
विनियोगः । एकवक्रश्चतुर्हस्तः कमलद्वयधारिसीविणानीलवर्णः । २ । अस्य श्री
गांधारमंत्रस्य शशांको ऋषिः । त्रिष्टुप्छंदः । शशांको देवता सुपर्वजं कुलं क्रौंच-
द्वीपं विष्णुर्गतारसोवीरः । मेषोवाहनसंकरप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः । एकवदनः
गौरवर्णः ॥ चतुःकरः वीणां फलाब्जवटभूत् । ३ । अस्य मध्यममं-
त्रस्य लक्ष्मीनारायणो ऋषिः ॥ बृहतिछंदः भारतीदेवता सुपर्वजं कुलं
कुशद्वीपं गाता चंद्रः क्रौंच शांतो रसः वाहनं क्रौंचः भारतीप्रीत्यर्थे जपे
विनियोगः॥ हेमवर्णः । चतुकरवीणां कमलसपद्मवरभूत् । ४ । अस्यश्रीपंचम
मंत्रस्य नारदऋषिः । पंक्तिछंदः स्वयंभू देवता पितृवंशाः । द्वीप शाल्मलाः।
नारदो गातारसः शृंगारवाहनो कोकिलः । स्वयंभूप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।
एकवदनः भिन्नवर्णः षट्कर करद्वयेन वीणां वादयन् शंखाब्जवरदा भयमभूत्
। ५ । अस्य श्रीधैवतमंत्रस्य तुंबरुऋषिः उष्णिक्छंदः संभु देवता ऋषिजं कु-
लं । श्वेतद्वीपं भयानको रसः गातातुंबरुः यानरस्वः शंभुप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।
एकवक्रश्चतुकरः वीणां कलशखट्वांगफलगौरवरणभूत् । ६ । अस्य श्रीनिषाद-
मंत्रस्य ध्वनि ऋषिः जगति छंदः गणेशो देवता आसुरं कुलं क्रौंच द्वीपं शांतो रसः
गाता तुंबरु वाहनं गजगणेशप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः । गजवक्र चित्रवर्णः ।
चतुर्भुजः त्रिशूलपद्मपरशुविजपूरभूत् । ७ । इति निषादः । इन सांतो स्वर-
नकों रागकी उतपती है ॥ इनकों विचारिकें जहां जैसो स्वर रागके वरतयेमें
होइताही स्वरसों आरंभ वास प्राप्त कीजि यै ॥ ये सातों स्वर संगीतशास्त्रकें
५। ज है ॥ इनकों मर जादसों वर ताव कीजि यै ॥ तव जो जो फल कह्ये है ॥ सो
वरर्णन ल पावै है । यहनाद ब्रह्म अपार है ॥ यांको पारकाहू नेंहीं पायानही परंतु
अर सुवर। घनु अपनि बुध्दि माफिक शास्त्रकें मतसों समभि नाद ब्रह्मकों सेवै ॥
देवता यांको भ पाईवे के ये सुध्द सात स्वर उपाय कहे है ॥ यातें इन सातों स्वर-
त्रिष्टुप यांको छं नें ॥ साचे अभ्यास कीजीय ॥ इनही शुध्द सात स्वरनतें विकृत
स्वर वरणनं ॥ यह । अथ वा बाईस २२ अथवा बीचालीस । ४२ । विकृत-

स्वरनके भेद होत हैं । सो विकृत स्वरनके भेद कहे है सर्व ग्रंथके मतसों ॥ अथ विकृत स्वरनको लक्षण लिख्यते ॥ शुद्धता करिके हीन जो स्वर सो विकृत स्वर कहिये हैं ॥ सो शुद्धता ईहीनता दोय प्रकारकी है ॥ एकतो भीतर की है ॥ एक बाहारकी है ॥ तहां भीतरकी तो हृदयसों होई है ॥ और बाहरकी विणादिकमे प्रगट होई है ॥ तहां रत्नाकरके मतसों बारह ॥१२॥ विकृत स्वर कहै है ॥ तहां चार श्रुतिको जो षड्ज स्वर है॥ सो विकृत होय करिकै॥ जब दोय श्रुतिकों रहै॥ तब एकतो च्युत दुसरी अच्युत संज्ञा पावें है सो कहे है॥ जब निषादस्वर काकली करिकै षड्जकी दोई पहलि श्रुतिल तब च्यार श्रुतिकों निषाद काकली संज्ञा पावें है ॥ अर जब रिषभ स्वर षड्ज साधारण होईकें षड्जकी पिछली एक श्रुतिले है ॥ तब रिषभ च्यार श्रुतिकौ विकृत होयकें विकृत संज्ञा पावै हैं ॥ अरु जब षड्जकी एक श्रुतिलेके निषाद कैंसिक होई तब दोई श्रुतिकौ षड्ज च्युत होत है ॥ विकृत संज्ञा पावै है ॥ अर जब गांधार स्वर मध्यम साधारण होईकें । मध्यमकी पहली एक श्रुतिले है ॥ तब तीन श्रुतिकौ गांधार साधारण होत है ॥ ओर जब अंतर करिकै मध्यमकी दोय श्रुतिले है तब च्यार श्रुतिकौ गांधार विकृत होत है ॥ ऐसे गांधारके दोय भेद हैं ॥ और मध्यम स्वरकी दोय श्रुति ॥ अंतर करिकै जब गांधार लेत है ॥ तब दोय श्रुतिकौ जो मध्यम है ॥ सो अच्युत संज्ञा पावै है ॥ ओर जब पंचम स्वर तीन श्रुतिपें रहिकें मध्यमकी पिछली जब एक श्रुतिले है ॥ और गांधार मध्यमकी पहली श्रुतिलेकें जब साधारण होत है ॥ तब दोय श्रुतिकौ मध्यम विकृत होयकै च्युत संज्ञा पावै है ॥ तहां आसंका करै है कि षड्ज मध्यम गांधार ग्राम थापि स्वर है ॥ इनके दोय दोय भेद कैसे कहौ है ॥ ओर दोई दोई भेद कहौगे तो दोय षड्ज ग्राम दोय मध्यम ग्राम कहें चहियें ॥ तहां भाव भट्टनें ॥ समाधान कीयो है ॥ कि ये षड्ज ओर मध्यम स्वर ये दोनु अपने ॥ अपनें ग्राममें तो एकही रहे है ॥ ओर षड्ज तो मध्यम ग्राममें ॥ अर मध्यम स्वर षड्ज ग्राममें दोय दोय भेद पावे हैं ॥ यातें कछुभी दोष नही ॥ ओर पंचम स्वर जब अपनी तिसरी श्रुतिपें रहे तब पंचम तीन श्रुतिको विकृत होत है ॥ जबही तीन श्रुतिकों पंचम मध्यमकी पिछली एक श्रुतिले है ॥ तब च्यार श्रुतिकौ पंचम होत है ॥ और जब मध्यम ग्राममें तीन श्रुतिको

धैवत है ॥ पंचमकी एक श्रुतिले है ॥ तब च्यार श्रुतिनको धैवत विकृत होत है ॥ और निषाद स्वर जब षड्जकी एक पहली श्रुति है तिनमें लेवें है ॥ तब तीन श्रुतिकों निषाद कैसिक होत है ॥ और जब निषाद दोय श्रुतिनकों षड्ज की वऊलि दोय श्रुतिले है ॥ तब च्यार श्रुतिनकों निषाद काकली होय है ॥ एसें बारा है ॥ १२ ॥ तो विकृत स्वर अर सात शुद्ध स्वर ७ मिलके उगणिस १९ भेद है ॥ **इति संगीत रत्नाकरकें मतसों बारह १२ विकृत भेद संपूर्णम् ॥**

अथ अनोपविलासके मतसों सकल कलावंत मतके विकृतनके बेचालिस ४२ भेद लिख्यते ॥ तहा रंजनि श्रुतियें रिषभ रहे ॥ तब मृदु संज्ञा पावै ॥ २ ॥ एसें रिषभकें दोय भेद हैं ॥ रौद्रि श्रुतिमें जब गांधार ठहरे ॥ तब मृदु संज्ञा पावै ॥ ३ ॥ रतिका श्रुतिमें गांधार ठहरै ॥ तब अतिमंद संज्ञा पावै ॥ ४ ॥ रंजनी श्रुतिमें गांधार ठहरै ॥ तब अतिमंद संज्ञा पावै ॥ ५ ॥ ऐसें गांधारकें तीन भेद हें ॥ प्रीति श्रुतिमें मध्यम ठहरे तब मृदु संज्ञा पावै । ६ । प्रसादनी श्रुतिमें मध्यम ठहरे ॥ तब अतिमंद संज्ञा पावै ॥ ७ ॥ वज्रिका श्रुतिमें मध्यम ठहरे ॥ तब मंद संज्ञा पावै ॥ ८ ॥ क्रोधाश्रुतिमें मध्यम ठहरे ॥ तब शुद्धग मध्यम संज्ञा पावै ॥ ९ ॥ रौद्रि श्रुतिमें मध्यम ठहरै तब मंदग मध्यम संज्ञा पावै ॥ १० ॥ रतिका श्रुतिमें मध्यम ठहरै तब शुद्ध रिखभ--मध्यम संज्ञा पावै ॥ ११ ॥ ऐसे मध्यमके छह भेद है ॥ संदीपिनी श्रुतिमें पंचम ठहरै ॥ तब दीप्त संज्ञा पावै । १२ । ऐसे पंचमकौ एक भेद है ॥ रोहिणी श्रुतिमें धैवत ठहरै ॥ तब मृदु संज्ञा पावै ॥ १३ ॥ मदंती श्रुतिमें धैवत ठहरै ॥ तब मंद संज्ञा पावै ॥ १४ ॥ अलापनि श्रुतिमें धैवत ठहरै ॥ तब शुद्ध पंचम संज्ञा पावै ॥ १५ ॥ ऐसे तीन भेद धैवतकें हें ॥ उग्र श्रुतिमें निषाद ठहरे ॥ तब मंद निषाद संज्ञा पावै ॥ १६ ॥ रम्या श्रुतिमें निषाद ठहरै ॥ तब शुद्ध संज्ञा पावे ॥ १७ ॥ रोहिणी श्रुतिमें निषाद ठहरै ॥ तब म, ध, नी संज्ञा पावै है ॥ १८ ॥ मदंति श्रुतिमें निषाद ठहरै ॥ तब अतिमंद ध, नी संज्ञा पावै ॥ १९ ॥ ऐसें च्यारी भेद निषादकें है उपर लै षड्जकी तीव्र श्रुतिमें निषाद ठहरै तब तीक्षण संज्ञा पावै । २० । अर वोही षड्जकी कुमुद्वती श्रुतिमें निषाद ठहरै । तब तीक्षणतर संज्ञा पावै । २१ ।

अर वाही षड्जकी मंदा श्रुतिमें निषाद ठहरै । तब तीक्षणतम संज्ञा पावै । २२ । ऐसे तीन भेद निषादके है । निषादकी उग्र श्रुतिमें धैवत ठहरै । तब धैवत तीक्षण संज्ञा पावै । २३ । क्षोभिनी श्रुतिमें धैवत ठहरै । तब शुद्ध नी धैवत संज्ञा पावै । २४ । षड्जकी तीव्र श्रुतिमें धैवत ठहरै । तब तीव्रनिनि धैवत संज्ञा पावै । २५ । वाही षड्जकी कुमुद्वती श्रुतिमें धैवत ठहरै ॥ तब अतितीक्षण संज्ञा पावै । २६ । ऐसें धैवतके भेद च्यार प्रकारको है । जब पंचमकी क्षिती श्रुतिमें मध्यम ठहरै । तब तीक्षण संज्ञा पावै । २७ । पंचमकी रक्ता श्रुतिमें मध्यम ठहरै । तब अतितीक्षण संज्ञा पावै । २८ । पंचमकी संदीपनी श्रुतिमें मध्यम ठहरै । तब तीक्षणतम मध्यम संज्ञा पावै । २९ । ऐसें मध्यके तीन भेद है ॥ मध्यमकी वज्रिका श्रुतिमें गांधार ठहरै ॥ तब तीक्षण संज्ञा गांधार पावै । ३० । मध्यमकी प्रसारिणी श्रुतिमें गांधार ठहरै । तब तीक्षणतर संज्ञा गांधार पावै । ३१ । मध्यमकी प्रीति श्रुतिमें गांधार ठहरै । तब तीक्षणतम गांधार संज्ञा पावै ॥ ३२ ॥ मध्यमकी संमार्जनी श्रुतिमें गांधार ठहरै । तब शुद्ध म गांधार संज्ञा पावै ॥ ३३ ॥ पंचमकी क्षिति श्रुतिमें गांधार ठहरै ॥ तब मध्यम तीक्षण गांधार संज्ञा पावै ॥ ३४ ॥ पंचमकी रक्ता श्रुतिमें गांधार ठहरै ॥ तब तीक्षणतम मध्यम गांधार संज्ञा पावै ॥ ३५ ॥ ऐसै गांधारके छह भेद हैं ॥ गांधारकी रौद्रि श्रुतिमें रिषभ ठहरै ॥ तब रिषभ तीक्षण संज्ञा पावै ॥ ३६ ॥ गांधारकी क्रोधा श्रुतिमें रिषभ ठहरै ॥ तब शुद्ध गांधार रिषभ संज्ञा पावै ॥ ३७ ॥ मध्यमकी वज्रिका श्रुतिमें रिषभ ठहरै ॥ तब तीक्षण गांधार रिषभ संज्ञा पावै ॥ ३८ ॥ मध्यमकी प्रसारिणी श्रुतिमें रिषभ ठहरै ॥ तब तीक्षणतर गांधार संज्ञा पावै ॥ ३९ ॥ मध्यमकी प्रीति श्रुतिमें ठहरै ॥ तब तीक्षणतम गांधार रिषभ संज्ञा पावै ॥ ४० ॥ मध्यमकी संमार्जनी श्रुतिमें रिषभ ठहरै ॥ तब श्रुद्ध गांधार रिषभ संज्ञा पावै ॥ ४१ ॥ पंचम दोयकी क्षिति श्रुतिमें रिषभ ठहरै ॥ तब तीक्षण मध्यम गांधार रिषभ संज्ञा पावै ॥ ४२ ॥ अैसे रिषभके सात भेद है । या रिषभ रीति सो गांधार मध्यम इन तीनौ स्वरनके तानौंके नौ भेद है ॥ सो तिनोनके तो सताइस है ॥ और पंचमको एक भेद है ॥ धैवतके सात भेद है ॥ निषादके है ॥ ऐसे सबके भेद मिलिके ४२ बेचालीस भेद है ॥ सो

बाजने
लक्ष्यंते ॥
अनद्ध कहेहैं या
चोथे बाजेको

विक्रत स्वर ॥ अरु सात शुद्ध स्वर मिलिके ४९ येगुणपचास स्वरनके भेद जानियै ॥ इति अनोपविलासे सकल कलावंत मतसें बेचालीस ४२ विक्रत स्वर भेद संपूर्णम् ॥

अथ संगीत पारिजातके मतसो वाईस विक्रत स्वर लिख्यते ॥

तहां षड्ज तो शुद्ध स्वर है ॥ १ ॥ अर रिषभके च्यारी भेद है । ४ । जब रिषभ स्वर दयावति श्रुतिपें ठहरे ॥ तब रिषभ पूरव संज्ञा पावै । १ । अरु रंजनि श्रुतिपें रिषभ ठहरे तब रिषभ कोमल संज्ञा पावै ॥ १ ॥ अरु जब रतिका श्रुतिपें ठहरे। तब रिषभ शुद्ध जानियें । २ । अर गांधारकी एक रौद्रि श्रुतिलें तब रिषभ तीव्र जांनियें । ३ । अरु गांधारकी दोय श्रुतिले तब रिषभ तीव्रतर जांनियें । ४ । यह रिषभके च्यारी भेद है । ४ । ओर गांधारके पांच भेद है । ५ । जब गांधार रिषभकी रतिका श्रुतिपें ठहरे ॥ तब पूरव संज्ञा पावै । १ । अरु गांधार अपनि रौद्रि श्रुतिपें ठहरे । तब कोमल संज्ञा पावै । २ । जब अपनी दूसरी क्रोधा श्रुतिपे ठहरै । तब गांधार शुद्ध जांनियें ॥ अरु गांधार मध्यमकी पहली जो एक श्रुतिले तब तीव्र गांधार जांनिये । ३ । अरु जब मध्यमकी दूसरी प्रसारिणी श्रुतिलें ॥ तब गांधार तीव्रवर जांनियें । ४ । ओर जब मध्यमकी तीसरी श्रुति प्रीतिकों ले ॥ तब गांधार तीव्रतम जांनियें । ५ । तीव्रतम गांधार ही मध्यम जांनियें ॥ मध्यमकी संमार्जनी श्रुति चोथीले तब गांधार अतितीव्रतम संज्ञा पावै ॥ यांको शुद्ध मध्यम गांधार कहत है ॥ ६ ॥ ऐसें गांधारके छह भेद है ॥ जब मध्यम अपनी प्रसारिणी श्रुति दूसरीपें ठहरे ॥ तब पूरव मध्यम जांनियें । १ । जब अपनी प्रीति श्रुति तिसरीपें ठहरें ॥ तब कोमल मध्यम जांनियें ॥ २ ॥ अरु जब अपनी संमार्जनी चोथी श्रुतिपें ठहरे । तब शुद्ध मध्यम जांनियें ॥ ३ ॥ ओर पंचमकी एक पहली क्षिति श्रुतिकों ले । तब तीव्र मध्यम जांनियें । ४ । ओर पंचमकी रक्ता श्रुति दूसरीकों लें ॥ तब तीव्रतर तब जांनियै । ५ । अरु जब पंचमकी तीसरी श्रुति संदीपनीकों ले ॥ तब लै षड्जके ध्यम जांनियै । या तीव्रतममध्यमको मृदु पंचम कहत है ॥ ऐसे मध्य-षड्जकी कु कहत है ॥ जब पंचम अपनी चोथी आलापनि श्रुतिपें ठहरै । तब

लिकें अग्रमें तीव्रा श्रुति राखियै ॥ फेर मंडलचक्रमें करिकें ॥ बाईसों अग्रनमें क्षोभिणीपर्यंत बाईसों श्रुति राखियै ॥ यह श्रुतिमंडलचक्र है सो जांनियें ॥ इति **श्रुतिविधान चक्रमंडल संपूर्णम् ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥**

॥ अथ श्रुतिमंडलचक्र लिख्यते ॥

क्रोधा श्रुतिप ठहरै । तब गांधार शुद्ध जांनियें ।
जो एक श्रुतिले तब तीव्र गांधार जानिये । ३
प्रसारिणी श्रुतिलें ॥ तब गांधार तीव्रतर जांनियें । ६रो
तीसरी श्रुति प्रीतिकों ले ॥ तब गांधार तीव्रतम जांनिये
हीं मध्यम जांनियें ॥ मध्यमकी संमार्जनी श्रुति चोथीले त । तहां एक ऊर्ध्वदंडा-
संज्ञा पावै ॥ यांको शुद्ध मध्यम गांधार कहत है ॥ ६ ॥ खा बरोबर कीजीयै
भेद है ॥ जब मध्यम अपनी प्रसारिणी श्रुति दूसरीपें ठहरै ॥ तहां ऊपरकी बाई
जांनियें । १ । जब अपनी प्रीति श्रुति तिसरीपें ठहरें ॥ तब मो बाइसों।
जांनियें ॥ २ ॥ अरु जब अपनी संमार्जनी चोथी श्रुतिपें ठहरै । तब शु होइ ति-
ध्यम जांनियें ॥ ३ ॥ ओर पंचमकी एक पहली क्षिति श्रुतिकों ले । अपनी
मध्यम जांनियें । ४ । ओर पंचमकी रक्ता श्रुति दूसरीकों लें ॥ तब णाप्रकार
तब जांनियें । ५ । अरु जब पंचमकी तीसरी श्रुति संदीपनीकों ले । जो
लै षड्जके ध्यम जांनियें । या तीव्रतममध्यमको मृदु पंचम कहत है ॥ ऐसे म नकों
षड्जकी कु कहत है ॥ जब पंचम अपनी चोथी आलापनि श्रुतिपें ठहरै । तब रा

१२ अथवा ८ आठ आवै ॥ तो वै दोनुं स्वर परस्पर संवादि जानियै ॥ जैसे षड्ज वा मध्यम ॥ वा षड्ज ॥ अर पंचम परस्पर संवादि है ॥ ओर निषाद गांधार ये परस्पर संवादि है ॥ अरु षड्जादिक पंचम स्वरनमें विवादि है ॥ ओर मतंगके मतमेंतो निषाद अरु गांधार परस्परमें तो संवादि है ॥ ओर रिषभ ओर धैवतकैं विवादि है अैसे रिषभ अरु धैवत संवादि है परस्परमें ओर निषाद गांधारकें विवादि है । अरु जिन दोनुं स्वरनकें बीचमें एक श्रुतिको अंतर होय ते स्वर परस्पर विवादि जांनियें । जैसे धवत अर निषाद परस्पर विवादि है ॥ अैसेहि रिषभ-गांधार परस्पर विवादि है । ओर जिन दोनुं स्वरनके बीचकी श्रुतिमें ॥ संवादि वा विवादिको लक्षण न पावै है ।

॥ अथ विणाप्रस्तार चक्र लिख्यते ॥

स्वर	श्रुति
	तीव्रा
	कुमुद्वती
	मंदा
षड्ज	छंदोवती
	दयावती
	रंजनी
रिषभ	रतिका
	रौद्रि
गांधार	क्रोधा
	वज्रिका
	प्रसारिणि
	प्रीति
मध्यम	
पंचम	
धैवत	
निषाद	

...मूर्छ... सौविरी । ४ । ...इन्हों परस्पर विवादि स्वर...

...ध्यम ग्रामकी मूर्छना लिख्यते

। हेमकपर्दिनी । ४ । मै...

...ग्रामकी मूर्छना लिख्यते

...चेत्रा । ४ । रेवती । ५

मूर्छना संपूर्णम ॥

...शुद्ध मूर्छनाके जांनि...

...थे । एही काकली...

...हते अंतर शब्द...

ओर इनमें ... जांनि...

लक्षण संपू... मूर्छनाके...

अथ ग्रामकें लक्षण लिख्यते ॥ जहां प्रथम स्वर आपनी चोथी श्रुति आलापनीमें ठहरे ॥ सो षड्ज ग्राम जांनिये ॥ अरु जहां पंचम स्वर अपनी तीसरी श्रुति संदीपनीमें विकृत होयकें ठहरे ॥ सो मध्यम ग्राम जांनियै ॥ अथवा जहां धैवत तीन श्रुतिकों होय सो ॥ षड्जग्राम जांनियें ॥ अरु जहां पंचमकी पीछली एक श्रुतिलेकें। च्यार श्रुतिकों विकृत धैवत होई सो मध्यम ग्राम जांनियें॥ ओर जहां गांधार स्वर रिषभकी पीछली एक श्रुति । अरु मध्यमकी पहली एक श्रुतिलेकें च्यार श्रुतिको विकृत होई ॥ अरु धैवत स्वर पंचमकी एक श्रुति लेकें । ओर निषाद धैवतकी एक पीछली श्रुति ॥ अरु षड्जकी एक पहली श्रुति लेकें । च्यारु श्रुतिकों विकृत होई । सो गांधार ग्राम जांनियें ॥ या गांधार ग्रामकों नारदजीनें स्वरगमें वरत्यौ है ॥ यातें यह ग्राम मनुष्यलोकमें नही है ॥ ओर सातों स्वरननें षड्ज अरु मध्यम दोनुं स्वर ॥ च्यारी चारी श्रुतिकें हें अर वह स्वर देवताका कुलमें उतपन्न भये है ॥ यातें ये ग्रामथापि स्वर हैं। इनहीके नामसों दोय ग्राम जांनियें ॥ ओर गांधारदेवताकुलमें उतपन्न भयो है । यातें गांधारहु ग्रामथापि है । तातें नारदजीनें गांधार ग्राम गायो है । यातें तीसरी ग्राम गांधारके नामसों जांनियै ॥ अब तीनों ग्रामकें देवता कहे ह । तहां षड्ज ग्रामके तो ब्रह्माजी देवता है । १ ॥ अरु मध्यम ग्रामके विष्णु देवता है ... अरु गांधार ... गांधार ... देवता है । ३ । यातें श्रुति स्वरकों समूह-

ही मध्यम जांनियें ॥ मध्यमकी संमार्जनी श्रुत ...ममें वसे हें ॥ ऐसे श्रुति स्वर मूर्छना संज्ञा पावै ॥ यांको शुद्ध मध्यम गांधार कहत ...ति हें ॥ यातें स्वरादिकनके वसिवे भेद है ॥ जब मध्यम अपनी प्रसारिणी श्रुति दूस... ग्राम । अरु मध्यम ग्राम । ये दोनुं जांनियें । १ । जब अपनी प्रीति श्रुति तिसरीपें ठह... गांधार ग्राम तो स्वरगमें वरत्यो जांनियें ॥ २ ॥ अरु जब अपनी संमार्जनी चोथी श्रु... तो सुद्ध स्वर वरते जाय हें॥ ...ध्यम जांनियें ॥ ३ ॥ ओर पंचमकी एक पहली क्षिति श्रु... ग्राम ... संपूर्णम् ॥ मध्यम जांनियें । ४ । ओर पंचमकी रक्ता श्रुति दूसरीकों ले... वर... । आरोह अव-

तब ...जांनियें । ५ । अरु जब पंचमकी तीसरी श्रुति संदीप... ...वनेंकों रागकी लै षड्ज...ध्यम जांनियै । या तीव्रतममध्यमको मृदु पंचम कहत है ॥ ...की हें । सो वह षड्जकी कु... कहत है ॥ जब पंचम अपनी चोथी आलापनि श्रुतिपें प्रसरी साधारण

। २ । काकली । तिसरी अंतर । ३ । काकली । चोथी अंतर ॥४॥ काकलीकें । ये च्यार भेद जांनिये । तहां दोनुं ग्रामकी शुद्ध मूर्छना चौदा प्रकारकी होत है । तामें प्रथम षड्ज ग्रामकी सात मूर्छना ताके नाम कहु हुं प्रथम तो उत्तरमंद्रा । १ । अर दुसरी रजनी । २ । अर तिसरी उत्तरायता । ३ । अर चोथी शुद्ध षड्ज । ४ । अर पंचमी मत्सरकृता । ५ । अर छटी अश्वक्रांता । ६ । अर सातमी अभिरुद्गता ॥ ७ ॥ **इति षड्ज ग्रामकी सात मूर्छना संपूर्णम् ॥**

अथ मध्य ग्रामकी सात मूर्छना ताके नाम लिख्यते सोविरी । १ । हरिणाश्वा । २ । कलोपनता । ३ । शुद्धमध्या । ४ । मार्गी । ५ । पौरवी । ६ । हृषका ॥ ७ ॥ **इति मध्यम ग्रामकी मूर्छना सात संपूर्णम् ॥**

अथ गांधार ग्रामकी सात मूर्छनाके नाम लिख्यते ॥ नंदा ॥ १ ॥ विविशाखा । २ । सुमुषी । ३ । विचित्रा । ४ । रोहिणी । ५ । सुषा ६ । आलापनी ॥ ७ ॥ **इति गांधार ग्रामकी सात मूर्छना संपूर्णम् ॥**

अथ मरीर विणाके तीनो ग्रामकी मूर्छना तिनके नाम एकीस है नारदमुनीने कहे है ते संगीतमीमांसा वा संगीतरत्नाकरके मतसों लिख्यते ॥ प्रथम षड्ज ग्रामकी मूर्छना कहु हुं । उत्तरमंद्रा । १ । अभिरुद्गता । २ । अश्वक्रांता । ३ । सौविरी । ४ । हृष्यका । ५ मूर्छनानको कूट- रायता । ६ । रजनी । ७ । अथ मध्यम ग्रामकी मूर्छना लिख्यते । १ । विश्वहृता । २ । चंद्रा । ३ । हेमकपर्दिनी । ४ । मै- । ६ । पिआ । ७ । अथ गांधार ग्रामकी मूर्छना लिख्यते ला । २ । सुमुखी । ३ । विचित्रा । ४ । रेवती । ५ । ७ । **इति मरीरग्राम मूर्छना संपूर्णम ॥**

ये नाम पहले तो शुद्ध मूर्छनाके जांनि- काकली सब्द लगाये । एही काकली ओर इनमें पहले अंतर शब्द जांनिये । ३ । ओर इनमें जांनि- कली अंतर मूर्छनाके ६

सात स्वरन	...नको दुवता शंभू.	सात स्वर-	ना ...ं.	...स्वर-	...

बाकीकी हरिणाश्वादिक छह मूर्छना मध्यम ग्रामके गांधारसो लेकें ॥ अवरोह-क्रम करिकें ॥ आये जो निचले निचले षड्जग्रामके पंचम परयंत छह स्वर तिन करिकें जांनियें ॥ अथ संगीत मीमांसाके मतसों षड्जग्रामकी शुद्ध सात मर्छ-नाको उदाहरण जंत्र लिख्यते । भद्र । १ । मध्य । २ । तार । ३ । इन तीनों ठिकाणोंके जोगतें मूर्छनाको आरंभ होत हैं ॥ याही क्रमसों सब मूर्छनानके ॥ सात सात भेद एक एकके जोनि ॥ ऐसेंही जंत्रमें समझिलीजिये ॥ **इति मूर्छना प्रकार प्रकरण संपूर्णम् ॥ अथ तानको लक्षण लिख्यते ॥** मूर्छनानेंमें विस्तार प्रगट होतहै ताको तान कहीये । सो वह तांन अनेक प्रकारको है । तहां प्रथम तानके दोय भेद हैं । एक तो शुद्ध तान । १ । दुसरी कूट तान । २ । तहां शुद्ध तानके भेद कहे है । तहां मूर्छनामें एक स्वरके दूर कीयेतें खाडव शुद्ध तान होत है ॥ ओर दूर दूर स्वर दूर कीयेतें ॥ ओडव शुद्ध तान होत है । यह तान मूर्छना ते भये हे । यातें मूर्छनाही हैं ॥ परंतु स्वरके घटायेंतें । इनकों तान कहते हें ॥ और मूर्छना तो सात स्वरकी कहिये । ओर छह स्वरको पांच स्वरको तान संज्ञा पावै है । यहां शुद्ध मूर्छनातें चोरासी । ८४ । तांन होत हें ॥ ओर काकली । १ । अंतर । २ । तद्धयोपेत । ३ । मूर्छनातें तानही होत हें । यह भरतमुनिको मत है ॥ **अथ कूटतानको लक्षण लिख्यते ॥** मूर्छनाके सात स्वर ॥ जब मूर्छना क्रम छोडिकें उलट पलट होय । तव वें मूर्छनानको कूट-तान कहत है ॥

॥ अथ दोनो ग्रामनकी खाडव औडव तानकी संख्या लिख्यते ॥

स	रि	ग	म	प	ध	नि	मध्यम ग्रामके षड्जसों लेकें मध्यम ग्रामके निषादतांई जो सात स्वरनकरिके षड्ज ग्रामकी पहली उत्तरमंद्रा मूर्छना जांनिये १ देवता यक्ष.
नि	स	रि	ग	म	प	ध	षड्ज ग्रामके निषादसों लेकें मध्यम ग्रामके धैवततांई सात स्वरन रिकें षड्ज ग्रामकी रजनीमूर्छना जांनियै २ यांको देवता राग
ध	नि	स	रि	ग	म	प	षड्ज ग्रामके धैवतसो लेके मध्यम ग्रामके पंचमतांई षड्ज ग्रामकी उत्तरायता मूर्छना जांनिये ३ यां
प	ध	नि	स	रि	ग	म	षड्ज ग्रामके पंचमसो लेकें मध्यम ग्रा करिके षड्ज ग्रामकी सुद्ध षड्जा मूर्छना जानि
म	प	ध	नि	स	रि	ग	षड्ज ग्रामके मध्यमसो लेकें मध्यम ग्रामके गांधारतांई करिकें षड्ज ग्रामकी मत्सरिकृता मूर्छना जांनिये ५ यांको देव
ग	म	प	ध	नि	स	रि	षड्ज ग्रामके गांधारसो लेके मध्यम ग्रामके रिषभतांई करिकें षड्ज ग्रामकी मूर्छना जो अश्वक्रांता जांनि
रि	ग	म	प	ध	नि	स	षड्ज ग्रामके रिषभसो लेके मध्यम ग्रामके षडजतांई रिकें षड्ज ग्रामकी अभिरुद्गता मूर्छना जांनिये ७ यां

षड्जग्रामके ... मध्यमके। ... जांनियै । ... षड्जकी ... कहत है ॥ जब पंचम अपनी चोथी ...

॥ अथ मध्यम ग्रामकी सुद्ध सात मूर्छनाको उदाहरणयंत्र लिख्यते ॥

म̄	प	ध	नि	स	रि	ग	मध्यम ग्रामकें मध्यमसो लेके गांधार ग्रामके गांधारतांई सात स्वरन ते मध्यम ग्रामतांईकी पहले सोविरी मूर्छना जांनिये १ यांको देवता शंभू.
ग	म	प	ध	नि	स	रि	मध्यम ग्रामकें गांधारसो लेकें गांधार ग्रामके रिषभतांई सात स्वर-नतें मध्यम ग्रामकी हरिणाश्वा मूर्छना जांनिये २ यांको देवता इंद्र है.
रि	ग	म	प	ध	नि	स	मध्यम ग्रामके रिषभसो लेकें गांधारे ग्रामके षड्जतांई सात स्वर-नतें मध्यम ग्रामकी कलोपनता मूर्छना जांनिये ३ यांको देवता पवन है.
स	रि	ग	म	प	ध	नि	मध्यम ग्रामके षड्जसो लेके मध्यम ग्रामके निषादतांई स[illegible] नतें मध्यम ग्रामकी शुद्ध मध्या मूर्छना जांनिये ४ यांको देवता गंधर्व [illegible]
नि	स	रि	ग	म	प	ध	षड्ज ग्रामके निषादसो लेके मध्यम ग्रामके धैवततांई सात स्वर-नतें मध्यम ग्रामकी मार्गीमूर्छना जांनिये ५ यांको देवता सिद्ध है.
ध	नि	स	रि	ग	म	प	षड्ज ग्रामके धैवतसो लेके मध्यम ग्रामकें पंचमतांई सात स्वरनतें मध्यम ग्रामकी पौरवी मूर्छना जांनिये ६ यांको देवता विरंचि है.
प	ध	नि	स	रि	ग	म	षड्ज ग्रामके पंचमसो लेकें मध्यम ग्रामके मध्यमतांई सात स्वरनतें मध्यम ग्रामकी ऋषिका मूर्छना जांनिये ७ यांको देवता सूरज.

॥ अथ काकलीनिषादको अरथ लिख्यते ॥ जब उग्रा ॥ १ ॥ क्षोभिणी । २ । इन दोय । श्रुतिनको शुद्ध निषाद है ॥ सो शुद्ध निषाद षड्जकी पहली दोय श्रुति तीव्रा ॥ १ ॥ कुमुद्वति ॥ २ ॥ इनसें तब च्यार श्रुतिकों निषाद होय ॥ सोवा काकली निषाद संज्ञा पावै ॥ इन मूर्छनामें काकलिनिषाद है यातें यह मूर्छना काकली है ॥

॥ अथ षड्ज ग्रामकी काकली मूर्छना सात ताको उदाहरण ॥

स	रि	ग	म	प	ध	नि	स	स	नि	ध	प	म	ग	रि	स	काकली उत्तर मंद्रा मूर्छना ॥ १ ॥
नि	स	रि	ग	म	प	ध	नि	नि	ध	प	म	ग	रि	स	नि	काकली रजनि मूर्छना । २ ।
ध	नि	स	रि	ग	म	प	ध	ध	प	म	ग	रि	स	नि	ध	काकली उत्तरायता मूर्छना । ३ ।
प	ध	नि	स	रि	ग	म	प	प	म	ग	रि	स	नि	ध	प	काकली शुद्ध षड्जा मूर्छना । ४ ।

॥ अथ षड्ज ग्रामकी काकली मूर्छना पांचसूं भेद उदाहरण ॥

म	प	ध	नि	स	रि	ग	म	म	ग	रि	स	नि	ध	प	म	काकली मत्सरिकृता मूर्छना । १ ।
ग	म		ध	नि	स	रि	ग		रि	स	नि	ध	प	म	ग	काकली अश्वक्रांता मूर्छना । २ ।
रि	ग	म	प	ध	नि	स	रि	रि	स	नि	ध	प	म	ग	रि	काकली अभिरुद्गता मूर्छना । ३ ।

॥ इति षड्ज ग्रामकी काकली मूर्छनी चप्तातको उदाहरण यंत्र संपूर्णम् ॥

॥ अथ मध्यम ग्रामकी काकली मूर्छना ७ को उदाहरण ॥

म	प	ध	नि	स	रि	ग	म	म	ग	रि	स	नि	ध	प	म
ग	म	प	ध	नि	स	रि	ग	ग	रि	स	नि	ध	प	म	ग
रि	ग	म	प	ध	नि	स	रि	रि	स	नि	ध	प	म	ग	रि
स	रि	ग	म	प	ध	नि	स	स	नि	ध	प	म	ग	रि	स
नि	स	रि	ग	म	प	ध	नि	नि	ध	प	म	ग	रि	स	नि
ध	नि	स	रि	ग	म	प	ध	ध	प	म	ग	रि	स	नि	ध
प	ध	नि	स	रि	ग	म	प	प	म	ग	रि	स	नि	ध	प

अब जंत्रको प्रकार लिखुहूं ॥ जंत्रका उभा कोठा ॥ ७ ॥ आड़ा कोठा । १४ । तहां उपरला कोठा मध्यम ग्रामकी काकली ॥ प्रथम कोठाकी सुं लेनें कोठे चोदातांई ॥ प्रथमकी काकली सौवीरी मूर्छना । १ । दूसराकी कोठेकी काकली हरिणाश्वा मूर्छना । २ । तीसराकी काकली कलोपनता मूर्छना ॥ ३ ॥ चोथाकी काकली सुद्ध मध्या मूर्छना ॥ ४ ॥ पांचवांकी काकली मार्गी मूर्छना । ५ । छट्टीकी पौरवी मूर्छना ॥ ६ ॥ सातवांकी काकली हष्यका मूर्छनाँ ॥ ७ ॥ इनप्रमाण सात कोठेके मूर्छना यंत्र समझिये ॥ इति मध्यम ग्रामकी काकली मूर्छना सातको उदाहरण यंत्र संपूर्णम् ॥ श्री राधागोविंदाभ्यां नमः ॥

अथ षड्ज ग्राम वा मध्मम ग्राम इन दोनुंनकी चोहदे । १४ । अंतर मूर्छना है ॥ तिनको लक्षण लिख्यते ॥ जब इन मूर्छना नांम सुद्ध गांधारके स्थान अंतर गांधार लीजिये ॥ अरु सुद्ध गांधार नहीं लीजियै ॥ तब ये अंतर मूर्छना होत है ॥ अथ अंतर गांधारको अरथ लिख्यते ॥ जहां रौद्रि ॥ १ ॥ क्रोधा ॥ २ ॥ इन दोय श्रुतिनको शुद्ध गांधार मध्यम स्वर दोई पहली श्रुति ॥ एकतो वज्रिका ॥ १ ॥ दूसरी प्रसारिणी ॥ २ ॥ इनकों लेकें चार श्रुतिको गांधार होई ॥ ताको नाम अंतर गांधार जांनियै ॥ मूर्छनानमें अंतर गांधार जांनियै ॥ इति ॥

॥ अथ षड्ज ग्रामकी अंतर मूर्छना सात ७ को उदाहरणयंत्र लिख्यते ॥

स	रि	ग	म	प	ध	नि	स	स	नीं	ध	प	म	ग	रि	स	१
नी	स	रि	ग	म	प	ध	नी	नीं	ध	प	म	ग	रि	स	नि	२
ध	नि	स	रि	ग	म	प	ध	ध	प	म	ग	रि	स	नि	ध	३
प	ध	नि	स	रि	ग	म	प	प	म	ग	रि	स	नि	ध	प	४
म	प	ध	नि	स	रि	ग	म	म	ग	रि	स	नि	ध	प	म	५
ग	म	प	ध	नि	स	रि	ग	ग	रि	स	नि	ध	प	म	ग	६
रि	ग	म	प	ध	नि	स	रि	रि	स	नि	ध	प	म	ग	रि	७

अब यंत्रको प्रकार लिखत हुं ॥ तहां उपरला कोठाकी वलींमें प्रथमकी अंतर उत्तरमंद्रा मूर्छना ॥ १ ॥ दूसरीकी अंतररजनी मूर्छना ॥ २ ॥ तीसरी उत्तरायता मूर्छना ॥ ३ ॥ चौथी अंतर शुद्ध षड्जा मूर्छना ॥ ४ ॥ पंचमी अंतर मत्सरिकृता मूर्छना ॥ ५ ॥ छटी अंतर अश्वक्रांता मूर्छना ॥ ६ ॥ सातमी अंतर अभिरुद्गता मूर्छना ॥ ७ ॥ इन प्रकार करिकें । सात स्वरनके अंतर मूर्छनानको यंत्रके मांहिनें समझिये ॥ इति षड्ज ग्रामकी अंतरमूर्छना सात ७ को यंत्रमें उदाहरण दिखाईयोहें समझिवेके ॥ श्रीमदनमोहनाय नमः ॥ श्रीगोवर्धनाय नमः ॥ ॥ श्रीरस्तु ॥

॥ अथ मध्यम ग्रामकी अंतर मूर्छना ७ को उदाहरण ॥

म	प	ध	नि	स	रि	ग	म	म	ग	रि	स	नि	ध	प	म
ग	म	प	ध	नि	स	रि	ग	ग	रि	स	नि	ध	प	म	ग
रि	ग	म	प	ध	नि	स	रि	रि	सं	नि	ध	प	म	ग	रि
स	रि	ग	म	प	ध	नि	स	स	नि	ध	प	म	ग	रि	स
नि	स	रि	ग	म	प	ध	नि	नि	ध	प	म	ग	रि	स	नि
ध	नि	स	रि	ग	म	प	ध	ध	प	म	ग	रि	स	नि	ध
प	ध	नि	स	रि	ग	म	प	प	ग	ग	रि	स	नि	ध	प

अब यंत्रको प्रकार कहूहूं ॥ तहां उंपरे उपरले कोठे प्रथमकोमें ॥ अंतर सौविरि मूर्छना ॥ १ ॥ दूसरामें अंतर—हरिणाश्वा मूर्छना ॥ २ ॥ तीसरामें ॥ अंतर—कलोपनता मूर्छना ॥ ३ ॥ चोथामें । अंतर—सुद्धमध्या मूर्छना ॥ ४ ॥ पांचवांमें । अंतर—मारगी मूर्छना ॥ ५ ॥ छहटामें ॥ अंतर—ऊर्मि मूर्छना ॥ ६ ॥ सातवांमें । अंतर—हृष्यका मूर्छना ॥ ७ ॥ इन भांति मध्यम ग्रामकी तिर्यक् कोठकि ॥ १६ ॥ सोला मूर्छना जांनिये ॥ इति मध्यम ग्रामकी अंतर मूर्छना संपूर्णम् ॥ श्रीगोदुग्धाधीशाय नमः ॥ अथ षड्ज ग्राम वा मध्यम ग्राम इन दोनोके चोहदे ॥ १४ ॥ काकली ॥ १ ॥ अंतर ॥ २ ॥ इन दोन्यो करिकें जुक्त मूर्छ है ॥ ते काकलि अंतर—तद्वयोपेत मूर्छना कहावे हें तांको लक्षण लिख्यते ॥ इन मूर्छनानमें ॥ जब गांधार ॥ अरु शुद्ध निषाद ॥ इन दोनुनके स्थानमें ॥ अंतर गांधार ॥ अरु काकलि निषाद होइ ॥ तब तद्वयोपेत मूर्छना जांनिये ॥ अथ षड्ज ग्रामकी काकली ॥१॥ अंतर ॥२॥ तद्वयोपेत मूर्छना सात ७ वीणांको यंत्रमें उदाहरण समजिकें लिख्यते ॥ ॥ श्रीरस्तु ॥

॥ अथ षड्ज ग्रामकी काकली १ अंतर २ ॥

॥ अथ तद्वयोपेत मूर्छना ७ उदाहरण ॥

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	०
स	रि	ग	म	प	ध	नि	स	स	नि	ध	प	म	ग	रि	स	१
नि	स	रि	ग	म	प	ध	नि	नि	ध	प	म	ग	रि	स	नि	२
ध	नि	स	रि	ग	म	प	ध	ध	प	म	ग	रि	स	नि	ध	३
प	ध	नि	स	रि	ग	म	प	प	म	ग	रि	स	नि	ध	प	४
म	प	ध	नि	स	रि	ग	म	म	ग	रि	स	नि	ध	प	म	५
ग	म	प	ध	नि	स	रि	ग	ग	रि	स	नि	ध	प	म	ग	६
रि	ग	म	प	ध	नि	स	रि	रि	स	नि	ध	प	म	ग	रि	७

अब यंत्रको प्रकार कहूहूं ॥ तहां उपरलेहि उपरले कोठमें प्रथमकामें ॥ तद्व-योपेत उत्तरमंद्रा मूर्छना ॥ १ ॥ दूसरामें तद्वयोपेत रजनि मूर्छना ॥ २ ॥ तीसरामें ॥ तद्वयोपेत उत्तरायता मूर्छना ॥ ३ ॥ चोथामें ॥ तद्वयोपेत शुद्ध षड्जा मूर्छना ॥ ४ ॥ पांचवांमें ॥ तद्वयोपेत मत्सरिकृता मूर्छना ॥ ५ ॥ छहटामें ॥ तद्वयोपत अश्वक्रांता मूर्छना ॥ ६ ॥ सातवांमें तद्वयोपेत अभिरुद्गता मूर्छना ॥ ७ ॥ इति षड्ज ग्रामकी काकली ॥ १ ॥ अंतर ॥ २ ॥ तद्वयोपेत मूर्छना ॥ ७ ॥ उदाहरण संपूर्णम् ॥

॥ अथ मध्यम ग्रामकी काकली अंतर तद्वयोपेत मूर्छना ७ उदाहरण ॥

म	प	ध	नि	स	रि	ग	म	म	ग	रि	स	नि	ध	प	म	१
ग	म	प	ध	नि	स	रि	ग	ग	रि	स	नि	ध	प	म	ग	२
रि	ग	म	प	ध	नि	स	रि	रि	स	नि	ध	प	म	ग	रि	३
स	रि	ग	म	प	ध	नि	स	स	नि	ध	प	म	ग	रि	स	४
नि	स	रि	ग	म	प	ध	नि	नि	ध	प	म	ग	रि	स	नि	५
ध	नि	स	रि	ग	म	प	ध	ध	प	म	ग	रि	स	नि	ध	६
प	ध	नि	स	रि	ग	म	प	प	म	ग	रि	स	नि	ध	प	७

अब यंत्रको प्रकार कहूहूं ॥ तहां उपरले कोठमें प्रथमकोमें तद्वयोपेत सौवीरी मूर्छना ॥ १ ॥ दूसरोंमें ॥ तद्वयोपेत हरिणाश्वा मूर्छना ॥ २ ॥ तीसरामें तद्व-योपेत कलोपनता मूर्छना ॥ ३ ॥ चोथेमें तद्वयोपेत सुद्धमध्या मूर्छना ॥ ४ ॥ पांचवांमें ॥ तद्वयोपेत मारगी मूर्छना ॥ ५ ॥ छहटामें ॥ तद्वयोपेत पौरवी मूर्छना ॥ ६ ॥ सातवांमें । तद्वयोपेत हृष्यका मूर्छना ॥ ७ ॥ इति मध्यम ग्रामकी काकलि ॥ १ ॥ अंतर ॥ २ ॥ तद्वयोपेत मूर्छना सात ७ को उदाहरण यंत्रमें समजिये संपूर्णम् ॥

अथ छप्पन मूर्छनानमें एक एक मूर्छनाके ॥ सात सात भेद होतहे ताको प्रकार लिख्यते ॥ तहां जा मूर्छनाके सात भेद करिनें होय ता मूर्छनाके क्रमसो

प्रथमादिक एक एक स्वर छोडीकें बाकीके स्वरनको उच्चार करिजे ॥ ओर जितनें स्वर छोडे तितनें क्रमसों अंतमें पडियें ॥ यहां छह स्वर छोडियें ॥ अरु सातमों स्वर नहीं छोडियें ॥ तब पहले भेदसों ॥ छह भेद मिलिकें ॥ सात भेद होत है ॥ ऐसे छप्पन ५६ भेद मूर्छनानके तीनसेंब्याण्णव ३९२ भेद होत है ॥

॥ अथ षड्ज ग्रामकी शुद्ध सात मूर्छनानमें पहली लिखि ज्यो उत्तरमंद्रा ताके सात भेद लिख्यते ॥

स	रि	ग	म	प	ध	नि	स	स	नि	ध	प	म	ग	रि	स	१
रि	ग	म	प	ध	नि	स	रि	रि	स	नि	ध	प	म	ग	रि	२
ग	म	प	ध	नि	स	रि	ग	ग	रि	स	नि	ध	प	म	ग	३
म	प	ध	नि	स	रि	ग	म	म	ग	रि	स	नि	ध	प	म	४
प	ध	नि	स	रि	ग	म	प	प	म	ग	रि	स	नि	ध	प	५
ध	नि	स	रि	ग	म	प	ध	ध	प	म	ग	रि	स	नि	ध	६
नि	स	रि	ग	म	प	ध	नि	नि	ध	प	म	ग	रि	स	नि	७

॥ अथ षड्ज ग्रामकी शुद्ध सात मूर्छनानमें दूसरी रजनी ताके सात भेद लिख्यते ॥

नि	स	रि	ग	म	प	ध	नि	नि	ध	प	म	ग	रि	स	नि	१
स	रि	ग	म	प	ध	नि	स	स	नि	ध	प	म	ग	रि	स	२
ि	ग	म	प	ध	नि	स	रि	रि	स	नि	ध	प	म	ग	रि	३
ग	ग	प	ध	नि	स	रि	ग	ग	रि	स	नि	ध	प	म	ग	४
म	प	ध	नि	स	रि	ग	म	म	ग	रि	स	नि	ध	प		५
प	ध	नि	स	रि	ग	म	प	प	म	ग	रि	स	नि	ध	प	६
ध	नि	स	रि	ग	म	प	ध	ध	प	म	ग	रि	स	नि	ध	७

॥ अथ मध्यम ग्रामकी शुद्ध ७ मूर्छनानमें पहली सोविरि ताके सात भेद लिख्यते ॥

म	प	ध	नि	स	रि	ग	म	म	ग	रि	स	नि	ध	प	म
प	ध	नि	स	रि	ग	म	प	प	म	ग	रि	स	नि	ध	प
ध	नि	स	रि	ग	म	प	ध	ध	प	म	ग	रि	स	नि	ध
नि	स	रि	ग	म	प	ध	नि	नि	ध	प	म	ग	रि	स	नि
स	रि	ग	म	प	ध	नि	स	स	नि	ध	प	म	ग	रि	स
रि	ग	म	प	ध	नि	स	रि	रि	स	नि	ध	प	म	ग	रि
ग	म	प	ध	नि	स	रि	ग	ग	रि	स	नि	ध	प	म	ग

॥ अथ मध्यम ग्रामकी शुद्ध ७ मूर्छनानमें दूसरी हरिणाश्वा ताके सात भेद लिख्यते ॥

ग	म	प	ध	नि	स	रि	ग	ग	रि	स	नि	ध	प	म	ग
म	प	ध	नि	स	रि	ग	म	म	ग	रि	स	नि	ध	प	म
प	ध	नि	स	रि	ग	म	प	प	म	ग	रि	स	नि	ध	प
ध	नि	स	रि	ग	म	प	ध	ध	प	म	ग	रि	स	नि	ध
नि	स	रि	ग	म	प	ध	नि	नि	ध	प	म	ग	रि	स	नि
स	रि	ग	म	प	ध	नि	स	स	नि	ध	प	म	ग	रि	स
रि	ग	म	प	ध	नि	स	रि	रि	स	नि	ध	प	म	ग	रि

तहां खाडवतांन षड्ज ग्रामकी ॥ सातों मूर्छनामें क्रमसों ॥ षड्ज ॥ १ ॥ रिषभ ॥ २ ॥ पंचम ॥ ३ ॥ निषाद य दूरि कीजिये ॥ तब अठाइस ॥ २८ ॥ खाडवतांन होत है ॥ अरु मध्यम ग्रामकी सातों मूर्छनामें क्रमसों षड्ज ॥ १ ॥

रिषभ । २ । गांधार । ३ । ये दूरि कीजिये ॥ तब एकईस २१ खाडव तांन होत है ॥ ऐसे दो ग्रामकी मिलिके येगुणपचास ॥ ४९ ॥ खाडव तांन सुध्द है ॥ और औडव तांन ॥ षड्ज ग्रामकी सात मूर्छनामें क्रमसों ॥ षड्ज पंचम । १ । गांधार-निषाद । २ । रिषभ पंचम । ३ । ये दूरि कीजिये ॥ तब इकीस । २१ । औ-डव तांन होत है । अरु मध्यम ग्रामकी ॥ सात मूर्छनामें क्रमसों रिषभ धैवत।१। गांधार निषाद।२। ये दूरि कीजिये ॥ तब चोदह ।१४। औडव तान होते है ॥ ऐसे दोनु ग्रामकी मिलिके पेंतिस ॥३५॥ औडव तांन होत है ॥ ऐसे खाडवकी येंगुण-पचास । ४९ । तांन औडवकी । ३५ । पेंतिस तांन ॥ ये दोनु मिलिके सुध्द तांन चोरासी । ८४ । जांनिये ॥ अथ चोरासि शुद्ध तांननके क्रमसों उदाहरण नाम लिख्यते ॥ तहां खाडवतान दोन्यो ग्रामनकी येगुणपचास । ४९ । तांन है ॥ तहां षड्ज ग्राममें खाडव तांन अठाइस । २८ । है ॥ अरु मध्यम ग्राममें खाडव तांन एकईस । २१ । तांन है ॥ ऐसें भेद यां खाडवके येगुणपचास ।४९। तांन हैं ॥ औडव तांन दोनों ग्राममें पेंतिस । ३५ । तांन है ॥ तहां षड्ज ग्राममें ॥ औडव तांन एकईस २१ हें ॥ अरु मध्यमग्राममें औडव तांन चौदे हें । १४ । खाडव भेदें येगुणपचास । ४९ । औडव भेद पेंतिस । ३५ । ये दोनो भेद मिलिके चो-रासि । ८४ । भेद तांन होत हें । अब इनको सुध्द तांन कहत हें ॥ तहां पहले षड्ज ग्रामकी अठाइस ।२८। तान खाडव हें ॥ तिनके क्रमसें नाम लिख्यते ॥ तहां षड्ज स्वरहीन छह स्वरकी तानको सात भेद तिनके नाम लिख्यते ॥ तहां पहली तांनको नाम अग्निष्टोम । १ । दूसरी तांनको नाम ॥ अत्यग्निष्टोम । २ । तीसरी तांनको नाम वाजपेय । ३ । चोथी तांनको नाम । षोडसी । ४ । पांचवी तांनको नाम । पुंडरीक । ५ । छटी तांनको नाम अश्वमेध । ६ । सातमी तांनको नामें राजसूय । ७ । इति षड्ज स्वरहीन स्वरकी तानके नाम संपूर्णम् ॥ अथ रिषभहीन स्वरकी तांनके सात भेद लिख्यते ॥ तहां पहली तांनको नाम । स्वि-ष्टकृत । १ । दूसरी तांनको नाम बहुसवर्णं । २ । तीसरी तांनको नाम गोसव । ३ । चोथी तांनको नाम । महावृत । ४ । पांचमी तांनको नाम । विश्वजित । ५ । छहटि तांनको नाम ॥ ब्रह्मयज्ञ । ६ । सातमी तांनको नाम ॥ प्राजापत्य ॥ ७ ॥ इति रिषभहीन छह स्वरकी तांनके नांम संपूर्णम् ॥ अथ पंचमहीन छह

स्वरकी तानके नाम लिख्यते ॥ अश्वक्रांता । १ । रथक्रांता । २ । विष्णुक्रांता । ३ । सूर्यक्रांत । ४ । गजक्रांत । ५ । बलभृत । ६ । नागयज्ञ । ७ । अथ निषादहीन छह स्वरनकी तानके नाम लिख्यते ॥ चातुर्मास्य । १ । संस्थाख्य । २ । शस्त्र । ३ । अक्थ । ४ । सौत्रामणि । ५ । चित्रा । ६ । उद्भिद । ७ । इति षड्ज ग्रामकी अठाइस । २८ । तानके नाम संपूर्णम् ॥ अथ मध्यम ग्राममें षड्ज स्वरहीन छह स्वरनकी तानके सात भेद तिनको नाम लिख्यते ॥ सावित्रि । १ । अर्ध सावित्रि । २ । सर्वतोभद्र । ३ । आदित्यायन । ४ । गवायन । ५ । सर्वायन । ६ । कौडपायन । ७ । इति षड्ज स्वरहीन छह स्वर तान नाम मध्यम ग्राममें संपूर्णम् ॥ अथ रिषभहीन छह स्वरन तानके नाम लिख्यते ॥ अग्निचित । १ । द्वादशाह । २ । उपांश । ३ । सोमाद्विय । ४ । अश्वप्रतिग्रहो । ५ । बर्हि । ६ । अभ्युदय । ७ । इति रिषभ स्वरहीन छह स्वर तान तिनको भेद संपूर्णम् ॥ अथ गांधारहीन छह स्वरके तानके नाम लिख्यते ॥ सर्वस्वदक्षण । १ । दीक्षा । २ । सोमख्या । ३ । समिदाह्वय । ४ । स्वाहाकार । ५ । तननपात । ६ । गोदोहन । ७ । इति मध्यम ग्रामके छह स्वरनकी तानके नाम संपूर्णम् ॥ इति दोनो ग्रामनकी खाडव तान । ४९ । संपूर्णम् ॥ अथ षड्ज ग्राममें औडव तान इकईस । २१ । तिनके नाम लिख्यते ॥ तहां पहले षड्ज स्वर पंचम स्वरहीन पांच स्वरनकी तानके भेद नाम लिख्यते ॥ इडा । १ । नरमेध । २ । येन । ३ । वज्र । ४ । इष । ५ । अंगिरा । ६ । कंक । ७ । अथ निषाद गांधारहीन पांच स्वरनकी तानके नाम लिख्यते ॥ ज्योतिष्टोम । १ । दर्श । २ । नांदी । ३ । पौर्णमासी । ४ । हयप्रतिग्रह । ५ । एत्रि । ६ । सोरभ । ७ । अथ रिषभ पंचमहीन पांच स्वरनकी तानके नाम लिख्यते ॥ सौभाग्यकृत । १ । कारीरी । २ । शांतिकृत । ३ । पुष्टिकृत । ४ । वैततेय । ५ । उच्चाटन । ६ । वशीकरन । ७ । इति षड्ज ग्रामकी इकईस । २१ । औडव तान संपूर्णम् ॥ अथ मध्यम ग्रामकी चोहदे।१४। औडव तानके नाम लिख्यते ॥ तहां पहले रिषभ-स्वर ॥ धैवत स्वरहीन ॥ पांच स्वरकी तानके नाम लिख्यते ॥ त्रैलोकमोहन । १ । वीर । २ । कंदर्प बलसातन । ३ । संखचूड । ४ । गजछाय । ५ । रौद्रा । ६ । विष्णुविक्रम । ७ । अथ निषादगांधारहीन पांच स्वरनकी तानके भेद नाम

लिख्यते ॥ भैरव । १ । कामद । २ । अवमृत । ३ । अष्टकपाल । ४ । स्विष्टकृत । ५ । वषट्कार । ६ । मोक्षदा । ७ । इति मध्यम ग्रामकी चोहदे । १४ । तांन औडव तिनके भेद नाम संपूर्णम् ॥ इति चोहोरासी ॥ ८४ ॥ तांनके नाम संपूर्णम् ॥ अथ षड्जग्रामके षड्जहीन खाडव शुद्ध तांननके यंत्र लिख्यते ॥ सो शुद्ध तांननके यंत्रमें उदाहरन जानिये ॥ ॥ श्री ॥

॥ अथ षड्ज ग्रामके षड्जहीन षाडवको यंत्र लिख्यते ॥ १ ॥

नि	ध	प	म	ग	रि	०	उत्तरमंद्रा अग्नि सोमयज्ञमे.
ध	प	म	ग	रि	०	नि	रजनि अग्निष्टोमयज्ञमे गावनी.
प	म	ग	रि	०	नि	ध	उत्तरायता वाजपेय यज्ञमें गावनी.
म	ग	रि	०	नि	ध	प	सुद्ध षड्जा सोडसो यज्ञमें गाणु.
ग	रि	०	नि	ध	प	म	मत्सरिकृता पुंडरीक यज्ञमें.
रि	०	नि	ध	प	म	ग	अश्वक्रांता अश्वमेध यज्ञमें.
०	नि	ध	प	म	ग	रि	अभिरुद्गता राजसूय यज्ञमें.

॥ अथ षड्ज ग्रामके रिषभहीन षाडव सुद्ध तांन ॥ २ ॥

नि	ध	प	म	ग	०	स	उत्तरमंद्रा स्वषकर्म यज्ञमें०
ध	प	म	ग	०	स	नि	रजनि बहु सुवर्ण यज्ञमें०
प	म	ग	०	स	नि	ध	उत्तरायता गोसव यज्ञमें०
म	ग	०	स	नि	ध	प	शुद्ध महाषड्जा महावन यज्ञमें०
ग	०	स	नि	ध	प	म	मत्सरिकृता चक्रत यज्ञमें०
०	स	नि	ध	प	म	ग	अश्वक्रांता ब्रह्मयज्ञमें०
स	नि	ध	प	म	ग	०	अभिरुद्गता प्राजापत्ययज्ञ०

॥ अथ षड्ज ग्रामके पंचमहीन षाडव शुद्ध तांन ॥ ३ ॥

नि	ध	०	म	ग	रि	स	उत्तरमंद्रा अश्वक्रांतयज्ञमें०
ध	०	म	ग	रि	स	नि	रजनी रथक्रांत यज्ञमें गावनी
०	म	ग	रि	स	नि	ध	उत्तरायता मूर्छना विष्णुक्रांतयज्ञ०
म	ग	रि	स	नि	ध	०	सुद्ध षड्जा सूक्रांत यज्ञमें गाव०
ग	रि	स	नि	ध	०	म	मत्सरिकृता मूर्छना गजाक्रांत०
रि	स	नि	ध	०	म	ग	अश्वक्रांत बलभृत यज्ञमें गा०
स	नि	ध	०	म	ग	रि	अभिरुद्गता मूर्छना नागयज्ञ०

॥ अथ षड्ज ग्रामके निषादहीन षाडव तान ॥ ४ ॥

०	ध	प	म	ग	रि	स	उत्तरमंद्रा चातुर्मास्य यज्ञमें गा०
ध	प	म	ग	रि	स	०	रजनी संस्थाख्य यज्ञमें गावनी.
प	म	ग	रि	स	०	ध	उत्तरायता मूर्छना शास्त्र यज्ञ०
म	ग	रि	स	०	ध	प	सुद्ध षड्जानु कथ यज्ञमें गावनी.
ग	रि	स	०	ध	प	म	मत्सरिकृता मूर्छना सौत्रामणि.
रि	स	०	ध	प	म	ग	अश्वक्रांता चित्रायापमें गावनी.
स	०	ध	प	म	ग	रि	अभिरुद्गता उद्भिद यज्ञमें०

॥ अथ मध्यम ग्रामक षड्जहीन षाडवतांन ॥ ५ ॥

ग	रि	०	नि	ध	प	म	सौविरि सावित्रि यज्ञमें गावनी.
रि	०	नि	ध	प	म	ग	हरिणाश्वा अर्द्ध सावित्रि यज्ञमे.
०	नि	ध	प	म	ग	रि	कलोपनता सर्वतोभद्र यज्ञमें.
नि	ध	प	म	ग	रि	०	सुद्ध मध्यादिव्यापन यज्ञमे गावनी.
ध	प	म	ग	रि	०	नि	मार्गी मूर्छनानागपक्षक यज्ञमे.
प	म	ग	रि	०	नि	ध	पौरवी मूर्छना सर्पानामयन यज्ञमें.
म	ग	रि	०	नि	ध	प	हृष्यका मूर्छना कौणपायन यज्ञमें.

॥ अथ मध्यम ग्रामके रिषभहीन षाडवतांन ॥ ६ ॥

ग	०	स	नि	ध	प	म	सौविरि अग्निचित यज्ञमे गा०
०	स	नि	ध	प	म	ग	हरिणाश्वा द्वादशाह यज्ञमे०
स	नि	ध	प	म	ग	०	कलोपनता उपांशु यज्ञमें गाव०
नि	ध	प	म	ग	०	स	शुद्धमध्या सोमाभिद यज्ञमें गाव०
ध	प	म	ग	०	स	नि	मार्गी अश्वप्रतिग्रह यज्ञमें गा०
प	म	ग	०	स	नि	ध	पौरवी बर्न्हिरथ यज्ञमे गावनी
म	ग	०	स	नि	ध	प	हृष्यका मूर्छना अभ्युदय यज्ञमे

॥ अथ मध्यम ग्रामके गांधारहीन षाडव ॥ ७ ॥

०	रि	स	नि	ध	प	म	सौवीरि सर्वस्व दक्षिण यज्ञमें०
रि	स	नि	ध	प	म	०	हरिणाश्वा दीक्षा यज्ञमें गा०
स	नि	ध	प	म	०	रि	कलोपनता सौमाख्य यज्ञमें गा०
नि	ध	प	म	०	रि	स	शुद्धमध्या मूर्छना समिदाव्हय यज्ञमें०
ध	प	म	०	रि	स	नि	मार्गीमूर्छना स्वाहाकार यज्ञमें०
प	म	०	रि	स	नि	ध	पौरवी मूर्छना तनूनपात यज्ञमें०
म	०	रि	स	नि	ध	प	हृष्यका गोदोह यज्ञमें गावनी०

॥ अथ षड्ज ग्रामके औडव शुद्ध तांन षड्ज पंचमहीन ॥ ८ ॥

नि	ध	०	म	ग	रि	०	उतरमंद्रा मूर्छना इडा यज्ञमें०
ध	०	म	ग	रि	०	नि	रजनि पुरुषमेध यज्ञमें गावनी.
०	म	ग	रि	०	नि	ध	उत्तरायता श्येन यज्ञमें गावनी.
म	ग	रि	०	नि	ध	०	शुद्ध षड्जा वज्रयागमें गावनी.
ग	रि	०	नि	ध	०	म	मत्सरिकृता इषु यज्ञमें गावनी.
रि	०	नि	ध	०	म	ग	अश्वक्रांता अंङ्गीरा यज्ञमें.
०	नि	ध	०	म	ग	रि	अभिरुद्गता कङ्क यज्ञमें.

॥ अथ षड्ज ग्रामके औडव तांन निषाद गांधारहीन ॥ ९ ॥

०	ध	प	म	०	रि	स	उत्तरमंद्राज्योतिष्टोम यज्ञमें गावनी.
ध	प	म	०	रि	स	०	रजनिमूर्छना दर्शयज्ञमें गावनी.
प	म	०	रि	स	०	ध	उत्तरायतानंदाख्य यज्ञमें गावनी.
म	०	रि	स	०	ध	प	श्रुतिषड्जा पौर्ण मासी यज्ञमें गावनी.
०	रि	स	०	ध	प	म	मत्सरिकृता अश्वप्रतिग्रह यज्ञमें गाव०
रि	स	०	ध	प	म	०	अश्वक्रांताग्रहोरात्रि यज्ञमें गावनी.
स	०	ध	प	म	०	रि	अभिरुद्गता सौरभ यज्ञमें गाव.

इति चोरासि तांनके लक्षण जंत्र संपूर्णम् ॥

अथ शुद्ध चोरासी तानके गायवेको फल लिख्यते ॥ इन चोरासि तांनको संगीतशास्त्रके जानिवे वारे पंडित इनकों समझिकें । स्वरकों वीणामें वा कंठमें अभ्यास करिकें ॥ शिवजिकी वा गोविंदजीकी स्तुतिमें षाडवऔडव तानको जो कोई पुरुष ॥ शास्त्रके मतसों वरते तो पुरुष जाके नांमको जो तांन हें ॥ वाही जगेको जो तान हें ॥ वाही जगेको सांगोपांग कीयेतें ॥ जो फल होय सो फल पावे है ॥ यह भरत मतंग याज्ञवल्क्य मंत्रमें । आदिश्वर मुनिश्वरनको वचन है ॥ यातें इन तांनको ॥ गायवो सुनि समझिवो ॥ शास्त्रसों विचारिवो महा फलको दाता है ॥ आयुरदाको बढावणोवालो है ॥ ओर या संसारके विघनेको दूरि करत हैं ॥ या समान च्यारो पदारथ देवेको ॥ ओर यातें उत्तम वस्त नहीं हें ॥ यह वेदको मत हें ॥ इति शुद्धतांननको गायवेको फल संपूर्णम् ॥

अथ संगीत मीमांसाके मतसों कूटताननको लक्षण लिख्यते ॥ येही मूर्छना क्रमसों कहे जे सात स्वर ते प्रस्ताररीति करिकें उलटे सुलटे होय ॥ तब उन मूर्छनानकों कूटतांन कहते हें ॥ सो कूटतांन एक एक मूर्छनामें ॥ अव रोह तांइ विस्तार कीये तें ॥ मूर्छना क्रमसहित पांच हैं ॥ जांके चालिस

भेद होत है ॥ इन भेदनको दोनु ग्रामनकी ॥ सुद्ध ॥ १ ॥ अंतर ॥ २ ॥ काकली ॥ ३ ॥ तद्वयोपेत ॥ ४ ॥ मूर्छनानके छप्पन ॥ ५६ ॥ भेद है ओर एक मूर्छनामे ५०४० तान होत है वांको छप्पनसे गुणे तो पूर्ण कूटतांननके दोय लाख ब्यायशी हजार दोसो चालीस $\frac{५०४०\times५६}{२८२२४०}$ होत है ॥ अथ षाडवताननकी संख्या लिख्यते ॥ इन मूर्छनानमें ॥ अंतरकों एक एक स्वर दूरि कीयेतें ॥ षाडवतांन होत हें ॥ तिनके प्रस्तारकी रितिसों एक एक मूर्छनानमें ॥ सातसेंविस भेद होत है ॥ ७२० ॥ इन भेदनको शुद्ध मूर्छनाके चोहदे १४ भेदसों गुणें तो दस हजारऐसी भेद होत है १००८० ॥ अथ औडवतांनकी संख्या लिख्यते ॥ इन मूर्छनानमें अंतिके दोयदोय स्वर दूरि कीये तो ॥ औडवतांन होत है ॥ तिनके प्रस्तार रितिसों ॥ एक एक मूर्छनामें एकसोविस १२० भेद होत हें ॥ इन भेदनको सुध्द मूर्छनाके चोहदे ॥ १४ ॥ भेदसो गुणे तो ॥ एक हजार छहसे ऐसि भेद होत हे ॥ १६८० ॥ ॥ अथ **च्यार स्वरकी तांनकी संख्या लिख्यते** ॥ इन मूर्छनानमें अंत्यके तीन तीन स्वर दूरि कीये तो ॥ चार स्वरकी तांन होत हें । तिनके । प्रस्तार रितिसों एक एक मूर्छनापें चोविस । २४ । भेद होत हें । इन भेदनकों सुध्द मूर्छनानके चोहदे १४ भेदनसों गुणे तो तिनसेछतिस । ३३६ । भेद होत है ॥ अथ तीन स्वरनकी तांनकी संख्या लिख्यते ॥ इन मूर्छनानमें अंतके च्यार च्यार स्वर दूरि कीये तो ॥ तीन स्वरकी तांन होत हें ॥ तिनके प्रस्तार रितिसों एक एक मूर्छनामें छह भेद होत हें ॥ ६ ॥ अथ दोय स्वरकी तांनकी संख्या लिख्यते । इन मूर्छनानमें अंतके पांच स्वर दूरि कीये तो । दोय स्वरकी तांन होत हें ॥ तिनके प्रस्तार रितिसों एक एक मूर्छनामें दोय दोय भेद होत हें ॥ अथ एक स्वरनकी तांनकी संख्या लिख्यते ॥ इन मूर्छनानमें अंतके छह छह स्वर दूरि कीयेतो ॥ एक स्वरकी तांन होत हें ॥ तिनके प्रस्तार रितिसों एक एक मूर्छनामें ॥ एक भेद होत हें ॥ ॥ इति ॥

अथ एक स्वरादिकनके क्रमसों नाम लिख्यते ॥ सात स्वरतांइ सातो तांनके नांम हे वाहां एक स्वरकी तांनकों नाम आर्चिक सो ऋग्वेदसों उपजी हें ॥ दोय स्वरकी तांनको नांम गाथिक ॥ सो यजुर्वेदसों उपजि हें ॥ तीन स्वरकी तांनको नांम सामिक । सो सामवेदसों उपजि हें ॥ च्यार स्वरकी तांनको

नांम स्वरांतर चतुस्वर ॥ सो अथर्वण वेदसों उपजी हें ॥ यातें तांको अथर्वण हू कहत है ॥ यह च्यारो तानसें राग पूरण नहीं होत हें ॥ पांच स्वरनकी तांनको नाम औडव ॥ ५ ॥ सो दोय वेदसों उपजी हें ॥ ऋग्वेदसुं दूसरा यजुर्वेदसुं ॥ सो छह स्वरकी तांनको नाम षाडव । ६ । सो तीन वेदसों उपजि हें ॥ ऋग्वेदसुं यजुर्वेदसुं सामवेदसुं ॥ सो सात स्वरकी तांनको नाम संपूरण ॥ ७ ॥ सो च्यार वेदसों उपजी हें ॥ ऋग्वेदसों यजुर्वेदसों सामवेदसों अथर्वण वेदसों । अथ चोदह मूर्छनाके पिछले एक स्वर दूरि कीये चोहदे । १४ । क्रम षाडव तांनको होत हें तिन क्रमनके शुद्ध काकली ॥ अंतर काकली अंतर द्वयोपेत ॥ इन भेदनसों संख्या लिख्यते । तहां चोदह मूर्छनामें उत्तरमंद्रा ॥ अरु—शुद्धमध्या मूर्छनामें । पिछलो एक स्वर दुरि कीयेसें । गांधारके मेलसों सुद्ध अरु अंतर । ये दोय दोय भेद है ॥ यातें दोय मूर्छनाके च्यार भेद हें ॥ अरु मत्सरिकृता सौविरि-प ध नि इन दोनुनमें ॥ पिछलो स्वर दूरि कीये तो ॥ निषादके मेलसों सुद्ध अरु काकली । ये दोय दोय भेद होत हें । यातें दोय मूर्छनाके च्यारि भेद हे ॥ ऐसे च्यार तो पहले भेद ॥ अरु च्यारु भेद मिलिकें च्यारो मूर्छनानके आठ भेद होत हे ॥ अब बाकीकी रहि रजनी । १ । उत्तरायता । २ । सुद्ध षड्जा । ३ । अश्वक्रांता । ४ । अभिरुद्गता ।५। हरिणाश्वा । ६ । कलोपनता ।७। मार्गि ।८। सौबिरी । ९ । हृष्यका । १० । ये दस मूर्छना पिछलो । एक स्वर दूरि किये तो निषाद । १ । अरु गांधार । २ । इन स्वरनके मिलितें शुद्ध । १ । काकलि । २ । अंतर । ३ । काकलि अंतर तद्वयोपेत ॥ इन भेदनसों चोगुनिकीये तो चालिस ॥४०॥ भेद होत हे । अब चालिस तो ये अरु आठ ॥ पहले मिलिकें ॥ अडतालिस । ४८ । भेद षाडव तांनके क्रम हें ॥ तब सातसेविसकों अडतालिस गुणें तो ॥ चोतिस हजार पांचसेसाठ प्रस्तार ॥ ३४५६० ॥ सो षाडव तांनके भेद होत हें ॥

॥ इति षाडव तांन संख्या संपूर्णम् ॥

अथ औडव तानको भेद संख्या लिख्यते ॥ तहां अश्वक्रांता । १ । हरिणाश्वा । २ । ओर उत्तरायता । ३ । ओर पौर्वी ॥ ४ ॥ ओर रजनि । ५ । ओर मार्गि । ६ । यह छह मूर्छना पिछले दोय दोय स्वर दूरि कीये तो गांधार । १ । अरु निषाद । २ । के मेलतें शुद्ध । १ ।

काकली । २ । अंतर । ३ । काकली । अंतर तद्वयोयेत । ४ । इन भेदनसों । चोगुणा कीय चोविस । २४ । भेद होत हे ॥ अब चोदह मूर्छनानमें ॥ बाकी रही उत्तरमंद्रा । १ । अभिरुद्गता । २ । कलोपनता । ३ । शुद्ध मध्या । ४ । ये चार मूर्छना पिछले दोय दोय स्वर दूरि कीये तो ॥ गांधारके मेलतें । सुद्ध ।१। अंतर । २ । इन भेदनसों गुणे कीये ॥ आठ भेद होत है । अरु सुद्ध षड्जा ।१। मत्सरिकृता । २ । सौविरि । ३ । हृष्यका । ४ । ये च्यार मूर्छना पिछले दोय दोय स्वर दूरि कीये तो निषादके मेलतें ॥ सुद्ध । १ । अरु काकली । २ । इन भेदनसों दूनि कीये ॥ आठ भेद होत हें ॥ तब चोविस तो पहले भेद ॥ ओर आठ गांधारके मेलके ॥ अरु आठ निषादके मेलके ॥ ये सब मिलिकें । औडव तांनके । क्रम चालिस होत हें ॥ अब औडव तांनके । एकसोबिस भेद ॥ चालिस गुणो कीये तो प्रस्तार भेदसों ॥ औडव तांनके च्यार हजार आठसे भेद होत हें ॥ ४८०० ॥ ॥ **इति औडव तांन संख्या संपूर्णम् ॥**

अथ च्यार सुरनके तांनकी संख्या लिख्यते ॥ रजनी ।१। मार्गी ।२। ये दोय मूर्छनामे पिछले तीन स्वर दूरि कीयेतें । निषाद । १ । गांधारके । २ । मेल तें सुद्ध । १ । काकलि ।२। अंतर काकली । ३ । अंतरतद्वयोपेत । ४ । इन भेदनसों चोगुनि कीये । ८ । आठ भेद होत हें ॥ अरु चोदह मूर्छनामें बाकी रही उत्तरमंद्रा ।१। अश्वक्रांता ।२। अभिरुद्गता । ३ । हरिणाश्वा । ४ । कलोपनता । ५ । सुद्ध मध्या । ६ । ये छह मूर्छना पिछले तीन तीन स्वर दूरि किये तें गांधारमेल तें सुद्ध । १ । अंतर । २ । इन भेदनसों दूणे कीयें बारह भेद होत हें ॥ अरु उत्तरायता । १ । सुद्ध षड्जा । २ । मत्सरिकृता । ३ । सौविरि । ४ । पौरवी । ५ । हृष्यका । ६ । यह छह मूर्छना पिछले तीन तीन स्वर दूरि कीयेतें ॥ निषादके मेलतें ॥ सुद्ध काकली । इन भेदनसों दुणो कीयेतो बारह भेद होत हें ॥ तब आठ भेद तो पहले ॥ अरु गांधारकें मेलतें बारह भेद । अरु निषादके मेलते बारह भेद ॥ ये सब मिलिकें बत्तीस भेद होत हें ॥ अब च्यार स्वरनके प्रस्तार रीतिसों चोविस भेद बत्तीसकु गुणे तो ॥ आडव सातसों आठसठ ॥ ७६८ ॥ भेद च्यार स्वरनकी तांनके प्रस्तारसों होत हें ॥ **इति च्यार स्वरकें तांनकी संख्या संपूर्णम् ॥**

अथ तीन स्वरनके तांनकी संख्या लिख्यंते ॥ तहां मत्सरिकृता । १ । सौविरि । २ । ये दोय मूर्छनामें पिछले च्यार च्यार स्वर दुरि कियेते । निषाद । १ । गांधार । २ । हीन कियेतें इन दोनु मूर्छनाके एक एक भेद हें ॥ ऐसे दोनुनके दोय भेद हें । अरु । १४ । चोहदे मूर्छनामें बाकी रही उत्तरमंद्रा । १ । अश्वक्रांता । २ । अभिरुद्गता । ३ । हरिणाश्वा । ४ । कलोपनता ।५। सुद्ध मध्या । ६ । यह छह मूर्छना । पिछले च्यार स्वर दूरि कीयेतें । गांधारके मेलतें । शुद्ध । १ । अंतर ।२। इन भेदनकों दूणो कीये । बारह भेद।१२। होत हें ॥ अरु रजनि । १ । उत्तरायता । २ । सुद्ध षड्जा । ३ । मार्गी । ४ । पौरवी । ५ । न्हष्यका ये छह मूर्छना पिछले च्यार च्यार स्वर दूरि कियेतं निषादके मेलते ॥ शुद्ध । १ । काकली । २ । इन भेदनसों दूणें किये । बारह भेद होत हें ॥ तब दोय भेद पहले ॥ अर गांधारके मेलतें बारह । १२ । भेद। अर निषादके मेलतें बारह ।१२। भेद ये सब मिलिकें छवीस भेद होत हें॥ अब तीन स्वरनके प्रस्तार रीतिसों छह भेद छवीस गुणे कीये तो एकसो छपन । १५६ । तीन स्वरनकी तांनके प्रस्तार रीतिसों भेद होत हें ॥ **इति तीन स्वरनकी तांनकी संख्या संपूर्णम्** ॥

अथ दोय स्वरनकी तांनकी संख्या लिख्यते ॥ जहां अश्वक्रांता । १ । अभिरुद्गता । २ । हरिणाश्वा । ३ । कलोपनता । ४ । ये च्यारि मूर्छना पिछले पांच स्वर दूरि कीयेतें । गांधारके मेलतें सुद्ध । १ । अंतर । २ । इन भेदनसों दूने कीये । आठ भेद होत हें ॥ और रजनी उत्तरायता मार्गी पौरवी । ४ । येह च्यारि मूर्छना पिछले पांच स्वर दूरि कीयेतें निषादके मेलतें । सुद्ध । १ । अरु काकली । २ । इन भेदनसों दूने कीये । आठ भेद होत हे । अरु उत्तर मंद्रा । १ । सुद्ध षड्जा । २ । मत्सरीकृता । ३ । सौविरि । ४ । सुद्ध मध्या । ५ । हृषिका । ६ । यह छह मूर्छना पिछले पांच पांच स्वर दूरिकीयतें गांधार । १ । निषादहीन हे । यातें इन छह मूर्छनानके । सुद्ध छह भेद होत हे ॥ तहा आठ तो गांधारके मेलके ॥ अरु आठ भेद निषादके मेलतें ॥ अरु छह भेद यह । मिलिकें वाइस । २२ । क्रम दोय स्वरनकी तांनके होतहें ॥ अब दोय स्वरनकी तांनके प्रस्तार रीतिसों दोय भेदकी बाईस गुणे कियें । चंवालीस

॥ ४४ ॥ दोय स्वरनकी तान प्रस्तारसों भेद होत हें ॥ **इति दोय स्वरनके तांनकी संख्या संपूर्णम् ॥**

अथ एक स्वरनके तांनकी संख्या लिख्यते ॥ जब मूर्छनानमें पिछले छह छह स्वर दूरि कीयेते चोदह मूर्छनानके प्रथम स्वर एक हि चोदह रहे हें ॥ यातें एक स्वरनकी तांनको एक भेद हे । वांको चौदा मूर्छनानसों गुणें ते चोदह भेद हें । १४ । **इति एक स्वरकी तांनकी संख्या संपूर्णम् ॥**

अथ पुनरुक्तितानकी संख्यालक्षण लिख्यते ॥ पुनरुक्तिकहिये ॥ एक रूप दोय तीनवेरे आवै । सो पुनरुक्तिजांनिये ॥ तहां उत्तर मंद्रा मूर्छनानके च्यार स्वर तें लेकें एक स्वरतांइकें पुनरुक्तिके भेद कहतेहै ॥ जो षड्ज मध्या मूर्छनामें । पिछले तीन स्वर दूरिकियेतें । गांधार स्वरनके भेल तें । सुद्ध । १ । अंतर । २ । ये चार स्वरके क्रमे होय हें ॥ इन दोनु क्रमनमें ॥ एक तो सुद्ध गांधारजुत च्यार स्वरको क्रम हें ॥ ऐसें दूसरो अंतर गांधारजुत च्यार स्वरको क्रमहें ॥ ऐसें इन दोनुनके प्रस्तारकियेतें ॥ चोविस चोविस भेद होत हें ॥ दोनु मिलिके अडतालिस भेद हे ॥ अरु यांहीं सुद्ध मध्यामें ॥ पिछले च्यार स्वर दूरि कीयेतें तीन स्वरको क्रम गांधारके मेल तें । सुद्ध अरु अंतर ऐसें दोय भेदको हें ॥ इन दोनु तीन स्वरके क्रमनके प्रस्तार कीये तें छह छह भेद होत हें ॥ ते दोनु मिलिकें बारह । १२ । भेद हें । अरु याहि सुद्ध मध्यामें ॥ पांच स्वर पिछले दूरि कीयेतें ॥ दोय स्वरको क्रम गांधार । १ । अरु निषादहीन हें यातें ॥ एक भेदको हें ॥ ताके प्रस्तार कीयेतें दोय भेद हें ॥ अरु यांहि सुद्ध मध्यामें पिछले छह स्वर दूरि कीयेतें ॥ एक स्वरको क्रम एक भेदको हे ॥ यांको प्रस्तार कीयेतें एक भेद हें ॥ अब सुद्ध मध्या मूर्छनामें ॥ च्यार स्वरके । अडतालीस । ४८ । तीन स्वरके बारह । १२ । दोय दोय स्वरको एक एक सब भेद मिलिकें तरेसटि । ६३ । होत हें । ये तरेसटि भेद उतरमंद्राके च्यार स्वरके क्रमतें लेके ॥ एक स्वरके क्रमतांई ज्यो त्रेसटि भेद तिनके पुनरुक्ति हें ॥ **इति उतरमंद्राके पुनरुक्ति तांनकी संख्या संपूर्णम् ॥**

अथ रजनि मूर्छनाकें पांच स्वरकें क्रमतें लेकें एक-स्वरके क्रमताई जे भेद तिनकी पुनरुक्ति लिख्यते ॥ जो मार्गी मूर्छनामें

पिछले दोय स्वर दूरि कीयेतें ॥ पांच स्वरको ज्यो तांन क्रमसों निषाद ॥ १ ॥ गांधार । २ । के मेलतें ॥ सुद्ध काकली अंतरकाकली अंतर द्वयोपेत ॥ इन भेदनसों च्यार प्रकारको हें ॥ यां चार प्रकारके पांच स्वरनके क्रमतें प्रस्तार कियेतें ॥ एक एककें एकसोबीस भेद हें ॥ १२० ॥ यातें च्यारनके च्यारसें ऐसी । ४८० । भेद होतहें । अरु यांहि मार्गी मूर्छनानमें पिछले तीन स्वर दूरि कीयेतें ॥ च्यार स्वरनको ज्यो क्रमसों निषाद ॥ १ ॥ गांधारके मेलतें सुद्ध ॥१॥ काकली ॥ २ ॥ अंतर । ३ । काकली ॥ अंतर तद्द्वयोपेत । ४ । इन भेदनसों च्यार प्रकारको हें । यह च्यार प्रकार च्यार स्वरनके क्रमसें प्रस्तार कीयेतें एक एककें चोइस भेद होतहें यातें च्यारनके छानव भेदहे । ९६ । अरु याहि मार्गी मूर्छनामें ॥ पिछले च्यारि स्वर दूरि कीयेतें तीन स्वरका जो क्रम जो निषादके मेलतें सुद्ध । १ । काकली । २ । इन भेदनसों दोय प्रकारको हें ॥ यह दोय प्रकार तिनि स्वरनके क्रमकें । प्रस्तार कीयेतें ॥ एक एककें छह छह भेद होतहें ॥ यातें दोनु क्रमके बारह । १२ । भेदहे ॥ अरु यांहि मार्गी मूर्छनामें । पिछले पांच स्वर दूरि कीयेतें ॥ दोय स्वरको ज्यो क्रम सो निषादमें मेलतें सुद्ध । १ । काकली । २ । इन भेदनसों ॥ दोय प्रकारको हें यह दोय प्रकार दोय स्वरनके क्रमके प्रकार कीयेतें ॥ एक एकके दोय दोय भेद होत हें ॥ यातें दोनु क्रमकें च्यारि भेद । ४ । होत हे ॥ अरु याही मार्गी मूर्छनामें पिछले छह स्वर दूरि कीयेतें एक स्वरको ज्यो क्रम ॥ सो निषादरूपही हें दूसरे स्वरनको मेल-नही यातें एक भेदको हें ॥ यह एक भेद एक स्वरके क्रमको प्रस्तार कीयेतें एक भेद हें ॥ अब पांच स्वरनके भेद च्यारसें ऐसी । ४८० । अरु च्यार स्वरनके भेद छानव । ९६ । तीन स्वरनके भेद । १२ । दोय स्वरनके भेद । ४ । च्यार एक स्वरको भेद । १ । ये सब भेद मिलिकें ॥ पांचसें तरेणव । ५९३ । हें । ये मार्गी मूर्छनाके । पांचसें तिरानव भेद रजनि मूर्छनाकें पांच स्वर क्रमत लेकें एक स्वरके क्रमताई जे पांचसे तिरानवे भेद । ५९३ । तिनके पुनरुक्ति हें ॥

॥ इति रजनाकें पुनरुक्तितानकी संख्या संपूर्णम् ॥

अथ उत्तरायता मूर्छनाके छह स्वरके क्रमतें लेकें एक स्वरके क्रमताई जे भेद तिनकें पुनरुक्ति लिख्यते ॥ जो पौरवी मूर्छ-

मानमें पिछलो एक स्वर दूरी कीयेतें छह स्वरको जो क्रम सो निषाद । १ । गांधार । २ । के भेद ॥ सुद्ध । १ । काकली । २ । अंतर । ३ । काकली अंतर द्वयोपेत । ४ । इन भेदनसों च्यारि प्रकारको हें ॥ इह च्यारि प्रकार छह स्वरको जो क्रम ताके प्रस्तार कीयेतें एक एककें सातसें बिस । ७२० । भेद होत हें यातें च्यारों क्रमनकें ॥ अठाइससें ऐसी । २८८० । भेद होत हें । अरु यांही पौरवी मूर्छनानमें पिछले दोई स्वर दूरि कीयेतें पांच स्वरको जो क्रम । सो निषाद । १ । गांधार । २ । के भेदतें सुद्ध । १ । काकलि । २ । अंतर । ३ । काकली । अंतरद्वयोपेत । ४ । इन भेदसों च्यारि प्रकारको हें ॥ यह च्यारि प्रकारको जो पांच स्वरको क्रम ताके प्रकार कीयेतें एक एकके एकसोबिस भेद । १२० । होत हे । यातें च्यारों क्रमनके च्यारसें ऐसी भेद हें ॥ ४८० ॥ अरु यांहि पौरवी मूर्छनानें पिछले तीन स्वर दूरि कीयेतें । च्यार स्वरको जो क्रम सो निषादके भेदतें । सुद्ध । १ । काकली । २ । इन भेदके ॥ दोय प्रकारको हें यह दोय प्रकारको जो च्यारि स्वरको क्रम ताके प्रस्तार कीये तें । एक एकके चोबिस भेद हें ॥ यातें दोनुं क्रमकें ॥ ४८ ॥ अडतालीस भेद हें ॥ अरु याहीकी मूर्छनामें । पिछले च्यारि स्वर दूरि कीयेतें । तीन स्वरको जो क्रम सो निषादके भेदतें सुद्ध । १ । काकली । २ । इनके भेदनसों दोय प्रकारको है ॥ यह दोय प्रकारको जो तीन स्वरको क्रम ॥ ताकें प्रस्तार कीयेतें ॥ एक एककें छह भेद होत हें ॥ यातें दोनुं क्रमनके बारह भेद हें ॥ १२ ॥ अरु यांहि पौरवी मूर्छनामें पिछले पांच स्वर दूरि कीयेतें दोय स्वरको जो क्रम । सो निषादके भेदतें शुद्ध । १ । काकली । २ । ये भेद दोय प्रकारको हें ॥ यह दोय प्रकारको जो दोय स्वरनको क्रम ताकें प्रस्तार कीयेतें ॥ एक एककें दोय भेद होत हें ॥ यातें दोनु क्रमनकें च्यारि भेद हें । ४ । अरु यांहि पौरवी मूर्छनानें पिछले छह स्वर दूरि कीयेतें ॥ एक स्वरको जो क्रम सो एक भेदको हे ॥ यह एक भेदको ज्यो एक स्वरको क्रम ताको प्रस्तार कीयतें । एक भेद हैं ॥ १ ॥ अब पौरवी मूर्छनानें एक छह स्वर क्रमके ॥ अठाइस ऐसी । २८८० । भेद हें । अरु पांच स्वर क्रमनके च्यारसे ऐसी ।४८०। भेद ॥ अरु च्यारि स्वर क्रमनकें अडतालीस । ४८ । भेद हे ॥ तीन स्वर क्रमनकें

बारह भेद हैं । १२ । दोय स्वरनके । च्यारि । ४ । भेद ॥ अरु एक स्वर क्रमको एक । १ । भेद ये सब भेद मिलिकें । चोवीससेंपचीस । ३४२५ । होत हें । ये पोरवी मूर्छनाके चोवीसेंपचीस भेद उत्तरायता मूर्छनाके छह स्वरके क्रम तें लेकें ॥ एक स्वरके क्रमतांइ जे भेद मिलिकें पुनरुक्त हें ॥ इन तिनो मूर्छनानके पुनरुक्ति तां न मिलिकें च्यारि हजार एक्यासि । ४०८१ । ॥ इति उत्तरायता मूर्छनाके पुनरुक्ति तानकी संख्या संपूर्णम् ॥

अथ क्रम अरु पुनरुक्ति तानहीन लिख्यते ॥ षाडव औडव । च्यारि स्वर । तीन स्वर । दोय स्वर । एक स्वर ॥ इन सब कूटताननकी मिलायकें संख्या लिख्यते । तहां क्रम पुनरुक्ति ॥ तांन सहित ॥ कूट तांननकी संख्या ॥ तीन लाख बाइस हजार पांचसे बीयासी । ३२२५८२ । इनके क्रम संपूर्ण ॥ के जो तिनसे बाणवे । ३९२ । अरु षाडव । १ । औडव । २ । चार स्वर । ३ । तीन स्वर । ४ । दोय स्वर । ५ । एक स्वर । ६ । तांइ पूरणके एकसोबियासी । १८२ । क्रम ये दोनु मिलिके पांचसेचोहोत्तर ॥५७४॥ क्रम है ॥ इनमें तीन दूरि कीयेतें॥ पांचसेंएकोत्तर ।५७१। क्रम होत है ॥ ये पांचसेंएकहत्तर क्रमको दूरि कीयेतें क्रमहीन संख्या तीन लाख बारस हजार ग्यारह होत है ॥ ३२२०११ ॥ या क्रमहीन संख्यामें । इन तीनों मूर्छनानके जे च्यारि हजार एक्यासि । ४०८१ । पुनरुक्ति तांन है तिनके दूरि कीयेतें ॥ संपूर्ण ॥ १ ॥ षाडव । २ । औडव । ३ । च्यारि स्वर । ४ । तीन स्वर । ५ । दोय स्वर । ६ । एक स्वर । ७ । कूट तांननकी क्रमहीन संख्या मिलिकें तीन लाख सतरा हजार नवसे तीस । ३१७९३० । भेद होत है । यह पूर्ण । अपूर्ण कूट तांननकी संख्या जांनिये ॥ इति क्रम अरु पुनरुक्तितांनहीन संपूर्णम् ॥ संपूर्ण । १ । षाडव । २ । औडव ।३। च्यारि स्वर ।४। तीन स्वर । ५ । दोय स्वर । ६ । एक स्वर । ७ । कूटतांननकी संख्या संपूर्णम् ॥

अथ संगीत पारिजातके मतसों मूर्छना प्रकरण लिख्यते ॥ तहां शुद्ध मूर्छनातो संगीतरत्नाकरके मतसों एकही तरहकी है । अरु विकृत मूर्छनानको संगीत पारिजातमें भेद हें सो कहतहै । जब शुद्ध मूर्छना सात स्वरनमें ॥ एक वेर रिषभ पूरन कीजे । अरु दूसरी वेर रिषभ कोमल कीजिये ॥ अरु तीसरि वेर रिषभ तीव्र कीजियें । तब वेसुद्ध मूर्छना रिषभके तिन भेद सों

इकविस। २१। भेद होत हें। रिषभ पूरणकी सात। ७। कोमल रिषभकी सात।७। रिषभ तीव्रकी सात।७। एसे एकविस। २१। भेद जांनियें॥ ओर तीव्रतर रिषभसों मूर्छनाके भेद नहीं गिनिये॥ ओर कोमल। १। तीव्र।२। तीव्रतर।३। तीव्रतम। ४। ऐसें च्यार-प्रकारको गांधार तो विक्रत कीजिये॥ अरु छह स्वर शुद्ध राखिये॥ तब तिन मूर्छनानके भेद अठाईस। २८। होतहें। तहां कोमल गांधारके॥ ७॥ सात ओर पूरण गांधारका। १। अति तीव्रतम गांधारके दोइ॥ २॥ इन भेदनसों गांधारकी मूर्छना नहीं गिनिये। ओर तीव्र। १। तीव्रतर। २। तीव्रतम। ३। मध्यमके लगायेतें। अरु छह स्वर शुद्ध राखेतें॥ एकविस। २१। भेद होत है तहां तीव्र मध्यमके। ७। तीव्रतर मध्यमके। ७। तीव्रतम मध्यमके। ७। ओर पूरव। १। कोमल। २। तीव्र। ३। धैवतके लगायेतें। छह स्वर शुद्ध राखेतें। इकविस। २१। भेद होत हें। ओर तीव्रतर धैवतसों मूर्छना नहीं गिनियें॥ ओर कोमल। १। तीव्र। २। तीव्रतर। ३। तीव्रतम। ४। एसें च्यारि प्रकारको निषाद लगायेतें। छह स्वर शुद्ध राखेतें। अठाइस भेद होत हें॥ इहां पूर्व निषादसों। मूर्छना नही गिनिये। ५। ऐसें एक एक स्वर तो विक्रत होनेसें छह स्वर शुद्ध होय तब इन मूर्छनानकी संख्या एकसो उगणिस होत हें॥११९॥ अथ दोय स्वर विक्रत होय। अरु पांच स्वर सुद्ध होय तांकी संख्या लिख्यते। जहां रिषभ।१। गांधार। २। विक्रत होय ओर बाकी स्वर पांच होय शुद्ध स्वर। ताके भेद एकसो बारह। ११२। जांनियें॥ इहां कोमल गांधारमें पूरव। १। कोमल। २। तीव्र। ३। तीव्रतर। ४। रिषभ जांनिये। ऐसेहि च्यारि प्रकारको रिषभ। तीव्र गांधारमे जांनिये॥ ऐसेंहि तीव्रतर गांधारमें रिषभ जांनिये। ऐसेहि रिषभ तीव्रतम गांधारमें जानिये॥ ऐसेही धैवत निषाद विक्रत होय। बाकी स्वर पांच। ५। सुद्ध होय तब एकसो बारह। ११२। भेद जांनिये। जहां मध्यम रिषभ दोय विक्रत। बाकी स्वर सुद्ध होय॥ तहां त्रेसटि भेद जांनिये। ६३। तीन प्रकारको रिषभ पूरव। १। कोमल। २। तीव्र। ३। जब तीव्रमध्यम। १। तीव्रतर मध्यम। २। तीव्रतम मध्यम। ३। मं होय तब त्रेसटि। ६३। भेद जांनिये॥ रिषभ। १। धैवत। २। विक्रत होय। बाकी पांच स्वर शुद्ध होय। ५। तांके त्रेसटि भेद जांनि-

यें । ६३ । यहां पूरव । १ । कोमल । २ । तीव्र । ३ । रिषभ । ४ । पूरव । १ । कोमल । २ । धैवतमें होय । ओर रिषभ । १ । निषाद । २ । विकृत होय बाकी पांच होय । तहां चोरासी भेद । ८४ । जांनिये ॥ यहां पूरव । १ । कोमल । २ । तीव्र रिषभ कोमल । १ । तीव्र । २ । तीव्रतर । ३ । तीव्रतम । ४ निषाद होय ॥ ओर गांधार ॥१॥ मध्यम ॥२॥ विकृत होय ॥ बाकी पांच स्वर सुद्ध होय ॥ ताके एकसोपांच भेद होय ॥१०५॥ तहां कोमल ॥१॥ तीव्र ॥२॥ तीव्रतर ॥ ३ ॥ तीव्रतम ॥ ४ ॥ अतितीव्रतम गांधारतीव्र ॥ १ ॥ तीव्रतर ॥ २ ॥ तीव्रतम मध्यममें होय जहां गांधार ॥ १ ॥ धैवत ॥ २ ॥ विकृत बाकी शुद्ध पांच ॥ ५ ॥ स्वर होय ॥ जहां चोरासि भेद जांनिये ॥ ८४ ॥ यहां कोमल ॥१॥ तीव्र ॥ २ ॥ तीव्रतर ॥ ३ ॥ तीव्रतम ॥ ४ ॥ गांधारपूरव ॥ १ ॥ कोमल ॥ २ ॥ तीव्र ॥ ३ ॥ धैवत होय ॥ बाकी पांच ॥ ५ ॥ स्वर शुद्ध होय तहां एकसो-बारह ॥ ११२ ॥ भेद जांनिये ॥ इहां कोमल ॥ १ ॥ तीव्र ॥ २ ॥ तीव्रतर ॥३॥ तीव्रतम ॥ ४ ॥ गांधार कोमल ॥ १ ॥ तीव्र ॥ २ ॥ तीव्रतर ॥ ३ ॥ तीव्रतम ॥४॥ निषादमें होय ॥ जहां मध्यम ॥ १ ॥ धैवत ॥ २ ॥ विकृत होय है ॥ अरु बाकी पांच ॥ ५ ॥ स्वर शुद्ध होय ॥ तहां त्रेसटि भेद जांनिये ॥ ६३ ॥ यहां तीव्र ॥१॥ तीव्रतर ॥ २ ॥ तीव्रतम ॥ ३ ॥ मध्यम कोमल ॥ १ ॥ तीव्र ॥ २ ॥ तीव्रतर ॥३॥ तीव्रतम ॥ ४ ॥ निषादमें होय ॥ जहां धैवत ॥ १ ॥ निषाद विकृत होय बाकी पांच स्वर शुद्ध होय ॥ ५ ॥ तहां ॥ ११२ ॥ एकसोबारह भेद जानिये ॥ यहा पूरव ॥ १ ॥ कोमल ॥ २ ॥ तीव्र ॥ ३ ॥ तीव्रतर ॥ ४ ॥ धैवतपूर्व ॥ १ ॥ तीव्र ॥ २ ॥ तीव्रतर ॥ ३ ॥ तीव्रतम ॥ ४ ॥ निषादमें होत है ॥ अथ तीन विकृत स्वर शुद्ध च्यार ॥ ४ ॥ स्वर तिनके भेद लिख्यते ॥ जहां रिषभ ॥ १ ॥ गांधार ॥ २ ॥ मध्यम ॥ ३ ॥ विकृत होय बाकी शुद्ध ॥ ४ ॥ च्यारी होय ॥ तहां ॥ ४२० ॥ च्यारसें विस भेद जांनिये ॥ यहां परव ॥ १ ॥ कोमल ॥ २ ॥ तीव्र ॥ ३ ॥ तीव्रतर ॥ ४ ॥ रिषभ पूर्व ॥ १ ॥ तीव्र ॥ २ ॥ तीव्रतर ॥ ३ ॥ तीव्रतम ॥ ४ ॥ अतितीव्रतम गांधारमें होय ॥ सो गांधारतीव्र ॥ १ ॥ तीव्रतर । २ । तीव्रतम । ३ । मध्यम होय । जहां रिषभ । १ । गांधार । २ । धैवत । ३ । विकृत होय । बाकी च्यार स्वर । ४ । सुद्ध होय । तहां तीनसेंचोतीस

भेद । ३३४ । जांनिये । जहां पूर्व । १ । कोमल । २ । तीव्र । ३ । तीव्रतर । ४ । रिषभपूर्व । १ । तीव्र । २ । तीव्रतर । ३ । तीव्रतम । ४ । गांधारमें होयसो गांधारपूर्व । १ । कोमल । २ । तीव्र । ३ । धैवतमें होय । जहां रिषभ । १ । गांधार । २ । निषाद । ३ । विकृत स्वर होय । बाकी च्यार स्वर । ४ । सुद्ध होय ॥ तहां च्यारसें अडतालीस । ४४८ । भेद जांनिये । यहां पूर्व । १ । कोमल । २ । तीव्र । ३ । तीव्रतर । ४ । रिषभपूर्व । १ । तीव्र । २ । तीव्रतर । ३ । तीव्रतम । ४ । गांधारमें होयसो गांधार कोमल । १ । तीव्र । २ । तीव्रतर । ३ । तीव्रतम । ४ । निषादमें होय । जहां रिषभ । १ । मध्यम । २ । धैवत । ३ । विकृत होय । बाकी च्यार स्वर । ४ । सुद्ध होय तहां एकसोनवैएसी भेद । १८९ । जांनिये । इहां पूर्व । १ । कोमल । २ । तीव्र । ३ । रिषभ तीव्र । १ । तीव्रतर । २ । तीव्रतम । ३ । मध्यम होयसो मध्यम पूर्व । १ । कोमल । २ । तीव्र । ३ । धैवतमें होय । जंहां रिषभ मध्यम ओर निषाद । विकृत होय । बाकी शुद्ध स्वर । ४ । च्यारि होय । तहां एकसोबांनेव भेद । १९२ । जांनिये । यहां पूर्व ॥ १ ॥ कोमल । २ । तीव्र । ३ । तीव्रतर । ४ । तीव्रतम । ५ । मध्यममें होय । सो मध्यमकोमल । १ । तीव्र । २ । तीव्रतर । ३ । तीव्रतम । ४ । निषादमें होय । अथ रिषभ । १ । धैवत । २ । निषाद । ३ । बाकी च्यार । ४ । स्वर शुद्ध होय ॥ तहां तीनसें छत्तिस भेद जांनिये । ३३६ । यहां पूर्व । १ । कोमल । २ । तीव्र । ३ । रिषभ । १ । पूर्व । २ । कोमल । ३ । तीव्रतर । ४ । धैवतमें होय ॥ सो धैवत पूर्व । १ । तीव्र । २ । तीव्रतर । ३ । तीव्रतम । ४ । निषादमें होय ॥ अथ गांधार । १ । मध्यम । २ । निषाद । ३ । विकृत होय बाकी च्यार स्वर सुद्ध होय ॥ तहां तिनसें पंधरा । ३१५ । जानिये ॥ इहां कोमल । १ । तीव्र । २ । तीव्रतर । ३ । तीव्रतम । ४ । अति तीव्रतम । ५ । गांधार तीव्र । १ । तीव्रतर । २ । तीव्रतम । ३ । मध्यम होय । सो मध्यम पूर्व । १ । कोमल । २ । तीव्र । ३ । धैवतमें होय । अथ गांधार । १ । मध्यम । २ । निषाद । ३ । विकृत होय । बाकी । ४ । च्यार स्वर सुद्ध होय । तहां च्यारसें वीस । ४२० । भेद जांनिये ॥ इहां कोमल । १ । तीव्र । २ । तीव्रतर । ३ । तीव्रतम । ४ ।

अतितीव्रतम । ५ । गांधार तीव्र । १ । तीव्रतर । २ । तीव्रतम । ३ । मध्यममे होय सो मध्यमकोमल । १ । तीव्र । २ । तीव्रतर । ३ । तीव्रतम । ४ । च्यारि स्वर शुद्ध होय ॥ तहां च्यारसें अडताळिस । ४४८ । भेद जांनियें ॥ इहां कोमल । १ । तीव्र । २ । तीव्रतर । ३ । तीव्रतम । ४ । गांधार पूर्व । १ । कोमल । २ । तीव्र । ३ । तीव्रतर । ४ । धैवतमें होय । धैवत पूर्व । १ । तीव्र । २ । तीव्रतर । ३ । तीव्रतम । ४ । निषादमें होय । अथ मध्यम । १ । धैवत । २ । निषाद । ३ । विकृत स्वर होय बाकी । ४ । च्यार स्वर सुद्ध होय तहां तीनसें छहतीस भेद जांनियें । ३३६ । इहां तीव्र । १ । तीव्रतर । २ । तीव्रतम । ३ । मध्यम पूर्व । १ । कोमल । २ । तीव्र । ३ । तीव्रतर । ४ । धैवतमें होय । सो धैवतपूर्व । १ । तीव्र । २ । तीव्रतर । ३ । तीव्रतम । ४ । निषादमें होय ॥ अथ च्यार स्वर विकृत होय ॥ तीन स्वर सुद्ध होय जिनको भेद हय सो विशेष करकें लिख्यते ॥ अथ रिषभ । १ । गांधार । २ । मध्यम । ३ । धैवत । ४ । विकृत होय बाकी तीन सुद्ध होय तहां बारासें साटि भेद । १२६० । जांनिये । इहां पूर्व । १ । कोमल । २ । तीव्र । ३ । तीव्रतर । ४ । रिषभपूर्व । १ । तीव्र । २ । तीव्रतर । ३ । तीव्रतम । ४ । अतितीव्रतम । ५ । गांधारमें होय सो गांधारतीव्र । १ । तीव्रतर । २ । तीव्रतम । ३ । मध्यममें होय । सो मध्यमपूर्व । १ । कोमल । २ । तीव्र । ३ । धैवतमें होय ॥ अथ रिषभ । १ । गांधार । २ । मध्यम । ३ । निषाद । ४ । विकृत होय ॥ बाकी तीन स्वर सुद्ध होय ॥ तहां सोलासें ऐसी ॥ १६८० ॥ भेद हैं ॥ इहां पूर्व । १ । कोमल । २ । तीव्र । ३ । पूर्व । १ । तीव्र । २ । तीव्रतर । ३ । तीव्रतम । ४ । अतितीव्रतम । ५ । गांधारमें होय ॥ सो गांधारतीव्र । १ । तीव्रतर । २ । तीव्रतम । ३ । मध्यममें होय । सो मध्यमकोमल । १ । तीव्र । २ । तीव्रतर । ३ । तीव्रतम । ४ । निषादमें होय । अथ रिषभ । १ । गांधार । २ । धैवत । ३ । निषाद । ४ । विकृत होय । बाकी तीन सुद्ध होय ॥ तहां सतरासें बांणव । १७९२ । भेद जांनियें ॥ इहां पूर्व । १ । कोमल । २ । तीव्र । ३ । तीव्रतर । ४ । रिषभपूर्व । १ । तीव्र । २ । तीव्रतर । ३ । तीव्रतम । ४ । गांधारमें होय । सो गांधार पूर्व । १ । कोमल । २ । तीव्र । ३ । तीव्रतर । ४ ।

धैवतमें होय । सो धैवत पूर्व । १ । तीव्र । २ । तीव्रतर । ३ । तीव्रतम । ४ । निषादमें होय ॥ अथ रिषभ । १ । मध्यम । २ । धैवत । ३ । निषाद । ४ । विकृत होय सुद्ध स्वर तीन होय तहां । एक हजार आठ । १००८ । भेद जांनियें ॥ तहां पूर्वकोमल ।१। तीव्र ।२। तीव्रतर ।३। तीव्रतम ।४। तीव्र । १। तीव्रतर । २ । तीव्रतम । ३ । मध्यममें होय । सो मध्यमपूर्व । १ । कोमल । २ । तीव्र । ३ । तीव्रतर । ४ । धैवतमें होय सो धैवतपूर्व । १ । तीव्र । २ । तीव्रतर । ३ । तीव्रतम । ४ । निषादमें होय ॥ अथ गांधार । १ । मध्यम । २ । धैवत । ३ । निषाद । ४ । विकृत होय बाकी स्वर तीन सुद्ध होय । तहां सोलासेंएंसी । १६८० । भेद जांनियें ॥ जहां कोमल । १ । तीव्र । २ । तीव्रतर । ३ । तीव्रतम । ४ । अति तीव्रतम । ५ । गांधारतीव्र । १ । तीव्रतर । २ । तीव्रतम । ३ । मध्यममें होय सो मध्यमपूर्व । १ । कोमल । २ । तीव्र । ३ । तीव्रतर । ४ । धैवतमें होय सो धैवतपूर्व ।१। तीव्र । २ । तीव्रतर । ३ । तीव्रतम । ४ । निषादमें होय । अथ पांच स्वर विकृत होय ओर दोय स्वर सुद्ध होय तांके भेद लिख्यते ॥ जहां रिषभ । १ । गांधार । २ । मध्यम । ३ । धैवत । ४ । निषाद । ५ । विकृत होय । बाकी । २ । दोय स्वर शुद्ध होय तहां ॥ सडुसतसें बिस भेद ।६७२०। जांनिये ॥ इहां पूर्व । १ । कोमल ।२। तीव्र । ३। तीव्रतर । ४ । रिषभपूर्व । १ । तीव्र ।२। तीव्रतर । ३ । तीव्रतम । ४ । अतितीव्रतम । ५ । गांधारमें होय । सो गांधार तीव्र । १ । तीव्रतर । २ । तीव्रतम । ३ । धैवतमें होय ॥ सो धैवत पूर्व । १ । तीव्र । २ । तीव्रतर । ३ । तीव्रतम । ४ । निषादमें होय ॥ अैसें विकृत मूर्छनानके भेद । शिवजी ब्रह्माजी भरतमुनींद्र मतंगमुनींद्र आदि सर्व ऋषिश्वर कहत है ॥ तहां षड्ग्राममें संपूर्ण विकृत मूर्छना सबनकी । अठारे हजार छहसे अडतालीस । १८६४८ । भेद होत है । या रितिसों मध्यम ग्राममें अरु गांधार ग्राममें । संपूर्ण विकृत मूर्छना । एक एक ग्राममें अठारे हजार छहसे अडतालीस । १८६४८ । भेद होत हैं तब तिनों ग्रामनकी मूर्छना । पचावन हजार नवसें चालीस । ५५९४० । संपूर्ण स्वरनकी विकृत मूर्छना जांनिये ॥ ऐसेंहि इन मूर्छनानमें पिछलो एक स्वर दूरि कीये तें । एक एक ग्राममें ॥ अठारे हजार छहसें अडतालीस । १८६४८ । भेद

होत है ॥ अथ विकृत स्वर षाडवनको भेदमें । एक एक स्वरतो विकृत होय बाकी पांच स्वर शुद्ध होय ॥ तामें निषादहीन होय तब रिषभ विकृतके सोले । १६ । गांधार विकृत करि मध्यम विकृतके । १८ । धैवतके । १८ । ये सब मिलिकें भेद । ७८ । निषादहीनके जांनिये । और धैवतहीन षाडवके विकृत स्वर एक एक कीये चौरासी । ८४ । भेद जांनिये ॥ पंचमहीन षाड्वके । एक-सो दोय भेद । १०२ । जांनिये । मध्यम षाडवके चौरासी । ८४ । भेद है । गांधारहीन षाडवके अठहतर ॥ ७८ ॥ भेद है । रिषभहीन षाडवके चौरासी भेद हें । ऐसें एक स्वर विकृत षाडक्के पांचसें दस ॥ ५१० ॥ भेद जांनिये ॥

अथ दोय विकृत स्वरनके षाडवके भेद लिख्यते ॥ जहां रिषभ ॥१॥ गांधार ॥ २ ॥ षाडवमें विकृत स्वर निषादहीन होय ॥ तहां छाणव ॥ ९६ ॥ भेह होत हें ॥ रिषभ ॥१॥ मध्यम ॥२॥ विकृत होय तब ॥ निषादहीन षाडवके ॥ ५४ ॥ चोपन भेद हें ॥ रिषभ ॥ १ ॥ धैवत ॥ २ ॥ विकृत होय तब नि-षादहीन षाडवके चोपन ॥ ५४ ॥ भेद हें ॥ अरु गांधार ॥ १ ॥ मध्यम ॥२ ॥ विकृत होय तब निषादहीन षाडवके अरु गांधार ॥ १ ॥ धैवत ॥ २ ॥ मध्यम धैवत विकृत होय तब ॥ निषादहीन षाडवके चोपव भेद ॥ ५४ ॥ ह ये भेद निषादहीन षाडवके ॥ च्यारसे विस ॥ ४२० ॥ जांनियें ॥ ऐसे धैवतहीन विकृत स्वरनके च्यारसे अठचायसी ॥ ४८८ ॥ भेद जांनिये ॥ मध्यमहीन विकृत स्वरनके च्यारसें सियासी भेद है ॥ ४८६ ॥ ऐसे धैवतहीन विकृत स्वरनके च्यारसें अठचासी ॥ ४८८ ॥ भेद जांनिये ॥ गांधारहीन विकृत स्वरनके च्यारसें दोय॥ ४०२ ॥ भेद हें ॥ रिषभहीन विकृत स्वरनके च्यारसें ऐसी ॥ ४८० ॥ भेद है ॥ अथ तिन विकृत स्वरनके बाकी तीन स्वर सुद्ध स्वर षाडवकी संख्या लिख्यते ॥ जहां रिषभ ॥ १ ॥ गांधार ॥ २ ॥ मध्यम ॥ ३ ॥ विकृत होय तहां ॥ निषादहीन षाडवके तीनसें साटि ॥ ३६० ॥ भेद जांनिये रिषभ ॥ १ ॥ गांधार ॥२॥ धैवत ॥३॥ विकृत होय बाकी निषादहीन षाडवके दोयसें अठचासी ॥ २८८ ॥ भेद हें ॥ रिषभ ॥१॥ मध्यम ॥ २ ॥ धैवत विकृत होय ॥ तब नि-षादहीन षाडवके एकसो बासट भेद ॥१६२॥ है ॥ गांधार ॥ १ ॥ मध्यम ॥२॥

धैवत ॥ ३ ॥ विक्रत होय तब निषादहीन षाडवके दोयसें सत्तर ॥ २७० ॥ भेद है ॥ ऐसे तीन विक्रत स्वरके निषादहीन षाडवके एक हजार ॥ १००० ॥ भेद हे ॥ अरु धैवतहीन षाडवके तेरासें बिस ॥ १३२० ॥ भेद हैं ॥ पंचमहीन षाडवके तीन हजार ॥ ३००० ॥ भेद है ॥ मध्यमहीन षाडवके तेरासे चवेचालीस ॥ १३४४ ॥ भेद है ॥ गांधारहीन षाडवके आठसें चोसटि ॥ ८६४ ॥ भेद है ॥ रिषभहीन षाडवके तेरासें बिस ॥ १३२० ॥ भेद है ॥ अथ च्यार स्वर विक्रत दोय स्वर सुद्ध षाडवकी संख्या लिख्यते ॥ रिषभ ॥ १ ॥ गांधार ॥ २ ॥ मध्यम ॥ ३ ॥ धैवत ॥ ४ ॥ विक्रत होय तब निषाद षाडवके ॥ एक हजार ऐशी ॥ १०८० ॥ भेद है ॥ रिषभ ॥ १ ॥ गांधार ॥ २ ॥ मध्यम ॥३॥ निषाद ॥४॥ चे विक्रत होय ॥ तब धैवतहीन षाडवके चौदासें चालीस ॥१४४०॥ भेद है ॥ रिषभ ॥ १ ॥ गांधार ॥ २ ॥ मध्यम ॥ ३ ॥ धैवत ॥ ४ ॥ विक्रत होय ॥ तब पंचमहीन षाडवके ॥ १०८ ॥ एकसों आठ भेद है ॥ रिषभ ॥ १ ॥ गांधार ॥ २ ॥ मध्यम ॥ ३ ॥ निषाद ॥ ४ ॥ विक्रत होय तब पंचमहीन षाडवके चौदासों चालीस ॥ १४४० ॥ भेद हें ॥ रिषभ ॥ १ ॥ गांधार ॥ २ ॥ धैवत ॥ ३ ॥ निषाद ॥ ४ ॥ विक्रत होय ॥ तब पंचमहीन षाडवके पंधरासें छतीस ॥ १५३६ ॥ भेद है ॥ रिषभ ॥ १ ॥ मध्यम ॥ २ ॥ धैवत ॥ ३ ॥ निषाद ॥ ४ ॥ विक्रत होय ॥ तब पंचमहीन षाडवके ॥ आठसें चोतिस ॥८३४॥ भेद है ॥ गांधार ॥ १ ॥ मध्यम ॥ २ ॥ धैवत ॥ ३ ॥ निषाद ॥ ४ ॥ विक्रत होय तब पंचमहीन षाडवके ॥ चोदासे चालीस ॥ १४४० ॥ भेद है ॥ ऐसें च्यार विक्रत स्वर होय ॥ तब पंचमहीन षाडवके ॥ त्रेसटसे साटि ॥ ६३६० ॥ भेद जांनिये ॥ रिषभ ॥ १ ॥ गांधार ॥ २ ॥ धैवत ॥ ३ ॥ निषाद ॥ ४ ॥ विक्रत होय ॥ तब मध्यमहीन षाडवके ग्यारासें बावन ॥ ११५२ ॥ भेद हें ॥ रिषभ ॥ १ ॥ धैवत ॥ २ ॥ मध्यम ॥ ३ ॥ निषाद ॥ ४ ॥ विक्रत होय तब षाडवके ॥ आठसें अठचासी ॥ ८८८ ॥ भेद है ॥ गांधार ॥ १ ॥ मध्यम ॥ २ ॥ धैवत ॥ ३ ॥ निषाद ॥ ४ ॥ विक्रत होय ॥ तब रिषभहीन षाडवके चोदासें चालीस ॥ १४४० ॥ भेद है ॥ अथ पांच स्वर विक्रत होय तब षाडवके भेद लिख्यते ॥ रिषभ ॥ १ ॥ गांधार ॥ २ ॥ मध्यम ॥ ३ ॥ धैवत ॥ ४ ॥ निषाद ॥ ५ ॥

विकृत होय तब पंचमहीन षाडवके सतावनसें साटि ॥ ५७६० ॥ भेद हे ॥ ऐसे षाडवके भेद मिलिकें इकतीस हजार पांच ॥ ३१००५ ॥ होय अब जो मूर्छना जा स्वर करिकें हीन होय ॥ ता स्वर करिकें हीनको प्रस्तार कीजिये ॥ यह षाडवकी रीतीमें तहां एकेक षाडवके प्रस्तारके सातसें बीस ॥ ७२० ॥ भेद होत है ॥ सो अवे सातसें बिस ॥ ७२० ॥ सो गुणेते इकवीस हजार ॥ पचाससो गुणे तें ॥ दोय कोटी तेइस लाख छपन हजार ॥ २२३५६००० ॥ भेद जांनियें ॥

॥ इति विकृत मूर्छनाके षाडव भेद संपूर्णम ॥

अथ शुद्ध मूर्छना विकृत मूर्छनाके औडव भेद लिख्यते ॥ तहां मूर्छनामें ॥ क्रमतें दोय दोय स्वर छोडितें ॥ औडवके भेद जांनिये ॥ तहां सुद्ध औडवके पंचहतर ॥ ७५ ॥ भेद जानियें ॥ तिनमें जब रिषभ विकृत होय ॥ तब पूर्व ॥ १ ॥ कोमल ॥ २ ॥ के भेदसों एकसों पचास ॥ १५० ॥ भेद जांनिये ॥ गांधार विकृतसों तीनसों भेद जांनिये ॥ ३०० ॥ मध्यम विकृतसों दोडसै ॥ १५० ॥ भेद जांनिये ॥ धैवत विकृतसों दोडसै भेद जांनिये ॥ निषाद विकृतसों तीनसें भेद जांनिये ॥ ३०० ॥ रिषभ ॥ १ ॥ गांधार ॥ २ ॥ बिकृतसों च्यारसें ऐसी ॥ ४८० ॥ भेद जांनियें ॥ रिषभ ॥ १ ॥ मध्यम ॥ २ ॥ विकृत सो सत्ताईससें एक भेद जांनिये ॥ २७०१ ॥ रिषभ ॥ १ ॥ धैवत ॥ २ ॥ विकृत ॥ ३ ॥ सो ॥ २७० ॥ भेद है ॥ निषाद ॥ १ ॥ विकृत ॥२॥ सो तीनसों साठी भेद जांनिये ॥ ३६० ॥ गांधार ॥ १ ॥ मध्यम ॥ २ ॥ विकृत ॥ ३ ॥ सो चारसों पचास ॥ ४५० ॥ भेद जांनिये गांधार ॥ १ ॥ धैवत ॥ २ ॥ विकृतसों ॥ ३६० ॥ भेद जांनिये ॥ गांधार ॥ १ ॥ निषाद ॥ २ ॥ विकृतसौ ॥४८०॥ भेद जांनिये ॥ मध्यम ॥१॥ धैवत ॥ २ ॥ विकृत ॥ ३ ॥ सो दोयसो सत्तर ॥ २७० ॥ भेद जानिये मध्यम ॥ १ ॥ निषाद ॥ २ ॥ विकृत ॥ ३ ॥ सो तीनसौ साठ भेद ॥ ३६० ॥ जांनिये धैवत ॥ १ ॥ निषाद ॥ २ ॥ विकृत ॥ ३ ॥ सो चारसो ऐसी ॥ ४८० ॥ भेद जानिये ॥ अथ तीन स्वर विकृत होय तहां औडवके लक्षण लिख्यते रिषभ ॥१॥ गांधार ॥ २ ॥ मध्यम ॥ ३ ॥ विकृत ॥ ४ ॥ सो नवसै वीस ॥ ९२० ॥ भेद जांनिये रिषभ ॥ १ ॥ गांधार ॥ २ ॥ निषाद ॥ ३ ॥ विकृत ॥ ४ ॥ सो

नवसै साठी ॥ ९६० ॥ भेद जांनिये ॥ रिषभ ॥१॥ मध्यम ॥ २॥ धैवत ॥३॥ विकृतसो चारसों पांच ॥ ४०५ ॥ भेद जांनियें ॥ रिषभ ॥ १ ॥ मध्यम ॥ २ ॥ निषाद ॥ ३ ॥ विकृत ॥४॥ सो पांचसौ चालीस भेद ॥५४०॥ जांनिये ॥ रिषभ ॥१॥ धैवत ॥२॥ निषाद ॥ ३ ॥ विकृत ॥ ४ ॥ सो सातसौ वीस॥७२०॥ भेद है ॥ गांधार ॥ १ ॥ मध्मम ॥ २ ॥ धैवत ॥ ३ ॥ विकृत ॥ ४ ॥ सो पांचसौ सत्तर ॥ ५७० ॥ भेद है ॥ गांधार ॥ १ ॥ मध्यम ॥ २॥ निषाद ॥ ३ ॥ विकृत ॥ ४ ॥ सो नवसै वीस भेद जानिये ॥ ९२० ॥ गांधार ॥१॥ धैवत ॥२॥ निषाद ॥ ३ ॥ विकृत ॥ ४ ॥ सो ॥ ९६० ॥ भेद जांनिये ॥ मध्यम ॥ १ ॥ धैवत ॥ २ ॥ निषाद ॥ ३ ॥ विकृत ॥४॥ सो ॥ ७२० ॥ भेद जांनिये ॥ अथ चार स्वर विकृत औडवके भेद लिख्यते ॥ जहां रिषभ ॥ १ ॥ गांधार ॥ २ ॥ मध्यम ॥ ३ ॥ धैवत ॥ ४ ॥ विकृत ॥ ५ ॥ सो नवसै ॥ ९०० ॥ भेद जांनिये ॥ रिषभ ॥ १ ॥ गांधार ॥ २ ॥ मध्यम ॥ ३ ॥ निषाद ॥ ४ ॥ विकृत ॥ ५ ॥ सों बारासेंबीस ॥ १२२० ॥ भेद है ॥ रिषभ ॥ १ ॥ गांधार ॥ २ ॥ धैवत ॥ ३ ॥ निषाद ॥ ४ ॥ विकृत ॥ ५ ॥ सों सातसें बीस ॥ ७२० ॥ भेद है ॥ गांधार ॥ १ ॥ मध्यम ॥ २ ॥ धैवत ॥ ३ ॥ निषाद ॥ ४ ॥ विकृत ॥ ५ ॥ सों बारासेंबीस ॥ १२२० ॥ भेद जांनिये ॥ ऐसें सब औडव तांननके भेद ॥ १७५०५ ॥ होत है ॥ इहां औडवमें जा मूर्छनामें जो दोय स्वरहीन होय तेई दोय स्वरहीन होय तेई दोय स्वरनकी करिकें हीन । मूर्छनाको प्रस्तार कीजियें । तहां एक एक औडवतांनको प्रस्तारके । एकसोविस ॥ १२० ॥ भेद होत है । सो एकसोविससों । सतर हजार पांचसें ॥ १७५०५ ॥ पांचको गुणें तें ॥ विकृततानके सब मिलि ॥ २१००६०० ॥ भेद होत है ॥ इति **मूर्छना प्रकरण संपूर्णम्** ॥

अथ प्रस्तारमें चलित एकादिक स्वरनकी अंत्यमे आयवेकी संख्या लिख्यते ॥ एक स्वरके प्रस्तारमें ॥ एक स्वर एक बेर आवै ॥ दोय स्वरके प्रस्तारमें दोय स्वर एक बेर आवै ॥ तीन स्वरके प्रस्तारमें ॥ तीन स्वर दोय बेर आवे ॥ चोथे स्वरके प्रस्तारमें ॥ च्यार स्वर छह बेर आवे ॥ पांच स्वरके प्र-

स्तारमें पांच स्वर चोविस बेर आवै ॥ छह स्वरके प्रस्तारमें । छह स्वर एकसो विस ॥ १२० ॥ बेर आवै ॥ सातवें स्वरके प्रस्तारमें । सातसे विस बेर आवै ॥ ७२० ॥ **इति प्रस्तार संख्या संपूर्णम् ॥**

अथ एक स्वरकी तानतें लेकें सात स्वरकी तांनतांई ॥ सात सात भेद होत हें तिनके ताननके प्रस्तारमें जितनें जितने भेद होत हें तितनें भेदनकी प्रस्तारक्रमसों संख्या लिख्यतें ॥ एक तें लेके अरु सात तांई ॥ सात अंकनकी एक पंक्ति लिख्यते ॥ तां पंक्तिमें पहले अंक सों आगलो अंक गनि । जो गिनती आवै सो धरि दीजियें ॥ वागुनिमिनतिसों आगलो अंकगुनियें । फेरवांसों आगलो गुनियें । या रितिसों साततांइ गुनियै । जो जो संख्या आवै सो धर दीजियै । आगले सातवें कोठामें ज्यो गुणो अंक होय ॥ सो सातके अंकसों गुनि । ये जो अंक आवै ॥ सो सातवें कोठाके बारह धरि देवो ॥ सो सात स्वरनकी कूटताननकी संख्या जांनियै ॥ अबै एक स्वरकी तांनको । एक भेद जांनियै ॥ १ ॥ ओर दोय स्वरनकी तांनके । दोय भेद जांनियै ॥२॥ तीन स्वरनकी तांनके छह भेद जांनियै ॥ ३ ॥ ओर च्यार स्वरनकी तांनके चोविस भेद जांनियै ॥ ४ ॥ पांच स्वरनकी तांनके ॥ एकसो विस भेद जांनियै ॥ ५ ॥ छह स्वरनकी तांनके । सातसे विस भेद ॥ ७२० ॥ जांनियै ॥ ६ ॥ सात सुरनकी तांनके ॥ पांच हजार चालिस भेद ॥ ५०४० ॥ जांनियै ॥ ७ ॥ **इति एक स्वरकी तांनतें लेकें । सात स्वरनकी तांन तांइ भेद प्रस्तारक्रम संपूर्णम् ॥**

अथ संको यंत्र लिख्यते ॥ अथ नष्ट उद्दिष्ट जांनिवेक अरथ खंडमेरुको लक्षण लिख्यते ॥ ज्या मेरुमें सात पांति कीजियै ॥ तिन ऊपरकी पांति सात कोठाकी कीजिये ॥ अरु दूसरी पांति उपरली पंक्तिके ॥ बाई ओरके प्रथम कोठा छोडि कीजियें । इहां दूसरी पांति छह कोठा कीजीयें हैं ॥ अरु तीसरी पांति दूसरी पांतिके बांईके प्रथमकोठा छोड कीजियै ॥ इहां तीसरी पांति पांच कोठा कीजै ॥ अरु चोथी पांति तीसरी पांतिके ॥ बांई ओरके प्रथम कोठा छोडि कीजिये ॥ इहां चोथी पांति च्यार कोठा कीजे ॥ अरु पांचमी चोथी

पांतीके बांई औरके ॥ प्रथम कोठाको छोडि कीजियै। इहां पांचमी पंक्ति तीन कोठा कीजियै ॥ अरु छह पंक्ति पांचवी पंक्तिके ॥

॥ अथ प्रस्तार ताननकी संख्या यंत्रम ॥

१	२	३	४	५	६	७	॥ खंडानि ॥
स	रि	ग	म	प	ध	नि	॥ स्वरसप्तक ॥
१	२	६	२४	१२०	७२०	५०४०	॥ संख्यानि ॥

बांई ओरके प्रथम कोठाको छोड कीजिये॥इहां छटी पांति दोय कोठा कीजिये॥ अरु सातवि पंक्तिके छटि पंक्तिकें बाई ओरके प्रथम कोठाकों छोडि कीजियै ॥ इहां सातवी पांति ॥ एक कोठा कीजे ॥ ऐसें सात पांति कीजियै ॥ तहां उपरली पांतिके ॥ सात कोठा है ॥ तिनेंमें पहले कोठामें एकको अंक लिखियें ॥ बाकी छह कोठामें बिंदु लिखियें ॥ इन कोठानमें ॥ ज्या तांनको ज्यानौ चाहै ॥ ता तांनके जितनें स्वर होय ॥ तितनें गिनतिकें फल अथवा फूल धरियै ॥ तामें नष्ट उद्दष्टको ग्यान होय ॥ ओर दूसरि पांतिके प्रथम कोठामें ॥ एकको अंक राखियें ॥ दूसरो कोठामें वा अंककों दूनो कर लिखिये ॥ अरु तीसरे कोठामें दूसरे कोठाके अंकको तीन गुनो कर धरिये ऐसेही चोथे कोठामें तीसरे कोठाके अंकको चोगुनो करि धरिये॥ पांचवें कोठामें चोथे कोठाको पांच गुणो धरिये ॥ छहटे कोठामें पांचवे कोठाकें ॥ अंककों ॥ छह गुणो करि धरिये ॥ ऐसें दूसरी पांतिके कोठा धरिये॥अब तीसरी पांति दूसरी पांतिके अंकसों भरिये सो कहे हें ॥ तीसरी पांतिके कोठा उपर दूसरी पांतिकों जो कोठा आवे ॥ ता कोठाके अंकको ॥ दूणू करि तीसरी पांतिकें कोठामें धरियें ॥ इहां तीसरी पांतिके प्रथम कोठाको उपरि ॥ दूसरी पांतिको दूसरो कोठा है ॥ तामें ज्यो दोयको अंक ताकों दूनो करियें ॥ तब च्यार होय सो चारको अंक तीसरी पांतिके पहले कोठामें लिखिजियै ॥ ऐसेंहि तीसरीके बाकी च्यार कोठामें ॥ दूसरी पंक्तिके कोठाकें ॥ अंक दूनें करि धरिये ॥ ओर चोथी पांति कोठाके उपर जो दूसरी ॥ तिसरी पांतिके

कोठा ॥ तिनको जोडीकें ॥ चोथी पांतिके कोठामें धरि ये ॥ इहां चोथी पांतिके प्रथम कोठाके उपर तीसरी पांतिको दूसरो कोठो ॥ अरु तिसरी पांतिको तिसरो कोठा तिन दोनुनके ॥ अंक छहटे रह तिनको जोडे ते ॥ अठारहको अंक होय ॥ वह अठारहको अंक चोथी पांतिके ॥ प्रथम कोठामें [illegible]रिये ॥ बाकीके कोठामें दूसरी तिसरी चो[illegible] ॥ अंक जोड धरिये ॥ अरु पांचवी पांतिके कोठाके उपरको ॥ चोथी पांतिके कोठा ॥ अरु दूसरी पांतिके कोठा तिनके अंक मिलाय पांचवी पांतिके कोठामें धरिये ॥ इहां

मेरुयंत्रम्							
	१	०	०	०	०	०	०
		१	२	६	२४	१२०	७२०
			४	१२	४८	२४०	१४४०
				१८	७२	३६०	२१६०
					९६	४८०	२८८०
						६००	३६००
							४३२०

पांचवी पांतिके ॥ पहले कोठाके उपर चोथी पांतिके दूसरा कोठा हे ॥ तामें ॥७२॥ को अंक है ॥ अरु दूसरी पांतिको चोथे कोठाको अंक चोवीसको है ॥ इन दोनुको मिलांयेतें ॥ छिनमें अंक होय ॥ सो पांचमी पांतिके ॥ प्रथम कोठाके धरिये ऐसेंहि बाकी कोठा भरिये ॥ ओर छटि पांतिके कोठाके ॥ उपर पांचमी पांति कोठा ॥ अरु दूसरी पांतिके कोठा ॥ तिनके अंक मिलाय छटि पांतिके कोठा भरिये ॥ इहां छटि पांतिके कोठाके उपर पांचमी पांतीको ॥ दूसरा कोठामें अंक च्यारसे ऐसी ॥ ४८० ॥ अरु दूसरी पांतिको पांचमों कोठा जामें ॥ एकसो विसको आंक ॥ इन दोनुनको मिलायकें ॥ छहसें ॥ ६०० ॥ को अंक छटि पांतिके प्रथम कोठामें धारियें ॥ ऐसेंहि यांको दूसरा कोठामें धरियें ॥ ओर सातमी पांतिके कोठाके ॥ उपर छटि पांति कोठा ॥ अरु दूसरी पांतिके कोठा मिलायकें जो अंक आवै ॥ सो सातमी पांतिके कोठामें धरियें ॥ इहां सातमी प[illegible] ॥ [illegible] र छटि पांतिको दूसरो कोठा ॥ अरु दूसरी पांतिके छटे कोठा ति[illegible]यें ॥ स्वरनको [illegible] त्रेचालीससें बीसको अंक है ॥ सातमी पांतिके कोठामें धरिये मेरुमें ॥ अंक[illegible] गमें ॥ प [illegible] धरिये सो खंड मेरु जांनिये ॥ इति

ग म ॥ म म प ॥ म प

मेरुलछन

अथ सातों स्वरके तानके विचार करिबेको मेरु तांकी सातों पांति तिनको विचार लिख्यते ॥ एक स्वरको जो आलाप सो तांन कहिये ॥ तांकी जों पांति ॥ एक कोठाकी ॥ सो मेरुमें पहली पांति जांनिये तां कोठामें एकको अंक है ॥ सो पहले स्वरकी सहनांणी ॥ सों गिणतीके ताई लिख्यो है ॥ दोय स्वरकी जो तांन ॥ तांकी जो पांति दोय कोठाकी सो मेरुमें दूसरी पांति जांनिये ॥ ता पांतिमें पहले कोठाको एकको ज्यो अंक सो पहले स्वरकी सहनांणी ॥ अरु दूसरे कोठामें जो शून्य धरिजे सो दूसरे स्वरकी सहनांणी है ॥ इहां एक स्वरकी तांन छोडिकें सूधें क्रमसों ॥ दोय स्वरनकी तांन सोले ॥ सात स्वर तांइ जो तांन ॥ ताके अंतको जो स्वर तांकी सहनांणी ॥ अंतके कोठामें सुन्य दीजिये ॥ यह सब ठोर शून्य अंतमें जानियें ॥ अरु तीन स्वरकी जो तांन ॥ ताकी जो पांति ॥ तीनकी बाकीसों मेरुमें तीसरी ॥ पांति जांनिये ताके पहले कोठामें च्यारको अंकसों पहले स्वरकी सहनांणी ॥ अरु दूसरे कोठामें ॥ दोय दोयको अंकसो दूसरे स्वरकी सहनांणी तीसरे कोठामें शून्यसे तीसरेकी सहनांणी जांनिये ॥ अरु च्यार स्वरकी जो तान तांकी जो पांति च्यार कोठाकी सो मेरुमें चोहति पांति जांनिये ॥ ताके प्रथम कोठामें जो अठारेको अंक ॥ सो पहले स्वरकी सहनांणी दूसरे कोठामें जो बारहको अंक ॥ १२ ॥ सो दूसरे स्वरकी सहनांणी ॥ तीसरे कोठामें जो छहटेको अंक सो तीसरे स्वरकी सहनांणी ॥ चोथे कोठामें जो शून्य सो ॥ चोथे स्वरकी सहनांणी जांनिये ॥ अरु पांच स्वरकी तांन ताकी जो पांति ॥ पांच कोठाकी जो मेरुमें पांचमी जांनिये ॥ ताके प्रथम कोठामें छण्णवको ॥ ९६ ॥ अंक है सो पहले स्वरकी सहनांणी जांनिये ॥ दूसरे कोठामें बाहात्तरको ॥७२॥ को अंकसो दूसरे स्वरकी सहनांणी तीसरे कोठामें अठतालीस को आंक ॥ ४८ ॥ सो तिसरे स्वरकी सहनांणी ॥ चोथे कोठामें चोइसको ॥ २४ ॥ अंक सो चोथे स्वरकी सहनांणी ॥ पांचवें कोठामें शून्य सो पांचवें स्वरकी सहनांणी ज्यो दोयको अंवछह स्वरकी जो तान ताकी जो पांति छह कोठाकी सो तिसरी पांतिके पहले को ताके प्रथम कोठामें छहसेको ॥ ६०० ॥ अंक सो ठामें ॥ दूसरी पंक्तिके कोठसरे कोठामें च्यारसे ऐसीको ॥ ४८० ॥ अंक सो ठाके उपर जो दूसरी ॥ तिससरे कोठामें

तीनसें साटिको ॥ ३६० ॥ अंक सो तीसरे स्वरकी सहनांणी ॥ चोथे को-
ठामें दोयसें चालिसको ॥ २४० ॥ अंक सो चोथे स्वरकी सहनांणी पांचवे
कोठामें एकसो बीसको ॥ १२० ॥ अंकसो पांचवां स्वरकी सहनांणी ॥ छटे
कोठामें शून्य सो छटे कोठेकी सहनांणी ॥ अरु सात स्वरकी जो तांन ताकी
जो पांति सात कोठाकी ॥ सो मेरुमें सातवी जांनिये ॥ ताके पहले कोठामें च्यार
हजार तीनसेंबीसको ॥ ४३२० ॥ सो पहले स्वरकी सहनांणी ॥ दूसरे
कोठामें छहतिसें ॥ ३६०० ॥ को अंक हे सो ॥ दूसरे स्वरकी सहनांणी तीसरे
कोठामें अठाइससें ऐसी ॥ २८८० ॥ को अंक सो तीन स्वरकी सहनांणी ॥
चोथे कोठामें एकीससें साटि ॥ २१६० ॥ को अंक है सो ॥ चोथे स्वरकी सह-
नांणी पांचवां कोठामें चोदासें चालीसको अंक हे सो ॥ १४४० ॥ पांचवां स्वरकी
सहनांणी ॥ छटे कोठामें सातसें बीसको अंक ॥ ७२० ॥ हे सो छटे स्वरकी
सहनांणी ॥ सातवां कोठामें शून्य हे सो सातवां स्वरकी सहनांणी जांनिये ॥

॥ इति मेरुकी सातवी पांतिनको विचार संपूर्णम् ॥

अथ संख्याप्रस्तार खंडमेरु नष्ट उदिष्ट इनको लक्षण उदाहरण

तहां प्रथम संख्या ॥ या मेरुमें सातों पंक्तिनमें ॥ जो कोठानमें ... जो भेद होय ॥
सो आरोहक्रमसों जांनियें ॥ सो वह आरोहक्रम कहे तो एक स्वर ...के ॥ आ-
गले स्वरसों लीजिये ॥ जेसें ॥ स ॥ ग ॥ प ॥ नि ॥ यहां एक स्व... दो लिखे
आगले स्वरसो मिलि ॥ च्यार स्वरको सूधो आरोह क्रमसों ॥ अ...र जितनें
दोय स्वर छोडि ॥ आगलेसु मिलि आरोहक्रम होत है ॥ जैसें ॥ मेरुकी
नि ॥ यह दोय स्वरकों छोडि आगले आगलेसों मिलि ॥ तीन स्व...खिये ॥
सुधो आरोहक्रम है ॥ ओर कहूके लगते स्वरको ॥ आरोह क्रम हे ॥ एक
॥ स ॥ रि ॥ ग ॥ म ॥ प ॥ ग ॥ म ॥ प ॥ ध ॥ म ॥ प ॥ ध ॥ ... जांनि-
तें स्वर लेकें च्यार स्वरनको सुधो आरोहक्रम है ॥ ऐसेही पांच स्वर... है ॥
...तिकें कोठा ... ऐसें ... स ॥ रि ॥ ग ॥ ग ॥ प ॥ रि ग ॥ म प ध ग म ॥ प ॥ ध ॥ ...
...नके अंक मिलायेकें ॥ स्वरनको सुधो आरोह क्रम है ॥ आरोह क्रम स्वर...
... या रितिसों मेरुमें ॥ अंक ...गमें ॥ प ध रि ग म प ध नि ॥ ऐसेंहि तीन स्वरको
ग म ॥ म म प ॥ म प ध ॥ प ध नि ॥ ऐसें जांनियें अब
संपूर्णम् ॥

दोय स्वरको क्रम ॥ स रि ॥ रि ग ॥ ग म ॥ म प ॥ प ध ॥ ध नि ॥ एक स्वरको क्रम ॥ स ॥ रि ॥ ग ॥ म ॥ प ॥ ध ॥ नि ॥ ऐसें एक स्वरकी तांन लेकें सात सुरकी तांन ताई ॥ जो सात तांन तिनमें ॥ सुधो आरोह क्रम जांनियें ॥ या सुधेहि आरोहक्रमसो तांनको प्रस्तार चले है ॥ सो प्रस्तार जब तांनको आरोह क्रम आवे ॥ तहां तांइ करनो यातें मेरुकी पांतिनमें ॥ जितनें कोठाकी पांति होय ॥ ता पांतिमें तितनें ॥ स्वरकी तानके सुध क्रमसों ॥ पहलो सुर दूसरो सुर ॥ तीसरो सुर चोथो सुर ॥ मेरुकी पांतिके पहले ॥ १ ॥ दूसरे ॥ २ ॥ तीसरे ॥ ३ ॥ चोथे ॥ ४ ॥ कोठामें जांनियें ॥ ता सुधेहि क्रमसों वा तांनके नष्ट उदिष्ट ॥ हिसाबकर समझ लिजियैं ॥ जैसें स रि ग म ॥ या सुधे क्रमसों ॥ च्यार सुरकी तांन होय तो ॥ मेरुकी चोथी पंक्तिके ॥ च्यारो यां सुधे क्रमसों च्यार सुरकी तांनकी नांम होय तो ॥ मेरुकी चोथी पंक्तिके च्यार कोठानमें क्रमसों ॥ स ॥ म ॥ प ॥ नि ॥ जांनिये ॥ ऐसेही ॥ म ॥ प ॥ ध ॥ नि ॥ या काठम सुधेसों ॥ च्यार सुरकी तांन होय तो मेरुकी चोथी पांतिके ॥ च्यार तीसरेकी सहनांणों ॥ म ॥ प ॥ ध ॥ नि ॥ जांनिये ॥ सो अब जा सुधे क्रमसों तान कोठाकी सो मेरुमें जितनें स्वर होय ॥ मेरुमें उतनें कोठाकी जो पंक्ति ॥ तांके अंक ॥ सो पहनको जो सुधो क्रम ॥ तांहि क्रमसों एक आदिक स्वर समझिये सो दूसरे स्वरके रि ॥ ग ॥ म ॥ यह च्यार सुरकी तांनको ॥ सुधो आरोहक्रम होय सहनांणी ॥ चोथी पंक्तिमें च्यार कोठानके पहले कोठामें षड्ज समझिये ॥ १ ॥ अरु पांच स्वरकोठामें रिषभ समझिये ॥ २ ॥ तीसरे कोठामें गांधार समझिये ॥३॥ निये ॥ ताके में मध्यम समझिये ॥ ४ ॥ या तांनके प्रस्तारमें जो तांनके ॥ अंतमें सहनांणी जांनि तो अठारे ॥ १८ ॥ को अंक लीजिये ॥ ओ जो तांन अंत गांधार स्वर सहनांणी तीसरे छहको अंक समझिये ॥ ओर जो तांनके अंतमें मध्यम होय तो नांणी ॥ चोथे ये । अरु । म । प । ध । नि ॥ यां सुधे क्रमसों च्यारि सुरकी पांचवें कोठ प्रस्तार होय तो मेरुकी चोथी पंक्तिके कोठानमें । म । प । ध । नि । जो ताच्यारों स्वर क्रमसों । पहले ।१। दूसरे । २ । तीसरे ।३। चोथे । ४ । कोठा-नमें समझिये । तब । म । प । ध । नि । या तांनके प्रस्तारमें । जो तांनके अंतमें मध्यम आवे तो अठारे । १८ । को अंक समझिये ॥ ओर जां तांनके

पंचम आवे तो बारह । १२ । को अंक समझिये ॥ ओर जां तांनकी अंतमें धैवत आवे तो छह ।६। को अंक समझिये ॥ ओर जां तांनकी अंतमें ॥ निषाद आवे तो सून्य लीजिये ॥ ऐसेहि । स ग । प । नि । या च्यार स्वरकी तांनके प्रस्तारमें याहि क्रमसों जांनिये ॥ ऐसें सुधे आरोहक्रमसों तांनके प्रस्तार होय । यातें वहि क्रमसों स्वर समझिये । उनमें जो स्वर अंत आवे तासों अंक लीजिये ॥ ऐसेंहि दो सुर आदिक तांननके प्रस्तारमें । मेरुकी दोय कोठाकी पांती आदि पंक्तिमें । सुधे आरोह क्रमसों वा तांनके स्वर समझिये । सो नष्ट उदिष्ट तांनको होय यांहि उन कोठानमें । नष्ट उदिष्ट समझावेको आंक धरे है ॥ अंक नष्टमें अथवा उद्दिष्टमें । तांनकें जितने स्वर होय । तीतने पांतिनसों । एक एक कोठाके अंक लेकरि नष्ट संख्या वा उद्दिष्टकी संख्या बनाये तहां नष्टको लक्षण लिख्यते । जो प्रस्तारमें पूछे भेदकी संख्या सों पूछे भेदको रूप बनावनो सो नष्ट जानिये ओर पूछे रूपसों पूछे रूपकी संख्या बनावनी । सो उद्दिष्ट जांनियै । अथ नष्ट उद्दिष्ट करवेके प्रकारको उदाहरण लिख्यते । तहां प्रथम उद्दिष्ट कहत है ॥ तांन के प्रस्तारमें जो भेद होय ॥ ताके अंतमें जो स्वर होय सो अंतस्वर है ॥ सो अंतस्वर सूधे तांनके ॥ आरोह क्रमसों मेरु पांतिके ज्या कोठामें आवे । ता, कोठाको अंकजुदो लिखे है । ओर वो अंत स्वर छोडिये ॥ अंतस्वर छोडिके पिछे । बाकी स्वर जितनें है ॥ तितनें जो अंतस्वर है । सो अंतस्वर सूधे ॥ आरोह क्रमसों । मेरुकी वा पांतिकी पहलें पांतिके जां कोठामें होय तां क्रमसो वा दूस जुदो, लिखिये ॥ ओर वो अंतस्वर छोडि दीजिये ॥ एकको ष्ट तांनके सु पांतिनके ॥ एक एक कोठाके ॥ अंक लेकें जोडीये सो जो ॥ रह्यो अ भेद जांनिये ॥ जैसें च्यार स्वरकी तांनमें ॥ ग ॥ स ॥ कोठामें ग्रह है ॥ च्यार स्वरकी तांन है । याते मेरु की संख्या होय ॥ के बा । रि । यांमें । अंत्यस्वर रिषभ है क ॥ अठारे ॥ १८ लीजि हें । या सूधे क्रमसों वा तांनको ति झ लिजिये ॥ इति उ को ठामें पायो । सो, तें, दूसरे के गां को प्रकार लिख्यते वा तांनकें अंतमें जब रिषभ छो वारो कोई पूछे तो । बाइ ।

अठारवेकी प्रस्तारमें सब ठौर सम नहीं । अथ संख्याको रूप पुछवा तितनें कोठानकी पूर्ति

रिषभ गये । म ग स । यह तीन स्वरकी तांन रही । या तांनमें अंत्य स्वर षड्ज हैं ॥ यह तांन तीन स्वरकी है । यातें मेरुकी तीसरी पांति मांहि । अब तांनको अंत स्वर तो षड्ज हैं ॥ ओर या तांनको सुधो क्रम । स ग म । यह हैं । या सुधेक्रमसों वा तांनको अंत्य स्वर षड्ज सो मेरुके तिसरे पांतिके । प्रथम कोठामें पायो । यातें वा कोठाको । ज्यों च्यारिको अंकसो जूदो लिखिये । ओर अंत्य स्वर जो षड्ज सों छोडि दिजियें । तब । म ग । ऐसी दोय स्वरकी तांन रही । तो दोय स्वरकी तांनही हें । यातें मेरुकी दूसरी पांति वाही । तब । म ग । या तांनमें अंत्य स्वर गांधार है ॥ अरु वा तांनको सुधो क्रम य है । तो यां सुधें क्रमसों अंत्य स्वर ज्यो गांधार सों मेरुकी दूसरी पांतिके । प्रथम कोठामें पायो ॥ यातें वा कोठामें जो एकको अंक सो जुदो लिखिजे ॥ ओर अंत्य स्वर जो गांधार सों छोडि दिजिये ॥ तब म यह एक सूरकी तांन रही ॥ यामें मेरुकी पहली पांति पाई ॥ अब यह म एक स्वरकी तांनको अंत्य स्वर है ॥ ओर या तांनको सुधो स्वर क्रम ॥ म ॥ यहीं है ॥ यातें पहली पंक्तिके कोठामें जो एक सो जुदो लिखिजे ॥ सो वह मध्यम छोडि दिजिये ॥ अब कछूभी बाकी नही रहीं ॥ अब जां जां तानके अंकसो जे जे अंक पाये ॥ ते ते अंक ॥ वा तांनके सुरके उपर लिखिये ॥ यहां ॥ म ॥ म ॥ स ॥ रि ॥ यह तांन है ॥ यांके रिषभसों बारहको अंक पायो सो रिषभके उपर लिखिये ॥ ओर षड्ज जो च्यारको अंक पायो ॥ सो षड्ज उपर लिखिये ॥ ओर याके गांधारसों ... अंक पायो ॥ सो गांधारके उपर लिखिये ॥ ओर याके मध्यम ...कको ... को अंक पायो ॥ सो मध्यम उपर लिखियै ॥ ... सो जो ॥ ... अब इन अंकनको जोडीये ॥ तब ॥ १८ ॥ ... ॥ ग ॥ स ॥ ... तांन ॥ स ॥ रि ॥ ग ॥ म ॥ या तांनके ... संख्या होय ॥ ... ानिये ॥ ऐसेंहि एक स्वरादि ता स्वर ... ॥ अठारे ॥ १८ ... पूर्णम ॥

...झिये ... झ लिजिये ॥ इति उ...

...में मध्यम ... आव... को प्रकार लिख्यते ... तनें स्वरकी तांनके भेदके वारो कोई पूछे तो । ... समाझिये ... छे तांनके जितने स्वर होय । ... तांनमें मेरुकी पहली पांतितांइ ।

गीनियै। जितनी पांति हाय तिनके एक एक अंक लिजिये सो वे अंक ऐसें समझो तैसो लिजिये ऐसें उन अंकनको जोड पूछि संख्या बनिजाय तो पिछे जो जो अंक जा जा पंक्तिमेंसु लियो। तो तो अंकके तो तो पांतिके कोठामें। नष्ट जांनके सूधे क्रमसों। जो जो अंत्य स्वर आवे। सो अंत्य स्वर वा क्रमसों पहलो दूसरो तिसरो चोथो जितने नष्ट तांनके स्वर होय तितने स्वर उपर उपर वहि क्रमसों लिखिये॥ सब सुर अंक प्रमान आय चुके, तब उपरले सुर लेकें॥ निचले सुर तांई दाहिनें क्रमसों बांचियै। वहि रूप पूछे भेद संख्याको जांनिये। जैसें स। रि। ग। म। या च्यार सुरनकी तांन हैं॥ अठारहकी संख्याको रूप पूछे, मेरुकी चोथी च्यार कोठाकी पांतितें लेकें॥ पहली एक कोठाकी पांतितांइ च्यार पांति लिखिये॥ फेर उन च्यारो पांतिनसो ऐसे अंक लिखजिये॥ तिनसो अठारहकी संख्यानसें चोथी पांतिके दूसरे कोठामें बारहको अंक है, सो लिजिये। ओर तीसरी पांतिके। प्रथम कोठामें च्यारको अंक हे, सो लिजिये। फेर दूसरी पांतिके प्रथम कोठामें। एकको अंक है सो लिजिये। फेर पहली पांतिके प्रथम कोठामें एकको अंक है सो लिजिये। इन च्यारौ अंकनके। १२। ४। १।१। जोडी। १८। अठारकी संख्या होत है सो इन अंकनसों इन अंकनके कोठानमें। नष्ट तांनके सुधे। आरोह क्रमसों। जे सुर आवे ते च्यार सुर बाये उपरकों। पहले अंत्य स्वर फेर तीसरो फेर दूसरो फेर पहलो ऐसें लिखिये। तो पहले स्वर लेवेकी रीतिमें। जो स्वर चुके ताको तांनमें घटाय दीजियें। सो प्रकार लिखतहे यह चोथी पांतिके दूसरे कोठामें नष्ट तांनके सूधे क्रम स। रि। म। म। या क्रमसो वा दूसरे कोठामें रिषभ आवे। सो रिषभ स्वर अंत्यको लिखिये। ओर वा नष्ट तांनके सुधे क्रममें रिषभ। टीपदीजिये। तब सुधो क्रम। म।ग। मा। ऐसो रह्यो अब मेरुकी तीसरी पांतिके प्रथम कोठामें च्यारको अंक है॥ ओर वांहि कोठामें स। प। स। या सुधे क्रमसों षड्ज है सो। अंत्य स्वर षड्ज वा रिषभके बाई ओर लिखि दीजिये॥ ओर स। ग। मा। या क्रममें षड्ज घटाय दीजिये। तब म। ग। ऐसो क्रम रह्यो। अवे मेरुकी पांतिके प्रथम कोठामें। एकको अंक है। बाकी कोठामें ग। म। या सूधे क्रमसों गांधार है। सो। अंत्यस्वर गां... षड्जके बाइ।

ओर उपर लिखिये । अरु । म । ग । या क्रमसो गांधार घटाय दीजिये । तब म । ऐसो सुधो क्रम रह्यो । अबै मेरुकी पहली पांतिके कोठामें । एकको अंक है बाकी कोठामें । म । या सुधे क्रमसो मध्यम है सो । अंत्यस्वर मध्यम । गांधारकी बाइ ओर उपर लिखियें । अरु म या क्रममें मध्यम । घटाय दिजिये । तब संपूर्ण क्रम होय । चुक्यो सो लिखे स्वरको दाहिनें क्रमसें वांचिये । तब । म । ग । रि यही अठारवे भेदको रूप है ॥ इति नष्ट संपूर्णम् ॥

अथ प्रस्तारको प्रकार लिख्यते ॥ ज्या तांनको प्रस्तार करनों होय ता तांनको सुधे क्रमसों स्वर लिखिये सो क्रम पांति भई । फेर सुधे आरोह क्रममें । जो पहलो स्वर होय सो अगले स्वरके निचे लिखनों । ओर उपरलि पांतिके दाहिनी ओरके अक्षर नीचे स्वरके दाहिनी ॥ ओर लिख देनें ॥ ओर उवेरे जो स्वर ॥ सो सुधे आरोह क्रमसों ॥ वा नीचले स्वरके बांई ओर लिख देनें ॥ ऐसेंहि तांनको आरोह होय ॥ तहां तांइ यह प्रकार करनों ॥ याही प्रकारको प्रस्तार कहत है ॥

॥ अथ एक आदिस्वरको प्रस्तार ॥

(१) **प्रथम स्वरको प्रस्तार–१.** (स)

स

(२×१) **दो स्वरका प्रस्तार–२.** (स रि)

स रि

रि स

(३×२×१) **तीन स्वरका प्रस्तार–६.** (स रि ग)

स रि ग

स ग रि

रि स ग

रि ग स

ग स रि

ग रि स

(४×३×२×१) **चार स्वरोंका प्रस्तार. २४** (स रि ग म)

स रि ग म	रि स ग म	ग स रि म	म ग रि स
स ग रि म	रि स म ग	ग स म रि	म ग स रि
स म रि ग	रि ग स म	ग रि स म	म रि स ग
स रि म ग	रि ग म स	ग रि म स	म रि ग स
स ग म रि	रि म ग स	ग म स रि	म स ग रि
स म ग रि	रि म स ग	ग म रि स	म स रि ग

(५×४×३×२×१) **पांच स्वरोंका प्रस्तार. १२०** (स रि ग म प)

स

स रि ग म प	स ग रि म प	स म ग रि प	स प ग रि म
स रि ग प म	स ग रि प म	स म ग प रि	स प ग म रि
स रि म प ग	स ग प म रि	स म प ग रि	स प रि ग म
स रि म ग प	स ग प रि म	स म प रि ग	स प रि म ग
स रि प म ग	स ग म रि प	स म रि प ग	स प म रि ग
स रि प ग म	स ग म प रि	स म रि ग प	स प म ग रि

रि

रि स ग म प	रि ग स म प	रि म ग स प	रि प ग स म
ग प म	रि ग स प म	रि म ग प स	रि प ग म स
ग	रि ग प म स	रि म प ग स	रि प स ग म

रि स म ग प	रि ग प स म	रि म प स ग	रि प स म म
रि स प म ग	रि ग म स प	रि म स प ग	रि प म स ग
रि स प ग म	रि ग म प स	रि म स ग प	रि प म ग स

ग

ग रि स म प	ग स रि म प	ग म स रि प	ग प स रि म
ग रि स प म	ग स रि प म	ग म स प रि	ग प स म रि
ग रि म प स	ग स प म रि	म म प स रि	ग प रि स म
ग रि म स प	ग स प रि म	ग म प रि स	ग प रि म स
ग रि प म स	ग स म रि प	ग म रि प स	ग प म रि स
ग रि प स म	ग स म प रि	ग म रि स प	ग प म स रि

म

म रि ग स प	म ग रि स प	म स ग रि प	म प ग रि स
म रि म प स	म ग रि प स	म स ग प रि	म प ग स रि
म रि स प ग	म ग प स रि	म स प ग रि	म प रि ग स
म रि स ग प	म ग प रि स	म स प रि ग	म प रि स ग
म रि प स ग	म ग स रि प	म स रि प ग	म प स रि ग
म रि प ग स	म ग स प रि	म स रि ग प	म प स ग रि

प

प रि ग म स	प ग रि म स	प म ग रि स	प स ग रि म
प रि ग स म	प ग रि स म	प म ग स रि	प स ग म रि

प रि म स ग	प ग स ग रि	प म स ग रि	प स रि ग म
प रि म ग स	प ग स रि म	प म स रि ग	प स रि म ग
प रि स ग ग	प ग म रि स	प म रि स ग	प स म रि ग
प रि स ग म	प ग म स रि	प म रि ग स	प स म ग रि

(६×५×४×३×२×१)　　छह स्वरोंका प्रस्तार. ७२०　　(स रि ग म प ध)

स

स रि म म प ध	स रि म ग ध प	स ग रि म प ध	स ग प म ध रि
स रि ग म ध प	स रि म ग प ध	स ग रि म ध प	स ग प म रि ध
स रि ग ध प म	स रि म प ग ध	स ग रि ध म प	स ग प ध रि म
स रि ग ध म प	स रि म प ध ग	स ग रि ध प म	स ग प ध म रि
स रि ग प ध म	स रि म ध ग प	स ग रि प म ध	स ग प रि ध म
स रि ग प म ध	स रि म ध प ग	स ग रि प ध म	स ग प रि म ध
स रि प ग म ध	स रि ध ग प म	स ग म रि प ध	स ग ध रि प म
स रि प ग ध म	स रि ध ग म प	स ग म रि ध प	स ग ध रि म प
स रि प ध ग म	स रि ध प म म	स ग म प रि ध	स ग ध म रि प
स रि प ध म ग	स रि ध प म ग	स ग म प ध रि	स ग ध म प रि
स रि प म ध ग	स रि ध म प ग	स ग म ध प रि	स ग ध प रि म
स रि प म ग ध	स रि ध म ग प	स ग म ध रि प	स ग ध प म रि
स म रि ग ध प	स म प ध ग रि	स प रि ग ध म	स प म रि ग ध

स म रि ग प ध	स म प ध रि ग	स प रि ग म ध	स प म रि ध ग
स म रि ध प ग	स म प ग रि ध	स प रि ध म ग	स प म ग रि ध
स म रि ध ग प	स म प ग ध रि	स प रि ध ग म	स प म ग ध रि
स म रि प ग ध	स म प रि ग ध	स प रि म म ध	स प म ध रि ग
स म रि प ध ग	स म प रि ध ग	स प रि म ध ग	स प म ध ग रि
स म ग रि प ध	स म ध प ग रि	स प ग ध रि म	स प ध रि ग म
स म ग रि ध प	स म ध प रि म	स प ग ध म रि	स प ध रि म ग
स म ग प रि ध	स म ध रि प ग	स प ग रि म ध	स प ध म ग रि
स म ग प ध रि	स म ध रि ग प	स प ग रि ध म	स प ध म रि ग
स म ग ध प रि	स म ध ग रि प	स प ग म ध रि	स प ध ग रि म
स म ग ध रि प	स म ध ग प रि	स प ग म रि ध	स प ध ग म रि
स ध रि ग म प	स ध ग म रि प	स ध म रि ग प	स ध प म ग रि
स ध रि ग प म	स ध ग म प रि	स ध म रि प ग	स ध प म रि ग
स ध रि प ग म	स ध ग रि म प	स ध म प रि ग	स ध प रि म ग
स ध रि प म ग	स ध ग रि प म	स ध म प ग रि	स ध प रि ग म
स ध रि म ग प	स ध ग प रि म	स ध म ग रि प	स ध प ग म रि
स ध रि म प ग	स ध ग प म रि	स ध म म प रि	स ध प ग रि म

रि

रि स म म प ध	रि स म ग ध प	रि ग स म प ध	रि ग प म ध स
रि स ग म ध प	रि स म ग प ध	रि ग स म ध प	रि ग प म स ध

रि स ग ध प म	रि स म प ग ध	रि ग स ध म प	रि ग प ध स म
रि स ग ध म प	रि स म प ध ग	रि ग स ध प म	रि ग प ध म स
रि स ग प ध म	रि स म ध ग प	रि ग स प म ध	रि ग प स ध म
रि स ग प म ध	रि स म ध प ग	रि ग स प ध म	रि ग प स म ध
रि स प ग म ध	रि स ध ग प म	रि ग म स प ध	रि ग ध स प म
रि स प ग ध म	रि स ध ग म प	रि ग म स ध प	रि ग ध स म प
रि स प ध म म	रि स ध प ग म	रि ग म प स ध	रि ग ध म स प
रि स प ध म ग	रि स ध प म ग	रि ग म प ध स	रि ग ध म प स
रि स प म ध ग	रि स ध म प ग	रि ग म ध प स	रि ग ध प स म
रि स प म ग ध	रि स ध म ग प	रि ग म ध स प	रि ग ध प म स
रि म स ग ध प	रि म प ध ग स	रि प स ग ध म	रि प म स ग ध
रि म स ग प ध	रि म प ध स ग	रि प स ग म ध	रि प म स ध ग
रि म स ध प ग	रि म प ग स ध	रि प स ध म म	रि प म ग स ध
रि म स ध ग प	रि म प ग ध स	रि प स ध ग म	रि प म ग ध स
रि म स प ग ध	रि म प स ग ध	रि प स म ग ध	रि प म ध स ग
रि म स प ध ग	रि म प स ध ग	रि प स म ध ग	रि प म ध ग स
रि म ग स प ध	रि म ध प ग स	रि प म ध स म	रि प ध स ग म
रि म ग स ध प	रि म ध प स ग	रि प ग ध म स	रि प ध स म ग
रि म ग प स ध	रि म ध स प ग	रि प ग स म ध	रि प ध म ग स
रि म ग प ध स	रि म ध स ग प	रि प ग स ध म	रि प ध म स ग

रि म ग ध प स	रि म ध ग स प	रि प ग म ध स	रि प ध ग स म
रि म ग ध स प	रि म ध ग प स	रि प ग म स ध	रि प ध ग म स
रि ध स ग म प	रि ध ग म स प	रि ध म स ग प	रि ध प म ग स
रि ध स ग प म	रि ध ग म प स	रि ध म स प ग	रि ध प म स ग
रि ध स प ग म	रि ध ग स म प	रि ध म प स ग	रि ध प स म ग
रि ध स प म ग	रि ध ग स प म	रि ध म प ग स	रि ध प स ग म
रि ध स म म प	रि ध ग प स म	रि ध म ग स प	रि ध प ग म स
रि ध स म प ग	रि ध ग प म स	रि ध म ग प स	रि ध प ग स म

ग

ग रि स म प ध	ग रि म स ध प	ग स रि म प ध	ग स प म ध रि
ग रि स म ध प	ग रि म स प ध	ग स रि म ध प	ग स प म रि ध
ग रि स ध प म	ग रि म प स ध	ग स रि ध म प	ग स प ध रि म
ग रि स ध म प	ग रि म प ध स	ग स रि ध प म	ग स प ध म रि
ग रि स प ध म	ग रि म ध स प	ग स रि प म ध	ग स प रि ध म
ग रि स प म ध	ग रि म ध प स	ग स रि प ध म	ग स प रि म ध
ग रि प स म ध	ग रि ध स प म	ग स म रि प ध	ग स ध रि प म
ग रि प स ध म	ग रि ध स म प	ग स म रि ध प	ग स ध रि म प
ग रि प ध स म	ग रि ध प स म	ग स म प रि ध	ग स ध म रि प
ग रि प ध म स	ग रि ध प म स	ग स म प ध रि	ग स ध म प रि

ग रि प म ध स	ग रि ध म प स	ग स म ध प रि	ग स ध प रि म
ग रि प म स ध	ग रि ध म स प	ग स ग ध रि प	ग स ध प म रि
ग म रि स ध प	ग म प ध स रि	ग प रि स ध म	ग प म रि स ध
ग म रि स प ध	ग म प ध रि स	ग प रि स म ध	ग प म रि ध स
ग म रि ध प स	ग म प स रि ध	ग प रि ध म स	ग प म स रि ध
ग म रि ध स प	ग म प स ध रि	ग प रि ध स म	ग प ग स ध रि
ग म रि प स ध	ग म प रि स ध	ग प रि म स ध	ग प म ध रि स
ग म रि प ध स	म म प रि ध स	ग प रि म ध स	म प म ध स रि
ग म स रि प ध	ग म ध प स रि	ग प स ध रि म	ग प ध रि स म
ग म स रि ध प	ग म ध प रि स	ग प स ध म रि	ग प ध रि म स
ग म स प रि ध	ग म ध रि प स	ग प स रि म ध	ग प ध म स रि
ग म स प ध रि	ग म ध रि स प	ग प स रि ध म	ग प ध म रि स
ग म स ध प रि	ग म ध स रि प	ग प स म ध रि	ग प ध स रि म
ग म स ध रि प	ग म ध स प रि	ग प स म रि ध	ग प ध स म रि
ग ध रि स म प	ग ध स म रि प	ग ध म रि स प	ग ध प म स रि
ग ध रि स प म	ग ध स म प रि	ग ध म रि प स	ग ध प म रि स
ग ध रि प स म	ग ध स रि म प	ग ध म प रि स	ग ध प रि म स
ग ध रि प म स	ग ध स रि प म	ग ध म प स रि	ग ध प रि स म
ग ध रि म स प	ग ध स प रि म	ग ध म स रि प	ग ध प स म रि
ग ध रि म प स	ग ध स प म रि	ग ध म स प रि	ग ध प स रि म

म

म रि ग स प ध	म रि स ग ध प	म ग रि स प ध	म ग प स ध रि
म रि ग स ध प	म रि स ग प ध	ग ग रि स ध प	म ग प स रि ध
म रि ग ध प स	म रि स प ग ध	म ग रि ध स ष	म ग प ध रि स
म रि ग ध स प	म रि स प ध ग	म ग रि ध प स	म ग प ध स रि
म रि ग प ध स	म रि स ध ग प	म ग रि प स ध	म ग प रि ध स
म रि ग प स ध	म रि सं ध प ग	म ग रि प ध स	म ग प रि स ध
म रि प ग स ध	म रि ध ग प स	म ग स रि प ध	म ग ध रि प स
म रि प ग ध स	म रि ध ग स प	म ग स रि ध प	म ग ध रि स प
म रि प ध ग स	म रि ध प ग स	म ग स प रि ध	म ग ध स रि प
ग रि प ध स ग	म रि ध प स ग	म ग स प ध रि	म ग ध स प रि
म रि प स ध ग	म रि ध स प ग	म ग स ध प रि	म ग ध प रि स
म रि प स ग ध	म रि ध स ग ष	म ग स ध रि प	म ग ध प स रि
म स रि ग ध प	म स प ध ग रि	म प रि ग ध स	म प स रि ग ध
म स रि ग प ध	म स प ध रि ग	म प रि ग स ध	म प स रि ध ग
ग स रि ध प ग	म स प ग रि ध	म प रि ध स ग	म प स ग रि ध
म स रि ध ग प	म स प ग ध रि	म प रि ध ग स	ग प स ग ध रि
म स रि प ग ध	म स प रि ग ध	म प रि स ग ध	म प स ध रि ग
म स रि प ध ग	म स प रि ध ग	म प रि स ध ग	म प सं ध ग रि
म स ग रि प ध	म स ध प ग रि	म प ग ध रि स	म प ध रि ग स

म स ग रि ध प	म स ध प रि ग	म प ग ध स रि	म प ध रि स ग
म स ग रि प ध	म स ध रि प ग	म प ग रि स ध	म प ध स ग रि
म स ग प ध रि	म स ध रि ग प	म प ग रि ध स	म प ध स रि ग
म स ग प रि ध	म स ध ग रि प	म प ग स ध रि	म प ध ग रि स
म स ग ध रि प	म स ध ग प रि	म प ग स रि ध	म प ध ग स रि
म ध रि ग स प	म ध ग स रि प	म ध स रि ग प	म ध प स ग रि
म ध रि ग प स	म ध ग स प रि	म ध स रि प ग	म ध प स रि ग
म ध रि प ग स	म ध ग रि स प	म ध स प रि ग	म ध प रि स ग
म ध रि प स ग	म ध ग रि प स	म ध स प ग रि	म ध प रि ग स
म ध रि स ग प	म ध ग प रि स	म ध स ग रि प	म ध प ग स रि
म ध रि स प ग	म ध ग प स रि	म ध स ग प रि	म ध प ग रि स

प

प रि ग म स ध	प रि म ग ध स	प ग रि म स ध	प ग स म ध रि
प रि ग म ध स	प रि म ग स ध	प ग रि म ध स	प ग स म रि ध
प रि ग ध स म	प रि म स ग ध	प ग रि ध म स	प ग स ध रि म
प रि ग ध म स	प रि म स ध ग	प ग रि ध स म	प ग स ध म रि
प रि ग स ध म	प रि म ध ग स	प ग रि स म ध	प ग स रि ध म
प रि ग स म ध	प रि म ध स ग	प ग रि स ध म	प ग स रि म ध
प रि स ग म ध	प रि ध ग स म	प ग म रि स ध	प ग ध रि स म

प रि स ग ध म	प रि ध ग म स	प ग म रि ध स	प ग ध रि म स
प रि स ध ग म	प रि ध स ग म	प ग म स रि ध	प ग ध म रि स
प रि स ध म ग	प रि ध स म ग	प ग म स ध रि	प ग ध म स रि
प रि स म ध ग	प रि ध म स ग	प ग म ध स रि	प ग ध स रि म
प रि स म ग ध	प रि ध म ग स	प ग म ध रि स	प ग ध स म रि
प म रि ग ध स	प म स ध ग रि	प स रि ग ध म	प स म रि ग ध
प म रि ग स ध	प म स ध रि ग	प स रि ग म ध	प स म रि ध ग
प म रि ध स ग	प म स ग रि ध	प स रि ध म ग	प स म ग रि ध
प म रि ध ग स	प म स ग ध रि	प स रि ध ग म	प स म ग ध रि
प म रि स ग ध	प म स रि ग ध	प स रि म ग ध	प स म ध रि ग
प म रि स ध ग	प म स रि ध ग	प स रि म ध ग	प स म ध ग रि
प म ग रि स ध	प म ध स ग रि	प स ग ध रि म	प स ध रि ग म
प म ग रि ध स	प म ध स रि ग	प स ग ध म रि	प स ध रि म ग
प म ग स रि ध	प म ध रि स ग	प स ग रि म ध	प स ध म ग रि
प म ग स ध रि	प म ध रि ग स	प स ग रि ध म	प स ध म रि ग
प म ग ध स रि	प म ध ग रि स	प स ग म ध रि	प स ध ग रि म
प म ग ध रि स	प म ध ग स रि	प स ग म रि ध	प स ध ग म रि
प ध रि ग म स	प ध ग म रि स	प ध म रि ग स	प ध स म ग रि
प ध रि ग स म	प ध ग म स रि	प ध म रि स ग	प ध स म रि ग
प ध रि स ग	प ध ग रि म स	प ध म स रि ग	प ध स रि म ग

प ध रि स म ग	प ध ग रि स म	प ध म स ग रि	प ध स रि म म
प ध रि म ग स	प ध ग स रि म	प ध म म रि स	प ध स ग म रि
प ध रि म स म	प ध ग स म रि	प ध म ग स रि	प ध स ग रि म

ध

ध रि म म प स	ध रि म ग स प	ध ग रि म प स	ध ग प म स रि
ध रि ग म स प	ध रि म ग प स	ध ग रि म स प	ध ग प म रि स
ध रि ग स प म	ध रि म प ग स	ध ग रि स म प	ध ग प स रि म
ध रि ग स म प	ध रि म प स ग	ध ग रि स प म	ध ग प स म रि
ध रि ग प स म	ध रि म स ग प	ध ग रि प म स	ध ग प रि स म
ध रि ग प म स	ध रि म स प ग	ध ग रि प स म	ध ग प रि म स
ध रि प ग म स	ध रि स ग प म	ध ग म रि प स	ध ग स रि प म
ध रि प ग स म	ध रि स म म प	ध ग म रि स प	ध ग स रि म प
ध रि प स ग म	ध रि स प ग म	ध ग म प रि स	ध ग स म रि प
ध रि प स म ग	ध रि स प म ग	ध ग म प स रि	ध ग स म प रि
ध रि प म स ग	ध रि स म प म	ध ग म स प रि	ध ग स प रि म
ध रि प म ग स	ध रि स म ग प	ध ग म स रि प	ध ग स प म रि
ध म रि ग स प	ध म प स ग रि	ध प रि ग स म	ध प म रि ग स
ध म रि ग प स	ध म प स रि ग	ध प रि ग म स	ध प म रि स ग
ध म रि स प म	ध म प ग रि स	ध प रि स म ग	प गर प म ग रि स

ध म रि स ग प
ध म रि प ग स
ध म रि प स ग
ध म ग रि प स
ध म ग रि स प
ध म ग प रि स
ध म ग प स रि
ध म ग स प रि
ध म ग स रि प
ध स रि ग म प
ध स रि ग प म
ध स रि प ग म
ध स रि प म ग
ध स रि म ग प
ध स रि म प ग

ध म प ग स रि
ध म प रि ग स
ध म प रि स ग
ध म स प ग रि
ध म स प रि ग
ध म स रि प ग
ध म स रि ग प
ध म स ग रि प
ध म स ग प रि
ध स ग म रि प
ध स ग म प रि
ध स ग रि म प
ध स ग रि प म
ध स ग प रि म
ध स ग प म रि

ध प रि स ग म
ध प रि म ग स
ध प रि म स ग
ध प ग स रि म
ध प ग स प रि
ध प ग रि म स
ध प ग रि स म
ध प ग म स रि
ध प ग म रि स
ध स म रि ग प
ध स म रि प ग
ध स म प रि ग
ध स म प ग रि
ध स म ग रि प
ध स म ग प रि

ध प म ग स रि
ध प म स रि ग
ध प म स ग रि
ध प स रि ग म
ध प स रि म ग
ध प स म ग रि
ध प स म रि ग
ध प स ग रि म
ध प स ग म रि
ध स प म ग रि
ध स प म रि ग
ध स प रि म ग
ध स प रि ग म
ध स प ग म रि
ध स प ग रि म

(७×६×५×४×३×२×१) सात स्वरोंका प्रस्तार. ५०४० (स रि ग म प ध नि)

स

स रि ग म प ध नि	स ग रि म प ध नि	स ग म रि प ध नि
स रि म ग प ध नि	स म रि ग प ध नि	स म ग रि प ध नि
स रि म प ग ध नि	स म रि प ग ध नि	स म प रि ग ध नि
स रि म प ध ग नि	स म रि प ध ग नि	स म प रि ध ग नि
स रि म प ध नि ग	स म रि प ध नि ग	स म प रि ध नि ग
स रि ग म प नि ध	स ग रि म प नि ध	स ग म रि प नि ध
स रि म ग प नि ध	स म रि ग प नि ध	स म ग रि प नि ध
स रि म प ग नि ध	स म रि प ग नि ध	स म प रि ग नि ध
स रि म प नि ग ध	स म रि प नि ग ध	स म प रि नि ग ध
स रि म प नि ध ग	स म रि प नि ध ग	स म प रि नि ध ग
स रि ग म ध प नि	स ग रि म ध प नि	स ग म रि ध प नि
स रि म ग ध प नि	स म रि ग ध प नि	स म ग रि ध प नि
स रि म ध ग प नि	स म रि ध ग प नि	स म ध रि ग प नि
स रि म ध प ग नि	स म रि ध प ग नि	स म ध रि प ग नि
स रि म ध प नि ग	स म रि ध प नि ग	स म ध रि प नि ग
स रि ग म ध नि प	स ग रि म ध नि प	स ग म रि ध नि प
स रि म ग ध नि प	स म रि ग ध नि प	स म ग रि ध नि प

स रि म ध ग नि प	स म रि ध ग नि प	स म ध रि ग नि प
स रि म ध नि ग प	स म रि ध नि ग प	स म ध रि नि ग प
स रि म ध नि प ग	स म रि ध नि प ग	स म ध रि नि प ग
स रि ग म नि प ध	स ग रि म नि प ध	स ग म रि नि प ध
स रि म ग नि प ध	स म रि ग नि प ध	स म ग रि नि प ध
स रि म नि ग प ध	स म रि नि ग प ध	स म नि रि ग प ध
स रि म नि प ग ध	स म रि नि प ग ध	स म नि रि प ग ध
स रि म नि प ध ग	स म रि नि प ध ग	स म नि रि प ध ग
स रि ग म नि ध प	स ग रि म नि ध प	स ग म रि नि ध प
स रि म ग नि ध प	स म रि ग नि ध प	स म ग रि नि ध प
स रि म नि ग ध प	स म रि नि ग ध प	स म नि रि ग ध प
स रि म नि ध ग प	स म रि नि ध ग प	स म नि रि ध ग प
स रि म नि ध प ग	स म रि नि ध प ग	स म नि रि ध प ग
स रि ग प म ध नि	स ग रि प म ध नि	स ग प रि म ध नि
स रि प ग म ध नि	स प रि ग म ध नि	स प ग रि म ध नि
स रि प म ग ध नि	स प रि म ग ध नि	स प म रि ग ध नि
स रि प म ध ग नि	स प रि म ध ग नि	स प म रि ध ग नि
स रि प म ध नि ग	स प रि म ध नि ग	स प म रि ध नि ग
स रि ग प ध म नि	स ग रि प ध म नि	स ग प रि ध म नि
स रि प ग ध म नि	स प रि ग ध म नि	स प ग रि ध म नि

स रि प ध ग म नि	स प रि ध ग म नि	स प ध रि ग म नि
स रि प ध म ग नि	स प रि ध म ग नि	स प ध रि म ग नि
स रि प ध म नि ग	स प रि ध म नि ग	स प ध रि म नि ग
स रि ग प ध नि म	स ग रि प ध नि म	स ग प रि ध नि म
स रि प ग ध नि म	स प रि ग ध नि म	स प ग रि ध नि म
स रि प ध ग नि म	स प रि ध ग नि म	स प ध रि ग नि म
स रि प ध नि ग म	स प रि ध नि ग म	स प ध रि नि म ग
स रि प ध नि म ग	स प रि ध नि म ग	स प ध रि नि ग म
स रि ग प म नि ध	स ग रि प म नि ध	स ग प रि म नि ध
स रि प ग म नि ध	स प रि ग म नि ध	स प ग रि म नि ध
स रि प म ग नि ध	स प रि म ग नि ध	स प म रि ग नि ध
स रि प म नि ग ध	स प रि म नि ग घ	स प म रि नि ग ध
स रि प म नि ध ग	स प रि म नि ध ग	स प म रि नि ध ग
स रि ग प नि म ध	स ग रि प नि म ध	स ग प रि नि म ध
स रि प ग नि म ध	स प रि ग नि म ध	स प ग रि नि म ध
स रि प नि ग म ध	स प रि नि ग म ध	स प नि रि ग म ध
स रि प नि म ग ध	स प रि नि म ग ध	स प नि रि म ग ध
स रि प नि म ध ग	स प रि नि म ध ग	स प नि रि म ध ग
स रि ग प नि ध म	स ग रि प नि ध म	स ग प रि नि ध म
स रि प ग नि ध म	स प रि ग नि ध म	स प ग रि नि ध म

स रि प नि ग ध म	स प रि नि ग ध म	स प नि रि ग ध म
स रि प नि ध ग म	स प रि नि ध ग म	स प नि रि ध ग म
स रि प नि ध म ग	स प रि नि ध म ग	स प नि रि ध म ग
स रि ग ध म प नि	स ग रि ध म प नि	स ग ध रि म प नि
स रि ध ग म प नि	स ध रि ग म प नि	स ध ग रि म प नि
स रि ध म ग प नि	स ध रि म ग प नि	स ध म रि ग प नि
स रि ध म प ग नि	स ध रि म प ग नि	स ध म रि प ग नि
स रि ध म प नि ग	स ध रि म प नि ग	स ध म रि प नि ग
स रि ग ध प म नि	स ग रि ध प ग नि	स ग ध रि प म नि
स रि ध ग प म नि	स ध रि ग प म नि	स ध ग रि प म नि
स रि ध प ग म नि	स ध रि प ग म नि	स ध प रि ग म नि
स रि ध प म ग नि	स ध रि प म ग नि	स ध प रि म ग नि
स रि ध प म नि ग	स ध रि प म नि ग	स ध प रि म नि ग
स रि ग ध प नि म	स ग रि ध प नि म	स ग ध रि प नि म
स रि ध प नि ग म	स ध रि प नि ग म	स ध प रि नि ग म
स रि ध प ग नि म	स ध रि प ग नि म	स ध प रि ग नि म
स रि ध प नि ग म	स ध रि प नि ग म	स ध प रि नि ग म
स रि ध प नि म ग	स ध रि प नि म ग	स ध प रि नि म ग
स रि ग ध म नि प	स ग रि ध म नि प	स ग ध रि म नि प
स रि ध ग म नि प	स ध रि ग म नि प	स ध ग रि म नि प

स रि ध म ग नि प	स ध रि म ग नि प	स ध म रि ग नि प
स रि ध म नि ग प	स ध रि म नि ग प	स ध म रि नि ग प
स रि ध म नि प ग	स ध रि म नि प ग	स ध म रि नि प ग
स रि ग ध नि म प	स ग रि ध नि म प	स ग ध रि नि म प
स रि ध ग नि म प	स ध रि ग नि म प	स ध ग रि नि म प
स रि ध नि ग म प	स ध रि नि ग म प	स ध नि रि ग म प
स रि ध नि म ग प	स ध रि नि म ग प	स ध नि रि म ग प
स रि ध नि म प ग	स ध रि नि म प ग	स ध नि रि म प ग
स रि ग ध नि प म	स ग रि ध नि प म	स ग ध रि नि प म
स रि ध ग नि प म	स ध रि ग नि प म	स ध ग रि नि प म
स रि ध नि ग प म	स ध रि नि ग प म	स ध नि रि ग प म
स रि ध नि प ग म	स ध रि नि प ग म	स ध नि रि प ग म
स रि ध नि प म ग	स ध रि नि प म ग	स ध नि रि प म ग
स रि ग नि म प ध	स ग रि नि म प ध	स ग नि रि म प ध
स रि नि म म प ध	स नि रि ग म प ध	स नि ग रि म प ध
स रि नि म ग प ध	स नि रि म ग प ध	स नि म रि ग प ध
स रि नि म प ग ध	स नि रि म प ग ध	स नि म रि प ग ध
स रि नि म प ध ग	स नि रि म प ध ग	स नि म रि प ध ग
स रि ग नि प म ध	स ग रि नि प म ध	स ग नि रि प म ध
स रि नि ग प म ध	स नि रि ग प म ध	स नि ग रि प म ध

स	रि	नि	प	ग	म	ध	स	नि	रि	प	ग	म	ध	स	नि	प	रि	ग	म	ध
स	रि	नि	प	म	ग	ध	स	नि	रि	प	म	ग	ध	स	नि	प	रि	म	ग	ध
स	रि	नि	प	म	ध	ग	स	नि	रि	प	म	ध	ग	स	नि	प	रि	म	ध	ग
स	रि	ग	नि	प	ध	म	स	ग	रि	नि	प	ध	म	स	ग	नि	रि	प	ध	म
स	रि	नि	ग	प	ध	म	स	नि	रि	ग	प	ध	म	स	नि	ग	रि	प	ध	म
स	रि	नि	प	ग	ध	म	स	नि	रि	प	ग	ध	म	स	नि	प	रि	ग	ध	म
स	रि	नि	प	ध	ग	म	स	नि	रि	प	ध	ग	म	स	नि	प	रि	ध	ग	म
स	रि	नि	प	ध	म	ग	स	नि	रि	प	ध	म	ग	स	नि	प	रि	ध	म	ग
स	रि	ग	नि	म	ध	प	स	ग	रि	नि	म	ध	प	स	ग	नि	रि	म	ध	प
स	रि	नि	ग	म	ध	प	स	नि	रि	ग	म	ध	प	स	नि	ग	रि	म	ध	प
स	रि	नि	म	ग	ध	प	स	नि	रि	म	ग	ध	प	स	नि	म	रि	ग	ध	प
स	रि	नि	म	ध	ग	प	स	नि	रि	म	ध	ग	प	स	नि	म	रि	ध	ग	प
स	रि	नि	म	ध	प	ग	स	नि	रि	म	ध	प	ग	स	नि	म	रि	ध	प	ग
स	रि	ग	नि	ध	म	प	स	ग	रि	नि	ध	म	प	स	ग	नि	रि	ध	म	प
स	रि	नि	ग	ध	म	प	स	नि	रि	ग	ध	म	प	स	नि	ग	रि	ध	म	प
स	रि	नि	ध	ग	म	प	स	नि	रि	ध	ग	म	प	स	नि	ध	रि	ग	म	प
स	रि	नि	ध	म	ग	प	स	नि	रि	ध	म	ग	प	स	नि	ध	रि	म	ग	प
स	रि	नि	ध	म	प	ग	स	नि	रि	ध	म	प	ग	स	नि	ध	रि	म	प	म
स	रि	ग	नि	ध	प	म	स	ग	रि	नि	ध	प	म	स	ग	नि	रि	ध	प	म
स	रि	नि	ग	ध	प	म	स	नि	रि	ग	[illegible]	प	म	स	नि	ग	रि	ध	प	[illegible]

स

स रि नि ध ग प म	स नि रि ध ग प म	स नि ध रि ग प म
स रि नि ध प ग म	स नि रि ध प ग म	स नि ध रि प ग म
स रि नि ध प म ग	स नि रि ध प म ग	स नि ध रि प म ग
स ग म प रि ध नि	स ग म प ध रि नि	स ग म प ध नि रि
स म ग प रि ध नि	स म ग प ध रि नि	स म ग प ध नि रि
स म प ग रि ध नि	स म प ग ध रि नि	स म प ग ध नि रि
स म प ध रि ग नि	स म प ध म रि नि	स म प ध ग नि रि
स म प ध रि नि ग	स म प ध नि रि ग	स म प ध नि ग रि
स ग म प रि नि ध	स ग म प नि रि ध	स ग म प नि ध रि
स म ग प रि नि ध	स म ग प नि रि ध	स म ग प नि ध रि
स म प ग रि नि ध	स म प ग नि रि ध	स म प ग नि ध रि
स म प नि रि ग ध	स म प नि ग रि ध	स म प नि ग ध रि
स म प नि रि ध ग	स म प नि ध रि ग	स म प नि ध ग रि
स ग म ध रि प नि	स ग म ध प रि नि	स ग म ध प नि रि
स म ग ध रि प नि	स म ग ध प रि नि	स म ग ध प नि रि
स म ध ग रि प नि	स म ध ग प रि नि	स म ध ग प नि रि
स म ध प रि ग नि	स म ध प ग रि नि	स म ध प ग नि रि
स म ध प रि नि ग	स म ध प नि रि ग	स म ध प नि ग रि

स ग म ध रि नि प	स ग म ध नि रि प	स ग म ध नि प रि
स म ग ध रि नि प	स म ग ध नि रि प	स म ग ध नि प रि
स म ध ग रि नि प	स म ध ग नि रि प	स म ध ग नि प रि
स म ध नि रि ग प	स म ध नि ग रि प	स म ध नि ग प रि
स म ध नि रि प ग	स म ध नि प रि ग	स म ध नि प ग रि
[illegible] ग म नि रि प ध	स ग म नि प रि ध	स ग म नि प ध रि
[illegible] म ग नि रि प ध	स म ग नि प रि ध	स म ग नि प ध रि
स [illegible] नि ग रि प ध	स म नि ग प रि ध	स म नि ग प ध रि
स ध नि प रि ग ध	स म नि प ग रि ध	स म नि प ग ध रि
स म नि प रि ध ग	स म नि प ध रि ग	स म नि प ध ग रि
स ग प नि रि ध प	स ग म नि ध रि प	स ग म नि ध प रि
स म [illegible] नि रि ध प	स म ग नि ध रि प	स म ग नि ध प रि
स म [illegible] ग रि ध प	स म नि ग ध रि प	स म नि ग ध प रि
स म [illegible] ध रि ग प	स म नि ध ग रि प	स म नि ध ग प रि
स म [illegible] ध रि प ग	स म नि ध प रि ग	स म नि ध प ग रि
स [illegible] ध [illegible] रि ध नि	स ग प म ध रि नि	स ग प म ध नि रि
स [illegible] ग [illegible] रि ध नि	स प ग म ध रि नि	स प ग म ध नि रि
स नि [illegible] [illegible] रि ध नि	स प म ग ध रि नि	स प म ग ध नि रि
स नि [illegible] [illegible] रि ग नि	स प म ध ग रि नि	स प म ध ग नि रि
स नि [illegible] [illegible] रि नि ग	स प म ध नि रि ग	स प म ध नि म रि

स ग प ध रि म नि	स ग प ध म रि नि	स ग प [illegible] म नि रि
स प ग ध रि म नि	स प ग ध म रि नि	स प ग [illegible] म नि रि
स प ध ग रि म नि	स प ध ग म रि नि	स प ध ग म नि रि
स प ध म रि ग नि	स प ध म ग रि नि	स प ध म ग नि रि
स प ध म रि नि ग	स प ध म नि रि ग	स प ध म नि ग रि
स ग प ध रि नि म	स ग प ध नि रि म	स ग प ध नि म रि
स प ग ध रि नि म	स प ग ध नि रि म	स प ग ध नि म रि
स प ध ग रि नि म	स प ध ग नि रि म	स प ध ग नि म रि
स प ध नि रि म ग	स प ध नि म रि ग	स प ध नि म ग रि
स प ध नि रि ग म	स प ध नि ग रि म	स प ध नि ग म रि
स ग प म रि नि ध	स ग प म नि रि ध	स ग प म नि ध रि
स प ग म रि नि ध	स प ग म नि रि ध	स प ग म नि ध रि
स प म ग रि नि ध	स प म ग नि रि ध	स प म ग [illegible] ध रि
स प म नि रि ग ध	स प म नि ग रि ध	स प म नि ग ध रि
स प म नि रि ध ग	स प म नि ध रि ग	स प [illegible] नि [illegible] ग रि
स ग प नि रि म ध	स ग प नि म रि ध	स ग प म [illegible] रि
स प ग नि रि म ध	स प ग नि म रि ध	स प ग [illegible] [illegible] रि
स प नि ग रि म ध	स प नि ग म रि ध	स प म [illegible] ध [illegible] रि
स प नि म रि ग ध	स प नि म ग रि ध	स प म [illegible] ध [illegible] रि
स प नि म रि ध ग	स प नि म ध रि ग	स प म [illegible] ध [illegible] रि

स ग प नि रि ध म	स ग प नि ध रि	स ग प नि ध म रि
स प ग नि रि ध म	स प ग नि ध रि म	स प ग नि ध म रि
स प नि ग रि ध म	स प नि ग ध रिम	स प नि ग ध म रि
स प नि ध रि ग म	स प नि ध ग रिम	स प नि ध ग म रि
स प नि ध रि म ग	स प नि ध म रि ग	स प नि ध म ग रि
स ग ध म रि प नि	स ग ध म प । नि	स ग ध म प नि रि
स ध ग म रि प नि	स ध ग म प । नि	स ध ग म प नि रि
स ध म ग रि प नि	स ध म ग प । नि	स ध म ग प नि रि
स ध म प रि ग नि	स ध म प ग रि नि	स ध म प ग नि रि
स ध म प रि नि ग	स ध म प नि रि ग	स ध म प नि ग रि
स ग ध प रि म नि	स ग ध प म रि नि	स ग ध प म नि रि
स ध ग प रि म नि	स ध ग प म रि नि	स ध ग प म नि रि
स ध प ग रि म नि	स ध प ग म रि नि	स ध प ग म नि रि
स ध [illegible] म रि ग नि	स ध प म ग रि नि	स ध प म ग नि रि
स [illegible] म रि नि ग	स ध प म नि रि ग	स ध प म नि ग रि
स [illegible] प रि नि म	स ग ध प नि रि म	स ग ध प नि म रि
स [illegible] ग [illegible] रि नि म	स ध ग प नि रि म	स ध ग प नि म रि
स [illegible] ध ग रि नि म	स ध प ग नि रि म	स ध प ग नि म रि
स [illegible] ध म रि ग म	स ध प नि ग रि म	स ध प नि ग म रि
स [illegible] ध म रि म ग	स ध प नि म रि ग	स ध प नि म ग रि

स ग ध म रि नि प	स्ग ध म नि रि प	स ग ध म नि प रि
स ध ग म रि नि प	ध ग म नि रि प	स ध ग म नि प रि
स ध म ग रि नि प	स म ग नि रि प	स ध म ग नि प रि
स ध म नि रि ग प	स म नि ग रि प	स ध म नि ग प रि
स ध म नि रि प ग	स ध नि प रि ग	स ध म नि प ग रि
स ग ध नि रि म प	स गध नि म रि प	स ग ध नि म प रि
स ध ग नि रि म प	स धग नि म रि प	स ध ग नि म प रि
स ध नि ग रि म प	स ध नि ग म रि प	स ध नि ग म प रि
स ध नि म रि ग प	स ध नि म ग रि प	स ध नि म ग प रि
स ध नि म रि प ग	स ध नि म प रि ग	स ध नि म प ग रि
स ग ध नि रि प म	स ग ध नि प रि म	स ग ध नि प म रि
स ध ग नि रि प म	स ध ग नि प रि म	स ध ग नि प म रि
स ध नि ग रि प म	स ध नि ग प रि म	स ध नि ग [illegible] म रि
स ध नि प रि ग म	स ध नि प ग रि म	स ध नि प ग म रि
स ध नि प रि म ग	स ध नि प म रि ग	स ध नि प [illegible] ग रि
स ग नि म रि प ध	स ग नि म प रि ध	स ग नि [illegible] ग [illegible] रि
स नि ग म रि प ध	स नि ग म प रि ध	स नि ग म ध [illegible] रि
स नि म ग रि प ध	स नि म ग प रि ध	स नि म म ग ध [illegible] रि
स नि म प रि ग ध	स नि म प ग रि ध	स नि म म [illegible] ध [illegible] रि
स नि म प रि ध ग	स नि म प ध रि ग	स नि [illegible] म ध ध [illegible] रि

स ग नि प रि म ध	स ग नि प म रि ध	स ग नि प म ध रि
स नि ग प रि म ध	स नि ग प म रि ध	स नि ग प म ध रि
स नि प ग रि म ध	स नि प ग म रि ध	स नि प ग म ध रि
स नि प म रि ग ध	स नि प म ग रि ध	स नि प म ग ध रि
स नि प म रि ध ग	स नि प म ध रि ग	स नि प म ध ग रि
स ग नि प रि ध म	स ग नि प ध रि म	स ग नि प ध म रि
स नि ग प रि ध म	स नि ग प ध रि म	स नि ग प ध म रि
स नि प ग रि ध म	स नि प ग ध रि म	स नि प ग ध म रि
स नि प ध रि ग म	स नि प ध ग रि म	स नि प ध ग म रि
स नि प ध रि म ग	स नि प ध म रि ग	स नि प ध म ग रि
स ग नि म रि ध प	स ग नि म ध रि प	स ग नि म ध प रि
स नि ग म रि ध प	स नि ग म ध रि प	स नि ग म ध प रि
स नि म ग रि ध प	स नि म ग ध रि प	स नि म ग ध प रि
स नि म ध रि ग प	स नि म ध ग रि प	स नि म ध ग प रि
स नि म ध रि प ग	स नि म ध प रि ग	स नि म ध प ग रि
स ग नि ध रि म प	स ग नि ध म रि प	स ग नि ध म प रि
स नि ग ध रि म प	स नि ग ध म रि प	स नि ग ध म प रि
स नि ध ग रि म प	स नि ध ग म रि प	स नि ध ग म प रि
स नि ध म रि ग प	स नि ध म ग रि प	स नि ध म ग प रि
स नि ध म रि प ग	स नि ध म प रि ग	स नि ध म प ग रि

स ग नि ध रि प म	स ग नि ध प रि म	स ग नि ध प म रि
स नि ग ध रि प ग	स नि ग ध प रि म	स नि ग ध प म रि
स नि ध ग रि प म	स नि ध ग प रि म	स नि ध ग प म रि
स नि ध प रि ग म	स नि ध प ग रि म	स नि ध प ग म रि
स नि ध प रि म ग	स नि ध प म रि ग	स नि ध प म ग रि

रि

रि स ग म प ध नि	रि ग स म प ध नि	रि ग म स प ध नि
रि स म ग प ध नि	रि म स ग प ध नि	रि म ग स प ध नि
रि स म प ग ध नि	रि म स प ग ध नि	रि म प स ग ध नि
रि स म प ध ग नि	रि म स प ध ग नि	रि म प स ध ग नि
रि स म प ध नि ग	रि म स प ध नि ग	रि म प स ध नि ग
रि स ग म प नि ध	रि ग स म प नि ध	रि ग म स प नि ध
रि स म ग प नि ध	रि म स ग प नि ध	रि म ग स प नि ध
रि स म प ग नि ध	रि म स प ग नि ध	रि म प स ग नि ध
रि स म प नि म ध	रि म स प नि ग ध	रि म प स नि [illegible] ध
रि स म प नि ध ग	रि म स प नि ध ग	रि म प स नि [illegible] ग
रि स ग म ध प नि	रि म स म ध प नि	रि ग म स ध प [illegible]
रि स म ग ध प नि	रि म स ग ध प नि	रि म ग स ध [illegible] [illegible]

रि स म ध ग प नि	रि म स ध ग प नि	रि म ध स ग प नि
रि स म ध प ग नि	रि म स ध प ग नि	रि म ध स प ग नि
रि स म ध प नि ग	रि म स ध प नि ग	रि म ध स प नि ग
रि स ग म ध नि प	रि ग स म ध नि प	रि ग म स ध नि प
रि स म ग ध नि प	रि म स ग ध नि प	रि म ग स ध नि प
रि स म ध ग नि प	रि म स ध ग नि प	रि म ध स ग नि प
रि स म ध नि ग प	रि म स ध नि ग प	रि म ध स नि ग प
रि स म ध नि प ग	रि म स ध नि प ग	रि म ध स नि प ग
रि स ग म नि प ध	रि ग स म नि प ध	रि ग म स नि प ध
रि स म ग नि प ध	रि म स ग नि प ध	रि म ग स नि प ध
रि स म नि ग प ध	रि म स नि ग प ध	रि म नि स ग प ध
रि स म नि प ग ध	रि म स नि प ग ध	रि म नि स प ग ध
रि स म नि प ध ग	रि म स नि प ध ग	रि म नि स प ध ग
रि स स म नि ध प	रि ग स म नि ध प	रि ग म स नि ध प
रि स स ग नि ध प	रि म स ग नि ध प	रि म ग स नि ध प
रि स स नि ग ध प	रि म स नि ग ध प	रि म नि स ग ध प
रि स स नि ध ग प	रि म स नि ध ग प	रि म नि स ध ग प
रि रे स नि ध प ग	रि म स नि ध प ग	रि म नि स ध प ग
रि रि स प म ध नि	रि ग स प म ध नि	रि ग प स म ध नि
रि रि स ग म ध नि	रि प स ग म ध नि	रि प ग स म ध नि

रि	स	प	म	ग	ध	नि	रि	प	स	म	ग	ध	नि	रि	प	म	स	ग	ध	नि
रि	स	प	म	ध	ग	नि	रि	प	स	म	ध	ग	नि	रि	प	म	स	ध	ग	नि
रि	स	प	म	ध	नि	ग	रि	प	स	म	ध	नि	ग	रि	प	म	स	ध	नि	ग
रि	स	ग	प	ध	म	नि	रि	ग	स	प	ध	म	नि	रि	ग	प	स	ध	म	नि
रि	स	प	ग	ध	म	नि	रि	प	स	ग	ध	म	नि	रि	प	ग	स	ध	म	नि
रि	स	प	ध	ग	म	नि	रि	प	स	ध	ग	म	नि	रि	प	ध	स	ग	म	नि
रि	स	प	ध	म	ग	नि	रि	प	स	ध	म	ग	नि	रि	प	ध	स	म	ग	नि
रि	स	प	ध	म	नि	ग	रि	प	स	ध	म	नि	ग	रि	प	ध	स	म	नि	ग
रि	स	ग	प	ध	नि	म	रि	ग	स	प	ध	नि	म	रि	ग	प	स	ध	नि	म
रि	स	प	ग	ध	नि	म	रि	प	स	ग	ध	नि	म	रि	प	ग	स	ध	नि	म
रि	स	प	ध	ग	नि	म	रि	प	स	ध	ग	नि	म	रि	प	ध	स	ग	नि	म
रि	स	प	ध	नि	ग	म	रि	प	स	ध	नि	ग	म	रि	प	ध	स	नि	ग	म
रि	स	प	ध	नि	म	ग	रि	प	स	ध	नि	म	ग	रि	प	ध	स	नि	म	ग
रि	स	ग	प	म	नि	ध	रि	ग	स	प	म	नि	ध	रि	ग	प	स	[illegible]	नि	ध
रि	स	प	ग	म	नि	ध	रि	प	स	ग	म	नि	ध	रि	प	ग	स	नि	नि	ध
रि	स	प	म	ग	नि	ध	रि	प	स	म	ग	नि	ध	रि	प	म	स	नि	नि	ध
रि	स	प	म	नि	ग	ध	रि	प	स	म	नि	ग	ध	रि	प	म	स	[illegible]	ग	ध
रि	स	प	म	नि	ध	ग	रि	प	स	म	नि	ध	ग	रि	प	म	स	[illegible]	[illegible]	ग
रि	स	ग	प	नि	म	ध	रि	ग	स	प	नि	म	ध	रि	ग	प	स	[illegible]	[illegible]	ध
रि	स	प	ग	नि	म	ध	रि	प	स	ग	नि	म	ध	रि	प	ग	स	[illegible]	[illegible]	ध

रि स प नि ग म ध	रि प स नि ग म ध	रि प नि स ग म ध
रि स प नि म ग ध	रि प स नि म ग ध	रि प नि स म ग ध
रि स प नि म ध ग	रि प स नि म ध ग	रि प नि स म ध ग
रि स ग प नि ध म	रि ग स प नि ध म	रि ग प स नि ध म
रि स प ग नि ध म	रि प स ग नि ध म	रि प ग स नि ध म
रि स प नि ग ध म	रि प स नि ग ध म	रि प नि स ग ध म
रि स प नि ध ग म	रि प स नि ध ग म	रि प नि स ध ग म
रि स प नि ध म ग	रि प स नि ध म ग	रि प नि स ध म ग
रि स ग ध म प नि	रि ग स ध म प नि	रि ग ध स म प नि
रि स ध ग म प नि	रि ध स ग म प नि	रि ध ग स म प नि
रि स ध म ग प नि	रि ध स म ग प नि	रि ध म स ग प नि
रि स ध [illegible] प ग नि	रि ध स म प ग नि	रि ध म स प ग नि
रि स ध [illegible] प नि ग	रि ध स म प नि ग	रि ध म स प नि ग
रि स स [illegible] प म नि	रि ग स ध प म नि	रि ग ध स प म नि
रि स स [illegible] प म नि	रि ध स ग प म नि	रि ध ग स प म नि
रि स स प ग म नि	रि ध स प ग म नि	रि ध प स ग म नि
रि स स प म ग नि	रि ध स प म ग नि	रि ध प स म ग नि
रि [illegible] स प म नि ग	रि ध स प म नि ग	रि ध प स म नि ग
रि [illegible] स ध प नि म	रि ग स ध प नि म	रि ग ध स प नि म
रि [illegible] स [illegible] प नि म	रि ध स म प नि म	रि ध ग स प नि म

रि स ध प ग नि म	रि ध स प ग नि म	रि ध प स ग नि म
रि स ध प नि ग म	रि ध स प नि ग म	रि ध प स नि ग म
रि स ध प नि म ग	रि ध स प नि म ग	रि ध प स नि म ग
रि स ग ध म नि प	रि ग स ध म नि प	रि ग ध स म नि प
रि स ध ग म नि प	रि ध स ग म नि प	रि ध ग स म नि प
रि स ध म ग नि प	रि ध स म ग नि प	रि ध म स ग नि प
रि स ध म नि ग प	रि ध स म नि ग प	रि ध म स नि ग प
रि स ध म नि प ग	रि ध स म नि प ग	रि ध म स नि प ग
रि स ग ध नि म प	रि ग स ध नि म प	रि ग ध स नि म प
रि स ध ग नि म प	रि ध स ग नि म प	रि ध ग स नि म प
रि स ध नि ग म प	रि ध स नि ग म प	रि ध नि स ग म प
रि स ध नि म ग प	रि ध स नि म ग प	रि ध नि [illegible] म ग प
रि स ध नि म प ग	रि ध स नि म प ग	रि ध नि [illegible] म प ग
रि स ग ध नि प म	रि ग स ध नि प म	रि ग ध स [illegible] प म
रि स ध ग नि प म	रि ध स ग नि प म	रि ध ग स नि प म
रि स ध नि ग प म	रि ध स नि ग प म	रि ध नि स नि प म
रि स ध नि प ग म	रि ध स नि प ग म	रि ध नि स [illegible] ग म
रि स ध नि प म ग	रि ध स नि प म ग	रि ध नि स [illegible] [illegible] ग
रि स ग नि म प ध	रि ग स नि म प ध	रि ग नि [illegible] [illegible] [illegible] ध
रि स नि ग म प ध	रि नि स ग म प ध	रि नि ग [illegible] [illegible] [illegible] ध

रि स नि म ग प ध	रि नि स म ग प ध	रि नि म स ग प ध
रि स नि म प ग ध	रि नि स म प ग ध	रि नि म स प ग ध
रि स नि म प ध ग	रि नि स म प ध ग	रि नि म स प ध ग
रि स ग नि प म ध	रि ग स नि प म ध	रि ग नि स प म ध
रि स नि ग प म ध	रि नि स ग प म ध	रि नि ग स प म ध
रि स नि प ग म ध	रि नि स प ग म ध	रि नि प स ग म ध
रि स नि प म ग ध	रि नि स प म ग ध	रि नि प स म ग ध
रि स नि प म ध ग	रि नि स प म ध ग	रि नि प स म ध ग
रि स ग नि प ध म	रि ग स नि प ध म	रि ग नि स प ध म
रि स नि ग प ध म	रि नि स ग प ध म	रि नि ग स प ध म
रि स नि प ग ध म	रि नि स प ग ध म	रि नि प स ग ध म
रि स नि प ध म म	रि नि स प ध ग म	रि नि प स ध ग म
रि स नि प ध म ग	रि नि स प ध म ग	रि नि प स ध म ग
रि स ग नि म ध प	रि ग स नि म ध प	रि ग नि स म ध प
रि स नि ग म ध प	रि नि स ग म ध प	रि नि ग स म ध प
रि स नि म ग ध प	रि नि स म ग ध प	रि नि म स ग ध प
रि स नि म ध ग प	रि नि स म ध ग प	रि नि स म ध ग प
रि स नि म ध प ग	रि नि स म ध प ग	रि नि म स ध प ग
रि स ग नि ध म प	रि ग स नि ध म प	रि ग नि स ध म प
रि स नि ग ध म प	रि नि स ग ध म प	रि नि ग स ध म प

रि स नि ध ग म प	रि नि स ध ग म प	रि नि ध स ग म प
रि स नि ध म ग प	रि नि स ध म ग प	रि नि ध स म ग प
रि स नि ध म प ग	रि नि स ध म प ग	रि नि ध स म प ग
रि स ग नि ध प म	रि ग स नि ध प म	रि ग नि स ध प म
रि स नि ग ध प म	रि नि स ग ध प म	रि नि ग स ध प म
रि स नि ध ग प म	रि नि स ध ग प म	रि नि ध स ग प म
रि स नि ध प ग म	रि नि स ध प ग म	रि नि ध स प ग म
रि स नि ध प म ग	रि नि स ध प म ग	रि नि ध स प म ग
रि ग म प स ध नि	रि ग म प ध स नि	रि ग म प ध नि स
रि म ग प स ध नि	रि म ग प ध स नि	रि म ग प ध नि स
रि म प ग स ध नि	रि म प ग ध स नि	रि म प ग ध नि स
रि म प ध स ग नि	रि म प ध ग स नि	रि म प ध ग नि स
रि म प ध स नि ग	रि म प ध नि स ग	रि म प ध नि ग स
रि ग म प स नि ध	रि ग म प नि स ध	रि ग म प नि ध स
रि म ग प स नि ध	रि म ग प नि स ध	रि म ग प नि ध स
रि म प ग स नि ध	रि म प ग नि स ध	रि म प ग नि ध स
रि म प नि स ग ध	रि म प नि ग स ध	रि म प नि ग ध स
रि म प नि स ध ग	रि म प नि ध स ग	रि म प नि ध ग स
रि ग म ध स प नि	रि ग म ध प स नि	रि ग म ध प नि स
रि म ग ध स प नि	रि म ग ध प स नि	रि म ग ध प नि स

रि म ध ग स प नि

रि म ध प स ग नि

रि म ध प स नि ग

रि ग म ध स नि प

रि म ग ध स नि प

रि म ध ग स नि प

रि म ध नि स ग प

रि म ध नि स प ग

रि ग म नि स प ध

रि म ग नि स प ध

रि म नि ग स प ध

रि म नि प स ग ध

रि म नि प स ध ग

रि ग म नि स ध प

रि म ग नि स ध प

रि म नि ग स ध प

रि म नि ध स ग प

रि म नि ध स प ग

रि ग प म स ध नि

रि प ग म स ध नि

रि म ध ग प स नि

रि म ध प ग स नि

रि म ध प नि स ग

रि ग म ध नि स प

रि म ग ध नि स प

रि म ध ग नि स प

रि म ध नि ग स प

रि म ध नि प स ग

रि ग म नि प स ध

रि म ग नि प स ध

रि म नि ग प स ध

रि म नि प ग स ध

रि म नि प ध स ग

रि ग म नि ध स प

रि म ग नि ध स प

रि म नि ग ध स प

रि म नि ध ग स प

रि म नि ध प स ग

रि ग प म ध स नि

रि प ग म ध स नि

रि म ध ग प नि स

रि म ध प ग नि स

रि म ध प नि ग स

रि ग म ध नि प स

रि म ग ध नि प स

रि म ध ग नि प स

रि म ध नि ग प स

रि म ध नि प ग स

रि ग म नि प ध स

रि म ग नि प ध स

रि म नि ग प ध स

रि म नि प ग ध स

रि म नि प ध ग स

रि ग म नि ध प स

रि म ग नि ध प स

रि म नि ग ध प स

रि म नि ध ग प स

रि म नि ध प ग स

रि ग प म ध नि स

रि प ग म ध नि स

रि प म ग स ध नि	रि प म ग ध स नि	रि प म ग ध नि सं
रि प म ध स ग नि	रि प म ध ग स नि	रि प म ध ग नि स
रि प म ध स नि ग	रि प म ध नि स ग	रि प म ध नि ग स
रि ग प ध स म नि	रि ग प ध म स नि	रि ग प ध म नि स
रि प ग ध स म नि	रि प ग ध म स नि	रि प ग ध म नि स
रि प ध ग स म नि	रि प ध ग म स नि	रि प ध ग म नि स
रि प ध म स ग नि	रि प ध म ग स नि	रि प ध म ग नि स
रि प ध म स नि ग	रि प ध म नि स ग	रि प ध म नि ग स
रि ग प ध स नि म	रि ग प ध नि स म	रि ग प ध नि म स
रि प ग ध स नि म	रि प ग ध नि स म	रि प ग ध नि म स
रि प ध ग स नि म	रि प ध ग नि स म	रि प ध ग नि म स
रि प ध नि स ग म	रि प ध नि ग स म	रि प ध नि ग म स
रि प ध नि स म ग	रि प ध नि म स ग	रि प ध नि म ग स
रि ग प म स नि ध	रि ग प म नि स ध	रि ग प म नि ध स
रि प ग म स नि ध	रि प ग म नि स ध	रि प ग म नि ध स
रि प म ग स नि ध	रि प म ग नि स ध	रि प म ग नि ध स
रि प म नि स ग ध	रि प म नि ग स ध	रि प म नि ग ध स
रि प म नि स ध ग	रि प म नि ध स ग	रि प म नि ध ग स
रि ग प नि स म ध	रि ग प नि म स ध	रि म प नि म ध स
रि प ग नि स म ध	रि प ग नि म स ध	रि प ग नि म ध स

रि प नि ग स म ध	रि प नि ग म स ध	रि प नि ग म ध स
रि प नि म स ग ध	रि प नि म ग स ध	रि प नि म ग ध स
रि प नि म स ध ग	रि प नि म ध स ग	रि प नि म ध ग स
रि ग प नि स ध म	रि ग प नि ध स म	रि ग प नि ध म स
रि प ग नि स ध म	रि प ग नि ध स म	रि प ग नि ध म स
रि प नि ग स ध म	रि प नि ग ध स म	रि प नि ग ध म स
रि प नि ध स ग म	रि प नि ध ग स म	रि प नि ध ग म स
रि प नि ध स म ग	रि प नि ध म स ग	रि प नि ध म ग स
रि ग ध म स प नि	रि ग ध म प स नि	रि ग ध म प नि स
रि ध ग म स प नि	रि ध ग म प स नि	रि ध ग म प नि स
रि ध म ग स प नि	रि ध म ग प स नि	रि ध म ग प नि स
रि ध म प स ग नि	रि ध म प ग स नि	रि ध म प ग नि स
रि ध म प स नि ग	रि ध म प नि स ग	रि ध म प नि ग स
रि ग ध प स म नि	रि ग ध प म स नि	रि ग ध प म नि स
रि ध ग प स म नि	रि ध म प म स नि	रि ध ग प म नि स
रि ध प ग स म नि	रि ध प ग म स नि	रि ध प ग म नि स
रि ध प म स ग नि	रि ध प म ग स नि	रि ध प म ग नि स
रि ध प म स नि ग	रि ध प म नि स ग	रि ध प म नि ग स
रि ग ध प स नि म	रि ग ध प नि स म	रि ग ध प नि म स
रि ध ग प स नि म	रि ध ग प नि स म	रि ध ग प नि म स

रि ध प ग स नि म	रि ध प ग नि स म	रि ध प ग नि म स
रि ध प नि स ग म	रि ध प नि ग स म	रि ध प नि ग म स
रि ध प नि स म ग	रि ध प नि म स ग	रि ध प नि म ग स
रि ग ध म स नि प	रि ग ध म नि स प	रि ग ध म नि प स
रि ध ग म स नि प	रि ध ग म नि स प	रि ध ग म नि प स
रि ध म ग स नि प	रि ध म ग नि स प	रि ध म ग नि प स
रि ध म नि स ग प	रि ध म नि ग स प	रि ध म नि ग प स
रि ध म नि स प ग	रि ध म नि प स ग	रि ध म नि प ग स
रि ग ध नि स म प	रि ग ध नि म स प	रि ग ध नि म प स
रि ध ग नि स म प	रि ध ग नि म स प	रि ध ग नि म प स
रि ध नि ग स म प	रि ध नि म ग स प	रि ध नि ग म प स
रि ध नि म स म प	रि ध नि म ग प स	रि ध नि म ग प स
रि ध नि म स प ग	रि ध नि म प स ग	रि ध नि प म ग स
रि ग ध नि स प म	रि ग ध नि प स म	रि ग ध नि प म स
रि ध ग नि स प म	रि ध ग नि प स म	रि ध ग नि प म स
रि ध नि ग स प म	रि ध नि ग प स म	रि ध नि ग प म स
रि ध नि प स ग म	रि ध नि प ग स म	रि ध नि प ग म स
रि ध नि प स म ग	रि ध नि प म स ग	रि ध नि प म ग स
रि ग नि म स प ध	रि ग नि म प स ध	रि ग नि म प ध स
रि नि ग म स प ध	रि नि ग म प स ध	रि नि ग म प ध स

रि नि म ग स प ध	रि नि म ग प स ध	रि नि म ग प ध स
रि नि म प स ग ध	रि नि म प ग स ध	रि नि म प ग ध स
रि नि म प स ध ग	रि नि म प ध स ग	रि नि म प ध ग स
रि ग नि प स म ध	रि ग नि प म स ध	रि ग नि प म ध स
रि नि ग प स म ध	रि नि ग प म स ध	रि नि ग प म ध स
रि नि प ग स म ध	रि नि प ग म स ध	रि नि प ग म ध स
रि नि प म स ग ध	रि नि प म ग स ध	रि नि प म ग ध स
रि नि प म स ध ग	रि नि प म ध स ग	रि नि प म ध ग स
रि ग नि प स ध म	रि ग नि प ध स म	रि ग नि प ध म स
रि नि ग प स ध म	रि नि ग प ध स म	रि नि म प ध म स
रि नि प ग स ध म	रि नि प ग ध स म	रि नि प ग ध म स
रि नि प ध स ग म	रि नि प ध ग स म	रि नि प ध ग म स
रि नि प ध स म ग	रि नि प ध म स ग	रि नि प ध म ग स
रि ग नि म स ध प	रि ग नि म ध स प	रि ग नि म ध प स
रि नि ग म स ध प	रि नि ग म ध स प	रि नि ग म ध प स
रि नि म ग स ध प	रि नि म ग ध स प	रि नि म ग ध प स
रि नि म ध स ग प	रि नि म ध ग स प	रि नि म ध ग प स
रि नि म ध स प ग	रि नि म ध प स ग	रि नि म ध प ग स
रि ग नि ध स म प	रि ग नि ध म स प	रि ग नि ध म प स
रि नि ग ध स म प	रि नि ग ध म स प	रि नि ग ध म प स

रि नि ध ग स ग प	रि नि ध ग म स प	रि नि ध ग म प स
रि नि ध म स ग प	रि नि ध म ग स प	रि नि ध म ग प स
रि नि ध म स प ग	रि नि ध म प स ग	रि नि ध म प ग स
रि ग नि ध स प म	रि ग नि ध प स म	रि ग नि ध प म स
रि नि ग ध स प म	रि नि ग ध प स म	रि नि ग ध प म स
रि नि ध ग स प म	रि नि ध ग प स म	रि नि ध ग प म स
रि नि ध प स ग म	रि नि ध प ग स म	रि नि ध प ग म स
रि नि ध प स म ग	रि नि ध प म स ग	रि नि ध प म ग स

ग

ग रि स म प ध नि	ग स रि म प ध नि	ग स म रि प ध नि
ग रि म स प ध नि	ग म रि स प ध नि	ग म स रि प ध नि
ग रि म प स ध नि	ग म रि प स ध नि	ग म प रि स ध नि
ग रि म प ध स नि	ग म रि प ध स नि	ग म प रि ध स नि
ग रि म प ध नि स	ग म रि प ध नि स	ग म प रि ध नि स
ग रि स म प नि ध	ग स रि म प नि ध	ग स म रि प नि ध
ग रि म स प नि ध	ग म रि स प नि ध	ग म स रि प नि ध
ग रि म प स नि ध	ग म रि प स नि ध	ग म प रि स नि ध
ग रि म प नि स ध	ग म रि प नि स ध	ग म प रि नि स ध

ग रि म प नि ध स	ग म रि प नि ध स	ग म प रि नि ध स
ग रि स म ध प नि	ग स रि म ध प नि	ग स म रि ध प नि
ग रि म स ध प नि	ग म रि स ध प नि	ग म स रि ध प नि
ग रि म ध स प नि	ग म रि ध स प नि	ग म ध रि स प नि
ग रि म ध प स नि	ग म रि ध प स नि	ग म ध रि प स नि
ग रि म ध प नि स	ग म रि ध प नि स	ग म ध रि प नि स
ग रि स म ध नि प	ग स रि म ध नि प	ग स म रि ध नि प
ग रि म स ध नि प	ग म रि स ध नि प	ग म स रि ध नि प
ग रि म ध स नि प	ग म रि ध स नि प	ग म ध रि स नि प
ग रि म ध नि स प	ग म रि ध नि स प	ग म ध रि नि स प
ग रि म ध नि प स	ग म रि ध नि प स	ग म ध रि नि प स
ग रि स म नि प ध	ग स रि म नि ध प	ग स म रि नि ध प
ग रि म स नि प ध	ग म रि स नि प ध	ग म स रि नि प ध
ग रि म नि स प ध	ग म रि नि स प ध	ग म नि रि स प ध
ग रि म नि प स ध	ग म रि नि प स ध	ग म नि रि प स ध
ग रि म नि प ध स	ग म रि नि प ध स	ग म नि रि प ध स
ग रि स म नि ध प	ग स रि म नि ध प	ग स म रि नि ध प
ग रि म स नि ध प	ग म रि स नि ध प	ग म स रि नि ध प
ग रि म नि स ध प	ग म रि नि स ध प	ग म नि रि स ध प
ग रि म नि ध स प	ग म रि नि ध स प	ग म नि रि ध स प

ग रि म नि ध प स	ग म रि नि ध प स	ग म नि रि ध प स
ग रि स प म ध नि	ग स रि प म ध नि	ग स प रि म ध नि
ग रि प स म ध नि	ग प रि स म ध नि	ग प स रि म ध नि
ग रि प म स ध नि	ग प रि म स ध नि	ग प म रि स ध नि
ग रि प म ध स नि	ग प रि म ध स नि	ग प म रि ध स नि
ग रि प म ध नि स	ग प रि म ध नि स	ग प म रि ध नि स
ग रि स प ध म नि	ग स रि प ध म नि	ग स प रि ध म नि
ग रि प स ध म नि	ग प रि स ध म नि	ग प स रि ध म नि
ग रि प ध स म नि	ग प रि ध स म नि	ग प ध रि स म नि
ग रि प ध म स नि	ग प रि ध म स नि	ग प ध रि म स नि
ग रि प ध म नि स	ग प रि ध म नि स	ग प ध रि म नि स
ग रि स प ध नि म	ग स रि प ध नि म	ग स प रि ध नि म
ग रि प स ध नि म	ग प रि स ध नि म	ग प स रि ध नि म
ग रि प ध स नि म	ग प रि ध स नि म	ग प ध रि स नि म
ग रि प ध नि स म	ग प रि ध नि स म	ग प ध रि नि स म
ग रि प ध नि म स	ग प रि ध नि म स	ग प ध रि नि म स
ग रि स प म नि ध	ग स रि प म नि ध	ग स प रि म नि ध
ग रि प स म नि ध	ग प रि स म नि ध	ग प स रि म नि ध
ग रि प म स नि ध	ग प रि म स नि ध	ग प म रि स नि ध
ग रि प म नि स ध	ग प रि म नि स ध	ग प म रि नि स ध

ग रि प म नि ध स	ग प रि म नि ध स	ग प म रि नि ध स
ग रि स प नि म ध	ग स रि प नि म ध	ग स प रि नि म ध
ग रि प स नि म ध	ग प रि स नि म ध	ग प स रि नि म ध
ग रि प नि स म ध	ग प रि नि स म ध	ग प नि रि स म ध
ग रि प नि म स ध	ग प रि नि म स ध	ग प नि रि म स ध
ग रि प नि म ध स	म प रि नि म ध स	ग प नि रि म ध स
ग रि स प नि ध म	ग स रि प नि ध म	ग स प रि नि ध म
ग रि प स नि ध म	ग प रि स नि ध म	ग प स रि नि ध म
ग रि प नि स ध म	ग प रि नि स ध म	ग प नि रि स ध म
ग रि प नि ध स म	ग प रि नि ध स म	ग प नि रि ध स म
ग रि प नि ध म स	ग प रि नि ध म स	ग प नि रि ध म स
ग रि स ध म प नि	ग स रि ध म प नि	ग स ध रि म प नि
ग रि ध स म प नि	ग ध रि स म प नि	ग ध स रि म प नि
ग रि ध म स प नि	ग ध रि म स प नि	ग ध म रि स प नि
ग रि ध म प स नि	ग ध रि म प स नि	ग ध म रि प स नि
ग रि ध म प नि स	ग ध रि म प नि स	ग ध म रि प नि स
ग रि स ध प म नि	ग स रि ध प म नि	ग स ध रि प म नि
ग रि ध स प म नि	ग ध रि स प म नि	ग ध स रि प म नि
ग रि ध प स म नि	ग ध रि प स म नि	ग ध प रि स म नि
ग रि ध प म स नि	ग ध रि प म स नि	ग ध प रि म स नि

ग रि ध प म नि स	ग ध रि प ग नि स	ग ध प रि म नि स
ग रि स ध प नि म	ग स रि ध प नि म	ग स ध रि प नि म
ग रि ध स प नि म	ग ध रि स प नि ग	ग ध स रि प नि म
ग रि ध प स नि म	ग ध रि प स नि म	ग ध प रि स नि ग
ग रि ध प नि स म	ग ध रि प नि स म	ग ध प रि नि स म
ग रि ध प नि म स	ग ध रि प नि म स	ग ध प रि नि म स
ग रि स ध म नि प	ग स रि ध म नि प	ग स ध रि म नि प
ग रि ध स म नि प	ग ध रि स म नि प	ग ध स रि म नि प
ग रि ध म स नि प	ग ध रि म स नि प	ग ध म रि स नि प
ग रि ध म नि स प	ग ध रि म नि स प	ग ध म रि नि स प
ग रि ध म नि प स	ग ध रि म नि प स	ग ध म रि नि प स
ग रि स ध नि म प	ग स रि ध नि म प	ग स ध रि नि म प
ग रि ध स नि म प	ग ध रि स नि म प	ग ध स रि नि म प
ग रि ध नि स म प	ग ध रि नि स म प	ग ध नि रि स म प
ग रि ध नि म स प	ग ध रि नि म स प	ग ध नि रि म स प
ग रि ध नि म प स	ग ध रि नि म प स	ग ध नि रि म प स
ग रि स ध नि प म	ग स रि ध नि म प	ग स ध रि नि म प
ग रि ध स नि प म	ग ध रि स नि प म	ग ध स रि नि प म
ग रि ध नि स प म	ग ध रि नि स प म	ग ध नि रि स प म
ग रि ध नि प स म	ग ध रि नि प स म	ग ध नि रि प स म

ग रि ध नि प म स	ग ध रि नि प म स	ग ध नि रि प म स
ग रि स नि म प ध	ग स रि नि म प ध	ग स नि रि म प ध
ग रि नि स म प ध	ग नि रि स म प ध	ग नि स रि म प ध
ग रि नि म स प ध	ग नि रि म स प ध	ग नि म रि स प ध
ग रि नि म प स ध	ग नि रि म प स ध	ग नि म रि प स ध
ग रि नि म प ध स	ग नि रि म प ध स	ग नि म रि प ध स
ग रि स नि प म ध	ग स रि नि प म ध	ग स नि रि प म ध
ग रि नि स प म ध	ग नि रि स प म ध	ग नि स रि प म ध
ग रि नि प स म ध	ग नि रि प स म ध	ग नि प रि स म ध
ग रि नि प म स ध	ग नि रि प म स ध	ग नि प रि म स ध
ग रि नि प म ध स	ग नि रि प म ध स	ग नि प रि म ध स
ग रि स नि प ध म	ग स नि रि प ध म	ग स नि रि प ध म
ग रि नि स प ध म	ग नि रि स प ध म	ग नि स रि प ध म
ग रि नि प स ध म	ग नि रि प स ध म	ग नि प रि स ध म
ग रि नि प ध स म	ग नि रि प ध स म	ग नि प रि ध स म
ग रि नि प ध म स	ग नि रि प ध म स	ग नि प रि ध म स
ग रि स नि म ध प	ग स रि नि म ध प	ग स नि रि ग ध प
ग रि नि स म ध प	ग नि रि स म ध प	ग मि स रि म ध प
ग रि नि म स ध प	ग नि रि म स ध प	ग नि म रि स ध प
ग रि नि म ध प स	ग नि रि म ध प स	ग नि म रि ध प स

ग	रि	नि	म	ध	स	प	ग	नि	रि	म	ध	स	प	ग	नि	म	रि	ध	स	प
ग	रि	स	नि	ध	म	प	ग	स	रि	नि	ध	म	प	ग	स	नि	रि	ध	म	प
ग	रि	नि	स	ध	म	प	ग	नि	रि	स	ध	ग	प	म	नि	स	रि	ध	म	प
ग	रि	नि	ध	स	म	प	ग	नि	रि	ध	स	ग	प	ग	नि	ध	रि	स	म	प
ग	रि	नि	ध	म	स	प	ग	नि	रि	ध	म	स	प	ग	नि	ध	रि	म	स	प
ग	रि	नि	ध	म	प	स	ग	नि	रि	ध	म	प	स	ग	नि	ध	रि	म	प	स
ग	रि	स	नि	ध	प	म	ग	स	रि	नि	ध	प	म	ग	स	नि	रि	ध	प	म
ग	रि	नि	स	ध	प	म	ग	नि	रि	स	ध	प	म	ग	नि	स	रि	ध	प	म
ग	रि	नि	ध	स	प	म	ग	नि	रि	ध	स	प	म	ग	नि	ध	रि	स	प	म
ग	रि	नि	ध	प	स	म	ग	नि	रि	ध	प	स	म	ग	नि	ध	रि	प	स	म
ग	रि	नि	ध	प	म	स	ग	नि	रि	ध	प	म	स	ग	नि	ध	रि	प	म	स
ग	स	म	प	रि	ध	नि	ग	स	म	प	ध	रि	नि	ग	स	म	प	ध	नि	रि
ग	म	स	प	रि	ध	नि	ग	म	स	प	ध	रि	नि	ग	म	स	प	ध	नि	रि
ग	म	प	स	रि	ध	नि	ग	म	प	स	ध	रि	नि	ग	म	प	स	ध	नि	रि
ग	म	प	ध	रि	स	नि	ग	म	प	ध	स	रि	नि	ग	म	प	ध	स	नि	रि
ग	म	प	ध	रि	नि	स	ग	म	प	ध	नि	रि	स	ग	म	प	ध	नि	स	रि
ग	स	म	प	रि	नि	ध	ग	स	म	प	नि	रि	ध	ग	स	म	प	नि	ध	रि
ग	म	स	प	रि	नि	ध	ग	म	स	प	नि	रि	ध	ग	म	स	प	नि	ध	रि
ग	म	प	स	रि	नि	ध	ग	म	प	स	नि	रि	ध	ग	म	प	स	नि	ध	रि
ग	म	प	नि	रि	स	ध	ग	म	प	नि	स	रि	ध	ग	म	प	नि	स	ध	रि

ग म प नि रि ध स	ग म प नि ध रि स	ग म प नि ध स रि
ग स म ध रि प नि	ग स म ध प रि नि	ग स म ध प नि रि
ग म स ध रि प नि	ग म स ध प रि नि	ग म स ध प नि रि
ग म ध स रि प नि	ग म ध स प रि नि	ग म ध स प नि रि
ग म ध प रि स नि	ग म ध प स रि नि	ग म ध प स नि रि
ग म ध प रि नि स	ग म ध प नि रि स	ग म ध प नि स रि
ग स म ध रि नि प	ग स म ध नि रि प	ग स म ध नि प रि
ग म स ध रि नि प	ग म स ध नि रि प	ग म स ध नि प रि
ग म ध स रि नि प	ग म ध स नि रि प	ग म ध स नि प रि
ग म ध नि रि स प	ग म ध नि स रि प	ग म ध नि स प रि
ग म ध नि रि प स	ग म ध नि प रि स	ग म ध नि प स रि
ग स म नि रि ध प	ग स म नि ध रि प	म स म नि ध प रि
ग म स नि रि प ध	ग म स नि प रि ध	ग म स नि प ध रि
ग म नि स रि प ध	ग म नि स प रि ध	ग म नि स प ध रि
ग म नि प रि स ध	ग म नि प स रि ध	ग म नि प स ध रि
ग म नि प रि ध स	ग म नि प ध रि स	ग म नि प ध स रि
ग स म नि रि ध प	ग स म नि ध रि प	ग स म नि ध प रि
ग म स नि रि ध प	ग म स नि ध रि प	ग म स नि ध प रि
ग म नि स रि ध प	ग म नि स ध रि प	ग म नि स ध प रि
ग म नि ध रि स प	ग म नि ध स रि प	ग म नि ध स प रि

ग म नि ध रि प स | ग म नि ध प रि स | ग म नि ध प स रि
ग स प म रि ध नि | ग स प म ध रि नि | ग स प म ध नि रि
ग प स म रि ध नि | ग प स म ध रि नि | ग प स म ध नि रि
ग प म स रि ध नि | ग प म स ध रि नि | ग प म स ध नि रि
ग प म ध रि स नि | ग प म ध स रि नि | ग प म ध स नि रि
ग प म ध रि नि स | ग प म ध नि रि स | ग प म ध नि स रि
ग स प ध रि म नि | ग स प ध म रि नि | ग स प ध म नि रि
ग प स ध रि म नि | ग प स ध म रि नि | ग प स ध म नि रि
ग प ध स रि म नि | ग प ध स म रि नि | ग प ध स म नि रि
ग प ध म रि स नि | ग प ध म स रि नि | ग प ध म स नि रि
ग प ध म रि नि स | ग प ध म नि रि स | ग प ध म नि स रि
ग स प ध रि नि म | ग स प ध नि रि म | ग स प ध नि म रि
ग प स ध रि नि म | ग प स ध नि रि म | ग प स ध नि म रि
ग प ध स रि नि म | ग प ध स नि रि म | ग प ध स नि म रि
ग प ध नि रि स म | ग प ध नि स रि म | ग प ध नि स म रि
ग प ध नि रि म स | ग प ध नि म रि स | ग प ध नि म स रि
ग स प म रि नि ध | ग स प म नि रि ध | ग स प म नि ध रि
ग प स म रि नि ध | ग प स म नि रि ध | ग प स म नि ध रि
ग प म स रि नि ध | ग प म स नि रि ध | ग प म स नि ध रि
ग प म नि रि स ध | ग प म नि स रि ध | ग प म नि स ध रि

ग प म नि रि ध स	ग प म नि ध रि स	ग प म नि ध स रि
ग स प नि रि म ध	ग स प नि म रि ध	ग स प नि म ध रि
ग प स नि रि म ध	ग प स नि म रि ध	ग प स नि ग ध रि
ग प नि स रि म ध	ग प नि स म रि ध	ग प नि स म ध रि
ग प नि म रि स ध	ग प नि म स रि ध	ग प नि म स ध रि
ग प नि म रि ध स	ग प नि रि म ध स	ग प नि म रि ध स
ग स प नि रि ध म	ग स प नि ध रि म	ग स प नि ध म रि
ग प स नि रि ध म	ग प स नि ध रि म	ग प स नि ध म रि
ग प नि स रि ध म	ग प नि स ध रि म	ग प नि स ध म रि
ग प नि ध रि स म	ग प नि ध स रि म	ग प नि ध स म रि
ग प नि ध रि म स	ग प नि ध म रि स	ग प नि ध म स रि
ग स ध म रि प नि	ग स ध म प रि नि	ग स ध म प नि रि
ग ध स म रि प नि	ग ध स म प रि नि	ग ध स म प नि रि
ग ध म स रि प नि	ग ध म स प रि नि	ग ध म स प नि रि
ग ध म प रि स नि	ग ध म प स रि नि	ग ध म प स नि रि
ग ध म प रि नि स	ग ध म प नि रि स	ग ध म प नि स रि
ग स ध प रि म नि	ग स ध प म रि नि	ग स ध प म नि रि
ग ध स प रि म नि	ग ध स प म रि नि	ग ध स प म नि रि
ग ध प स रि म नि	ग ध प स म रि नि	ग ध प स म नि रि
ग ध प म रि स नि	ग ध प म स रि नि	ग ध प म स नि रि

ग ध प म रि नि स	ग ध प म नि रि स	ग ध प म नि स रि
ग स ध प रि नि म	म स ध प नि रि म	ग स ध प नि म रि
ग ध स प रि नि म	ग ध स प नि रि म	ग ध स प नि म रि
ग ध प स रि नि म	म ध प स नि रि म	ग ध प स नि म रि
ग ध प नि रि स म	ग ध प नि स रि म	ग ध प नि स म रि
ग ध प नि रि म स	ग ध प नि म रि स	ग ध प नि म स रि
ग स ध म रि नि प	म स ध म नि रि प	ग स ध म नि प रि
ग ध स म रि नि प	ग ध स म नि रि प	ग ध स म नि प रि
ग ध म स रि नि प	ग ध म स नि रि प	ग ध म स नि प रि
ग ध म नि रि स प	ग ध म नि स रि प	ग ध म नि स प रि
ग ध म नि रि प स	ग ध म नि प रि स	ग ध म नि प स रि
ग स ध नि रि म प	ग स ध नि म रि प	ग स ध नि म प रि
ग ध स नि रि म प	ग ध स नि म रि प	ग ध स नि म प रि
ग ध नि स रि म प	ग ध नि स म रि प	ग ध नि स म प रि
म ध नि म रि स प	ग ध नि म स रि प	ग ध नि म स प रि
म ध नि म रि प स	ग ध नि म प रि स	ग ध नि म प स रि
ग स ध नि रि म प	ग स ध नि म रि प	ग स ध नि म प रि
ग ध स नि रि प म	ग ध स नि प रि म	ग ध स नि प म रि
ग ध नि स रि प म	म ध नि स प रि म	ग ध नि स प म रि
ग ध नि प रि स म	म ध नि प स रि म	ग ध नि प स म रि

ग ध नि प रि म स	ग ध नि प म रि स	ग ध नि प म स रि
ग स नि म रि प ध	ग स नि म प रि ध	ग स नि म प ध रि
ग नि स म रि प ध	म नि स म प रि ध	ग नि स म प ध रि
ग नि म स रि प ध	ग नि म स प रि ध	ग नि म स प ध रि
ग नि म प रि स ध	ग नि म प स रि ध	ग नि म प स ध रि
ग नि म प रि ध स	ग नि म प ध रि स	ग नि म प ध स रि
ग स नि प रि म ध	ग स नि प म रि ध	ग स नि प म ध रि
ग नि स प रि म ध	ग नि स प म रि ध	ग नि स प म ध रि
ग नि प स रि म ध	ग नि प स म रि ध	ग नि प स म ध रि
ग नि प म रि स ध	ग नि प म स रि ध	ग नि प म स ध रि
ग नि प म रि ध स	ग नि प म ध रि स	ग नि प म ध स रि
ग स नि प रि ध म	ग स नि प ध रि म	ग स नि प ध म रि
ग नि स प रि ध म	ग नि स प ध रि म	ग नि स प ध म रि
ग नि प स रि ध म	ग नि प स ध रि म	ग नि प स ध म रि
ग नि प ध रि स म	ग नि प ध स रि म	ग नि प ध स म रि
ग नि प ध रि म स	ग नि प ध म रि स	ग नि प ध म स रि
ग स नि म रि ध प	ग स नि म ध रि प	ग स नि म ध प रि
ग नि स म रि ध प	ग नि स म ध रि प	ग नि स म ध प रि
ग नि म स रि ध प	ग नि म स ध रि प	ग नि म स ध प रि
ग नि म ध रि प स	ग नि म ध प रि स	ग नि म ध प स रि

ग नि म ध रि स प	ग नि म ध स रि प	ग नि म ध स प रि
ग स नि ध रि म प	ग स नि ध म रि प	ग स नि ध म प रि
ग नि स ध रि म प	ग नि स ध म रि प	ग नि स ध म प रि
ग नि ध स रि म प	ग नि ध स म रि प	ग नि ध स म प रि
ग नि ध म रि स प	ग नि ध म स रि प	ग नि ध म स प रि
ग नि ध म रि प स	ग नि ध म प रि स	ग नि ध म प स रि
ग स नि ध रि प म	ग स नि ध प रि म	ग स नि ध प म रि
ग नि स ध रि प म	ग नि स ध प रि म	ग नि स ध प म रि
ग नि ध स रि प म	ग नि ध स प रि म	ग नि ध स प म रि
ग नि ध प रि स म	ग नि ध प स रि म	ग नि ध प स म रि
ग भि ध प रि म स	ग नि ध प म रि स	ग नि ध प म स रि

म

म रि ग स प ध नि	म ग रि स प ध नि	म म स रि प ध नि
म रि स ग प ध नि	म स रि ग प ध नि	म स ग रि प ध नि
म रि स प ग ध नि	म स रि प ग ध नि	म स प रि ग ध नि
म रि स प ध ग नि	म स रि प ध ग नि	म स प रि ध ग नि
म रि स प ध नि ग	म स रि प ध नि ग	म स प रि ध नि ग
म रि ग स प नि ध	म ग रि स प नि ध	म ग स रि प नि ध
म रि स ग प नि ध	म स रि म प नि ध	म स ग रि प नि ध

म रि स प ग नि ध	म स रि प ग नि ध	म स प रि ग नि ध
म रि स प नि ग ध	म स रि प नि ग ध	म स प रि नि ग ध
म रि स प नि ध ग	म स रि प नि ध ग	म स प रि नि ध ग
म रि ग स ध प नि	म ग रि स ध प नि	म ग स रि ध प नि
म रि स ग ध प नि	म स रि ग ध प नि	म स ग रि ध प नि
म रि स ध ग प नि	म स रि ध ग प नि	म स ध रि ग प नि
म रि स ध प ग नि	म स रि ध प ग नि	म स ध रि प ग नि
म रि स ध प नि ग	म स रि ध प नि ग	म स ध रि प नि ग
म रि ग स ध नि प	म ग रि स ध नि प	म ग स रि ध नि प
म रि स ग ध नि प	म स रि ग ध नि प	म स ग रि ध नि प
म रि स ध ग नि प	म स रि ध ग नि प	म स ध रि ग नि प
म रि स ध नि ग प	म स रि ध नि ग प	म स ध रि नि ग प
म रि स ध नि प ग	म स रि ध नि प ग	म स ध रि नि प ग
म रि ग स नि प ध	म ग रि स नि प ध	म ग स रि नि प ध
म रि स ग नि प ध	म स रि ग नि प ध	म स ग रि नि प ध
म रि स नि ग प ध	म स रि नि ग प ध	म स नि रि ग प ध
म रि स नि प ग ध	म स रि नि प ग ध	म स नि रि प ग ध
म रि स नि प ध ग	म स रि नि प ध ग	ग स नि रि प ध ग
म रि ग स नि ध प	म ग रि स नि ध प	म ग स रि नि ध प
म रि स ग नि ध प	म स रि म नि ध प	म स ग रि नि ध प

म रि स नि ग ध प	म स रि नि ग ध प	म स नि रि ग ध प
म रि स नि ध ग प	म स रि नि ध ग प	म स नि रि ध ग प
म रि स नि ध प ग	म स रि नि ध प ग	म स नि रि ध प ग
म रि ग प स ध नि	म ग रि प स ध नि	म ग प रि स ध नि
म रि प ग स ध नि	म प रि ग स ध नि	म प ग रि स ध नि
म रि प स ग ध नि	म प रि स ग ध नि	म प स रि ग ध नि
म रि प स ध ग नि	म प रि स ध ग नि	म प स रि ध ग नि
म रि प स ध नि ग	म प रि स ध नि ग	म प स रि ध नि ग
म रि ग प ध स नि	म ग रि प ध स नि	म ग प रि ध स नि
म रि प ग ध स नि	म प रि ग ध स नि	म प ग रि ध स नि
म रि प ध ग स नि	म प रि ध ग स नि	म प ध रि ग स नि
म रि प ध स ग नि	म प रि ध स ग नि	म प ध रि स ग नि
म रि प ध स नि ग	म प रि ध स नि ग	म प ध रि स नि ग
म रि ग प ध नि स	म ग रि प ध नि स	म ग प रि ध नि स
म रि प ग ध नि स	म प रि ग ध नि स	म प ग रि ध नि स
म रि प ध ग नि स	म प रि ध ग नि स	म प ध रि ग नि स
म रि प ध नि ग स	म प रि ध नि ग स	म प ध रि नि ग स
म रि प ध नि स ग	म प रि ध नि स ग	म प ध रि नि स ग
म रि ग प स नि ध	म ग रि प स नि ध	म ग प रि स नि ध
म रि प ग स नि ध	म प रि ग स नि ध	म प ग रि स नि ध

म रि प स ग नि ध	म प रि स ग नि ध	म प स रि ग नि ध
म रि प स नि ग ध	म प रि स नि ग ध	म प स रि नि ग ध
म रि प स नि ध म	म प रि स नि ध ग	म प स रि नि ध ग
म रि ग प नि स ध	म ग रि प नि स ध	म ग प रि नि स ध
म रि प ग नि स ध	म प रि ग नि स ध	म प ग रि नि स ध
म रि प नि ग स ध	म प रि नि ग स ध	म प नि रि ग स ध
म रि प नि स ग ध	म प रि नि स ग ध	म प नि रि स ग ध
म रि प नि स ध ग	म प रि नि स ध ग	म प नि रि स ध ग
म रि ग प नि ध स	म ग रि प नि ध स	म ग प रि नि ध स
म रि प ग नि ध स	म प रि ग नि ध स	म प ग रि नि ध स
म रि प नि ग ध स	म प रि नि ग ध स	म प नि रि ग ध स
म रि प नि ध ग स	म प रि नि ध ग स	म प नि रि ध म स
म रि प नि ध स ग	म प रि नि ध स ग	म प नि रि ध स ग
म रि ग ध स प नि	म ग रि ध स प नि	म ग ध रि स प नि
म रि ध ग स प नि	म ध रि ग स प नि	म ध ग रि स प नि
म रि ध स ग प नि	म ध रि स ग प नि	म ध स रि ग प नि
म रि ध स प ग नि	म ध रि स प ग नि	म ध स रि प ग नि
म रि ध स प नि ग	म ध रि स प नि ग	म ध स रि प नि ग
म रि ग ध प स नि	म ग रि ध प स नि	म ग ध रि प स नि
म रि ध ग प स नि	म ध रि ग प स नि	म ध ग रि प स नि

म रि ध प ग स नि	म ध रि प ग स नि	म ध प रि ग स नि
म रि ध प स ग नि	म ध रि प स ग नि	म ध प रि स ग नि
म रि ध प स नि ग	म ध रि प स नि ग	म ध प रि स नि ग
म रि ग ध प नि स	म ग रि ध प नि स	म ग ध रि प नि स
म रि ध ग प नि स	म ध रि ग प नि स	म ध ग रि प नि स
म रि ध प ग नि स	म ध रि प ग नि स	म ध प रि ग नि स
म रि ध प नि ग स	म ध रि प नि ग स	म ध प रि नि ग स
म रि ध प नि स ग	म ध रि प नि स ग	म ध प रि नि स ग
म रि ग ध स नि प	म ग रि ध स नि प	म ग ध रि स नि प
म रि ध ग स नि प	म ध रि ग स नि प	म ध ग रि स नि प
म रि ध स ग नि प	म ध रि स ग नि प	म ध स रि ग नि प
म रि ध स नि ग प	म ध रि स नि ग प	म ध स रि नि ग प
म रि ध स नि प ग	म ध रि स नि प ग	म ध स रि नि प ग
म रि ग ध नि स प	म म रि ध नि स प	म ग ध रि नि स प
म रि ध ग नि स प	म ध रि ग नि स प	म ध ग रि नि स प
म रि ध नि ग स प	म ध रि नि ग स प	म ध नि रि ग स प
म रि ध नि स ग प	म ध रि नि स ग प	म ध नि रि स ग प
म रि ध नि स प ग	ग ध रि नि स प ग	म ध नि रि स प ग
म रि ग ध नि प स	म ग रि ध नि प स	म ग ध रि नि प स
म रि ध ग नि प स	म ध रि ग नि प स	म ध ग रि नि प स

म रि ध नि ग प स	म ध रि नि ग प स	म ध नि रि ग प स
म रि ध नि प ग स	म ध रि नि प ग स	म ध नि रि प ग स
म रि ध नि प स ग	म ध रि नि प स ग	म ध नि रि प स ग
म रि ग नि स प ध	म ग रि नि स प ध	म ग नि रि स प ध
म रि नि ग स प ध	म नि रि ग स प ध	म नि ग रि स प ध
म रि नि स ग प ध	म नि रि स ग प ध	म नि स रि ग प ध
म रि नि स प ग ध	म नि रि स प ग ध	म नि स रि प ग ध
म रि नि स प ध ग	म नि रि स प ध ग	म नि स रि प ध ग
म रि ग नि प स ध	म ग रि नि प स ध	म ग नि रि प स ध
म रि नि ग प स ध	म नि रि ग प स ध	म नि ग रि प स ध
म रि नि प ग स ध	म नि रि प ग स ध	म नि प रि ग स ध
म रि नि प स ग ध	म नि रि प स ग ध	म नि प रि स ग ध
म रि नि प स ध ग	म नि रि प स ध म	म नि प रि स ध ग
म रि ग नि प ध स	म ग रि नि प ध स	म ग नि रि प ध स
म रि नि ग प ध स	म नि रि ग प ध स	म नि ग रि प ध स
म रि नि प ग ध स	म नि रि प ग ध स	म नि प रि ग ध स
म रि नि प ध स ग	म नि रि प ध स ग	म नि प रि ध स ग
म रि नि प ध ग स	म नि रि प ध ग स	म नि प रि ध ग स
म रि ग नि स ध प	म ग रि नि स ध प	म ग नि रि स ध प
म रि नि स ग ध प	म नि रि स ग ध प	म नि स रि ग ध प

म रि नि स ग प ध	म नि रि स ग प ध	म नि स रि ग प ध
म रि नि स ध ग प	म नि रि स ध ग प	म नि स रि ध ग प
म रि नि स ध प ग	म नि रि स ध प ग	म नि स रि ध प ग
म रि ग नि ध स प	म ग रि नि ध स प	म ग नि रि ध स प
म रि नि ग ध स प	म नि रि ग ध स प	म नि ग रि ध स प
म रि नि ध ग स प	म नि रि ध ग स प	म नि ध रि ग स प
म रि नि ध स ग प	म नि रि ध स ग प	म नि ध रि स ग प
म रि नि ध स प ग	म नि रि ध स प ग	म नि ध रि स प ग
म रि ग नि ध प स	म ग रि नि ध प स	म ग नि रि ध प स
म रि नि ग ध प स	म नि रि ग ध प स	म नि ग रि ध प स
म रि नि ध ग प स	म नि रि ध ग प स	म नि ध रि ग प स
म रि नि ध प ग स	म नि रि ध प ग स	म नि ध रि प ग स
म रि नि ध प स ग	म नि रि ध प स ग	म नि ध रि प स ग
म ग स प रि ध नि	म ग स प ध रि नि	म ग स प ध नि रि
म स ग प रि ध नि	म स ग प ध रि नि	म स ग प ध नि रि
म स प ग रि ध नि	म स प ग ध रि नि	म स प ग ध नि रि
म स प ध रि ग नि	म स प ध ग रि नि	म स प ध ग नि रि
म स प ध रि नि ग	म स प ध नि रि ग	म स प ध नि ग रि
म ग स प रि नि ध	म ग स प नि रि ध	म ग स प नि ध रि
म स ग प रि नि ध	म स ग प नि रि ध	म स ग प नि ध रि

म स प ग रि नि ध	म स प ग नि रि ध	म स प ग नि ध रि
म स प नि रि ग ध	म स प नि ग रि ध	म स प नि ग ध रि
म स प नि रि ध ग	म स प नि ध रि ग	म स प नि ध ग रि
म ग स ध रि प नि	म ग स ध प रि नि	म ग स ध प नि रि
म स ग ध रि प नि	म स ग ध प रि नि	म स ग ध प नि रि
म स ध ग रि प नि	म स ध ग प रि नि	म स ध ग प नि रि
म स ध प रि ग नि	म स ध प ग रि नि	म स ध प ग नि रि
म स ध प रि नि ग	म स ध प नि रि ग	म स ध प नि ग रि
म ग स ध रि नि प	म ग स ध नि रि प	म म स ध नि प रि
म स ग ध रि नि प	म स म ध नि रि प	म स ग ध नि प रि
म स ध ग रि नि प	म स ध ग नि रि प	म स ध ग नि प रि
म स ध नि रि ग प	म स ध नि ग रि प	म स ध नि ग प रि
म स ध नि रि प ग	म स ध नि प रि ग	म स ध नि प ग रि
म ग स नि रि प ध	म ग स नि प रि ध	म ग स नि प ध रि
म स ग नि रि प ध	म स ग नि प रि ध	म स ग नि प ध रि
म स नि ग रि प ध	म स नि ग प रि ध	म स नि ग प ध रि
म स नि प रि ग ध	म स नि प ग रि ध	म स नि प ग ध रि
म स नि प रि ध ग	म स नि प ध रि ग	म स नि प ध ग रि
म ग स नि रि ध प	म ग स नि ध रि प	म ग स नि ध प रि
म स ग नि रि ध प	म स ग नि ध रि प	म स ग नि ध प रि

म स नि ग रि ध प	म स नि ग ध रि प	म स नि ग ध प रि
म स नि ध रि ग प	म स नि ध ग रि प	म स नि ध ग प रि
म स नि ध रि प ग	म स नि ध प रि ग	म स नि ध प ग रि
म ग प स रि ध नि	म ग प स ध रि नि	म ग प स ध नि रि
म प ग स रि ध नि	म प ग स ध रि नि	म प ग स ध नि रि
म प स ग रि ध नि	म प स ग ध रि नि	म प स ग ध नि रि
म प स ध रि ग नि	म प स ध ग रि नि	म प स ध ग नि रि
म प स ध रि नि ग	म प स ध नि रि ग	म प स ध नि ग रि
म ग प ध रि स नि	म ग प ध स रि नि	म ग प ध स नि रि
म प ग ध रि स नि	म प ग ध स रि नि	म प ग ध स नि रि
म प ध ग रि स नि	म प ध ग स रि नि	म प ध ग स नि रि
म प ध स रि ग नि	म प ध स ग रि नि	म प ध स ग नि रि
म प ध स रि नि ग	म प ध स नि रि ग	म प ध स नि ग रि
म ग प ध रि नि स	म ग प ध नि रि स	म ग प ध नि स रि
म प ग ध रि नि स	म प ग ध नि रि स	म प ग ध नि स रि
म प ध ग रि नि स	म प ध ग नि रि स	म प ध ग नि स रि
म प ध नि रि ग स	म प ध नि ग रि स	म प ध नि ग स रि
म प ध नि रि स ग	म प ध नि स रि ग	म प ध नि स ग रि
म ग प स रि नि ध	म ग प स नि रि ध	म ग प स नि ध रि
म प ग स रि नि ध	म प ग स नि रि ध	म प ग स नि ध रि

म प स ग रि नि ध	म प स म नि रि ध	म प स ग नि ध रि
म प स नि रि ग ध	म प स नि ग रि ध	म प स नि ग ध रि
म प स नि रि ध ग	म प स नि ध रि ग	म प स नि ध ग रि
म ग प नि रि स ध	म ग प नि स रि ध	म ग प नि स ध रि
म प ग नि रि स ध	म प ग नि स रि ध	म प ग नि स ध रि
म प नि ग रि स ध	म प नि ग स रि ध	म प नि ग स ध रि
म प नि स रि ग ध	म प नि स ग रि ध	म प नि स ग ध रि
म प नि स रि ध ग	म प नि स ध रि ग	म प नि स ध ग रि
म ग प नि रि ध स	म ग प नि ध रि स	म ग प नि ध स रि
म प ग नि रि ध स	म प ग नि ध रि स	म प ग नि ध स रि
म प नि ग रि ध स	म प नि ग ध रि स	ग प नि ग ध स रि
म प नि ध रि ग स	म प नि ध ग रि स	म प मि ध ग स रि
म प नि ध रि स ग	म प नि ध स रि ग	म प नि ध स ग रि
म ग ध स रि प नि	म ग ध स प रि नि	म ग ध स प नि रि
म ध ग स रि प नि	म ध ग स प रि नि	म ध ग स प नि रि
म ध स ग रि प नि	म ध स ग प रि नि	म ध स ग प नि रि
म ध स प रि ग नि	म ध स प ग रि नि	म ध स प म नि रि
म ध स प रि नि ग	म थ स प नि रि ग	म ध स प नि ग रि
म ग ध प रि स नि	म ग ध प स रि नि	म ग ध प स नि रि
म ध म प रि स नि	म ध ग प स रि नि	म ध ग प स नि रि

म ध प म रि स नि	म ध प ग स रि नि	म ध प ग स नि रि
म ध प स रि ग नि	म ध प स ग रि नि	म ध प स ग नि रि
म ध प स रि नि ग	म ध प स नि रि ग	म ध प स नि ग रि
म ग ध प रि नि स	म ग ध प नि रि स	म ग ध प नि स रि
म ध ग प रि नि स	म ध ग प नि रि स	म ध ग प नि स रि
म ध प ग रि नि स	म ध प ग नि रि स	ग ध प ग नि स रि
म ध प नि रि ग स	म ध प नि म रि स	म ध प नि ग स रि
म ध प नि रि स ग	म ध प नि स रि ग	म ध प नि स ग रि
म ग ध स रि नि प	म म ध स नि रि प	म ग ध स नि प रि
म ध म स रि नि प	म ध म स नि रि प	म ध ग स नि प रि
म ध स ग रि नि प	म ध स ग नि रि प	म ध स ग नि प रि
म ध स नि रि ग प	म ध स नि ग रि प	म ध स नि ग प रि
म ध स नि रि प ग	म ध स नि प रि ग	ग ध स नि प ग रि
म ग ध नि रि स प	म म ध नि स रि प	म ग ध नि स प रि
म ध ग नि रि स प	म ध ग नि स रि प	म ध ग नि स प रि
म ध नि ग रि स प	म ध नि ग स रि प	म ध नि ग स प रि
म ध नि स रि ग प	म ध नि स ग रि प	म ध नि स ग प रि
म ध नि स रि प ग	म ध नि स प रि ग	म ध नि स प ग रि
म ग ध नि रि प स	म ग ध नि प रि स	म ग ध नि प स रि
म ध ग नि रि प स	म ध ग नि प रि स	म ध ग नि प स रि

म ध नि ग रि प स	म ध नि ग प रि स	म ध नि ग प स रि
म ध नि प रि ग स	म ध नि प ग रि स	म ध नि प ग स रि
म ध नि प रि स ग	म ध नि प स रि ग	म ध नि प स ग रि
म ग नि स रि प ध	म ग नि स प रि ध	म ग नि स प ध रि
म नि ग स रि प ध	म नि म स प रि ध	म नि ग स प ध रि
म नि स ग रि प ध	म नि स ग प रि ध	म नि स ग प ध रि
म नि स प रि ग ध	म नि स प ग रि ध	म नि स प ग ध रि
म नि स प रि ध ग	म नि स प ध रि ग	म नि स प ध ग रि
म ग नि प रि स ध	म ग नि प स रि ध	म म नि प स ध रि
म नि ग प रि स ध	म नि ग प स रि ध	म नि ग प स ध रि
म नि प ग रि स ध	म नि प ग स रि ध	म नि प ग स ध रि
म नि प स रि ग ध	म नि प स ग रि ध	म नि प स ग ध रि
म नि प स रि ध ग	म नि प स ध रि ग	म नि प स ध ग रि
म ग नि प रि ध स	म ग नि प ध रि स	म ग नि प ध स रि
म नि ग प रि ध स	म नि म प ध रि स	म नि ग प ध स रि
म नि प ग रि ध स	म नि प ग ध रि स	म नि प ग ध स रि
म नि प ध रि ग स	म नि प ध ग रि स	म नि प ध ग स रि
म नि प ध रि स ग	म नि प ध स रि ग	म नि प ध स ग रि
म ग नि स रि ध प	म ग नि स ध रि प	म ग नि स ध प रि
म नि ग स रि ध प	म नि ग स ध रि प	म नि ग स ध प रि

म नि स ग रि ध प	म नि स ग ध रि प	म नि स ग ध प रि
म नि स ध रि ग प	म नि स ध ग रि प	म नि स ध ग प रि
म नि स ध रि प ग	म नि स ध प रि ग	म नि स ध प ग रि
म ग नि ध रि स प	म ग नि ध स रि प	म ग नि ध स प रि
म नि ग ध रि स प	म नि ग ध स रि प	म नि ग ध स प रि
म नि ध ग रि स प	म नि ध ग स रि प	म नि ध ग स प रि
म नि ध स रि ग प	म नि ध स ग रि प	म नि ध स ग प रि
म नि ध स रि प ग	म नि ध स प रि ग	म नि ध स प ग रि
म ग नि ध रि प स	म ग नि ध प रि स	म ग नि ध प स रि
म नि ग ध रि प स	म नि ग ध प रि स	म नि ग ध प स रि
म नि ध ग रि प स	म नि ध ग प रि स	म नि ध ग प स रि
म नि ध प रि ग स	म नि ध प ग रि स	म नि ध प ग स रि
म नि ध प रि स ग	म नि ध प स रि ग	म नि ध प स ग रि

प

प रि म म स ध नि	प ग रि म स ध नि	प म म रि स ध नि
प रि म ग स ध नि	प म रि ग स ध नि	प म ग रि स ध नि
प रि म स ग ध नि	प म रि स ग ध नि	प म स रि ग ध नि
प रि म स ध ग नि	प म रि स ध ग नि	प म स रि ध ग नि
प रि म स ध नि ग	प म रि स ध नि ग	प म स रि ध नि ग

प रि ग म स नि ध	प ग रि म स नि ध	प ग म रि स नि ध
प रि म ग स नि ध	प म रि ग स नि ध	प म ग रि स नि ध
प रि म स ग नि ध	प म रि स ग नि ध	प म स रि ग नि ध
प रि म स नि ग ध	प म रि स नि ग ध	प म स रि नि ग ध
प रि म स नि ध ग	प म रि स नि ध ग	प म स रि नि ध ग
प रि म म ध स नि	प ग रि म ध स नि	प ग ग रि ध स नि
प रि म ग ध स नि	प म रि ग ध स नि	प म ग रि ध स नि
प रि म ध ग स नि	प म रि ध ग स नि	प ग ध रि ग स नि
प रि म ध स ग नि	प म रि ध स ग नि	प म ध रि स ग नि
प रि म ध स नि ग	प म रि ध स नि ग	प म ध रि स नि ग
प रि ग म ध नि स	प ग रि ग ध नि स	प ग म रि ध नि स
प रि म ग ध नि स	प म रि ग ध नि स	प म ग रि ध नि स
प रि म ध ग नि स	प म रि ध ग नि स	प ग ध रि ग नि स
प रि म ध नि ग स	प म रि ध नि ग स	प म ध रि नि ग स
प रि म ध नि स ग	प म रि ध नि स ग	प म ध रि नि स ग
प रि ग म नि स ध	प ग रि म नि स ध	प ग म रि नि स ध
प रि म ग नि स ध	प म रि ग नि स ध	प म ग रि नि स ध
प रि म नि ग स ध	प म रि नि ग स ध	प म नि रि ग स ध
प रि म नि स ग ध	प म रि नि स ग ध	प म नि रि स ग ध
प रि म नि स ध ग	प म रि नि स ध ग	प म नि रि स ध ग

प रि ग म नि ध स	प ग रि म नि ध स	प ग म रि नि ध स
प रि म ग नि ध स	प म रि ग नि ध स	प म ग रि नि ध स
प रि म नि ग ध स	प म रि नि ग ध स	प म नि रि ग ध स
प रि म नि ध ग स	प म रि नि ध ग स	प म नि रि ध ग स
प रि म नि ध स म	प म रि नि ध स म	प म नि रि ग ध स
प रि ग स म ध नि	प ग रि स म ध नि	प ग स रि म ध नि
प रि स ग म ध नि	प स रि ग म ध नि	प स ग रि म ध नि
प रि स म ग ध नि	प स रि म ग ध नि	प स म रि ग ध नि
प रि स म ध ग नि	प स रि म ध ग नि	प स म रि ध ग नि
प रि स म ध नि ग	प स रि म ध नि ग	प स म रि ध नि ग
प रि ग स ध म नि	प ग रि स ध म नि	प ग स रि ध म नि
प रि स ग ध म नि	प स रि म ध म नि	प स ग रि ध म नि
प रि स ध ग म नि	प स रि ध ग म नि	प स ध रि म म नि
प रि स ध म ग नि	प स रि ध म ग नि	प स ध रि म ग नि
प रि स ध म नि ग	प स रि ध म नि ग	प स ध रि म नि ग
प रि ग स ध नि म	प ग रि स ध नि म	प ग स रि ध नि म
प रि स ग ध नि म	प स रि ग ध नि म	प स ग रि ध नि म
प रि स ध ग नि म	प स रि ध ग नि म	प स ध रि ग नि म
प रि स ध नि ग म	प स रि ध नि ग म	प स ध रि नि ग म
प रि स ध नि म ग	प स रि ध नि म ग	प स ध रि नि म ग

प रि ग स म नि ध	प ग रि स म नि ध	प ग स रि म नि ध
प रि स ग म नि ध	प स रि ग म नि ध	प स ग रि म नि ध
प रि स म म नि ध	प स रि म ग नि ध	प स म रि म नि ध
प रि स म नि ग ध	प स रि म नि ग ध	प स म रि नि ग ध
प रि स म नि ध ग	प स रि म नि ध ग	प स म रि नि ध ग
प रि ग स नि म ध	प ग रि स नि म ध	प ग स रि नि म ध
प रि स ग नि ग ध	प स रि ग नि म ध	प स म रि नि म ध
प रि स नि ग म ध	प स रि नि ग म ध	प स नि रि ग म ध
प रि स नि म ग ध	प स रि नि म ग ध	प स नि रि म ग ध
प रि स नि म ध ग	प स रि नि म ध ग	प स नि रि म ध ग
प रि ग स नि ध म	प ग रि स नि ध म	प ग स रि नि ध म
प रि स ग नि ध म	प स रि ग नि ध म	प स ग रि नि ध म
प रि स नि ग ध म	प स रि नि ग ध म	प स नि रि ग ध म
प रि स नि ध ग म	प स रि नि ध ग म	प स नि रि ध ग म
प रि स नि ध म ग	प स रि नि ध म ग	प स नि रि ध म ग
प रि ग ध म स नि	प ग रि ध म स नि	प ग ध रि म स नि
प रि ध ग म स नि	प ध रि ग म स नि	प ध ग रि म स नि
प रि ध म ग स नि	प ध रि म ग स नि	प ध म रि ग स नि
प रि ध म स ग नि	प ध रि म स ग नि	प ध म रि स ग नि
प रि ध म स नि ग	प ध रि म स नि ग	प ध म रि स नि म

प रि ग ध स म नि	प ग रि ध स म नि	प ग ध रि स म नि
प रि ध ग स म नि	प ध रि ग स म नि	प ध ग रि स म नि
प रि ध स ग म नि	प ध रि स ग म नि	प ध स रि ग म नि
प रि ध स म ग नि	प ध रि स म ग नि	प ध स रि म ग नि
प रि ध स म नि ग	प ध रि स म नि ग	प ध स रि म नि ग
प रि ग ध स नि म	प ग रि ध स नि म	प ग ध रि स नि म
प रि ध ग स नि म	प ध रि म स नि म	प ध ग रि स नि म
प रि ध स ग नि म	प ध रि स ग नि म	प ध स रि ग नि म
प रि ध स नि ग म	प ध रि स नि ग म	प ध स रि नि ग म
प रि ध स नि म ग	प ध रि स नि म ग	प ध स रि नि म ग
प रि ग ध म नि स	प म रि ध म नि स	प ग ध रि म नि स
प रि ध ग म नि स	प ध रि ग म नि स	प ध ग रि म नि स
प रि ध म ग नि स	प ध रि म ग नि स	प ध म रि ग नि स
प रि ध म नि ग स	प ध रि म नि ग स	प ध म रि नि ग स
प रि ध म नि स ग	प ध रि म नि स ग	प ध म रि नि स ग
प रि ग ध नि म स	प ग रि ध नि म स	प ग ध रि नि म स
प रि ध ग नि म स	प ध रि ग नि म स	प ध ग रि नि म स
प रि ध नि ग म स	प ध रि नि ग म स	प ध नि रि ग म स
प रि ध नि म ग स	प ध रि नि म ग स	प ध नि रि म ग स
प रि ध नि म स ग	प ध रि नि म स ग	प ध नि रि म स ग

प रि ग ध नि स म	प ग रि ध नि स ग	प ग ध रि नि स म
प रि ध ग नि स म	प ध रि ग नि स म	प ध ग रि नि स म
प रि ध नि ग स म	प ध रि नि ग स म	प ध नि रि ग स म
प रि ध नि स ग म	प ध रि नि स ग म	प ध नि रि स ग म
प रि ध नि स म ग	प ध रि नि स म ग	प ध नि रि स म ग
प रि ग नि म स ध	प ग रि नि म स ध	प ग नि रि म स ध
प रि नि ग म स ध	प नि रि ग म स ध	प नि ग रि म स ध
प रि नि म ग स ध	प नि रि म ग स ध	प नि म रि स ग ध
प रि नि म स ग ध	प नि रि म स ग ध	प नि म रि स ग ध
प रि वि म स ध ग	प नि रि म स ध ग	प नि म रि स ध ग
प रि ग नि स म ध	प ग रि नि स म ध	प ग नि रि स म ध
प रि नि ग स म ध	प नि रि ग स म ध	प नि ग रि स म ध
प रि नि स ग म ध	प नि रि स ग म ध	प नि स रि ग म ध
प रि नि स म ग ध	प नि रि स म ग ध	प नि स रि म ग ध
प रि नि स म ध ग	प नि रि स म ध ग	प नि स रि म ध ग
प रि ग नि स ध म	प ग रि नि स ध म	प ग नि रि स ध म
प रि नि ग स ध म	प नि रि ग स ध म	प नि ग रि स ध म
प रि नि स ग ध म	प नि रि स ग ध म	प नि स रि ग ध म
प रि नि स ध ग म	प नि रि स ध ग म	प नि स रि ध ग म
प रि नि स ध म ग	प नि रि स ध म ग	प नि स रि ध म ग

प रि ग नि म ध स	प ग रि नि म ध स	प ग नि रि म ध स
प रि नि ग म ध स	प नि रि ग म ध स	प नि ग रि म ध स
प रि नि म ग ध स	प नि रि म ग ध स	प नि म रि ग ध स
प रि नि म ध ग स	प नि रि म ध ग स	प नि म रि ध ग स
प रि नि म ध स ग	प नि रि म ध स ग	प नि म रि ध स ग
प रि ग नि ध म स	प ग रि नि ध म स	प ग नि रि ध म स
प रि नि ग ध म स	प नि रि ग ध म स	प नि ग रि ध म स
प रि नि ध ग म स	प नि रि ध ग म स	प नि ध रि ग म स
प रि नि ध म ग स	प नि रि ध म ग स	प नि ध रि म ग स
प रि नि ध म स ग	प नि रि ध म स ग	प नि ध रि म स ग
प रि ग नि ध स म	प ग रि नि ध स म	प ग नि रि ध स म
प रि नि ग ध स म	प नि रि ग ध स म	प नि ग रि ध स म
प रि नि ध ग स म	प नि रि ध ग स म	प नि ध रि ग स म
प रि नि ध स ग म	प नि रि ध स ग म	प नि ध रि स ग म
प रि नि ध स म ग	प नि रि ध स म ग	प नि ध रि स म ग
प ग म स रि ध नि	प ग म स ध रि नि	प ग म स ध नि रि
प म ग स रि ध नि	प म ग स ध रि नि	प म ग स ध नि रि
प म स ग रि ध नि	प म स ग ध नि रि	प म स ग नि ध रि
प म स ध रि ग नि	प म स ध ग रि नि	प म स ध ग नि रि
प म स ध रि नि ग	प म स ध नि रि ग	प म स ध नि ग रि

प ग म स रि नि ध	प म ग स नि रि ध	प ग म स नि ध रि
प म ग स रि नि ध	प म ग स नि रि ध	प म ग स नि ध रि
प म स ग रि नि ध	प म स ग नि रि ध	प म स ग नि ध रि
प म स नि रि ग ध	प म स नि ग रि ध	प म स नि ग ध रि
प म स नि रि ध ग	प म स नि ध रि ग	प म स नि ध ग रि
प ग म ध रि स नि	प ग म ध स रि नि	प ग म ध स नि रि
प म ग ध रि स नि	प म ग ध स रि नि	प म ग ध स नि रि
प म ध ग रि स नि	प म ध ग स रि नि	प म ध ग स नि रि
प म ध स रि ग नि	प म ध स ग रि नि	प म ध स ग नि रि
प म ध स रि नि ग	प म ध स नि रि ग	प म ध स नि ग रि
प ग म ध रि नि स	प ग म ध नि रि स	प ग म ध नि स रि
प म ग ध रि नि स	प म ग ध नि रि स	प म ग ध नि स रि
प म ध ग रि नि स	प म ध ग नि रि स	प म ध ग नि स रि
प म ध नि रि ग स	प म ध नि ग रि स	प म ध नि ग स रि
प ग ध नि रि स ग	प म ध नि स रि ग	प म ध नि स ग रि
प ग म नि रि स ध	प ग म नि स रि ध	प ग म नि स ध रि
प म ग नि रि स ध	प म ग नि स रि ध	प म ग नि स ध रि
प म नि ग रि स ध	प म नि ग स रि ध	प म नि ग स ध रि
प म नि स रि ग ध	प म नि स ग रि ध	प म नि स ग ध रि
प म नि स रि ध ग	प म नि स ध रि ग	प म नि स ध ग रि

प ग म नि रि ध स	प ग म नि ध रि स	प म म नि ध स रि
प म म नि रि ध स	प म ग नि ध रि स	प म ग नि ध स रि
प म नि ग रि ध स	प म नि ग ध रि स	प म नि ग ध स रि
प म नि ध रि ग स	प म नि ध म रि स	प म नि ध ग स रि
प म नि ध रि स ग	प म नि ध स रि ग	प म नि ध स ग रि
प ग स म रि ध नि	प ग स म ध रि नि	प ग स म ध नि रि
प स ग म रि ध नि	प स ग म ध रि नि	प स म म ध नि रि
प स म ग रि ध नि	प स म ग ध रि नि	प स म ग ध नि रि
प स म ध रि ग नि	प स म ध ग रि नि	प स म ध ग नि रि
प स म ध रि नि ग	प स म ध नि रि ग	प स म ध नि ग रि
प ग स ध रि म नि	प ग स ध म रि नि	प ग स ध म नि रि
प स ग ध रि म नि	प स ग ध म रि नि	प स ग ध म नि रि
प स ध ग रि म नि	प स ध ग म रि नि	प स ध ग म नि रि
प स ध म रि ग नि	प स ध म ग रि नि	प स ध म ग नि रि
प स ध म रि नि ग	प स ध म नि रि ग	प स ध म नि ग रि
प ग स ध रि नि म	प ग स ध नि रि म	प ग स ध नि म रि
प स ग ध रि नि म	प स ग ध नि रि म	प स ग ध नि म रि
प स ध ग रि नि म	प स ध ग नि रि म	प स ध ग नि म रि
प स ध नि रि ग म	प स ध नि ग रि म	प स ध नि ग म रि
प स ध नि रि म ग	प स ध नि म रि ग	प स ध नि म ग रि

प ग स म रि नि ध | प ग स म नि रि ध | प ग स म नि ध रि
प स ग म रि नि ध | प स म म नि रि ध | प स ग म नि ध रि
प स म ग रि नि ध | प स म ग नि रि ध | प स म ग नि ध रि
प स म नि रि ग ध | प स म नि ग रि ध | प स म नि ग ध रि
प स म नि रि ध ग | प स म नि ध रि ग | प स म नि ध ग रि
प ग स नि रि म ध | प ग स नि म रि ध | प ग स नि म ध रि
प स ग नि रि म ध | प स ग नि म रि ध | प स ग नि म ध रि
प स नि ग रि म ध | प स नि ग म रि ध | प स नि ग म ध रि
प स नि म रि ग ध | प स नि म ग रि ध | प स नि म ग ध रि
प स नि म रि ध ग | प स नि म ध रि ग | प स नि म ध ग रि
प ग स नि रि ध म | प ग स नि ध रि म | प ग स नि ध म रि
प स ग नि रि ध म | प स ग नि ध रि म | प स ग नि ध म रि
प स नि ग रि ध म | प स नि ग ध रि म | प स नि ग ध म रि
प स नि ध रि ग म | प स नि ध ग रि म | प स नि ध ग म रि
प स नि ध रि म ग | प स नि ध म रि ग | प स नि ध म ग रि
प ग ध म रि स नि | प ग ध म स रि नि | प ग ध म स नि रि
प ध ग म रि स नि | प ध ग म स रि नि | प ध ग म स नि रि
प ध म ग रि स नि | प ध म ग स रि नि | प ध म ग स नि रि
प ध म स रि ग नि | प ध म स ग रि नि | प ध म स ग नि रि
प ध म स रि नि ग | प ध म स नि रि ग | प ध म स नि ग रि

प ग ध स रि म नि	प ग ध स म रि नि	प ग ध स म नि रि
प ध ग स रि म नि	प ध ग स म रि नि	प ध ग स म नि रि
प ध स ग रि म नि	प ध स ग म रि नि	प ध स ग म नि रि
प ध स म रि ग नि	प ध स म ग रि नि	प ध स म ग नि रि
प ध स म रि नि ग	प ध स म नि रि ग	प ध स म नि ग रि
प ग ध स रि नि म	प ग ध स नि रि म	प ग ध स नि म रि
प ध ग स रि नि म	प ध ग स नि रि म	प ध ग स नि म रि
प ध स ग रि नि म	प ध स ग नि रि म	प ध स ग नि म रि
प ध स नि रि ग म	प ध स नि ग रि म	प ध स नि ग म रि
प ध स नि रि म ग	प ध स नि म रि ग	प ध स नि म ग रि
प ग ध म रि नि स	प ग ध म नि रि स	प ग ध म नि स रि
प ध ग म रि नि स	प ध ग म नि रि स	प ध ग म नि स रि
प ध म ग रि नि स	प ध म ग नि रि स	प ध म ग नि स रि
प ध म नि रि ग स	प ध म नि ग रि स	प ध म नि ग स रि
प ध म नि रि स ग	प ध म नि स रि ग	प ध म नि स ग रि
प ग ध नि रि म स	प ग ध नि म रि स	प ग ध नि म स रि
प ध ग नि रि म स	प ध ग नि म रि स	प ध ग नि म सं रि
प ध नि ग रि म स	प ध नि ग म रि स	प ध नि ग म स रि
प ध नि म रि ग स	प ध नि म ग रि स	प ध नि म ग स रि
प ध नि म रि स ग	प ध नि म स रि ग	प ध नि म स ग रि

प ग ध नि रि स म	प ग ध नि स रि म	प ग ध नि स म रि
प ध ग नि रि स म	प ध ग नि स रि म	प ध ग नि स म रि
प ध नि ग रि स म	प ध नि ग स रि म	प ध नि ग स म रि
प ध नि स रि ग म	प ध नि स ग रि म	प ध नि स ग म रि
प ध नि स रि म ग	प ध नि स म रि ग	प ध नि स म ग रि
प ग नि म रि स ध	प ग नि म स रि ध	प ग नि म स ध रि
प नि ग म रि स ध	प नि ग म स रि ध	प नि ग म स ध रि
प नि म ग रि स ध	प नि म ग स रि ध	प नि म ग स ध रि
प नि म स रि ग ध	प नि म स ग रि ध	प नि म स ग ध रि
प नि म स रि ध ग	प नि म स ध रि ग	प नि म स ध ग रि
प ग नि स रि म ध	प ग नि स म रि ध	प ग नि स म ध रि
प नि ग स रि म ध	प नि ग स म रि ध	प नि ग स म ध रि
प नि स ग रि म ध	प नि स ग म रि ध	प नि स ग म ध रि
प नि स म रि ग ध	प नि स म ग रि ध	प नि स म ग ध रि
प नि स म रि ध ग	प नि स म ध रि ग	प नि स म ध ग रि
प म नि स रि ध म	प ग नि स ध रि म	प ग नि स ध म रि
प नि ग स रि ध म	प नि ग स ध रि ग	प नि ग स ध म रि
प नि स ग रि ध म	प नि स ग ध रि म	प नि स ग ध म रि
प नि स ध रि ग म	प नि स ध ग रि म	प नि स ध ग म रि
प नि स ध रि म ग	प नि स ध म रि ग	प नि स ध म ग रि

प ग नि म रि ध स	प ग नि म ध रि स	प ग नि म ध स रि
प नि ग म रि ध स	प नि ग म ध रि स	प नि ग म ध स रि
प नि म ग रि ध स	प नि म ग ध रि स	प नि म ग ध स रि
प नि म ध रि ग स	प नि म ध ग रि स	प नि म ध ग स रि
प नि म ध रि स ग	प नि म ध स रि ग	प नि म ध स ग रि
प ग नि ध रि म स	प ग नि ध म रि स	प ग नि ध म स रि
प नि ग ध रि म स	प नि ग ध. म रि स	प नि ग ध म स रि
प नि ध ग रि म स	प नि ध ग म रि स	प नि ध ग म स रि
प नि ध म रि ग स	प नि ध म ग रि स	प नि ध म ग स रि
प नि ध म रि स ग	प नि ध म स रि म	प नि ध म स ग रि
प ग नि ध रि स म	प ग नि ध स रि म	प ग नि ध स म रि
प नि ग ध रि स म	प नि ग ध स रि म	प नि ग ध स म रि
प नि ध ग रि. स म	प नि ध ग स रि म	प नि ध ग स म रि
प नि ध स रि ग म	प नि ध स ग रि म	प नि ध स ग म रि
प नि ध स रि म ग	प नि ध स म रि ग	प नि ध स म ग रि

ध

ध रि ग म प स नि	ध ग रि म प स नि	ध ग म रि प स नि
ध रि म ग प स नि	ध म रि ग प स नि	ध म ग रि प स नि
ध रि म प ग स नि	ध म रि प ग स नि	ध म प रि ग स नि

ध	रि	म	प	स	ग	नि	ध	म	रि	प	स	ग	नि	ध	म	प	रि	स	ग	नि
ध	रि	म	प	स	नि	ग	ध	म	रि	प	स	नि	ग	ध	म	प	रि	स	नि	ग
ध	रि	ग	म	प	नि	स	ध	ग	रि	म	प	नि	स	ध	ग	म	रि	प	नि	स
ध	रि	म	ग	प	नि	स	ध	म	रि	ग	प	नि	स	ध	म	ग	रि	प	नि	स
ध	रि	म	प	म	नि	स	ध	म	रि	प	ग	नि	स	ध	म	प	रि	ग	नि	स
ध	रि	म	प	नि	ग	स	ध	म	रि	प	नि	ग	स	ध	म	प	रि	नि	ग	स
ध	रि	म	प	नि	स	ग	ध	म	रि	प	नि	स	ग	ध	म	प	रि	नि	स	ग
ध	रि	ग	म	स	प	नि	ध	ग	रि	म	स	प	नि	ध	ग	म	रि	स	प	नि
ध	रि	म	ग	स	प	नि	ध	म	रि	ग	स	प	नि	ध	म	ग	रि	स	प	नि
ध	रि	म	स	ग	प	नि	ध	म	रि	स	ग	प	नि	ध	म	स	रि	ग	प	नि
ध	रि	म	स	प	ग	नि	ध	म	रि	स	प	ग	नि	ध	म	स	रि	प	ग	नि
ध	रि	म	स	प	नि	ग	ध	म	रि	स	प	नि	ग	ध	म	स	रि	प	नि	ग
ध	रि	ग	म	स	नि	प	ध	ग	रि	म	स	नि	प	ध	ग	म	रि	स	नि	प
ध	रि	म	ग	स	नि	प	ध	म	रि	ग	स	नि	प	ध	म	म	रि	स	नि	प
ध	रि	म	स	ग	नि	प	ध	म	रि	स	ग	नि	प	ध	म	स	रि	ग	नि	प
ध	रि	म	स	नि	ग	प	ध	म	रि	स	नि	ग	प	ध	म	स	रि	नि	ग	प
ध	रि	म	स	नि	प	ग	ध	म	रि	स	नि	प	ग	ध	म	स	रि	नि	प	ग
ध	रि	ग	म	नि	प	स	ध	ग	रि	म	नि	प	स	ध	ग	म	रि	नि	प	स
ध	रि	म	ग	नि	प	स	ध	म	रि	ग	नि	प	स	ध	म	ग	रि	नि	प	स
ध	रि	म	नि	ग	प	स	ध	म	रि	नि	ग	प	स	ध	म	नि	रि	म	प	स

ध रि म नि प म स	ध म रि नि प ग स	ध म नि रि प ग स
ध रि म नि प स ग	ध म रि नि प स ग	ध म नि रि प स ग
ध रि ग म नि स प	ध ग रि म नि स प	ध ग म रि नि स प
ध रिं म ग नि स प	ध म रि ग नि स प	ध म ग रि नि स प
ध रिं म नि ग स प	ध म रि नि ग स प	ध म नि रिं ग स प
ध रि म नि स ग प	ध म रि नि स ग प	ध म नि रि स ग प
ध रि म नि स प ग	ध म रि नि स प ग	ध म नि रि स प ग
ध रिं ग प म स नि	ध ग रि प म स नि	ध ग प रि म स नि
ध रि प ग म स नि	ध प रि ग म स नि	ध प ग रि म स नि
ध रि प म ग स नि	ध प रि म ग स नि	ध प म रि ग स नि
ध रि प म स ग नि	ध प रि म स ग नि	ध प म रि स ग नि
ध रि प म स नि ग	ध प रि म स नि ग	ध प म रि स नि ग
ध रि ग प स म नि	ध ग रि प स म नि	ध ग प रि स म नि
ध रि प ग स म नि	ध प रि ग स म नि	ध प ग रि स म नि
ध रि प स ग म नि	ध प रि स ग म नि	ध प स रि ग म नि
ध रि प स म ग नि	ध प रि स म ग नि	ध प स रि म ग नि
ध रि प स म नि ग	ध प रि स म नि ग	ध प स रि म नि ग
ध रि ग प स नि म	ध ग रि प स नि म	ध ग प रि स नि म
ध रि प ग स नि म	ध प रि ग स नि म	ध प ग रि स नि म
ध रि प स ग नि म	ध प रि स ग नि म	ध प स रि ग नि म

ध रि प स नि ग म	ध प रि स नि ग म	ध प स रि नि ग म
ध रि प स नि म ग	ध प रि स नि म ग	ध प स रि नि म ग
ध रि ग प म नि स	ध ग रि प म नि स	ध ग प रि म नि स
ध रि प ग म नि स	ध प रि ग म नि स	ध प ग रि म नि स
ध रि प म ग नि स	ध प रि म ग नि स	ध प म रि ग नि स
ध रि प म नि ग स	ध प रि म नि ग स	ध प म रि नि ग स
ध रि प म नि स ग	ध प रि म नि स ग	ध प म रि नि स ग
ध रि ग प नि म स	ध ग रि प नि म स	ध ग प रि नि म स
ध रि प ग नि म स	ध प रि ग नि म स	ध प ग रि नि म स
ध रि प नि ग म स	ध प रि नि ग म स	ध प नि रि ग म स
ध रि प नि म ग स	ध प रि नि म ग स	ध प नि रि म ग स
ध रि प नि म स ग	ध प रि नि म स ग	ध प नि रि म स ग
ध रि ग प नि स म	ध ग रि प नि स म	ध ग प रि नि स म
ध रि प ग नि स म	ध प रि ग नि स म	ध प ग रि नि स म
ध रि प नि ग स म	ध प रि नि ग स म	ध प रि नि ग स म
ध रि प नि स ग म	ध प रि नि स ग म	ध प नि रि स ग म
ध रि प नि स म ग	ध प रि नि स म ग	ध प नि रि स म ग
ध रि ग स म प नि	ध ग रि स म प नि	ध ग स रि म प नि
ध रि स ग म प नि	ध स रि ग म प नि	ध स ग रि म प नि
ध रि स म ग प नि	ध स रि म ग प नि	ध स म रि ग प नि

ध रि स म प ग नि	ध स रि म प ग नि	ध स म रि प ग नि
ध रि स म प नि ग	ध स रि म प नि ग	ध स म रि प नि ग
ध रि ग स प म नि	ध ग रि स प म नि	ध ग स रि प म नि
ध रि स ग प म नि	ध स रि ग प म नि	ध स ग रि प म नि
ध रि स प म म नि	ध स रि प ग म नि	ध स प रि ग म नि
ध रि स प म ग नि	ध स रि प म ग नि	ध स प रि म ग नि
ध रि स प म नि ग	ध स रि प म नि ग	ध स प रि म नि ग
ध रि ग स प नि म	ध ग रि स प नि म	ध ग स रि प नि म
ध रि स ग प नि म	ध स रि ग प नि म	ध स ग रि प नि म
ध रि स प ग निं म	ध स रि प ग नि म	ध स प रि ग नि म
ध रि स प नि ग म	ध स रि प नि ग म	ध स प रि नि ग म
ध रि स प नि म ग	ध स रि प नि म ग	ध स प रि नि म ग
ध रि ग स म नि प	ध ग रि स म नि प	ध ग स रि म नि प
ध रि स ग म नि प	ध स रि ग म नि प	ध स ग रि म नि प
ध रि स म ग नि प	ध स रि म ग नि प	ध स म रि ग नि प
ध रि स म नि ग प	ध स रि म नि ग प	ध स म रि नि ग प
ध रि स म नि प ग	ध स रि म नि प ग	ध स म रि नि प ग
ध रि ग स नि म प	ध ग रि स नि म प	ध ग स रि नि म प
ध रि स ग नि म प	ध स रि ग नि म प	ध स ग रि नि म प
ध रि स नि ग म प	ध स रि नि ग म प	ध स नि रि ग म प

ध	रि	स	नि	म	ग	प	ध	स	रि	नि	म	ग	प	ध	स	नि	रि	म	ग	प
ध	रि	स	नि	म	प	ग	ध	स	रि	नि	म	प	ग	ध	स	रि	नि	म	प	ग
ध	रि	ग	स	नि	प	म	ध	ग	रि	स	नि	प	म	ध	ग	स	रि	नि	प	म
ध	रि	स	ग	नि	प	म	ध	स	रि	ग	नि	प	म	ध	स	ग	रि	नि	प	म
ध	रि	स	नि	ग	प	म	ध	स	रि	नि	ग	प	म	ध	स	नि	रि	ग	प	म
ध	रि	स	नि	प	ग	म	ध	स	रि	नि	प	ग	म	ध	स	नि	रि	प	ग	म
ध	रि	स	नि	प	म	ग	ध	स	रि	नि	प	म	ग	ध	स	नि	रि	प	म	ग
ध	रि	ग	नि	म	प	स	ध	ग	रि	नि	म	प	स	ध	ग	नि	रि	म	प	स
ध	रि	नि	ग	म	प	स	ध	नि	रि	ग	म	प	स	ध	नि	ग	रि	म	प	स
ध	रि	नि	म	ग	प	स	ध	नि	रि	म	ग	प	स	ध	नि	म	रि	ग	प	स
ध	रि	नि	म	प	ग	स	ध	नि	रि	म	प	ग	स	ध	नि	म	रि	प	ग	स
ध	रि	नि	म	प	स	ग	ध	नि	रि	म	प	स	ग	ध	नि	म	रि	प	स	ग
ध	रि	ग	नि	प	म	स	ध	ग	रि	नि	प	म	स	ध	ग	नि	रि	प	म	स
ध	रि	नि	ग	प	म	स	ध	नि	रि	ग	प	म	स	ध	नि	ग	रि	प	म	स
ध	रि	नि	प	ग	म	स	ध	नि	रि	प	ग	म	स	ध	नि	प	रि	ग	म	स
ध	रि	नि	प	म	ग	स	ध	नि	रि	प	म	ग	स	ध	नि	प	रि	म	ग	स
ध	रि	नि	प	म	स	ग	ध	नि	रि	प	म	स	ग	ध	नि	प	रि	म	स	ग
ध	रि	ग	नि	प	स	म	ध	ग	रि	नि	प	स	म	ध	ग	नि	रि	प	स	म
ध	रि	नि	ग	प	स	म	ध	नि	रि	ग	प	स	म	ध	नि	ग	रि	प	स	म
ध	रि	नि	प	ग	स	म	ध	नि	रि	प	ग	स	म	ध	नि	प	रि	ग	स	म

ध रि नि प स ग म	ध नि रि प स ग म	ध नि प रि स ग म
ध रि नि प स म ग	ध नि रि प स म ग	ध नि प रि स म ग
ध रि ग नि म स प	ध ग रि नि म स प	ध ग नि रि म स प
ध रि नि ग म स प	ध नि रि ग म स प	ध नि ग रि म स प
ध रि नि म ग स प	ध नि रि म ग स प	ध नि म रि ग स प
ध रि नि म स ग प	ध नि रि म स ग प	ध नि म रि स ग प
ध रि नि म स प ग	ध नि रि म स प ग	ध नि म रि स प ग
ध रि ग नि स म प	ध ग रि नि स म प	ध ग नि रि स म प
ध रि नि ग स म प	ध नि रि ग स म प	ध नि ग रि स म प
ध रि नि स ग म प	ध नि रि स ग म प	ध नि स रि ग म प
ध रि नि स म ग प	ध नि रि स म ग प	ध नि स रि म ग प
ध रि नि स म प ग	ध नि रि स म प ग	ध नि स रि म प ग
ध रि ग नि स प म	ध ग रि नि स प म	ध ग नि रि स प म
ध रि नि ग स प म	ध नि रि ग स प म	ध नि ग रि स प म
ध रि नि स ग प म	ध नि रि स ग प म	ध नि स रि ग प म
ध रि नि स प ग म	ध नि रि स प ग म	ध नि स रि प ग म
ध रि नि स प म ग	ध नि रि स प म ग	ध नि स रि प म ग
ध ग म प रि स नि	ध ग म प स रि नि	ध ग म प स नि रि
ध म ग प रि स नि	ध म ग प स रि नि	ध म ग प स नि रि
ध म प ग रि स नि	ध म प ग स रि नि	ध म प ग स नि रि

ध म प स रि ग नि	ध म प स ग रि नि	ध म प स ग नि रि
ध म प स रि नि ग	ध म प स नि रि ग	ध म प स नि ग रि
ध ग म प रि नि स	ध ग म प नि रि स	ध ग म प नि स रि
ध म ग प रि नि स	ध म ग प नि रि स	ध म ग प नि स रि
ध म प ग रि नि स	ध म प ग नि रि स	ध म प ग नि स रि
ध म प नि रि ग स	ध म प नि ग रि स	ध म प नि ग स रि
ध म प नि रि स ग	ध म प नि स रि ग	ध म प नि स ग रि
ध ग म स रि प नि	ध ग म स प रि नि	ध ग म स प नि रि
ध म ग स रि प नि	ध म ग स प रि नि	ध म ग स प नि रि
ध म स ग रि प नि	ध म स ग प रि नि	ध म स ग प नि रि
ध म स प रि ग नि	ध म स प ग रि नि	ध म स प ग नि रि
ध म स प रि नि ग	ध म स प नि रि ग	ध म स प नि ग रि
ध ग म स रि नि प	ध ग म स नि रि प	ध ग म स नि प रि
ध म म स रि नि प	ध म ग स नि रि प	ध म ग स नि प रि
ध म स ग रि नि प	ध म स ग नि रि प	ध म स ग नि प रि
ध म स नि रि ग प	ध म स नि ग रि प	ध म स नि ग प रि
ध म स नि रि प ग	ध म स नि प रि ग	ध म स नि प ग रि
ध ग म नि रि प स	ध ग म नि प रि स	ध ग म नि प स रि
ध म ग नि रि प स	ध म ग नि प रि स	ध म ग नि प स रि
ध म नि ग रि प स	ध म नि ग प रि स	ध म नि ग प स रि

ध म नि प रि ग स	ध म नि प ग रि स	ध म नि प ग स रि
ध म नि प रि स ग	ध म नि प स रि ग	ध म नि प स ग रि
ध ग म नि रि स प	ध ग म नि स रि प	ध ग म नि स प रि
ध म ग नि रि स प	ध म ग नि स रि प	ध म ग नि स प रि
ध म नि ग रि स प	ध म नि ग स रि प	ध म नि ग स प रि
ध म नि स रि ग प	ध म नि स ग रि प	ध म नि स ग प रि
ध म नि स रि प ग	ध म नि स प रि ग	ध म नि स प ग रि
ध ग प म रि स नि	ध ग प म स रि नि	ध ग प म स नि रि
ध प ग म रि स नि	ध प ग म स रि नि	ध प ग म स नि रि
ध प म ग रि स नि	ध प म ग स रि नि	ध प म ग स नि रि
ध प म स रि ग नि	ध प म स ग रि नि	ध प म स ग नि रि
ध प म स रि नि ग	ध प म स नि रि ग	ध प म स नि ग रि
ध ग प स रि म नि	ध ग प स म रि नि	ध ग प स म नि रि
ध प ग स रि म नि	ध प ग स म रि नि	ध प म स म नि रि
ध प स ग रि म नि	ध प स ग म रि नि	ध प स ग म नि रि
ध प स म रि ग नि	ध प स म ग रि नि	ध प स म ग नि रि
ध प स म रि नि ग	ध प स म नि रि ग	ध प स म नि ग रि
ध ग प स रि नि म	ध ग प स नि रि म	ध ग प स नि म रि
ध प म स रि नि म	ध प ग स नि रि म	ध प ग स नि म रि
ध प स ग रि नि म	ध प स ग नि रि म	ध प स ग नि म रि

ध प स नि रि ग म	ध प स नि ग रि म	ध प स नि ग म रि
ध प स नि रि म ग	ध प स नि म रि ग	ध प स नि म ग रि
ध ग प म रि नि स	ध ग प म नि रि स	ध ग प म नि स रि
ध प ग म रि नि स	ध प ग म नि रि स	ध प ग म नि स रि
ध प म ग रि नि स	ध प म ग नि रि स	ध प म ग नि स रि
ध प म नि रि ग स	ध प म नि ग रि स	ध प म नि ग स रि
ध प म नि रि स ग	ध प म नि स रि ग	ध प म नि स ग रि
ध ग प नि रि म स	ध ग प नि म रि स	ध म प नि म स रि
ध प ग नि रि म स	ध प ग नि म रि स	ध प ग नि म स रि
ध प नि ग रि म स	ध प नि ग म रि स	ध प नि ग म स रि
ध प नि म रि ग स	ध प नि म ग रि स	ध प नि म ग स रि
ध प नि म रि स ग	ध प नि म स रि ग	ध प नि म स ग रि
ध ग प नि रि स म	ध ग प नि रि स म	ध ग प नि स म रि
ध प ग नि रि स म	ध प ग नि स रि म	ध प ग नि स म रि
ध प नि ग रि स म	ध प नि ग स रि म	ध प नि ग म स रि
ध प नि स रि ग म	ध प नि स ग रि म	ध प नि स ग म रि
ध प नि स रि म ग	ध प नि स म रि ग	ध प नि स म ग रि
ध ग स म रि प नि	ध ग स म प रि नि	ध ग स म प नि रि
ध स ग म रि प नि	ध स ग म प रि नि	ध स ग म प नि रि
ध स म ग रि प नि	ध स म ग प रि नि	ध स म ग प नि रि

ध स म प रि ग नि	ध स म प ग रि नि	ध स म प ग नि रि
ध स म प रि नि ग	ध स म प नि रि ग	ध स म प नि ग रि
ध ग स प रि म नि	ध ग स प म रि नि	ध ग स प म नि रि
ध स ग प रि म नि	ध स ग प म रि नि	ध स ग प म नि रि
ध स प ग रि म नि	ध स प ग म रि नि	ध स प ग म नि रि
ध स प म रि ग नि	ध स प म ग रि नि	ध स प म ग नि रि
ध स प म रि नि ग	ध स प म नि रि ग	ध स प म नि ग रि
ध ग स प रि नि म	ध ग स प नि रि म	ध ग स प नि म रि
ध स ग प रि नि म	ध स ग प नि रि म	ध स ग प नि म रि
ध स प ग रि नि म	ध स प ग नि रि म	ध स प ग नि म रि
ध स प नि रि ग म	ध स प नि ग रि म	ध स प नि ग म रि
ध स प नि रि म ग	ध स प नि म रि ग	ध स प नि म ग रि
ध ग स म रि नि प	ध ग स म नि रि प	ध ग स म नि प रि
ध स ग म रि नि प	ध स ग म नि रि प	ध स ग म नि प रि
ध स म ग रि नि प	ध स म ग नि रि प	ध स म ग नि प रि
ध स म नि रि ग प	ध स म नि ग रि प	ध स म नि ग प रि
ध स म नि रि प ग	ध स म नि प रि ग	ध स म नि प ग रि
ध ग स नि रि म प	ध ग स नि म रि प	ध ग स नि म प रि
ध स ग नि रि म प	ध स ग नि म रि प	ध स ग नि म प रि
ध स नि ग रि म प	ध स नि ग म रि प	ध स नि ग म प रि

ध स नि म रि ग प	ध स नि म ग रि प	ध स नि म ग प रि
ध स नि म रि प ग	ध स नि म प रि ग	ध स नि म प ग रि
ध ग स नि रि प म	ध ग स नि प रि म	ध ग स नि प म रि
ध स ग नि रि प म	ध स ग नि प रि म	ध स ग नि प म रि
ध स नि ग रि प म	ध स नि म प रि म	ध स नि ग प म रि
ध स नि प रि ग म	ध स नि प ग रि म	ध स नि प ग म रि
ध स नि प रि म ग	ध स नि प म रि ग	ध स नि प म ग रि
ध ग नि म रि प स	ध ग नि म प रि स	ध ग नि म प स रि
ध नि ग म रि प स	ध नि ग म प रि स	ध नि ग म प स रि
ध नि म ग रि प स	ध नि म ग प रि स	ध नि म ग प स रि
ध नि म प रि ग स	ध नि म प ग रि स	ध नि म प ग स रि
ध नि म प रि स ग	ध नि म प स रि ग	ध नि म प स ग रि
ध ग नि प रि म स	ध ग नि प म रि स	ध ग नि प म स रि
ध नि ग प रि म स	ध नि ग प म रि स	ध नि ग प म स रि
ध नि प ग रि म स	ध नि प ग म रि स	ध नि प ग म स रि
ध नि प म रि ग स	ध नि प म ग रि स	ध नि प म ग स रि
ध नि प म रि स ग	ध नि प म स रि ग	ध नि प म स ग रि
ध ग नि प रि स म	ध ग नि प स रि म	ध ग नि प स म रि
ध नि ग प रि स म	ध नि ग प स रि म	ध नि ग प स म रि
ध नि प ग रि स म	ध नि प ग स रि म	ध नि प ग स म रि

ध नि प स रि ग म	ध नि प स ग रि म	ध नि प स ग म रि
ध नि प स रि म ग	ध नि प स म रि ग	ध नि प स म ग रि
ध ग नि म रि स प	ध ग नि म स रि प	ध ग नि म स प रि
ध नि ग म रि स प	ध नि ग म स रि प	ध नि ग म स प रि
ध नि म ग रि स प	ध नि म ग स रि प	ध नि म ग स प रि
ध नि म स रि ग प	ध नि म स ग रि प	ध नि म स ग प रि
ध नि म स रि प ग	ध नि म स प रि ग	ध नि म स प ग रि
ध ग नि स रि म प	ध ग नि स म रि प	ध ग नि स म प रि
ध नि ग स रि म प	ध नि ग स म रि प	ध नि ग स म प रि
ध नि स ग रि म प	ध नि स ग म रि प	ध नि स ग म प रि
ध नि स म रि ग प	ध नि स म ग रि प	ध नि स म ग प रि
ध नि स म रि प ग	ध नि स म प रि ग	ध नि स म प ग रि
ध ग नि स रि प म	ध ग नि स प रि म	ध ग नि स प म रि
ध नि ग स रि प म	ध नि ग स प रि म	ध नि ग स प म रि
ध नि स ग रि प म	ध नि स ग प रि म	ध नि स ग प म रि
ध नि स प रि ग म	ध नि स प ग रि म	ध नि स प ग म रि
ध नि स प रि म ग	ध नि स प म रि ग	ध नि स प म ग रि

नि

नि रि ग म प ध स	नि ग रि म प ध स	नि ग म रि प ध स

नि रि म ग प ध स	नि म रि ग प ध स	नि म ग रि प ध स
नि रि म प ग ध स	नि म रि प ग ध स	नि म प रि ग ध स
नि रि म प ध ग स	नि म रि प ध ग स	नि म प रि ध ग स
नि रि म प ध स ग	नि म रि प ध स ग	नि म प रि ध स ग
नि रि ग म प स ध	नि ग रि म प स ध	नि ग म रि प स ध
नि रि म म प स ध	नि म रि ग प स ध	नि म ग रि प स ध
नि रि म प ग स ध	नि म रि प ग स ध	नि म प रि ग स ध
नि रि म प स ग ध	नि म रि प स ग ध	नि म प रि स ग ध
नि रि म प स ध ग	नि म रि प स ध ग	नि म प रि स ध ग
नि रि ग म ध प स	नि ग रि म ध प स	नि ग म रि ध प ध
नि रि म ग ध प स	नि म रि ग ध प स	नि म ग रि ध प ध
नि रि म ध ग प स	नि म रि ध ग प स	नि म ध रि ग प ध
नि रि म ध प ग स	नि म रि ध प ग स	नि म ध रि प ग ध
नि रि म ध प स ग	नि म रि ध प स ग	नि म ध रि प स ग
नि रि ग म ध स प	नि ग रि म ध स प	नि ग म रि ध स म
नि रि म ग ध स प	नि म रि ग ध स प	नि म ग रि ध स म
नि रि म ध ग स प	नि म रि ध ग स प	नि म ध रि ग स म
नि रि म ध स ग प	नि म रि ध स ग प	नि म ध रि स ग म
नि रि म ध स प ग	नि म रि ध स प ग	नि म ध रि स म ग
नि रि ग म स प ध	नि ग रि म स प ध	नि ग म रि स प स

नि	रि	म	ग	स	प	ध	नि	म	रि	ग	स	प	ध	नि	म	ग	रि	स	प	ध
नि	रि	म	स	ग	प	ध	नि	म	रि	स	ग	प	ध	नि	म	स	रि	ग	प	ध
नि	रि	म	स	प	ग	ध	नि	म	रि	स	प	ग	ध	नि	म	स	रि	प	ग	ध
नि	रि	म	स	प	ध	ग	नि	म	रि	स	प	ध	ग	नि	म	स	रि	प	ध	ग
नि	रि	ग	म	स	ध	प	नि	ग	रि	म	स	ध	प	नि	ग	म	रि	स	ध	प
नि	रि	म	ग	स	ध	प	नि	म	रि	ग	स	ध	प	नि	म	ग	रि	स	ध	प
नि	रि	म	स	ग	ध	प	नि	म	रि	स	ग	ध	प	नि	म	स	रि	ग	ध	प
नि	रि	म	स	ध	ग	प	नि	म	रि	स	ध	ग	प	नि	म	स	रि	ध	ग	प
नि	रि	म	स	ध	प	ग	नि	म	रि	स	ध	प	ग	नि	म	स	रि	ध	प	ग
नि	रि	ग	प	म	ध	स	नि	ग	रि	प	म	ध	स	नि	ग	प	रि	म	ध	स
ध	रि	प	ग	म	ध	स	नि	प	रि	ग	म	ध	स	नि	प	ग	रि	म	ध	स
ध	रि	प	म	ग	ध	स	नि	प	रि	म	ग	ध	स	नि	प	म	रि	ग	ध	स
ध	रि	प	म	ध	ग	स	नि	प	रि	म	ध	ग	स	नि	प	म	रि	ध	ग	स
ध	रि	प	म	ध	स	ग	नि	प	रि	म	ध	स	ग	नि	प	म	रि	ध	स	ग
ध	रि	ग	प	ध	म	स	नि	ग	रि	प	ध	म	स	नि	ग	प	रि	ध	म	स
ध	रि	प	ग	ध	म	स	नि	प	रि	ग	ध	म	स	नि	प	ग	रि	ध	म	स
ध	रि	प	ध	ग	म	स	नि	प	रि	ध	ग	म	स	नि	प	ध	रि	ग	म	स
	रि	प	ध	म	ग	स	नि	प	रि	ध	म	ग	स	नि	प	ध	रि	म	ग	स
	रि	प	ध	म	स	ग	नि	प	रि	ध	म	स	ग	नि	प	ध	रि	म	स	ग
नि	रि	ग	प	ध	स	प	नि	म	रि	प	ध	स	म	नि	ग	प	रि	ध	स	म

नि रि प ग ध स म	नि प रि ग ध स म	नि प ग रि ध स म
नि रि प ध ग स म	नि प रि ध ग स म	नि प ध रि ग स म
नि रि प ध स ग म	नि प रि ध स ग म	नि प ध रि स ग म
नि रि प ध स म ग	नि प रि ध स म ग	नि प ध रि स म ग
नि रि ग प म स ध	नि ग रि प म स ध	नि ग प रि म स ध
नि रि प ग म स ध	नि प रि ग म स ध	नि प ग रि म स ध
नि रि प म ग स ध	नि प रि म ग स ध	नि प म रि ग स ध
नि रि प म स ग ध	नि प रि म स ग ध	नि प म रि स म ध
नि रि प म स ध ग	नि प रि म स ध ग	नि प म रि स ध ग
नि रि ग प स म ध	नि ग रि प स म ध	नि ग प रि स म ध
नि रि प ग स म ध	नि प रि ग स म ध	नि प ग रि स म ध
नि रि प स ग म ध	नि प रि स ग म ध	नि प स रि ग म ध
नि रि प स म ग ध	नि प रि स म ग ध	नि प स रि म ग ध
नि रि प स म ध ग	नि प रि स म ध ग	नि प स रि म ध ग
नि रि म प स ध म	नि ग रि प स ध म	नि ग प रि स ध म
नि रि प ग स ध म	नि प रि म स ध म	नि प ग रि स ध म
नि रि प स ग ध म	नि प रि स ग ध म	नि प स रि ग ध म
नि रि प स ध ग म	नि प रि स ध ग म	नि प स रि ध ग म
नि रि प स ध म ग	नि प रि स ध म ग	नि प स रि ध म ग
नि रि ग ध म प स	नि ग रि ध म प स	नि ग ध रि म प स

नि रि ध ग म प स	नि ध रि ग म प स	नि ध ग रि म प स
नि रि ध म ग प स	नि ध रि म ग प स	नि ध म रि ग प स
नि रि ध म प ग स	नि ध रि म प ग स	नि ध म रि प ग स
नि रि ध म प स ग	नि ध रि म प स ग	नि ध म रि प स ग
नि रि ग ध प म स	नि ग रि ध प म स	नि ग ध रि प म स
नि रि ध ग प म स	नि ध रि ग प म स	नि ध ग रि प म स
नि रि ध प ग म स	नि ध रि प ग म स	नि ध प रि ग म स
नि रि ध प म ग स	नि ध रि प म ग स	नि ध प रि म ग स
नि रि ध प म स ग	नि ध रि प म स ग	नि ध प रि म स ग
नि रि ग ध प स म	नि ग रि ध प स म	नि ग ध रि प स म
नि रि ध ग प स म	नि ध रि ग प स म	नि ध ग रि प स म
नि रि ध प ग स म	नि ध रि प ग स म	नि ध प रि ग स म
नि रि ध प स ग म	नि ध रि प स ग म	नि ध प रि स ग म
नि रि ध प स म ग	नि ध रि प स म ग	नि ध प रि स म ग
नि रि ग ध म स प	नि ग रि ध म स प	नि ग ध रि म स प
नि रि ध ग म स प	नि ध रि ग म स प	नि ध ग रि म स प
नि रि ध म ग स प	नि ध रि म ग स प	नि ध म रि म स प
नि रि ध म स ग प	नि ध रि म स ग प	नि ध म रि स ग प
नि रि ध म स प म	नि ध रि म स प ग	नि ध म रि स प ग
नि रि ग ध स म प	नि ग रि ध स म प	नि ग ध रि स म प

नि रि ध ग स म प	नि ध रि ग स म प	नि ध ग रि स म प
नि रि ध स ग म प	नि ध रि स ग म प	नि ध स रि ग म प
नि रि ध स म ग प	नि ध रि स म ग प	नि ध स रि ग म प
नि रि ध स म प ग	नि ध रि स म प ग	नि ध स रि म प ग
नि रि ग ध स प म	नि ग रि ध स प म	नि ग ध रि स प म
नि रि ध ग स प म	नि ध रि ग स प म	नि ध ग रि स प म
नि रि ध स ग प म	नि ध रि स ग प म	नि ध स रि ग प म
नि रि ध स प ग म	नि ध रि स प ग म	नि ध स रि प ग म
नि रि ध स प म ग	नि ध रि स प म ग	नि ध स रि प म ग
नि रि ग स म प ध	नि ग रि स म प ध	नि ग स रि म प ध
नि रि स ग म प ध	नि स रि ग म प ध	नि स ग रि म प ध
नि रि स म ग प ध	नि स रि म ग प ध	नि स म रि ग प ध
नि रि स म प ग ध	नि स रि म प ग ध	नि स म रि प ग ध
नि रि स म प ध ग	नि स रि म प ध ग	नि स म रि प ध ग
नि रि ग स प म ध	नि ग रि स प म ध	नि म स रि प म ध
नि रि स ग प म ध	नि स रि ग प म ध	नि स ग रि प म ध
नि रि स प ग म ध	नि स रि प ग म ध	नि स प रि ग म ध
नि रि स प म ग ध	नि स रि प म ग ध	नि स प रि म ग ध
नि रि स प म ध ग	नि स रि प म ध ग	नि स प रि ध म ग
नि रि ग स प ध म	नि ग रि स प ध म	नि ग स रि प ध म

नि रि स ग प ध म	नि स रि ग प ध म	नि स ग रि प ध म
नि रि स प ग ध म	नि स रि प ग ध म	नि स प रि ग ध म
नि रि स प ध ग म	नि स रि प ध ग म	नि स प रि ध ग म
नि रि स प ध म ग	नि स रि प ध म ग	नि स प रि ध ग ग
नि रि ग स म ध प	नि ग रि स म ध प	नि ग स रि म ध प
नि रि स ग म ध प	नि स रि ग म ध प	नि स ग रि म ध प
नि रि स म ग ध प	नि स रि म ग ध प	नि स म रि ग ध प
नि रि स म ध ग प	नि स रि म ध ग प	नि स म रि ध ग प
नि रि स म ध प म	नि स रि म ध प ग	नि स म रि ध प ग
नि रि ग स ध म प	नि ग रि स ध म प	नि ग स रि ध म प
नि रि स ग ध म प	नि स रि ग ध म प	नि स ग रि ध म प
नि रि स ध ग म प	नि स रि ध ग म प	नि स ध रि ग म प
नि रि स ध म ग प	नि स रि ध म ग प	नि स ध रि म ग प
नि रि स ध म प ग	नि स रि ध म प ग	नि स ध रि म प ग
नि रि ग स ध प म	नि ग रि स ध प म	नि ग स रि ध प म
नि रि स ग ध प म	नि स रि ग ध प म	नि स ग रि ध प म
नि रि स ध ग प म	नि स रि ध ग प म	नि स ध रि ग प म
नि रि स ध प ग म	नि स रि ध प ग म	नि स ध रि प ग म
नि रि स ध प म ग	नि स रि ध प म ग	नि स ध रि प म ग
नि ग म प रि ध स	नि ग म प ध रि स	नि ग म प ध स रि

नि म ग प रि ध स	नि म ग प ध रि स	नि म ग प ध स रि
नि म प ग रि ध स	नि म प ग ध रि स	नि म प ग ध स रि
नि म प ध रि ग स	नि म प ध ग रि स	नि म प ध ग स रि
नि म प ध रि स ग	नि म प ध स रि ग	नि म प ध स ग रि
नि ग म प रि स ध	नि ग म प स रि ध	नि ग म प स ध रि
नि म ग प रि स ध	नि म ग प स रि ध	नि म ग प स ध रि
नि म प ग रि स ध	नि म प ग स रि ध	नि म प ग स ध रि
नि म प स रि ग ध	नि म प स ग रि ध	नि म प स ग ध रि
मि म प स रि ध ग	नि म प स ध रि ग	नि म प स ध ग रि
नि ग म ध रि प स	नि ग म ध प रि स	नि ग म ध प स रि
नि म ग ध रि प स	नि म ग ध प रि स	नि म ग ध प स रि
मि म ध ग रि प स	नि म ध ग प रि स	नि म ध ग प स रि
नि म ध प रि ग स	नि म ध प ग रि स	नि म ध प ग स रि
नि म ध प रि स ग	नि म ध प स रि ग	नि म ध प स ग रि
नि ग म ध रि स प	नि ग म ध स रि प	नि ग म ध स प रि
नि म ग ध रि स प	नि म ग ध स रि प	नि म ग ध स प रि
नि ग ध ग रि स प	नि म ध ग स रि प	नि म ध ग स प रि
नि म ध स रि ग प	नि म ध स ग रि प	नि म ध स ग प रि
नि म ध स रि प ग	नि म ध स प रि ग	नि म ध स प ग रि
नि ग म स रि प ध	नि ग म स प रि ध	नि ग म स प ध रि

नि म ग स रि प ध	नि म ग स प रि ध	नि म ग स प ध रि
नि म स ग रि प ध	नि म स ग प रि ध	नि म स ग प ध रि
नि म स प रि ग ध	नि म स प ग रि ध	नि म स प ग ध रि
नि म स प रि ध ग	नि म स प ध रि ग	नि म स प ध ग रि
नि ग म स रि ध प	नि ग म स ध रि प	नि ग म स ध प रि
नि म ग स रि ध प	नि म ग स ध रि प	नि म ग स ध प रि
नि म स ग रि ध प	नि म स ग ध रि प	नि म स ग ध प रि
नि म स ध रि ग प	नि म स ध ग रि प	नि म स ध ग प रि
नि म स ध रि प ग	नि म स ध प रि ग	नि म स ध प ग रि
नि ग प म रि ध स	नि ग प म ध रि स	नि ग प म ध स रि
नि प ग म रि ध स	नि प ग म ध रि स	नि प ग म ध स रि
नि प म ग रि ध स	नि प म ग ध रि स	नि प म ग ध स रि
नि प म ध रि ग स	नि प म ध ग रि स	नि प म ध ग स रि
नि प म ध रि स ग	नि प म ध स रि ग	नि प म ध स ग रि
नि ग प ध रि म स	नि ग प ध म रि स	नि ग प ध म स रि
नि प ग ध रि म स	नि प ग ध म रि स	नि प ग ध म स रि
नि प ध ग रि म स	नि प ध ग म रि स	नि प ध ग म स रि
नि प ध म रि ग स	नि प ध म ग रि स	नि प ध म ग स रि
नि प ध म रि स ग	नि प ध म स रि ग	नि प ध म स ग रि
नि ग प ध रि स म	नि ग प ध स रि म	नि ग प ध स म रि

नि प ग ध रि स म	नि प ग ध स रि म	नि प ग ध स म रि
नि प ध ग रि स म	नि प ध म स रि म	नि प ध ग स म रि
नि प ध स रि ग म	नि प ध स ग रि म	नि प ध स ग म रि
नि प ध स रि म ग	नि प ध स म रि ग	नि प ध स म ग रि
नि ग प म रि स ध	नि ग प म स रि ध	नि ग प म स ध रि
नि प ग म रि स ध	नि प ग म स रि ध	नि प ग म स ध रि
नि प म ग रि स ध	नि प म ग स रि ध	नि प म म स ध रि
नि प म स रि ग ध	नि प म स ग रि ध	नि प म स ग ध रि
नि प म स रि ध ग	नि प म स ध रि ग	नि प म स ध ग रि
नि ग प स रि म ध	नि ग प स म रि ध	नि ग प स म ध रि
नि प ग स रि म ध	नि प ग स म रि ध	नि प ग स म ध रि
नि प स ग रि म ध	नि प स ग म रि ध	नि प स ग म ध रि
नि प स म रि ग ध	नि प स म ग रि ध	नि प स म ग ध रि
नि प स म रि ध ग	नि प स म ध रि ग	नि प स म ध ग रि
नि ग प स रि ध म	नि ग प स ध रि म	नि ग प स ध म रि
नि प ग स रि ध म	नि प ग स ध रि म	नि प ग स ध म रि
नि प स ग रि ध म	नि प स ग ध रि म	नि प स ग ध म रि
नि प स ध रि ग म	नि प स ध ग रि म	नि प स ध ग म रि
नि प स ध रि म ग	नि प स ध म रि ग	नि प स ध म ग रि
नि ग ध म रि प स	नि ग ध म प रि स	नि ग ध म प स रि

नि ध ग म रि प स	नि ध ग म प रि स	नि ध ग म प स रि
नि ध म ग रि प स	नि ध म ग प रि स	नि ध म ग प स रि
नि ध म प रि ग स	नि ध म प ग रि स	नि ध म प ग स रि
नि ध म प रि स ग	नि ध म प स रि ग	नि ध म प स ग रि
नि ग ध प रि म स	नि ग ध प म रि स	नि ग ध प म स रि
नि ध ग प रि म स	नि ध ग प म रि स	नि ध ग प म स रि
नि ध प ग रि म स	नि ध प ग म रि स	नि ध प ग म स रि
नि ध प म रि ग स	नि ध प म ग रि स	नि ध प म ग स रि
नि ध प म रि स ग	नि ध प म स रि ग	नि ध प म स ग रि
नि ग ध प रि स म	नि ग ध प स रि म	नि ग ध प स म रि
नि ध ग प रि स म	नि ध ग प स रि ग	नि ध ग प स म रि
नि ध प ग रि स म	नि ध प ग स रि म	नि ध प ग स म रि
नि ध प स रि ग म	नि ध प स ग रि म	नि ध प स ग म रि
नि ध प स रि म ग	नि ध प स म रि ग	नि ध प स म ग रि
नि ग ध म रि स प	नि ग ध म स रि प	नि ग ध म स प रि
नि ध ग म रि स प	नि ध ग म स रि प	नि ध ग म स प रि
नि ध म ग रि स प	नि ध म ग स रि प	नि ध म ग स प रि
नि ध म स रि ग प	नि ध म स ग रि प	नि ध म स ग प रि
नि ध म स रि प ग	नि ध म स प रि ग	नि ध म स प ग रि
नि ग ध स रि म प	नि ग ध स म रि प	नि ग ध स म प रि

नि ध ग स रि म प	नि ध ग स म रि प	नि ध ग स म प रि
नि ध स ग रि म प	नि ध स ग म रि प	नि ध स ग म प रि
नि ध स म रि ग प	नि ध स म म रि प	नि ध स म ग प रि
नि ध स म रि प ग	नि ध स म प रि ग	नि ध स म प ग रि
नि ग ध स रि प म	नि ग ध स प रि म	नि ग ध स प म रि
नि ध ग स रि प म	नि ध ग स प रि म	नि ध ग स प म रि
नि ध स ग रि प म	नि ध स ग प रि म	नि ध स ग प म रि
नि ध स प रि ग म	नि ध स प ग रि म	नि ध स प ग म रि
नि ध स प रि म ग	नि ध स प म रि ग	नि ध स प म ग रि
नि ग स म रि प ध	नि ग स म प रि ध	नि ग स म प ध रि
नि स ग म रि प ध	नि स म म प रि ध	नि स ग म प ध रि
नि स म ग रि प ध	नि स म ग प रि ध	नि स म ग प ध रि
नि स म प रि ग ध	नि स म प ग रि ध	नि स म प ग ध रि
नि स म प रि ध ग	नि स म प ध रि ग	नि स म प ध ग रि
नि ग स प रि म ध	नि ग स प म रि ध	नि ग स प म ध रि
नि स ग प रि म ध	नि स ग प म रि ध	नि स ग प म ध रि
नि स प ग रि म ध	नि स प ग म रि ध	नि स प ग म ध रि
नि स प म रि ग ध	नि स प म ग रि ध	नि स प म ग ध रि
नि स प म रि ध ग	नि स प म ध रि ग	नि स प म ध ग रि
नि ग स प रि ध म	नि ग स प ध रि म	नि ग स प ध म रि

नि स ग प रि ध म	नि स ग प ध रि म	नि स ग प ध म रि
नि स प ग रि ध म	नि स प ग ध रि म	नि स प ग ध म रि
नि स प ध रि ग म	नि स प ध ग रि म	नि स प ध ग म रि
नि स प ध रि म ग	नि स प ध म रि ग	नि स प ध म ग रि
नि ग स म रि ध प	नि ग स म ध रि प	नि ग स म ध प रि
नि स ग म रि ध प	नि स ग म ध रि प	नि स ग म ध प रि
नि स म ग रि ध प	नि स म ग ध रि प	नि स म ग ध प रि
नि स म ध रि ग प	नि स म ध ग रि प	नि स म ध ग प रि
नि स म ध रि प ग	नि स म ध प रि ग	नि स म ध प ग रि
नि ग स ध रि म प	नि ग स ध म रि प	नि ग स ध म प रि
नि स ग ध रि म प	नि स ग ध म रि प	नि स ग ध म प रि
नि स ध ग रि म प	नि स ध ग म रि प	नि स ध ग म प रि
नि स ध म रि म प	नि स ध म ग रि प	नि स ध म ग प रि
नि स ध म रि प ग	नि स ध म प रि ग	नि स ध म प ग रि
नि ग स ध रि प म	नि ग स ध प रि म	नि ग स ध प म रि
नि स ग ध रि प म	नि स ग ध प रि म	नि स ग ध प म रि
नि स ध ग रि प म	नि स ध ग प रि म	मि स ध ग प म रि
नि स ध प रि ग म	नि स ध प ग रि म	नि स ध प ग म रि
नि स ध प रि म ग	नि स ध प म रि ग	नि स ध प म ग रि

॥ इति सात स्वरकी तानके प्रस्तारभेद संपूर्णम् ॥

साधारण प्रकरण ग्रामके विकृत स्वर.

अथ साधारण प्रकरणको भेद लिख्यते ॥ तहां ग्रामके विकृतस्वरके प्रयोग सों कहूं तो विचित्रता दोहै ॥ ओर कहंके राग भावकी समता दीखेहें ॥ सो स्वर साधारणको फल हैं ॥ यातें साधारण कहत है ॥ सो साधारण दोय प्रकारको हें ॥ प्रथम स्वर साधारण । १ । दूसरो जाति साधारण । २ । तहां स्वर साधारण च्यार प्रकारको है ॥ काकली साधारण । १ । दूसरो अंतर साधारण । २ । तीसरो षड्ज साधारण । ३ । चोथो मध्यम साधारण । ४ । अब च्यारुनकी साधारणता कहत हें । साधारण कहिये ॥ ओर स्वरको स्वर समान जान्योपरे । तहां काकलीकी साधारणता कहतहों ॥ तहां काकली कहीय उपरले षड्जकी दोय श्रुतिनको लेंकें ॥ च्यार श्रुतिनको जो निषाद ॥ सो षड्ज स्वरके अर शुद्ध निषादके समान हें । यातें काकली षड्ज निषादको साधारण जांनिये ॥ अब अंतर स्वरकी साधारणता कहत हैं ॥ अंतर स्वर कहीये मध्यमकी दोय श्रुति लेंकें च्यार श्रुतिको ज्यो गांधार ॥ सो शुद्ध गांधारके ॥ ओर शुद्ध मध्यमके वा विकृत गांधार विकृत मध्यमके समान हें ॥ यातें अंतर कहिये च्यार श्रुतिको ॥ गांधार शुद्ध गांधारको ओर शुद्ध मध्यमको साधारण हें ॥ अब काकली स्वर ओर अन्तर स्वर इनके उच्चारणको प्रकार कहत हें पहले मध्यम ग्रामके षड्जको उच्चारण करिकें ॥ अवरोह क्रमसों षड्ज ग्रामके ॥ काकली निषाद अर धैवतका उच्चार कीजे आगें अवरोह क्रमसों पंचमादिकनके उच्चार कीजे ॥ ऐसें सात स्वरकीजे सो होत हें ॥ यातें या क्रममें शुद्ध निषाद लीजिये ॥

॥ इति काकली स्वर संपूर्णम् ॥

अथ अंतर स्वरके उच्चारको प्रकार लिख्यते ॥ ऐसैही मध्यम ग्रामके मध्यमको उच्चार करिकें ॥ अवरोह क्रमसों मध्यम ग्रामके अंतर

गांधार अर रिषभको उच्चार कीजे ॥ आगें अवरोह क्रमसों मध्यम ग्रामके षड्ज लेकें । षड्ज ग्रामको पंचमताई च्यार स्वरको उच्चार कीजे ॥ ऐसें सात स्वर होत हें । यातें या क्रममें शुद्ध गांधार नही लीजे ॥ **इति अंतर स्वर प्रयोग संपूर्णम ॥**

अथ काकली स्वर अंतर स्वरके प्रयोगकों दूसरो उच्चारको प्रस्तार लिख्यते ॥ तहां प्रथम मध्यम ग्रामके षड्ज कों उच्चार करी फेर अवरोह क्रमसों षड्ज ग्रामके काकली स्वरको उच्चार करी ॥ फेर आरोह क्रमसों मध्यम ग्रामके षड्जकों उच्चार कीजे ॥ आगें अवरोह क्रमसों षड्ज ग्रामकें निषाद आदिक छह स्वरको उच्चार कीजिये । ऐसें या अवरोहिमें सात स्वर होत हें ॥ यातें या क्रममें शुद्ध निषाद होय हें । यातें या क्रममें शुद्ध निषाद लीजिये ॥ **इति दूसरो काकली स्वर प्रकार संपूर्णम ॥**

अथ अंतर स्वरके उच्चारको प्रकार लिख्यते ॥ जहां मध्यम ग्रामके मध्यम स्वरकों उच्चार करिके ॥ फेर अवरोह क्रमसों अंतर गांधारको उच्चार करिके ॥ फेर आरोह क्रमकों मध्यम ग्रामके मध्यमकों उच्चार कीजिये यातें अवरोह क्रमसों मध्यम ग्रामके शुद्ध गांधारतें लेकें षड्ज ग्रामके पंचम तांई ॥ अवरोह क्रमसों छह स्वरको उच्चार कीजिये ॥ ऐसें अवरोहमें सात स्वर होत हें ॥ यातें या क्रममें शुद्ध गांधार लीजिये ॥ **इति दूसरो अंतर स्वर प्रयोग संपूर्णम ॥**

अब या काकली स्वर प्रयोगमें अन्तर स्वर प्रयोगमें ॥ औडव षाडव तान करिनी होय तो जो जो स्वरकों छोडे सों औडव षाडव तान होय ॥ सो सो स्वर आरोह क्रममें छोडिकें ॥ यह रीति कीजिये ॥ ओर कोईक आचार्य इन दूसरे प्रयोगनको। आरोह क्रमसों हू कहत हें। ओर सब ठोर काकली स्वरकों ओर अंतर स्वरको । यहि प्रयोग हें । प्रयोग कहिये उच्चार करिवे कीरीति । यातें यह सूक्ष्म है ॥ **इति काकली स्वर अंतर स्वर प्रयोग औडव षाडव क्रम विधान संपूर्णम् ॥**

अथ षड्ज स्वर, साधारण स्वर, मध्यम स्वर, साधारण कहत है ॥
षड्ज ग्रामको निषाद स्वर मध्यम ग्रामके षड्जकी पहली ॥ एक श्रुति लेकें अरु मध्यम ग्रामको मध्यम रिषभ जब षड्जकी पिछली एक श्रुति ले तब दोय श्रुतिको च्युत षड्ज कैसिक निषादके ओर विकृत रिषभके समान है ॥ यातें च्युत षड्जके निषाद रिषभको साधारण है ऐसेही मध्यम ग्रामको गांधार जब मध्यमकी । पहली एक श्रुति लेहैं ओर मध्यम ग्रामको पंचम जब अपनी दूसरी श्रुतिपे ठहरिकें ॥ मध्यमकी पिछली एक श्रुतिले तब दोय श्रुतिको च्युत मध्यम गांधार साधारणके । अरु शुद्ध मध्यमके वा विकृत पंचमके समान है ॥ यातें च्युत मध्यम उन तीनोनको साधारण है ॥ यह मध्यम साधारण मध्यम ग्राममें होत हें । ये षड्ज मध्यम साधारण, कैशिक कहावे हे ॥ ये दोनु साधारण अति सुक्ष्म हें । यातें कोइक उनको ग्राम साधारण कहत हें । षड्ज साधारणको षड्ज ग्राम साधारण कहत हें ॥ ओर मध्यम साधारणको ॥ मध्यम ग्राम साधारण कहत हें ॥ ओर जाति साधारण एक प्रकारको हें सो कह हें ॥ जे रामकी जाति एक ग्रामकी भई हें ॥ अरु एकही स्वरमें जिनको अंस स्वर हें ॥ उन जातिनमें जो रागको गांन हें ॥ सो आपसमें समान होत हें । यातें, वा, ग्रामको अथवा ॥ अंस स्वरको वा गानको जाति साधारण जांनिये ॥ अरु कोइक मुनि, रामनको जौति साधारण कहत हें ॥ **इति जाति साधारण संपूर्णम् ॥**

वर्णअलंकार प्रकरण.

अथ अलंकार कहिवेकों गानके वर्णके भेद कहतहै तहां वर्ण कहिये गांनमें जो स्वरको विस्तारको गानक्रिया हें ॥ याहीको वर्ण कहे हें ॥ सो वर्ण च्यार प्रकारको हें ॥ एक तो स्थाई । १ । दूसरो आरोही । २ । तीसरो अवरोही । ३ । चौथो संचारी । ४ ।

स्थाई– जो ठहरि ठहरिकें एक एक स्वरको उच्चार सों स्थाई वर्ण जांनिये॥ उदाहरण शुद्ध मूर्छना क्रममें। स स स। रि रि रि। ग ग ग। म म म। प प प। ध ध ध। नि नि नि ॥ या रितिसुं ठहरि ठहरिकें एक स्वरकों जो उच्चारसो स्थाई जानिये। अथवा स। रि। ग। म। प। ध। नि। ऐसें एकवारहि ठहरिकें। स्वरकों उच्चार सो स्थाई हें॥

आरोही– स। रि। ग। म। प। ध। नि। या आरोह क्रमसों स्वरको जो विस्तार सो आरोही जांनिये॥

अवरोही– नि। ध। प। म। ग। रि। स। या अवरोह क्रमसों जो स्वरको विस्तार सो अवरोही जांनिये॥

संचारी– स्थाई। आरोही। अवरोही। इन तीनों वर्णनके थोडे थोडे मिलें तें भयो जो विस्तार। सो संचारी जांनिये॥ उदाहरण सा सा। री री। गा गा। सा री गा। सा नि धा। या रीतिसों तीनो वर्ण करिके। जो स्वर विस्तारको मिलाप होय। सो संचारि जांनिये॥

अब इन चारो वर्णनके अलंकार कहत हें। तहां अलंकारको लक्षण लिख्यते॥ स्थीर कला करिके युक्त ज्यो स्थाई। आरोही। अवरोही। संचारी। वर्णनकी रचना सो अलंकार कहिय। तहां सास्त्रमें कला कहि है के एक आदि स्वरकी रचना॥ जो गीतको सोभायमान करे हें। यातें अलंकार कहे हें। वे अलंकार संगीत-रत्नाकरके मतमें मुख्य तरेसटि। ६३। स्थाई। आदि च्यार वर्णनमें। विभाग करि रहे हें। तहां प्रथम स्थाई वर्णनमें सात अलंकार हें॥ तिनको लक्षण लिख्यते। इन तरेसटि। ६३। अलंकारमें॥ जिन अलंकारकी कला कहिये। सास्त्रोक्त एक स्वर दोय स्वर। आदिकें उच्चारकी रचना। ताकों आदिमें ओर अंतमें। मूर्छनाको जो आदि स्वर सो स्थाई वर्ण होय। ते अलंकार स्थाई वर्णके जांनिये॥

अथ स्थाई वर्णके सात अलंकारके नाम लिख्यते ॥ प्रसन्नादि । १ । प्रसन्नांत । २ । प्रसन्नाद्यंत । ३ । प्रसन्नमध्य । ४ । क्रमरेचित । ५ । प्रस्तार ।६। प्रसाद ।७। इति स्थाई अलंकारके नाम संपूर्णम् ॥

अथ इन अलंकारके लक्षण भेदनके अर्थ एक एक मूर्छनामे तार मंद्र संज्ञा कहत है ॥ तहां अलंकारमें जा मूर्छनाके अलंकार तरेसटि ॥ ६३ ॥ करनें होय ता मूर्छनामे जे प्रथम स्वर सो मंद्र जांनिये ॥ ओर वांहि मूर्छनाके आरोह क्रम करिके आगले स्वर तार जांनिये ॥ मंद्रतारको उदाहरण सं । रि । ग । म । प । ध । नि । सं । या मूर्छनामें प्रथम जो षड्ज सो मंद्र हे ॥ ओर आगलो आठवो जो षड्ज है सो तार है ॥ ऐसे सब मूर्छनामे जांनिये ॥ अथवा मूर्छनामे पहलो पहलो स्वर मंद्र जांनिये ओर आगलो आगलो स्वर तार जांनिये । उदाहरण मंद्र सं । रिं । गं । मं । पं । धं । निं । मध्य स । रि । ग । म । प । ध । नि ॥ तार ॥ सं । रिं । गं । मं । पं । धं । निं ॥ यहां पहलो षड्ज सो मंद्र जांनिये ओर तिसरो षड्ज तार जांनिये ॥ ओर पहलो रिषभ मंद्र जांनिये तिसरो ऋषभ तार जांनिये ॥ पहलो गांधार मंद्र जांनिये तिसरो गांधार तार जांनिये ॥ पहलो मध्यम मंद्र जांनिये ॥ तिसरो मध्यम तार जांनिये ॥ पहलो पंचम मंद्र जांनिये ॥ तिसरो पंचम तार जांनिये ॥ पहलो धैवत मंद्र जांनिये ॥ तिसरो धैवत तार जांनिये ॥ पहलो निषाद मंद्र जांनिये ॥ तिसरो निषाद तार जांनिये ॥ ऐसें सब मूर्छनानमें जांनिये ॥ अब मंद्रको दोय नाम ओर कहत हें प्रसन्न अरु मृदु ॥ यह दोय नाम मंद्रके हे ॥ अरु मृदुको तारको एक संग उच्चार करें । सो प्लुत जांनिये ॥ ओर या प्लुतको नामही कहत है ॥ अब मंद्र तार प्लुत इनकी सहनाणी कहत है ॥ जहां अछितरें अनुस्वार होय सो मंद्र जांनिये ॥ ओर जहां अछितरे स्वरके माथे उभीलीक होय ॥ सो तार जांनिये ॥ ओर जो स्वर अनुस्वार या लीक रहित होय सो मध्य जांनिये ॥ ओर ज्यो स्वर तीन वेर उच्चार होय सो प्लुत जांनिये ॥ अथ मंद्र

स्वरको उदाहरण ॥ सां यहां षड्जके माथेंपें बिंदु हें ॥ तामें मंद्र हें ॥ अथ तार स्वरको उदाहरण लिख्यते ॥ सां जहां षड्जके माथेमें उभी लीक हें ॥ यातें तार हें ॥ अथ प्लुतको उदाहरण हें ॥ सा सा सा यहां षड्जको तीन बेर उच्चार है ॥ यातें प्लुत हे ॥

१ **अथ स्थाई प्रथम प्रसन्नादि अलंकारको लक्षण लिख्यते** ॥ जहां स्थाई स्वरनके दोय मंद्र ओर एक तार ऐसे । तीन रूप होय सो प्रसन्नादि अलंकार जांनिये । उदाहरण । सां । सां । सां । ऐसें सब ठोर जांनिये ॥ **इति प्रसन्नादि अलंकार संपूर्णम्** ॥

२ **अथ प्रसन्नांत अलंकारको लक्षण लिख्यते** ॥ जहां स्थाई स्वरके तीन रूप होय । तहां पहलो तार होय ओर दूसरो तिसरो मंद्र होय सो प्रसन्नांत हे ॥ यथा । सां । सा । सां । ऐसें सब स्थाईनमें जांनिये ॥ **इति प्रसन्नांत अलंकार संपूर्णम्** ॥

३ **अथ तिसरे प्रसन्नाद्यंतको लक्षण लिख्यते** ॥ जहां स्थाई स्वरनके तीन रूप होय ॥ तहां पहलो तिसरो मंद्र रूप होय ॥ ओर दूसरो रूप तार होय । सो प्रसन्नाद्यंत जांनिये । उदाहरण । सां । सां । सां । ऐसें सब स्थाईनमें जांनिये ॥ **इति प्रसन्नाद्यंत संपूर्णम्** ॥

४ **अथ चोथो प्रसन्न मध्यको लक्षण लिख्यते** ॥ जहां स्थाई स्वरनके तीन रूप होय । तहां पहलो तिसरो रूप तार होय ॥ ओर दूसरो रूप मंद्र होय ॥ सो प्रसन्न मध्य जांनिये । उदाहरण । सां । सां । सां ॥ ऐसें ही ओर स्थाई स्वरनमें जांनिये ॥ **इति प्रसन्न मध्य संपूर्णम्** ॥

५ **अथ पांचवो क्रम रेचितको लक्षण लिख्यते** ॥ जहां मूर्छनाको आदि स्वर ज्यो स्थाई स्वर सो मूर्छनाके दूसरे स्वरके आदिमें और अंतमें होय । सो स्थाई स्वर मंद्र । तीन्यो कलानमें जांनिये ॥ ऐसें पहली कला कीजिये ॥ अरु मूर्छनाके तीसरे चोथे स्वरमें ॥ दोनु स्वर उच्चार करि ॥ इनके आदि अंतमें स्थाई स्वर उच्चार करिये यह दुसरी कला हें । अरु आदिमें स्थाई स्वर करिकें । वा मूर्छनाकें

पांचवो छहटो सातवो स्वर संग कही ये । फेर पिछे स्थाई स्वर कहीये । ऐसें तीसरी कला हे । ईन तीन कलाको क्रम रेचित कहत हें । कला कहिये स्वरकी रचनाको खंड । उदाहरण । सां । री । सां । इति प्रथम कला । सां । ग । म । सां ॥ इति द्वितीय कला । सां । प । ध । नी । सां ॥ इति तृतीय ॥ कला ऐसेंहि सब स्थाईनमें जांनिये ॥ **इति क्रम रेचित संपूर्णम्** ॥

६ **अथ छहटो अलंकारको नाम प्रस्तार ताको लक्षण लिख्यते** ॥ जहां स्थाई स्वर दूसरे स्वरकी आदिमें होय । ओर अंतमें तार स्थाई स्वर होय ॥ ऐसें एक कला यहां तिन्यो कलानकि आदिमें । स्थाई स्वर मंद्र जांनिये ॥ अरु स्थाई स्वर कहीके ॥ तिसरो चोथो स्वर कहीये ॥ फेर तार स्थाई स्वर कहीये ॥ सो दूसरी कला हे । अरु स्थाई स्वर कही आगें पांचवे छटवे सातवे स्वर कहीये ॥ अरु पीछे तार स्थाई स्वर कहिये सो तिसरी कला ॥ ऐसें तीन कलाको प्रस्तार नाम अलंकार कहिये । उदाहरण सां । री । सां । सां ग । म । सां । सां । प ध । नी । सां । ऐसेहि सब स्थाईनमें जांनिये ॥ **इति प्रस्तार संपूर्णम्** ॥

७ **अथ सातवे अलंकार प्रसादको लक्षण लिख्यते** ॥ जहां आदिमें स्थाई स्वर तार होय । फेर मूर्छनाको दूसरो स्वर होय ॥ तहां आगे मंद्र स्थाई स्वर होय ऐसे एक कला ॥ ओर तार स्थाई स्वर कहिकें । मूर्छनाके तीसरे चोथे स्वर दोनु कहीये ॥ आगे मंद्र स्थान स्वर कहनो । सो दूसरी कला ॥ अरु तार स्थाई होय । ता आगे मूर्छनाको पांचवो छहटो सातवो स्वर होय ॥ पिछे मंद्र स्थाई स्वर होय ॥ सो तिसरी कला ॥ इन तीन कलाको प्रसाद अलंकार जांनिये ॥ सां ॥ रि ॥ सां ॥ इति प्रथम कला सां ॥ ग ॥ म ॥ सां ॥ इति द्वितीय कला ॥ सां ॥ प ॥ ध ॥ नि ॥ सां ॥ इति तृतीय कला ऐसेंहि सब स्थाई स्वरमें जांनिये ॥ **इति प्रसाद संपूर्णम्** ॥

इति स्थाईगत अलंकार संपूर्णम् ॥

अथ आरोही वर्णके बारह ॥ १२ ॥ अलंकारको नाम लिख्यते ॥
विस्तीर्ण ॥ १ ॥ निष्कर्ष ॥ २ ॥ बिंदु ॥ ३ ॥ अभ्युच्चय ॥ ४ ॥ हसित ॥ ५ ॥ प्रेंखित ॥ ६ ॥ अक्षिप्त ॥ ७ ॥ संधिप्रच्छादन ॥ ८ ॥ उद्गीत ॥ ९ ॥ उदवा हित ॥ १० ॥ त्रिवर्ण ॥ ११ ॥ पृथगवेणी ॥ १२ ॥ **इति आरोही अलंकारके नाम संपूर्णम् ॥**

१ **अथ विस्तीर्ण अलंकारको लक्षण लिख्यते॥** जहां मूर्छनामें अथवा संपूर्ण षाडव औडव ताननमें मूर्छनाको ज्यो आदि स्वर सो स्थाई स्वर। तातें लेके संपूर्ण होय सो सात स्वरतांई षाडव होय तो छह स्वरनतांई। औडव होय तो पांच स्वरनतांई ठहरि ठहरिके दीर्घ स्वरनको उच्चार कर नोहे। सो विस्तीर्ण नाम अलंकार जांनिये। उदाहरण। सा। री। गा। मा। पा। धा। नी॥ ऐसें सब ठोर ज्यो स्थाई स्वर होय तातें लेकें॥ जितनें आरोह क्रममें स्वर होई। तिनको उच्चार ऐसें कीजिये॥ **इति विस्तीर्ण अलंकार लक्षण संपूर्णम् ॥**

२ **अथ निष्कर्ष अलंकारको लक्षण लिख्यते ॥** जहां संपूर्ण षाडव औडव मूर्छनाके आदि स्वर जो स्थाई स्वर तातें लेकें संपूर्ण होय तो सात स्वरतांई॥ षाडव होय तो छह स्वरतांई ॥ औडव होय तो पांच स्वरतांई ॥ आरोह क्रम करिकें ऱ्हस्व स्वरनको दो दो वार उच्चार होय ॥ सो निष्र्कर्ष अलंकार जांनिये। उदाहरण। स स। रि रि। ग ग। म म। प प। ध ध। नि नि॥ ऐसेहि सब ठोर मूर्छनाके आदि स्वरतें लेकें। आरोह क्रममें। जितनें स्वर हे तिनको उच्चार या रितिसों जांनिये॥ **इति निर्ष्कर्ष अलंकार संपूर्णम् ॥**

३ **अथ तीसरो बिंदु अलंकारको लक्षण लिख्यते ॥** जहां मूर्छनाके आदि स्वरतें लेकें। आरोह क्रम करिकें। पहले स्वरकों तीन वेर कहिये॥ दूसरे स्वरको एक वेर कहनो। ऐसेंही तीसरे स्वरको तीन वेर। चोथे स्वरको एक वेर। पांचवें स्वरको तीन वेर। छहटे स्वरको एक वेर। सातवें स्वरको तीन वेर उच्चार कीजिये। सो बिंदु अलंकार जांनिये। सा सा सा रि। गा गा गा म। पा पा पा ध।

नी नी नी सा । ऐसी रितिसों आरोह क्रममें ज्यों स्वरको उच्चार होई ॥ सो बिंदु अलंकार जांनिये ॥ **इति बिंदु अलंकार संपूर्णम् ॥**

४ **अथ अभ्युच्चय अलंकारको लक्षण लिख्यते ॥** जहां आरोह क्रममें मूर्छनाके प्रथम स्वर कहि ॥ दूसरे स्वर छोडि दिजिये ॥ अरु दूसरे स्वर कहि चोथो छोडि पांचमों कहि । छहटो छोडि । सातमों कहिये ॥ ऐसे मूर्छनामें जितनें स्वर होई । तिनमें एकेक उना स्वर कहनेंसे ॥ पुरे स्वर होई सो अभ्युच्चय अलंकार जांनिये । उदाहरण । स । ग । प । नि ॥ ऐसेंहि सब ठोर जांनिये । **इति अभ्युच्चय अलंकार संपूर्णम् ॥**

५ **अथ हसित अलंकारको लक्षण लिख्यते ॥** जहां मूर्छनाके स्वरनको ॥ पहलो एक वेर ॥ दूसरो दोय वेर ॥ तीसरो तीन वेर ॥ चोथो च्यार वेर ॥ पांचवों पांच वेर ॥ छहटो छह वेर ॥ सातवो सात वेर ॥ उच्चार कीजिये ॥ सो हसित अलंकार जांनिये ॥ उदाहरण । स । रि रि । ग ग ग । म म म म । प प प प प । ध ध ध ध ध ध नि नि नि नि नि नि नि ॥ ऐसें सब मूर्छनानमें जांनिये ॥ **इति हसित अलंकार संपूर्णम् ॥**

६ **अथ प्रेंखित अलंकारको लक्षण लिख्यते ॥** जहां मूर्छनाके पहले दोय स्वर कहिये ॥ फेर दूसरे तार के स्वर मिलाय कहिये ॥ फेर तीसरे चोथे मिलाय कहिये ॥ पांचवे छटे मिलाय कहिये ॥ छटे सातवें मिलाय कहिये ॥ या रितिसों आरोह होय ॥ सो प्रेंखित अलंकार जांनिये ॥ उदाहरण ॥ स रि । रि ग । ग म । प ध । ध नि ॥ ऐसेंहि सब मूर्छनामें जांनिये आरोह क्रमसों ॥ **इति प्रेंखित अलंकार संपूर्णम् ॥**

७ **अथ आक्षिप्त अलंकार कहिये ॥** जहां मूर्छनाके स्वरनमें ॥ पहले तीसरे स्वर मिलाय कहिये ॥ तीसरे पांचवें मिलाय कहिये ॥ पांचवें सातवें मिलाय कहिये ॥ या रितिसों आरोह होय ॥ सो आक्षिप्त जांनिये ॥

उदाहरण ॥ स गा । ग पा । प नी ॥ ऐसेंहि ओर मूर्छनानमें जांनिये ॥ इति आक्षिप्त अलंकार संपूर्णम् ॥

८ अथ संधिप्रच्छादनको लक्षण लिख्यते ॥ जहां मूर्छनाके जितने स्वर होय ॥ तिनमें पहले तीन स्वर कहिये ॥ सो एकलो ॥ अरु तीसरो चोथो पांचमों मिलाय कहिये ॥ सो दूसरी कला पांचवें छटवें सातवें मिलाय कहिये ॥ सो तिसरी कला ॥ या रितिसों आरोह होय सो संधिप्रच्छादन जांनिये ॥ उदाहरण। स रि गा । ग म पा । प ध नी । ऐसेंहि सब मूर्छनानमें जांनिये ॥ इति संधिप्रच्छादन संपूर्णम् ॥

९ अथ उद्गीत अलंकारको लक्षण लिख्यते ॥ जहां मूर्छनाके प्रथम स्वरको तीन वेर उच्चार कहिये ॥ फेर दूसरे तीसरे स्वरको एक वेर मिलाय कहिये सो एक कला ॥ अर चोथे स्वरको तीन वेर उच्चार करि फेर पांचवो छटो स्वरको एक वेर मिलाय कहिये ॥ सो दूसरी कला ॥ ऐसी दोय कलानसों आरोह होय सो उद्गीत जांनिये ॥ उदाहरण ॥ स स स रि गा । म म म प धा ॥ यह षाडव ताननमें बहुत आवे हे ॥ ऐसेहि सब ठोर जांनिये ॥ इति उद्गीत अलंकार संपूर्णम् ॥

१० अथ उद्वाहित अलंकारको लक्षण लिख्यते ॥ जहां मूर्छनामें प्रथम स्वरको उच्चार करि दूसरे स्वरको तीन वेर उच्चार कीजिये ॥ अर तीसरे स्वरको एक वेर उच्चार कीजिये सो एक कला ॥ ओर चोथे स्वर कही ॥ पांचवें स्वरको तीन वेर उच्चार करि ॥ फेर छटे स्वरको एक वेर उच्चार कीजिये ॥ या रितिसों आरोह होय । सो उद्वाहित अलंकार जांनिये उदाहरण। स रि रि रि गा।म प प प धा। यह षाडव ताननमें प्रसिद्ध हे ऐसेंहि सब ठोर जांनिये ॥ इति उद्वाहित अलंकारको लक्षण संपूर्णम् ।

११ अथ त्रिवर्ण अलंकारको लक्षण लिख्यते ॥ जामें मूर्छनाके पहले दोय स्वरको उच्चार करि। तीसरे स्वरको तीन वेर उच्चार करे। सो एक कला हे । फेर चोथे पांचवे स्वर मिलाय कहिये । ओर

छटे स्वरको तीन वेर मिलायं उच्चार कीजिये। ऐसि रितिसों आरोह क्रम होय सो त्रिवर्ण अलंकार जांनिये । उदाहरण । स रि ग ग गा । म प ध ध धा । यह अलंकार षांडव तानमें प्रसिद्ध है ॥ **इति त्रिवर्ण अलंकारको लक्षण संपूर्णम् ॥**

१२ **अथ पृथग्वेणि अलंकारको लछन लिख्यते** ॥ जहां मूर्छनाके जितने स्वर होय तितनें स्वरमें जुदे जुदे करिकें तीन तीन वेर एक एक स्वरको उच्चार कीजिये । या रितिसों आरोह होय सो पृथग्वेणि अलंकार जांनिये । उदाहरण ॥ स स स । रि रि रि । ग ग ग । म म म । प प प । ध ध ध । नि नि नि । यह षांडव तानमें प्रसिद्ध हे । ऐसेंहि सब मूर्छना ताननमें जांनिये ॥ **इति बारह आरोहि अलंकार संपूर्णम् ॥**

अथ अवरोहि अलंकारके नाम आरोहीके ही है ॥ ये बारह अलंकार अवरोहि क्रमसों गीतादिकमें जांनियें । इनके क्रमसों १२ बारह उदाहरण कहत हें ॥

१ **अथ अवरोहि विस्तीर्णको लक्षण लिख्यते** ॥ जब अवरोहि क्रमसो पढे तब अवरोहि विस्तीर्ण जांनिये ॥ उदाहरण ॥ नी । धा । पा । मा । गा । रि । सा । ऐसेंहि सब ठोर जांनिये ॥ **इति अवरोहि विस्तीर्ण लक्षण संपूर्णम् ॥**

२ **अथ अवरोहि निष्कर्षको लक्षण लिख्यते** ॥ जब अवरोहि क्रमसो पढिये । तब अवरोहि निष्कर्ष जांनिये ॥ उदाहरण ॥ नि नि । ध ध । प प । म म । ग ग । रि रि । स स । ऐसेंहि रितिसों जहां अवरोही होय । सो निष्कर्ष जांनिये ॥ **इति अवरोहि निष्कर्षको लक्षण संपूर्णम् ॥**

३ **अथ अवरोहि बिंदुको लक्षण लिख्यते** ॥ जब अवरोह क्रमसों होय तब अवरोहि बिंदु अलंकार जांनिये । उदाहरण । नी नी नी । ध । पा पा पा । म । गा गा गा । रि । सा सा सा । ऐसे बिंदु अलंकार जांनिये ॥ **इति अवरोहि बिंदु अलंकार संपूर्णम् ॥**

४ अथ अवरोहि अभ्युच्चयको लछन लिख्यते ॥ जब अवरोह क्रमसों होय ॥ तब अवरोहि अभ्युच्चय जांनिये । उदाहरण । नि । प । ग । स ॥ इति अवरोहि अभ्युच्चय अलंकार संपूर्णम ॥

५ अथ हसितको लछन लिख्यते ॥ जहां अवरोह क्रमसों होय । सो अवरोहि हसित जांनिये । उदाहरण ॥ नि नि नि नि नि नि नि ॥ ध ध ध ध ध ध । प प प प प । म म म म । ग ग ग । रि रि । स ॥ इति अवरोहि हसित अलंकार संपूर्णम् ॥

६ अथ अवरोहि प्रेंखितको लक्षण लिख्यते ॥ जां मूर्छनामें ॥ अवरोह क्रमसों होय ॥ सो अवरोही प्रेंखित जांनिये ॥ उदाहरण॥ नि ध। ध प । म ग । ग रि । रि स ॥ इति अवरोहि प्रेंखित अलंकार संपूर्णम् ॥

७ अथ अवरोहि आक्षिप्तको लक्षण लिख्यते ॥ जहां अवरोह क्रमसों होय ॥ सो आक्षिप्त अलंकार जांनिये ॥ उदाहरण ॥ नी प । पा ग । गा स ॥ ऐसें या रितिसों अवरोह होय सो आक्षिप्त जांनिये ॥ इति अवरोहि आक्षिप्त अलंकार संपूर्णम ॥

८ अथ अवरोहि संधिप्रच्छादनको लक्षण लिख्यते ॥ जहां आरोहि संधिप्रच्छादन अवरोह क्रमसों होय ॥ सो अवरोहि संधिप्रच्छादन जांनिये ॥ उदाहरण ॥ नि ध प । प म ग । ग रि स ॥ इति संधिप्रच्छादन अलंकार संपूर्णम ॥

९ अथ अवरोहि उद्गीतको लक्षण लिख्यते ॥ जहां अवरोहि उद्गीत अवरोहि क्रमसों होय ॥ सो अवरोहि उद्गीत जांनिये ॥ उदाहरण ॥ ध प । म म म । ग रि । स स स ॥ इति अवरोहि उद्गीत अलंकार संपूर्णम ॥

१० अथ अवरोहि उद्वाहितको लक्षण लिख्यते ॥ जहां आरोहि उद्वाहित अवरोह क्रमसों होय ॥ सो आरोहि उद्वाहित जांनिये ॥ उदाहरण ॥ ध प प प म । ग रि रि रि स ॥ इति अवरोहि उद्वाहित अलंकार संपूर्णम ॥

११ **अथ अवरोहि त्रिवर्ण अलंकारको लछन लिख्यते ॥** जहां आरोहि त्रिवर्ण । अवरोह क्रमसों होय ॥ सो अवरोहि त्रिवर्ण जांनिये । उदाहरण ॥ ध ध ध । प म । ग ग ग । रि स ॥ **इति अवरोहि त्रिवर्ण अलंकार संपूर्णम् ॥**

१२ **अथ अवरोहि पृथग्वणिको लछन लिख्यते ॥** जहां अवरोहि पृथग्वणि । अवरोह क्रमसों होय सो अवरोहि पृथग्वेणि जांनिये । उदाहरण । नि नि नि । ध ध ध । प प प । म म म । ग ग ग । रि रि रि । स स स ॥ **इति अवरोहि पृथग्वेणि अलंकार संपूर्णम् ॥**

इति बारह अवरोहि अलंकारको उदाहरण लछन संपूर्णम् ॥

अथ तिसरो वर्ण जो संचारि ताके । अलंकार । २५ । पचिसहे तिनके नाम लिख्यते । मंद्रादि । १ । मंद्रमध्य । २ । मंद्रांत । ३ । प्रस्तार । ४ । प्रसाद । ५ । व्यावृत । ६ । स्खलित । ७ । परिवर्त । ८ । आक्षेप । ९ । बिंदु । १० । उद्वाहित । ११ । ऊर्मि । १२ । सम । १३ । प्रेंख । १४ । निष्कूजित । १५ । श्येन । १६ । क्रम । १७ । उद्घटित । १८ । रंजित । १९ । सन्निवृत्त प्रवृत्तक । २० । वेणु । २१ । ललितस्वर । २२ । हुंकार । २३ । ल्हादमान । २४ । अवलोकित । २५ ।

१ **अथ प्रथम संचारी मंद्रादि अलंकारको लक्षण लिख्यते ॥** तहां मूर्छनाके पहले च्यार स्वरनको आरोह करि अवरोह कीजे । फेर पहले दोय स्वरको उच्चार करि । प्रथम स्वरको उच्चारकीजे ॥ फेर दूसरे तीसरे स्वरको उच्चार कीजे ॥ दूसरो स्वरको उच्चार कीजिये ॥ फेर तीसरे चोथे स्वरको-उच्चार कीजिये ॥ सो एक कला हे ॥१॥ फेर मूर्छनाके दूसरे स्वर तें लेकें पांचवें स्वर ताई ॥ आरोह करि अवरोह कीजिये ॥ दूसरे स्वर तांई । प्रथम स्वर छोडि दिजिये । फेर दूसरे तीसरे स्वरकों उच्चार करके दूसरे स्वरका उच्चार कीजिये फेर तीसरे चोथे स्वरका उच्चार करि ॥ दूसरो स्वरका कीजिये ॥ फेर तीसरो चोथे स्वरको उच्चार

करि तीसरो स्वर कहिये ॥ फेर चोथे पांचवें स्वरको उच्चार कीजिये ॥ सो दूसरी कला ॥ २ ॥ फेर पहले दोय स्वर मूर्छनाके छोडिकें ॥ तीसरे स्वर ते लेकें छह स्वर तांई। आरोह करि अवरोह कीजिये ॥ फेर तीसरे चोथे स्वर कहीकें तीसरो स्वर कहिये। फेर पांचवें स्वर कही । चोथो स्वर कहीये । तीसरो स्वर कहीये । फेर चोथो पांचवों स्वर कही चोथो स्वर कहीये । फेर पांचवो छटो स्वर कहीये सो तीसरी कला । ३ । फेर मूर्छनाके चोथे स्वर तें लेकें सातवें स्वर तांई । आरोह करि अवरोह कीजे। फेर चोथे पांचवें स्वर कहिकें चोथे स्वर कहिये । फेर पांचवें छटे स्वर कहि । छटो पांचवों स्वर कहि । फेर छटो सातवों स्वर कहिये सो चोथी कला । ४ । फेर पांचवें स्वर तें लेकें । आठवें षड्ज तांई । चार स्वरको आरोह करि अवरोह कीजे । फेर पांचवें छटे स्वर कहि ॥ पांचवों स्वर कहिये । फेर छटे सातवें स्वर कहि ॥ छटो सातवों स्वर कहीये । फेर सातवों आठवो स्वर कहीये । सो पांचवी कला । ५ । इहां दूसरी कलामें पहलो स्वर मूर्छनाको छोडिये । ऐसें ही चोथी कलामें तीन स्वर । पांचवी कलामें च्यार स्वर। मूर्छनाके पहले छोडिये । यह क्रमहे इन कलानमें । स्थाई आरोहि स्वर होई ॥ इन तिनों वर्णनको मिलायेहे ॥ ऐसो संचार होय। सो मंद्रादि अलंकार जांनिये। उदाहरण । स रि ग म। म ग रि स। स रि ग रि। स रि ग म। १। रि ग म प। प म ग रि। रि ग म ग। रि ग म प। २। ग म प ध। ध प म ग। ग म प म। ग म प ध। ३। म प ध नि। नि ध प म। म प ध प। म प ध नि। ४। प ध नि स। स नि ध प। प ध नि ध। प ध नि स । ५। या रितिसों सब ठार संचारी जांनिये ॥ **इति मंद्रादि अलंकार संपूर्णम** ॥

२ **अथ मंद्र मध्यम अलंकारको लछन लिख्यते** ॥ जहां मूर्छनाके पहले। तीसरे, स्वरनको उच्चार करि दूसरो तीसरो स्वर कहिये फेर चोथे

तीसरो कहिकें दूसरो तीसरो कहिये । फेर दूसरो तीसरो कहि दूसरो पहलो कहिये । फेर पहले तें लेकें चोथो स्वर तांई आरोह कीजिये सो एक कला । १ । याहि रितिसों दूसरी कलामें पहलो स्वर छोडि दूसरे तें लेकें पांचवे स्वर तांई ॥ च्यार स्वरकी अरु तीसरि कलामें छटे स्वर तांई । च्यार स्वरकी चोथी पांचमी कलाहूमें रचना होय । सो मंद्र मध्य अलंकार जांनिये ॥ उदाहरण। स ग रि ग । म ग रि ग । रि ग रि स । स रि ग म । १ । रि म ग म । प म ग म । ग म ग रि । रि ग म प । २ । ग प म प । ध प म प । म प म ग । ग म प ध । ३ । म ध प ध । नि ध प ध । प ध प म । म प ध नि । ४ । प नि ध नि । स नि ध नि । ध नि ध प । प ध नि स । ५ । यह रिति सब ठोर जांनिये ॥ इति **मंद्र मध्य अलंकार संपूर्णम् ॥**

३ अथ **मन्द्रांत लछन लिख्यते ॥** जहां मूर्छनाके पहले दूसरेको उच्चार दोय वेर होय ॥ फेर चोथे तीसरेको उच्चार होय । फेर चोथे तीसरेको उच्चार होय । फेर दूसरे तीसरेको उच्चार होय ॥ फेर दूसरे पहले स्वरको उच्चार होय । सो प्रथम कला हे ।१। या रितिसों पांच कला होय ओर दूसरी तिसरी चोथी पांचमी कलामें । एक दोय तीन च्यार स्वर क्रमतें छोडिये । सो मंद्रांत अलंकार जांनिये । उदाहरण । स स । रि रि । ग ग । म ग । रि ग । रि स । १ । रि रि । म ग । म म । प म । ग म । ग रि । २ । ग ग । म म । प प । ध प । म प । म ग । ३ । म म । प प । ध ध । नि ध । प ध । प म । ४ । प प । ध ध । नि नि । स नि । ध नि । ध प । ५ । ऐसेंहि सब ठोर जांनिये ॥ इति **मंद्रांत अलंकार संपूर्णम ॥**

४ अथ **प्रस्तार अलंकार लिख्यते ॥** जहां मूर्छनाके स्वरनमें बीचके दोय दोय स्वर छोडिकें ॥ पहले चोथे दोय दोय स्वर मिलायके पढिये ॥ पहले चोथेको जोग ॥ दूसरे पांचवेंको जोग । तीसरे छटवेको जोग ॥ चोथे सातवेको जोग ॥ या रितिसों आरोह होय सो प्रस्तार जांनिये ।

उदाहरण । स । म । रि । प । ग । ध । म । नि । प । स । ऐसें-
हि सब ठोर जांनिये ॥ इति प्रस्तार अलंकार संपूर्णम् ॥

५ अथ प्रसाद अलंकार लिख्यते ॥ जहां मूर्छनाके पहले दोय स्वरकों तीन
वेर उच्चार करि ॥ फेर तीसरे दूसरेको उच्चार करिये । या क्रमसों
सात स्वरनको आरोह होय ॥ ओर छहजामें कला होय । सो प्रसाद।
अलंकार जांनिये । उदाहरण ॥ स रि स रि स रि ग रि० । रि
ग रि ग रि ग म ग० । ग म ग म ग म प म०। म प म प म प ध
प० । प ध प ध प ध नि ध० । ध नि ध नि ध नि स नि ॥ या
रितिसों सब ठोर जांनिये ॥ इति प्रसाद अलंकार संपूर्णम् ॥

६ अथ व्यावृत्त अलंकारको लछन लिख्यते ॥ जहां मूर्छनाके वरनमें ।
पहले तीसरे स्वरको ॥ दूसरे चोथे स्वरको जोग कहि । पहले स्वर-
को चोथे स्वर तांई ॥ आरोह होय सो एक कला हे । या क्रमसों
च्यार च्यार स्वरकी रचना करिये सो व्यावृत्त अलंकार जांनिये ।
उदाहरण । स ग रि म । स रि ग म । रि म ग प । रि ग म प ।
ग प म ध । ग म प ध ।म ध प नि । म प ध नि।प नि ध स। प ध
नि स ॥ इति व्यावृत्त अलंकार संपूर्णम ॥

७ अथ स्खलित अलंकार लिख्यते ॥ जहां पहले तीसरे स्वरको ॥ अरु
दूसरे चोथे स्वरको जोग कहिकें चोथे दूसरे स्वरको अरु तीसरे
पहले स्वरको जोग कहिये। फेर पहले स्वर तें चोथे स्वर तांई ॥
आरोह करिये ॥ ऐसें च्यार च्यार स्वरकी रचना होय सो स्खलित
अलंकार जांनिये । उदाहरण । स ग रि म० म रि ग स० स रि
ग म ० १ रि म ग प० प ग म रि० रि ग म प० २ ग प म
ध० ध म प ग० ग म प ध० ३ म ध प नि० नि प ध म० म प
ध नि० ४ प नि ध स० स ध नि प० प ध नि स० ५ ऐसेंहि सब
ठोर जांनिये ॥

८ अथ परिवर्त अलंकारको लछन लिख्यते ॥ जहां पहले तीसरे स्वरको उच्चार
करि । चोथे दूसरे स्वर कही ये ॥ या रितिसों कला होय सो परि-

वर्त जांनिये । उदाहरण । स ग म रि० रि म प ग० ग प ध म० म ध नि प० प नि स ध० । ऐसेंहि सब ठोर जांनिये ॥

९ अथ आक्षेप अलंकारको लछन लिख्यते ॥ जहां मूर्छनाके स्वरनमें क्रमसों तीन तीन स्वरनकी कला होय सो आक्षेप अलंकार जांनिये। उदाहरण ॥ स रि ग० रि ग म० ग म प० म प ध० प ध नि० ध नि स० ॥ इति आक्षेप अलंकार संपूर्णम ॥

१० अथ बिंदु अलंकार लिख्यते ॥ जहां मूर्छनाके स्वरनमें प्रथम स्वर दीर्घ होयकें । तीन वेर उच्चार पावे । सो दूसरो स्वर ऱ्हस्व होय ॥ तापाछे दीर्घ प्रथम स्वरको उच्चार करि । दीर्घ तीसरे स्वरको उच्चार कीजिये । या रितिसो बिंदु अलंकार जांनिये । उदाहरण । सा सा सा रि सा गा। री री री ग रि मा। गा गा गा म मा पा। मा मा मा प मा धा। पा पा पा ध पा नि। धा धा धा नि धा सा । ऐसेंहि सब ठोर जांनिये ॥ इति बिंदु अलंकार संपूर्णम् ॥

११ अथ उद्वाहित अलंकारको लछन लिख्यते ॥ जहां मूर्छनामे पहिले तीन स्वर उच्चार करिकें अवरोहका दुसरा स्वरलेके उच्चार कीजिये या रितिसो चार स्वरकी जो रचना होय सो उद्वाहित अलंकार जांनिये ॥ उदाहरण । स रि ग रि । रि ग म ग । ग म प म । म पँ ध प । प ध नि ध । ध नि स नि । नि स रि स ।

१२ ऊर्मि अलंकारको लछन लिख्यते ॥ जहां मूर्छनाके पहले दोय स्वरको उच्चार करि तीसरे स्वरको तीन वेर उच्चार करिये । फेर पहले चोथे स्वरको एक वेर उच्चार करिये । या रितिसों कला होय । १ । सो ऊर्मि अलंकार जांनिये ॥ उदाहरण । स म म म स म । १ । रि प प प रि प । २ । ग ध ध ध ग ध । ३ । म नि नि नि म नि । ४ । प स स स प स । ५ । ऐसें सब ठोर जांनिये ॥ इति ऊर्मि अलंकार संपूर्णम् ॥

१३ अथ सम अलंकार लिख्यते ॥ जहां प्रथम च्यार च्यार स्वरको आरोह करि अवरोह कीजे ॥ फेर च्यार स्वरनको आरोह कीजे ॥ ऐसें

कला होय ॥ सो सम अलंकार जांनिये ॥ उदाहरण ॥ स रि ग म। म ग रि स । स रि ग म । १ । रि ग म प । प म ग रि । रि ग म प । २ । ग म प ध । ध प म ग । ग म प ध । ३ । म प ध नि । नि ध प म । म प ध नि । ४ । प ध नि स । स नि ध प। प ध नि स । ५ । **इति सम अलंकार संपूर्णम् ॥**

१४ अथ प्रेंखित अलंकार लिख्यते ॥ जहां मूर्छनाके पहले स्वर दोय दोय वेर उच्चार करि चोथे स्वरको उच्चार करि दोय दोय होय । ऐसें कला कीजिये ॥ सो प्रेंखित अलंकार जांनिये । उदाहरण । स स म म ।१। रि रि प प । २ ।ग म ध ध । ३ । म म नि नि । ४ । प प सं स ।५। ऐसें सब ठोर जांनिये ॥ **इति प्रेंखित अलंकार संपूर्णम् ॥**

१५ अथ निष्कूजित अलंकार लिख्यते ॥ जहां मूर्छनाके पहले चोथे स्वरको मिलायके । उच्चार दोय वेर होय ॥ फेर पहले तें लेकें चोथे स्वरतें आरोह होय ॥ ऐसें क्रमसों कला कीजिये ॥ सो निष्कूजित अलंकार जांनिये ॥ उदाहरण ॥ स म । स म । स रि ग म । १ । रि प। रि प। रि ग म प ।२। ग ध। ग ध। ग म प ध। ३ ।म नि।म नि।म प ध नि । ४ । प स । प स । प ध नि स । ५ । ऐसेंहि सब ठोर जांनिये ॥ **इति निष्कूजित अलंकार संपूर्णम् ॥**

१६ अथ श्येन अलंकार लिख्यते ॥ जहां मूर्छनाके प्रथम स्वरसों मिलायकें। दूसरे आदिक स्वरनको । जुदो जुदो उच्चार कीजिये । ऐसे कला होय । सो श्येन अलंकार जांनिये । उदाहरण ॥ स रि । स ग । स म । स प । स ध । स नि । स स ॥ ऐसे सब ठोर जांनिये ॥ **इति श्येन अलंकार संपूर्णम् ॥**

१७ अथ क्रम अलंकार लिख्यते ॥ जहां मूर्छनाके स्वरनमें पहले दोय स्वरनको उच्चार करि ॥ वाहि क्रमसो तीन स्वरनको उच्चार कीजिये। फेर वाहि क्रमसों च्यार स्वरनको उच्चार कीजिये॥ ऐसें कला होय सो क्रम अलंकार जांनिये ॥ उदाहरण ॥ स रि रि ग ग म । १ । रि ग ग म.म प । २ । ग म म प प ध । ३ । म प प ध

ध नि । ४ । प ध ध ध नि नि स । ५ । ऐसेंहि सब ठोर जांनिये॥ **इति क्रम अलंकार संपूर्णम् ॥**

१८ **अथ उद्घटित अलंकार लिख्यते ॥** जहां मूर्छनाके पहले तीसरे स्वर मिलायके दोय वेर कहिये ॥ फेर पहले स्वर तें लेकें चोथे स्वरतांई आरोह कीजिये॥ ऐसें कला होय । सो उद्घटित अलंकार जांनिये ॥ उदाहरण ॥ स ग । स ग । स रि ग म ।१। रि म । रि म । रि ग म प । २ । ग प । ग प । ग म प ध । ३ । म ध । म ध । म प ध नि ।४। प नि । प नि । प ध नि स । ५ । ऐसें सबठोर जांनिये । **इति उद्घटित अलंकार संपूर्णम् ॥**

१९ **अथ रंजित अलंकार लिख्यते ॥** जहां मूर्छनाके पहले तीसरे स्वरनको उच्चार करि ॥ दूसरे तीसरे स्वरनको उच्चार कीजिये ॥ फेर पहले स्वर ते लेकें चोथे स्वरतांई आरोह कीजिये ॥ ऐसें कला होय सो रंजित जांनिये॥ उदाहरण ॥ स ग । रि ग । स रि ग म ।१। रि म । ग म । रि ग म प ।२। ग प । म प । ग म प ध ।३। म ध । प ध । म प ध नि । ४ । प नि । ध नि । प ध नि स । ५ । ऐसें सब ठोर जांनिये ॥ **इति रंजित अलंकार संपूर्णम् ॥**

२० **अथ सन्निवृत्त प्रवृत्त अलंकार लिख्यते ॥** जहां मूर्छनाके पहले स्वर ते लेकें तीसरे स्वरतांई । आरोह करि ॥ दूसरे स्वर तें लेकें चोथे स्वरतांई ॥ आरोह कीजिये ॥ फेर तीसरे स्वर ते लेकें पहले स्वरतांई अवरोह करि दूसरे स्वर तें लेकें चोथे स्वरतांई आरोह कीजिये ॥ ऐसें कला कीजिये ॥ सो सन्निवृत्त अलंकार जांनिये ॥ उदाहरण ॥ स रि ग रि । ग म ग रि । स रि ग म । रि ग म ग । म प म ग । रि ग । म प । ग म प म । प ध प म । ग म । प ध । म प ध प । ध नि ध प । म प । ध नि । प ध नि ध । नि स नि ध । प ध नि स । ऐसें सब ठोर जांनिये ॥ **इति सन्निवृत्त अलंकार संपूर्णम् ॥** जहां सन्निवृत्त अलंकारको क्रम दोय वेर कहि । ऐसें कला होय । सो प्रवृत्त अलंकार जांनिये ॥ उदाहरण ॥ स स रि रि । ग ग रि

रि । ग ग म म । ग ग रि रि । स स रि रि । ग ग म म । रि रि ग ग । म म ग ग । म म प प । म म ग ग । रि रि ग ग । म म प प । ग ग म म । प प म म । प प ध ध । प प म म । ग ग म म । प प म म । प प ध ध । प प म म । ग ग म म । प प ध ध । म म प प । ध ध प प । ध ध नि नि । ध ध प प । म म प प । ध ध नि नि । प प ध ध । नि नि ध ध । नि नि स स । नि नि ध ध । प प ध ध । नि नि स स । ऐसें सब ठोर जांनिये । इति **प्रवृत्त अलंकार संपूर्णम्** ॥ याहीको प्रमोद कहते हैं ॥

२१ अथ **वेणु अलंकारको लछन लिख्यते** ॥ जहां प्रथम स्वरको चोथे स्वरको उच्चार करि तीसरे चोथे स्वरको उच्चार करिये ॥ फेर पहले स्वरे तें लेकें । चोथे स्वरतांई आरोह कीजिये ॥ ऐसें कला होय सो वेणु अलंकार जांनिये ॥ उदाहरण ॥ स म ग म स रि ग म । १ । रि ग म प रि ग म प । २ । ग ध प ध ग म प ध । ३ । म नि ध नि म प ध नि । ४ । प स नि स प ध नि स । ५ । ऐसें सब ठोर जांनिये ॥ इति **वेणु अलंकार संपूर्णम्** ॥

२२ अथ **ललित स्वर अलंकारको लछन लिख्यते** ॥ जहां पहले स्वर चोथे स्वर तीसरे स्वरको दोय दोय वेर उच्चार करि ॥ दूसरे पहले स्वरको उच्चार होय ॥ फेर पहले स्वर दूसरे स्वरको करि ॥ तीसरे दुसरे स्वरको उच्चार होय ॥ फेर पहले स्वर तें लेकें चोथे स्वर तांई आरोह कीजिये ऐसें कला होय॥ सो ललित–स्वर अलंकार जांनिये॥ उदाहरण ॥ स स म म । ग ग रि स स रि ग रि । स रि ग म । रि रि प प । म म ग रि रि ग म ग । रि ग म प । ग ग ध ध । प प म ग ग म प म । ग म प ध । म म नि नि । ध ध प म । म प ध प । म प ध नि । प प स स । नि नि ध प । प ध नि ध । प ध नि स । ऐसें सब ठोर जांनिये ॥ इति **ललित स्वर अलंकार संपूर्णम्** ॥

२३ अथ हुंकार अलंकारको लछन लिख्यते ॥ जहां पहले स्वरकों दोय वेर उच्चार करि पांचवे स्वरकों दोय दोय वेर उच्चार कीजिये ॥ ऐसें क्रमसों कला होय । सो हुंकार अलंकार जांनिये । उदाहरण । स स । प प । रि रि । ध ध । ग ग । नि नि । म म । स स । ऐसें सब ठोर जांनिये ॥ इति हुंकार अलंकार संपूर्णम् ॥

२४ अथ ल्हादमान अलंकारको लछन लिख्यते ॥ जहां पहले स्वरको तीन वेर उच्चार करि । चोथे स्वरको तीन वेर उच्चार कीजिये ॥ या क्रमसों कला होय सो ल्हादमान अलंकार जांनिये । उदाहरण । स स स । म म म । रि रि रि । प प प । ग ग ग ॥ ध ध ध । म म म । नि नि नि । प प प । स स स । ऐसें सब ठोर जांनिये। इति ल्हादमान अलंकार संपूर्णम् ॥

२५ अथ अवलोकित अलंकारको लछन लिख्यते ॥ जहां पहले तीसरे स्वरको उच्चार करि ॥ चोथे स्वरको दोय वेर उच्चार कीजिये । फेर दूसरे पहले स्वरको उच्चार कीजिये । उदाहरण । स ग म म रि स । रि म प प ग रि । ग प ध ध म ग । म ध नि नि प म । प नि स स ध प । ऐसें सब ठोर जांनिये ॥ इति अवलोकित अलंकार संपूर्णम् ॥

अथ गीतनमें गायवेके सात । ७ । अलंकारको नाम लिख्यते ॥ इंद्रनील । १ । महावज्र । २ । निर्दोष । ३ । सीर । ४ । कोकिल । ५ । आवर्त । ६ । सदानंद । ७ ।

१ अथ प्रथम इन्द्रनीलको लछन लिख्यते ॥ जहां पहले स्वर तें लेकें । चोथे स्वरतांई । आरोह करि तीसरे दूसरे स्वरको उच्चार कीजिये । फेर दूसरे पहले स्वरको । उच्चार करि तीसरे दूसरे स्वरको उच्चार कीजिये । फेर पहले स्वर तें लेकें चोथे स्वर तांई आरोह कीजिये । ऐसें कला होय । सों इंद्रनील अलंकार जांनिये । उदाहरण। स रि ग म । ग रि । स रि ग रि । स रि ग म । रि ग म प । म ग । रि ग म प । रि ग म प । ग म प ध ।

प म । ग म प म । ग म प ध । म प ध नि । ध प । म प ध प । म प ध नि । प ध नि स । नि ध । प ध नि ध । प ध नि स । ऐसें सब ठोर जांनिये ॥ इति इंद्रनील अलंकार संपूर्णम् ॥

२ **अथ महावज्र अलंकारको लछन लिख्यते** ॥ जहां पहले दूसरे स्वरको उच्चार करि ॥ फेर तीसरे दूसरे स्वरको उच्चार कीजिये ॥ अरु पहले दोय स्वर कहिकें ॥ पहले स्वर तें लेकें चोथे स्वरतांई । आरोह कीजिये ॥ ऐसें कला होय ॥ सो महावज्र अलंकार जांनिये । उदाहरण । स रि ग रि । स रि । स रि ग म । १ । रि ग म ग । रि ग । रि ग म प । २ । ग म प म । ग म । ग म प ध । ३ । म प ध प । म प । म प ध नि । ४ । प ध नि ध । प ध । प ध नि स । ५ । ऐसें सब ठोर जांनिये ॥ इति **महावज्र अलंकार संपूर्णम्** ॥

३ **अथ निर्दोष अलंकारको लछन लिख्यते** ॥ जहां पहले दोय स्वरको उच्चार करि पहले स्वर तें लेकें चोथे स्वर तांई आरोह कीजिये । ऐसें कला होय ॥ सो निर्दोष अलंकार जांनिये । उदाहरण ॥ स रि । स रि ग ग । रि ग । रि ग म प ॥ ग म । ग म प ध । म प । म प ध नि ॥ प ध । प ध नि स ॥ ऐसें सब ठोर जांनिये ॥ **इति निर्दोष अलंकारको लछन संपूर्णम्** ॥

४ **अथ सीर अलंकारको लछन लिख्यते** ॥ जहां पहले दोय स्वरको दोय दोय वेर उच्चार करि ॥ फेर तीसरे स्वरकों उच्चार करि पहले स्वर तें लेकें चोथे स्वर तांई आरोह कीजिये ॥ ऐसें कला होय सो सीर अलंकार जांनिये ॥ उदाहरण । स रि । स रि ग । स रि ग म ॥१॥ रि ग । रि ग म । रि ग म प ॥ २ ॥ ग म । ग म प । ग म प ध ॥ ३ ॥ म प । म प ध । म प ध नि ॥ ४ ॥ प ध । प ध नि । प ध नि स ॥ ५ ॥ ऐसें सब ठोर जांनिये ॥ **इति सीर अलंकारको लछनसंपूर्णम्** ॥

५ **अथ कोकिल अलंकारको लछन लिख्यते** ॥ जहां पहले तीन स्वरकों उच्चार करि फेर पहले स्वर तें लेकें चोथे स्वर तांई आरोह करिये ॥ ऐसें कला होय ॥ सो कोकिल अलंकार जांनिये ॥ उदाहरण ॥ स रि ग । स रि ग म ॥ १ ॥ रि ग म । रि ग म प ॥ २ ॥ ग म प । ग म प ध ॥ ३ ॥ म प ध । म प ध नि ॥ ४ ॥ प ध नि । प ध नि स ॥ ५ ॥ ऐसें सब ठोर जांनिये ॥ **इति कोकिल अलंकारको लछन संपूर्णम् ॥**

६ **अथ आवर्त अलंकारको लछन लिख्यते** ॥ जहां पहले दोय स्वरको उच्चार करि । फेर तीसरे दूसरे स्वरको उच्चार करिये फेर पहले दोय स्वरको दोय वेर उच्चार करि ॥ पहले स्वर तें लेकें चोथे स्वरतांई आरोह कीजिये ऐसें कला होय सो आवर्त अलंकार जांनिये । उदाहरण ॥ स रि ग रि । स रि स रि । स रि म म ॥ १ ॥ रि ग म ग । रि ग रि ग । रि ग म [illegible] ॥ २ ॥ ग म प म । ग म ग म । ग म प ध ॥ ३ ॥ म प [illegible] प म प । म प ध नि ॥ ४ ॥ प ध नि ध । प ध प ध । प ध नि स ॥ ५ ॥ ऐसें सब ठोर जांनिये ॥ **इति आवर्त अलंकार संपूर्णम् ॥**

७ **अथ सदानंद अलंकारको लछन लिख्यते** ॥ जहां च्यार च्यार स्वरको क्रमसों आरोह होय । ऐसें कला कीजिये ॥ सो सदानंद अलंकार जांनिये । उदाहरण । स रि ग म । १ । रि ग म प । २ । ग म प ध । ३ । म प ध नि । ४ । प ध नि स । ५ सुद्ध मे[illegible]के ठोर जांनिये ॥ **इति सदानंद अलंकार संपूर्णम्** ॥ जांनिये ॥ [illegible]हां

अथ रागनके अंग पांच हैं तिनके नाम लिख्यते [illegible] संपूर्ण मेलको एक । १ । जव । २ । संख । ३ । पद्माकार । **मेल भेद संपूर्णम् ॥**

१ **अथ चक्राकार अलंकारको लक्षण लिख्य**भेद लिख्यते ॥ ग ग ग म प च्यार वेर उच्चार करि ॥ प्रथम स्वरको । स रि ग । नि ॥ ध नि ध स [illegible] म फेर दूसरे स्वरको तीन वेर उच्चार कीजि । स रि म **पद्माकार अलं** ति चक्राकार अलंकार जांनिये ॥ उदाहरण

। ३ । ग ग ग ग रि ग ग ग । २ । म म म म ग म म म । ३ । प प प प म प प प । ४ । प प प प प प प प । ५ । नि नि नि नि ध नि नि नि । ६ । स स स स नि स स स ॥ ७ ॥ ऐसें सब ठोर जांनिये ॥ **इति चक्राकार अलंकार संपूर्णम् ॥**

२ **अथ जव अलंकारको लक्षण लिख्यते** ॥ जहां सातो स्वरको उच्चार करि ॥ अंतको एक एक स्वर छोडिके अवरोह कीजिये ॥ ऐसें या क्रमसों पहले एक स्वर लेतें सात स्वरनके एक एक स्वर छोडिये ॥ सो जव अलंकार जांनिये ॥ उदाहरण ॥ स रि ग म प ध नि । स नि ध प म ग रि स । २ । स रि ग म प ध नि । ध प म ग रि स ॥ स रि ग म प ध प म ग रि स ॥ स रि ग म प म ग रि स । स रि ग म ग रि स । स रि ग रि स ॥ स रि स । स ॥ **इति जव अलंकार संपूर्णम् ॥**

३ **अथ शंख अलंकारको लक्षण लिख्यते** ॥ जहां मूर्छनाके पिछले दीर्घ स्वरको दोय दोय वेर उच्चार करि । वाके नीचले दोय स्वरको अवरोह क्रमसों उच्चार कीजिये ॥ या क्रमसों पहले स्वर तांई आवनो ऐसी रचना होय । सो शंख अलंकार जांनिये ॥ उदाहरण । सा सा नि धा नि नि ध प ॥ धा धा प म पा पा म ग ॥ मा मा ग रि ॥ गा गा रि स ॥ ऐसें सब ठोर जांनिये ॥ **इति शंख अलंकार संपूर्णम् ॥**

४ **अथ स॰ ...कार अलंकारको लक्षण लिख्यते** ॥ जहां पहले दोय स्वरको दोय... तें लेकें ... करि प्रथम एक स्वरका तीन वेर उच्चार कीजिये ॥ फेर ...नको उच्चार करि ॥ तीसरे स्वरको दोय वेर उच्चार की- अलंकार जा... ...क्रमसों कला होय ॥ सो पद्माकार अलंकार जांनिये । ... ग । रि ग ... रि स सस रि ग ग ॥ रि ग रि रि रि ग म म ॥ ग ... ग ग ग म प म प । ... प ॥ म प म म म प ध ध ॥ प ध ष प ... ध नि नि ॥ ध नि ध स ॥ ५ ... ध नि स स ॥ ऐसें सब ठोर जांनिये ... ति पद्माकार अलंकार संपूर्णम् ॥

५ **अथ वारिद अलंकारकोलक्षण लिख्यते ॥** जहां पहले स्वरको उच्चार करि ॥ पिछले स्वरको तीन वेर उच्चार कीजिये ॥ ओर क्रमसों पिछलो एक एक स्वर छोडिके यह रिति कीजिये ॥ जहां तांई पहले स्वर पे आवै तहां तांई सो वारिद अलंकार जांनिये । उदाहरण । स नि नि नि । स ध ध ध । स प प प । स म म म । स ग ग ग । स रि रि रि । स स स स । ऐसें सब ठोर जांनिये । **इति वारिद अलंकार संपूर्णम् ॥ ॥**

इति त्रेसटी मुख्य अलंकार ओर पांच रागोंकें अंगके मिलिके अडसटि अलंकार संपूर्णम् ॥

कितने हु राग अलंकार विना कहें है तोभी उन्हूमें ये अलंकार साधिये स्वर ताल ओर तांनके लिये ॥ अरु राग तो तीन प्रकारके कहेहें । यातेयह। अलंकार भी तीन प्रकारके जांनिये । ओर ये गिनके मेल अनंत हें ॥ याते मेलके जोगसों अलंकार अनंत जांनिये ॥ **इति अलंकार अधिकार संपूर्णम् ॥**

अथ अनूपविलासके मतसों मेलको लक्षण लिख्यते ॥

वरतिवमे जाके रागकी उत्पत्ति होय । सो स्वरको अनूप कहिये । मूर्छना क्रमसों वा सुद्ध तांन वा कूट तांन क्रमसों आरोह अवरोह करि। स्वरनकी रचनासों मेल जांनिये ॥ सो मेल सुद्ध स्वरनसों होय तो मेल सुद्ध स्वर जांनिये॥ अरु विकृत स्वरनसों होय सो विकृत स्वरन जांनिये ॥ तहां सुद्ध सातों स्वरसों भयो जो मेल सो संपूर्णम् जांनिये॥ अरु सुद्ध छह स्वरनसों भयो जो मेल सो षाडव जांनिये ॥ अरु सुद्ध पांच स्वरनसों भयो जो मेल सो औडव जांनिये ॥ ऐसें सुद्ध मेलके तीन भेद जांनिये ॥ अरु विकृतस्वरन मेल विकृत स्वरनतें जांनिये ॥ तहां सुद्ध मेलके संपूर्ण षाडव औडवके भेद लिख्यते ॥ तहां सुद्ध संपूर्ण मेलको एक भेद हें ॥ स रि ग म प ध नि स ॥ **इति संपूर्ण सुद्ध मेल भेद संपूर्णम् ॥**

अथ सुद्ध षाडव मेलके छह भेद हें तिनके भेद लिख्यते ॥ उदाहरण ॥ स ग म प ध नि । १ । स रि म प ध नि । २ । स रि ग प ध नि । ३ । स रि ग म ध नि । ४ । स रि ग म प नि । ५ । स रि म म प ध । ६ । म

इति सुद्ध षांडव मेलके भेद संपूर्णम् ॥

अथ शुद्ध औडव मेलके पंध्रह भेद हें । १५ । तिनके स्वरूप लिख्यते ॥ स म प ध नि । १ । स रि प ध नि । २ । स रि ग ध नि । ३। स रि ग म नि । ४ । स रि ग प नि । ५ । स ग प ध नि । ६ । स ग म ध नि । ७ । स ग म प नि । ८ । स ग म प ध । ९ । स रि म ध नि ।१०। स रि म प नि । ११ । स रि म प ध । १२ । स रि ग प नि । १३ । स रि ग प ध । १४ । स रि ग म ध । १५ ।

अथ विकृत स्वरन मेल तीन प्रकारको है । संपूर्ण । १ । षाडव । २ । औडव । ३ । ऐसें तहां जांमें रिषभ कोमल होय ॥ ऐसो जो संपूर्ण विकृतस्वरन मेल ताको एक भेद हे । उदाहरण ॥ स रि ग म प ध नि । १ । यहां रिषभ कोमल हें ॥

अथ विकृत स्वर षाडव मेलके पांच भेद हे तिनके उदाहरण लिख्यते ॥ स रि स रि म प ध नि । १ । स रि स रि ग प ध नि । २ । स रि स रि ग म ध नि । ३ । स रि स रि ग म प नि । ४ । स रि स रि ग प ध नि । ५ । इहां विकृत स्वर जितायवेकों रिषभ हि दूरी कीजे ॥

अथ विकृत स्वर औडव मेलके भेद दस हें तिनके उदाहरण लिख्यते ॥ स रि स रि प ध नि । १ । स रि स रि ग ध नि । २ । स रि स रि ग म नि । ३ । स रि स रि ग म प । ४ । स रि स रि प ध नि । ५ । स रि स रि म प नि । ६ । स रि स रि म प ध । ७ । स रि स रि ग प नि । ८ । स रि स रि ग प ध । ९ । स रि स रि ग म ध । १० । इति औडवमेल संपूर्णम् ॥

अथ जा विकृत स्वरन मेलमें तीव्र गांधार होय ता विकृत स्वर मेल के भेद लिख्यते ॥ तहां संपूर्णको एक भेद हें । उदाहरण । स रि ग म प ध नि ॥ इहां गांधार तीव्र जांनिये ॥

अथ तीव्र गांधार विकृतस्वर मेलके क्रमसों एक एक स्वर दूरि कीये षड्ज विना दूरि किये पांच भेद षाडवके हें । तिनके उदाहरण लिख्यते । स ग म प ध नि । १ । स रि ग प ध नि । २ । स रि ग म ध नि । ३ । स रि ग म नि । ४ । स रि ग म प ध । ५ । इन भेदनमें तीव्र गांधार विकृत हें । यातें यही रूप ।

अथ तीव्र गांधार विकृत स्वर मेलके क्रमसों षड्ज विना दोय दोय स्वर दूरि कीजिये ॥ औडवके छह भेद हे तिनके उदाहरण लिख्यते । स रि ग ध नि । १ । स रि ग म नि । २ । स रि ग म प । ३ । स रिं ग प नि । ४ । स रि ग प ध । ५ । स रि ग म ध । ६ । **इति तीव्र गांधार जुत विकृत स्वर मेलके संपूर्ण षांडव औडव भेद संपूर्ण ॥**

अथ [illegible]व्रतर मध्यम जुत विकृत स्वर मेलके भेद लिख्यते ॥ जहां जामें ती[illegible] मध्यम होय ॥ ऐसो जो विकृत स्वर मेल सो संपूर्ण षांडव औडव है [illegible] एकपूर्णको एक । १ । भेद हे ॥ उदाहरण ॥ स रि ग म प ध नि ॥ इहां [illegible] । १ । व्रतर जांनिये ॥

अथ [illegible] मध्यम जुत विकृत स्वरके क्रमसों षड्ज विना एक एक स्वर दूरि किये [illegible] च भेद षांडवके हें तिनके उदाहरण लिख्यते ॥ स ग म प ध [illegible] । १ । स रि म प ध नि । २ । स रि ग प ध नि । ३ । [illegible] प नि । ४ । स रि ग म प ध । ५ ।

अथ तीव्रतर मध्यम जुत विकृत स्वर मेलके क्रमसों षड्ज विना दोय दोय स्वर दूरि कीये तें । औडवके दस भेद हें तिनके उदाहरण लिख्यते ॥ स म प ध नि । १ । स रि ग ध नि । २ । स रि ग म नि । ३ । स रि ग म प । ४ । स ग म ध नि । ५ । स ग म प नि । ६ । स ग म प ध । ७ । स रि म प नि । ८ । स रि म प ध । ९ । स रि ग म ध । १० । इहां मध्यम तीव्रतर जांनिये ॥ **इति तीव्रतर मध्यम जुत विकृत स्वर मेलके । संपूर्ण षाडव औडव भेद संपूर्णम् ॥**

अथ कोमल धैवत जुत विकृत स्वर मेलके संपूर्ण षांडव औडके भेद लिख्यते ॥ जामें धैवत स्वर कोमल होय ॥ ऐसो जो विकृत स्वर मेल सो संपूर्ण एक भांतिको हे उदाहरण । स रि ग म प ध नि । १ ।

अथ कोमल धैवत जुत विकृत स्वर मेलके क्रमसों षड्ज विना एक एक स्वर दूरि किये षांडवके पांच भेद हें तिनके उदाहरण लिख्यते ॥ [illegible] ग म प ध नि । १ । स रि म प ध नि । २ । स रि ग प ध नि । [illegible] म [illegible] रि ग म ध नि । ४ । स रि ग म प ध । ५ ।

अथ धैवत जुत विकृत स्वर मेलके क्रमसों षड्ज विना दोय दोय स्वर दूरि किये । औडवके दस भेद हैं तिनके उदाहरण लिख्यते ॥ स म प ध नि । १ । स रि प ध नि । २ । स रि ग प नि । ३ । स ग प ध नि । ४ । स ग म ध नि । ५ । स रि म ध नि । ६ । स रि ग ध नि । ७ । स रि ग म ध । ८ । स रि म प ध । ९ । स ग म प ध ।१०। **इति कोमल धैवत जुत विकृत स्वर मेलके भेद संपूर्णम् ॥**

अथ तीव्र निषाद जुत विकृत स्वर मेलके संपूर्ण षांडव औडव भेद लिख्यते ॥ जामें निषाद तीव्र होय ॥ ऐसो जो विकृत स्वर मेल सो संपूर्ण एक भांतिको हे ॥ ताको उदाहरण ॥ स रि ग म प ध नि३ । १ । इहां निषाद तीव्र जांनिये ॥

अथ तीव्र निषाद जुत विकृत स्वर मेलके क्रमसों षड्ज विना एक एक स्वर दूरि किये षांडवके भेद पांच हे तिनके उदाहरण ३ लिख्यते ॥ स ग म प ध नि । १ । स रि म प ध नि । २ । स रि ग प ग नि । ३ । स रि ग म ध नि । ४ । स रि ग म प नि । ५ । इहां निषाद ... जांनिये ॥

अथ तीव्र निषाद जुत विकृत स्वर मेलके क्रमसों षड्ज विना दोय दोय स्वर दूर कीये औडवके दस भेद हें तिनके उदाहरण लिख्यते । स म प ध नि ।३।१। स रि प ध नि । ३ । २ । स रि ग ध नि । ३ ।३। स रि ग म नि ।३। ।४। स ग प ध नि । ३ । ५ । स ग म ध नि । ३ । ६ । स ग म प नि । ३ । ७ । स रि म ध नि । ३ । ८ । स रि म प नि । ३ । ९ । स रि ग प नि । ३ । १० । **इति तीव्र निषाद जुत विकृत स्वर मेलके भेद संपूर्णम् ॥**

अथ दो दो स्वर जहां विकृत होय अर पांच स्वर सुद्ध होय ॥ ऐसो जो विकृत स्वर मेल ताके भेद लिख्यते ॥ जहां रिषभ कोमल होय ॥ ओर गांधार पूर्वसंज्ञक होय ॥ सो विकृत स्वर मेल संपूर्णतो ... भांतिको हे ॥ ताको उदाहरण ॥ स रि ग म प ध नि । १ ।

अथ विकृत स्वर मेलके क्रमसों षड्ज विना एक एक स्वर दूरि किये ... भेद च्यार हैं तिनके उदाहरण लिख्यते । सरि सरि गरि पधनि । १ ।

सरि सरि गरि मधनि । २ । सरि सरि गरि मपनि । ३ । सरि सरि गरि मपध । ४ ।

अथ या विकृत स्वर मेलके क्रमसों षड्ज विना दोय दोय स्वर दूर कियेतें औडवके छह भेद हें ताके उदाहरण लिख्यते । स रि स रि रि ग ध नि । १ । स रि स रि रि ग म नि । २ । स रि स रि रि ग म प । ३ । स रि स रि रि ग ध प । ४ । स रि स रि रि ग नि प । ५ । स रि स रि रि म ध नि । ६ । इन भेदनमें रिषभ कोमल है ॥ अरु गांधार पूर्व है ॥

अथ रिषभ कोमल होय । अरु गांधार तीव्र होय । ऐसो जो विकृत स्वर मेल सों संपूर्ण जो एक भांतिको हे ॥ ताको उदाहरण लिख्यते ॥ स रि ।२। ग ।३। म प ध नि । १ ।

अथ या विकृत स्वर मेलके क्रमसों षड्ज विना एक एक स्वर दूरि कींये षांडवके च्यार भेद हैं तिनके उदाहरण लिख्यते । स रि । २ । ग । ३ । प ध नि । १ । स रि । २ । ग । ३ । म ध नि । २ । स रि ।२। ग । ३ । म प नि । ३ । स रि । २ । ग । ३ । म प ध । ४ ।

अथ या विकृत स्वर मेलकें क्रमसों षड्ज विना दोय दोय स्वर दूरि किये औडवके छह भेद तिनके उदाहरण लिख्यते ॥ स रि । २ । ग । ३ । ध नि । १ । स रि । २ । हे ग । ३ । म नि । २ । स रि । २ । ग । ३ । म प । ३ । स रि । २ । ग । ३ । ग म प । ४ । स रि । २ । ग । ३ । प ध । ५ । स रि । २ । ग । ३ । म ध । ६ । इन भेदनमें रिषभ तो कोमल हें ॥ अरु गांधार तीव्र हें ॥

अथ रिषभ तीव्रतर होय । अरु गांधार तीव्र होय । एसो जो विकृत स्वर मेल सो संपूर्ण तो एक भांतिको हे ताको उदाहरण लिख्यते ॥ स रि । ५ । ग म प ध नि । १ ।

अथ या विकृत स्वर मेलके क्रमसों षड्ज विना एक एक स्वर दूरि कींये षाडवके च्यार भेद हें तिनके उदाहरण लिख्यते । स रि । ५ । ग । १ । प ध नि । १ । स । रि । ५ । ग । १ । म ध नि । २ । स रि । ५ । ग । १ । म प नि । ३ । स रि । ५ । ग । १ । म प ध । ४ ।

अथ या विकृत स्वर मेलके क्रमसों षड्ज विना दोय दोय स्वर दूरि किये औडवके छह भेद हैं तिनके उदाहरण लिख्यते ॥ स रि । ५ । म । १ । ध नि । १ । स रि । ५ । ग । १ । म नि । २ । स रि । ५ । ग । १ । म प । ३ । स रि । ५ । ग । १ । प नि । ४ । स रि । ५ । ग । १ । प ध । ५ । स रि । ५ । ग । १। म ध । ६ । इन भेदनमें रिषभ तो तीव्रतर जांनिये ॥ और गांधार तीव्र जांनिये ॥

अथ गांधार तीव्र होय अरु मध्यम तीव्र होय ऐसो जो विकृत स्वर मेल सो संपूर्ण तो एक भांतिको है ताको उदाहरण लिख्यते ॥ स रि ग म प ध नि । १।

अथ या विकृत स्वर मेलके क्रमसों षड्ज विना एक एक स्वर दूरि कीये तें षाडवके च्यार भेद हैं तिनके उदाहरण लिख्यते ॥ स ग म । २ । प ध नि । १ । स रि ग म । २ । ध नि । २ । स रि ग म । २ । प नि । ३ । स रि ग म । २ । प ध । ४ ।

अथ या विकृत स्वर मेलके क्रमसो षड्ज विना दोय दोय स्वर दूरि कीये तें औडवके छह भेद हैं तिनके उदाहरण लिख्यते ॥ स ग म ध नि । १ । स ग म प नि । २ । स ग म प ध । ३ । स रि ग म प । ४ । स रि ग म नि । ५ । स रि ग म ध । ६ । इन भेदनमें गांधार तीव्रतर जांनिये ॥

अथ गांधार तीव्रतम होय अरु मध्यम तीव्रतर होय ऐसो जो विकृत स्वर मेल सो संपूर्ण तो एक भांतिको है ताको उदाहरण लिख्यते ॥ स रि ग म प ध नि । १ ।

अथ या विकृत स्वर मेलके क्रमसों षड्ज विना एक एक स्वर दूरि किये षाडवके च्यार भेद हैं तिनके उदाहरण लिख्यते ॥ स ग म प ध नि । १ । स रि ग म ध नि । २ । स रि ग म प नि । ३ । स रि ग म प ध । ४ ।

अथ या विकृत स्वर मेलके क्रमसों षड्ज विना दोय दोय स्वर दूरि किये औडवके छह भेद हैं तिनके उदाहरण लिख्यते ॥ स रि ग । ३ । म । २ । नि । १ । स रि ग । ३ । म । २ । प । २ । स ग म ध नि । ३ ।

स म म प नि । ४ । स ग । ३ । म । २ । प ध । ५ । स रि ग म ध । ६ । इन भेदनमें गांधार तो तीव्रतम जांनिये ॥ अरु मध्यम तीव्रतम जांनिये ॥

अथ मध्यम तीव्रतर होय अरु धैवत कोमल होय ॥ ऐसो जो विकृत स्वर मेल सों संपूर्ण तो एक भांतिको हें ताको उदाहरण लिख्यते ॥ स रि ग म । ३ । प ध नि । १ ।

अथ या विकृत स्वर मेलकें क्रमसों षड्ज विना एक एक स्वर दूरि किये तें षाडवके च्यार भेद हें तिनके उदाहरण लिख्यते। स ग म । ३ । प ध नि । १ । स रि म । ३ । प ध नि । २ । स रि ग म ।३। ध नि । ३ । स रि ग म । ३ । प ध । ४ ।

अथ या विकृत स्वर मेलके क्रमसों षड्ज विना दोय दोय स्वर दूरि किये तें औडवके छह भेद हें तिनके उदाहरण लिख्यते ॥ स म प ध नि । १ । स ग म ध नि । २ । स ग म प ध । ३ । स रि म । ३ । ध नि । ४ । स रि म । ३ । प ध रि । ५ । स रि ग ग ध । ६ । इन भेदनमें मध्यम तीव्रतर जांनिये । ओर धैवत कोमल जांनिये ॥

अथ कोमल धैवत होय। ओर निषाद तीव्र होय । ऐसो जो विकृत स्वर मेल सो संपूर्ण तो एक भांतिको हे ताको उदाहरण लिख्यते ॥ स रि ग म प ध नि । १ । अथ या विकृत स्वरके मेल सों षड्ज विना एक एक स्वर दूरि किये तें षांडवके च्यार भेद हें तिनके उदाहरण लिख्यते ॥ स ग म प ध नि । १ । स रि म प ध नि । २ । स रि ग प ध नि । ३ । स रि ग म ध नि । ४ ।

अथ या विकृत स्वर मेलकें क्रमसों षड्ज विना दोय दोय स्वर दूरि कीयेतें औडवके छह भेद तिनके उदाहरण लिख्यते ॥ स म प ध नि ।१। स रि प ध नि ।२। स रि ग ध नि । ३ । म ग प ध नि । ४ । स ग म ध नि । ५ । स नि म ध नि । ६ । इन भेदममें धैवत कोमल जांनिये । ओर निषाद तीव्र जांनिये ॥

अथ मध्यम तीव्रतर होय अरु निषाद तीव्र होय ऐसो जो विकृत स्वर मेल सों संपूर्ण तो एक भांतिको हे ताको उदाहरण लिख्यते ॥ स रि ग म प ध नि ।१।

अथ या विकृत स्वर मेलके क्रमसों षड्ज विना एक एक स्वर दूरि कीयेतें षांडवके च्यार भेद हें ताके उदाहरण लिख्यते ॥ स म म । २ । प ध नि । १ । स रि म प ध नि । २ । स रि ग म प नि । ३ । स रि ग म ध नि। ४ ।

अथ या विकृत स्वर मेलकें क्रमसों षड्ज विना दोय दोय स्वर दूरि कीये तें। औडवके पांच भेद हे तिनके उदाहरण लिख्यते॥ स म प ध नि।१।स रि म ध नि।२।स ग म ध नि। ३। स रि प ध नि। ४। स ग म प नि। ५।

अथ यामें मध्यम तीव्रतर अरु निषाद तीव्रतर जांनिये। अथ जामें विकृत तीम स्वर होय ओर च्यार सुद्ध स्वर होय ता विकृत स्वर मेलके भेद लिख्यते॥

अथ रिषभ स्वर कोमल होय अरु गांधार तीव्रतर होय अरु मध्यम तीव्रतर होय। ऐसो जो विकृत स्वर मेल सों संपूर्ण तो एक भांतिको हे ताको उदाहरण लिख्यते॥ स रि ग म प ध नि।१।या विकृत स्वर मेलकें क्रमसों षड्ज विना एक एक स्वर दूर किये षांडवके तीन भेद हें तिनके उदाहरण लिख्यते॥ स रि ग म ध नि। १। स रि ग म प नि। २। स रि ग म प ध। ३।

अथ या विकृत स्वर मेलकें क्रमसों षड्ज विना दोय दोय स्वर दूर कियेतें औडवके सात भेद हें तिनके उदाहरण लिख्यते॥ स रि ग प नि। १। स रि ग म प।२। स रि ग म नि। ३। स रि ग प ध। ४। स रि म प नि। ५। स रि म प ध। ६। स रि ग म ध। ७। इन भेदनमें रिषभ कोमल जांनिये। गांधार तीव्र जांनिये॥ अरु मध्यम तीव्रतर जांनिये॥

अथ तीव्र गांधार होय अरु मध्यम तीव्रतर होय धैवत कोमल होय। ऐसो जो विकृत स्वर मेल सो संपूर्ण तो एक भांतिको हे। ताको उदाहरण लिख्यते॥ स रि ग म प ध नि। १।

अथ या विकृत स्वर मेलके क्रमसों षड्ज विना एक एक स्वर दूरि कीयें षांडवके च्यार भेद हें तिनके उदाहरण लिख्यते॥ स ग म प ध नि। १। स रि म प ध नि। २। स रि ग म ध नि। ३। स रि ग म प ध। ४।

अथ या विकृत स्वर मेलके क्रमसों षड्ज विना दोय दोय स्वर दूर कीयेतें। औडवके छह भेद हें तिनके उदाहरण लिख्यते॥ स रि ग ध नि। १। स रि ग प नि। २। स ग म ध नि। ३। स ग म प नि। ४। स रि ग प ध। ५। स रि ग म ध। ६। इन भेदनमें तीव्र गांधार जानिये। तीव्रतर मध्यम जांनिये॥ अरु धैवत कोमल जांनिये॥

अथ तीव्रतर गांधार होय। अरु तीव्रतर मध्यम हाय। धैवत,

तामें कोमल होय ॥ ऐसो जो विकृत स्वर मेल सो संपूर्ण तो एक भांतिको है ताको उदाहरण लिख्यते ॥ स रि ग म प ध नि । १ ।

अथ या विकृत स्वर मेलके क्रमसों षड्ज विना एक एक स्वर दूर किये ते षांडवके तीन भेद है तिनके उदाहरण लिख्यते ॥ स रि ग प ध नि । १ । स रि ग म ध नि । २ । स रि ग म प नि । ३ ।

अथ या विकृत स्वर मेलके क्रमसों षड्ज विना दोय दोय स्वर दूरि किये तो औडवके तीन भेद हैं तिनके उदाहरण लिख्यते । स ग म ध नि । १ । स ग म प ध । २ । स रि ग म ध । ३ । इन भेदनमें गांधार तीव्रतर मध्यम तीव्रतर जांनिये । अरु धैवत कोमल जांनिये ॥ अथ तीव्रतर मध्यम होय कोमल धैवत होय ॥ अरु पूर्व निषाद होय एसो जो विकृत स्वर मेल सो संपूर्ण तो एक भांतिको ताको उदाहरण लिख्यते । स रि ग म प ध नि ॥ १ ॥

अथ या विकृत स्वर मेलतें क्रमसों एक एक स्वर दूर किये तें षाडवके तीन भेद हैं तिनके उदाहरण लिख्यते ॥ स ग म प ध नि । १ । स रि म प ध नि । २ । स रि ग म ध नि । ३ ।

अथ या विकृत स्वर मेलतें क्रमसों षड्ज विना दोय दोय स्वर दूरि किये औडवके तानके तीन भेद हैं तिनके उदाहरण लिख्यते ॥ स म प ध नि । १ । स रि म ध नि । २ । स ग म ध नि । ३ । इनमें तीव्रतर मध्यम है अरु कोमल धैवत है पूर्व जामें निषाद जांनिये ॥

अथ मध्यम अरु धैवत तीव्रतर होय अरु निषाद तीव्र होय ॥ एसो जो विकृत स्वर मेल सो संपूर्ण तो एक भांतिको हैं ताको उदाहरण लिख्यते ॥ स रि ग म प ध नि । १ ।

अथ या विकृत स्वरन मेलके क्रमसों षड्ज विना एक एक स्वर दूरि किये तें षांडव तानके च्यार भेद हैं तिनके उदाहरण लिख्यते ॥ स रि ग म ध नि । १ । स ग म प ध नि । २ । स रि म प ध नि । ३ । स रि ग प ध नि । ४ ।

अथ या विकृत स्वर मलतें क्रमसों षड्ज विना दोय दोय स्वर दूरि कियेतें औडवके छह भेद है तिनके उदाहरण लिख्यते ॥ स म प ध नि । १ । स रि ग म नि । २ । स ग म ध नि । ३ । स ग म प नि । ४ । स रि म ध नि

। ५ । स रि म प नि । ६ । इन भेदनमें धैवत स्वर मध्यम स्वर तीव्रतर जांनिये॥ अरु निषाद तीव्र जांनिये ॥

अथ रिषभ कोमल पूर्व हो अरु मध्यम तीव्रतर होय धैवत कोमल होय ऐसो जो विकृत स्वर मेल सों संपूर्ण तो एक भांतिको है ताको उदाहरण लिख्यते ॥ स रि ग म प ध नि । १ ।

अथ या विकृत स्वर मेलके षड्ज विना एक एक स्वर दूर कीये षड्जके च्यार भेद हें तिनके उदाहरण लिख्यते ॥ स रि म प ध नि । १ । स रि ग प ध नि । २ । स रि ग म ध नि । ३ । स रि ग म प ध । ४ ।

अथ या विकृत स्वर मेलकें क्रमसों षड्ज विना दोय दोय स्वर दूरि किये औडवके पांच भेद हे तिनके उदाहरण लिख्यते ॥ स रि प ध नि। १ । स रि ग ध नि । २ । स रि ग म ध । ३ । स रि म ध नि । ४ । स रि म प ध । ५ । इन भेदनमें रिषभ कोमल पूर्व जांनिये मध्यम तीव्रतर जांनिये ॥ अरु धैवत कोमल जांनिये ॥

अथ रिषभ तीव्रतर होय ॥ अरु गांधार तीव्रतम होय अरु धैवत कोमल होय तिनको ऐसो जो विकृत स्वर मेल सो संपूर्ण तो एक भांतिको हें ताको उदाहरण लिख्यते ॥ स रि ग म प ध नि । १ ।

अथ या विकृत स्वर मेलके क्रमसों षड्जें विना एक एक स्वर दूर कियेते षांडवके च्यार भेद हें विनके उदाहरण लिख्यते ॥ स रि म प ध नि । १ । स रि ग म ध नि । २ । स रि ग प ध नि । ३ । स रि ग म प ध । ४ । या विकृत स्वर मेलके क्रमसों षड्ज विना दोय दोय स्वर घटाये ते औडवके च्यार भेद हे तिनके उदाहरण लिख्यते ॥ स रि ग ध नि । १ । स रि म प ध । २ । स रि ग प ध । ३ । स रि ग म ध । ४ । इन भेदनमें रिषभ तीव्रतर जांनिये । गांधार तीव्रतम जांनिये । अरु धैवत कोमल जांनिये ॥

अथ चार स्वर तो विकृत होय ॥ अरु तीन स्वर सुद्ध हो तहां गांधार-तीव्र होय । अरु मध्यम तीव्रतम होय धैवत निषाद तीव्रतर होय । ऐसो जो विकृतस्वर मेल सो संपूर्ण तो एक भांतिको हें ताको उदाहरण लिख्यते॥ स रि ग म प ध नि । १ ।

अथ या विकृतस्वर मेलकें क्रमसों षड्ज विना एक एक स्वर दूरि कीयेते षांडवके च्यार भेदहें तिनके उदाहरण लिख्यते ॥ स ग म प ध नि। १। स रि ग प ध नि। २। स रि ग म ध नि। ३। स रि ग म प नि। ४।

अथ या विकृतस्वर मेलकें क्रमसो षड्ज विना दोय दोय स्वर दूरि कीये औडवके छह भेद हें तिनके उदाहरण लिख्यते ॥ स रि ग ध नि। १। स रि ग प नि। २। स ग म प नि। ३। स ग म ध नि। ४। स म प ध नि। ५। स रि ग म नि। ६। इन भेदनमें गांधार तीव्र जांनिये मध्यम तीव्रतर जांनिये। धैवत निषाद तीव्रतर जांनिये ॥

अथ अतितीव्रतम गांधार होय अरु तीव्रतर मध्यम होय कोमल जांमें धैवत होय। अरु निषादपूर्व होय ॥ ऐसो जो विकृतस्वर मेल सों संपूर्ण तो एक भांतिको हे ताको उदाहरण लिख्यते ॥ स रि ग म प ध नि। १।

अथ या विकृतस्वर मेलके क्रमसों षड्ज विना एक एक स्वर दूर किये षांडवके दोय भेद हें तिनके उदाहरण लिख्यते ॥ स रि ग म ध नि। १। स रि ग म प नि। २।

अथ या विकृतस्वर मेलके क्रमसों षड्ज विना दोय दोय स्वर दूरि किये तें औडवके दोय भेद हे तिनके उदाहरण लिख्यते ॥ स रि ग म नि। १। स रि म ध नि। २। इन भेदनमें अतितीव्र गांधार जांनिये तीव्रतर मध्यम जांनिये ॥ अरु कोमल धैवत जांनिये ॥ निषादपूर्व जांनिये ॥

अथ रिषभ कोमल होय अरु पूर्व गांधार होय मध्यम जांमें तीव्रतर होय धैवत कोमल होय पूर्व निषाद होय ऐसो जो विकृतस्वर मेल सो संपूर्ण तो एक भांतिको हें ताको उदाहरण लिख्यते। स रि ग म प ध नि। १।

अथ या विकृतस्वर मेलतें क्रमसों षड्ज विना एक एक स्वर दूरि कियेतें षांडवको एक भेद हें ताको उदाहरण लिख्यते ॥ स रि ग म ध नि। १। इममें रिषभ कोमल होय पूर्व गांधार होय मध्यम तीव्रतर जांनिये ॥ धैवत कोमल जांनिये ॥ अरु पूर्व निषाद जांनिये ॥

अथ रिषभ कोमल गांधार तीव्रतर कोमल–धैवत तीव्र निषाद जांनिये ॥

ऐसी जो विकृतस्वर मेल सो संपूर्ण तो एक भांतिको हें ताको उदाहरण लिख्यते ॥ स रि ग म प ध नि । १ ।

अथ या विकृतस्वर मेलके क्रमसों षड्ज विना एक एक स्वर दूरि कियेतें षांडवको एक भेद हें ताको उदाहरण लिख्यते ॥ स रि ग म ध नि । १ । इनमें रिषभ कोमल जांनिये । अरु गांधार तीव्र जांनिये मध्यम तीव्रतर जांनिये ॥ धैवत कोमल जांनिये ॥ तीव्र निषाद जांनिये ॥

अथ रिषभ कोमल गांधार—तीव्र मध्यम—तीव्रतर अरु धैवत तीव्रतर निषाद तीव्र होय । एसो जो विकृतस्वर मेल सो संपूर्ण तो एक भांतिको हैं ताको उदाहरण लिख्यते । स रि ग म प ध नि । १ ।

अथ या विकृतस्वर मेलके क्रमसो षड्ज विना एक एक स्वर दूर किये तें षांडवको एक भेद हे तिनको उदाहरण लिख्यते ॥ स रि ग म ध नि । १ । इन भेदनमें रिषभ कोमल जांनिये ॥ अरु गांधार तीव्र जांनिये ॥ मध्यम तीव्रतर जांनिये । २ । धैवत तीव्रतर जांनिये । निषाद तीव्र जांनिये ॥

अथ रिषभ तीव्रतर होय गांधार अतितीव्रतम होय अरु मध्यम तीव्र होय धैवत तीव्रतर होय निषाद तीव्र होय । एसो जो विकृत स्वर मेल सो संपूर्ण तो एक भांतिको हें ताको भेद लिख्यते ॥ उदाहरण । स रि ग म प ध नि । १ ।

अथ या विकृत स्वर मेलके क्रमसों षड्ज विना एक एक स्वर दूरि किये ते षांडवको एक भेद हें ताको उदाहरण लिख्यते ॥ स रि ग म ध नि । १ । इन भेदनमें रिषभ तीव्रतर ॥ अरु गांधार अतितीव्रतम । मध्यम तीव्र होय । अरु धैवत तीव्रतर निषाद जांनिये ॥ **इति शुद्ध विकृत स्वर मेलमें संपूर्ण षांडव औडव भेद संपूर्णम् ॥**

प्रथमस्वराध्याय जातिप्रकरण.

अथ जातिनके अंग तेरा हें तिनके नाम संगीत रत्नाकरके मतसों लिख्यते ॥ ग्रह । १ । अंस । २ । तार । ३ । मंद्र । ४ । न्यास । ५ । अपन्यास । ६ । सन्यास । ७ । विन्यास । ८ । बहुत्व

। ९ । अल्पत्व । १० । अंतरमार्ग । ११ । षांडव । १२ । औडव । १३ । इति जातिनके नाम संपूर्णम् ॥

१ **अथ प्रथम ग्रहको लछन लिख्यते** ॥ जो गीतके आदिमें स्वर होय ॥ जांसो गीतके आरंभ होय सो ग्रह जांनिये । सो ग्रह सातों स्वरनमे होत हैं ॥ यातें सात प्रकारको हें । अरु जहां अंस स्वर कह्यो होय ॥ अरु ग्रह स्वर कह्यो होय । अथवा ग्रह कह्यो होय ॥ अंस नही कह्यो होय ॥ तहां ग्रहके कहेतें वा अंसके कहेतें ॥ ग्रह अंस ये दोन्यु जांनिये ॥ **इति ग्रह लछन संपूर्णम्** ॥

२ **अथ अंस लछन लिख्यते** ॥ जो स्वर गांनमें लोकानु रंजन करे । ओर संवादि स्वर ॥ अनुवादि स्वर ए जहांको पोषे है ॥ ओर रागनके प्रयोगमे जो बहुत वेरको आवे जा स्वर सों तार स्वर वा मंद्र स्वरकी रचना होय ॥ जो स्वर मुख्य होय ॥ ओर स्वर जाके संवादि अनुवादि होय आप वाहि होय राजाके सीनाई ॥ ओर न्यास । १ । विन्यास । २ । अपन्यास । ३ । सन्यास । ४ । ग्रह । ५ । इनको सहाय करे सो स्वर अंस जांनिये ॥ **इति अंस लछन संपूर्णम्** ॥

३ **अथ तार लछन लिख्यते** ॥ जहां मध्यम ग्रामकी सप्तकमें जो अंस होय । षड्ज वा मध्यम तिनमें उचे च्यार च्यार स्वरनको आरोह करनो मध्यम ग्रामकी षड्जतें मध्यम ग्रामको पंचम तांई ॥ ओर मध्यम ग्रामके मध्यम तें लेकें मध्यम ग्रामके निषाद तांई । ऐसेहि ओर हू जो अंस होय । ता तें ऊंचे ऊचे स्वरको लेणों । सो तार जानिये ॥ **इति तार लछन संपूर्णम्** ॥

४ **अथ मंद्र लछन लिख्यते** ॥ मध्यम ग्राममें अंस जो षड्ज स्वर वा मध्यम स्वर तातें नीचे स्वरनमें अवरोह करिकें । आयवो मध्यम ग्रामके षड्ज तें लेकें षड्ज ग्रामके षड्ज तांई वा मध्यम ग्रामके मध्य तें लेके षड्ज ग्रामके मध्यम तांई । सो मंद्र स्थान जांनिये । ऐसेहि ओर हू जामे अंस होय । ता तें निचले निचले स्वरमें । आयवो सो हू मंद्रस्थान जांनिये ॥ **इति मंद्रको लछन संपूर्णम्** ॥

५ अथ न्यास लछन लिख्यते ॥ जा स्वरमें गीत समाप्त होय सो स्वर न्यास जांनिये ॥ इति न्यास संपूर्णम् ॥

६ अथ अपन्यास लिख्यते ॥ जो स्वर गीतके प्रथम षड्जमे जो आस्थाई भाग लोकीकमें जाको पीडाबंधी कहत हें । ताकी समाप्तमें जो स्वर आवे ताको अपन्यास जांनिये ॥ इति अपन्यास संपूर्णम् ॥

७ अथ सन्यास लछन लिख्यते ॥ जो स्वर गीतके प्रथम षड्ज जो पीडाबंधी तामें अंस होय ताको विवादि नही होय ॥ ओर अपन्यासको सहाय करतो होय । सो सन्यास जांनिये ॥ इति सन्यास संपूर्णम् ॥

८ अथ विन्यास लछन लिख्यते ॥ जो स्वर पीडाबंधीमें अंसस्वरको विवादि नहि होय ॥ ओर पीडाबंधीके षड्जमें अंतमें आवे सो विन्यास जांनिये ॥ इति विन्यास संपूर्णम् ॥

९ अथ बहुत्वको लछन लिख्यते ॥ बहुत्व कहते स्वरको बारंबार गानेके जमावेको । बरतवो सो बहुत्वहे ॥ सो दोय प्रकारको हें ॥ एक तो अभ्यास कहिये । गायवेमें पकाई तातें होत हें ॥ ओर दुसरो अलंघन कहिये ॥ स्वरको संपूर्ण उच्चार एक दोय वार तातें बहुत्व जांनिये ॥ इति बहुत्व संपूर्णम् ॥

१० अथ अल्पत्वको लछन लिख्यते ॥ जो गायवेमें कूच थोडा स्वर लगाते । अथवा स्वरके आधे उचारिवेतें । स्वरकी जो लघुताई सो अल्पत्व जांनिये ॥ इति अल्पत्व संपूर्णम् ॥

११ अथ अंतरमार्गको लछन लिख्यते ॥ जो स्वर न्यास अपन्यास सन्यास विन्यास इनके स्थानको छोडिके । बीचे बीचेके थोडे थोडे स्वर होय ॥ अरु अंसस्वर गृहस्वर सों मिले होय । और रागमें विचित्रता दिखावत होय ॥ ऐसें स्वरके उच्चारकी जो रचना सो अंतरमार्ग जांनिये ॥ इति अंतरमार्ग संपूर्णम् ॥

१२ अथ षांडव स्वर लछन लिख्यते ॥ छह स्वरन करिकें बांध्यो जो गीत ताही षांडव जांनिये ॥ इति षांडव संपूर्णम् ॥

१३ **अथ औडव लछन लिख्यते** ॥ पांच स्वरनको गीत सो औडव जांनिये ॥
इति औडव संपूर्णम् ॥ इति तेरह जातिके अंग संपूर्णम् ॥

अथ ब्रह्माजीनें संगीतसारको मथिकें अमृतरूप अठारह जाति रागनकी उत्पन्न करि हें तिनको लछन लिख्यते ॥ तहां शुद्ध जाति राग कहि सात हे सात तिनके नाम षड्जादिक सात स्वर जांनिये । षांडवी । १ । आर्षभी । २ । गांधारी । ३ । मध्यमा ।४। पंचमी । ५ । धैवता । ६ । नैषादि । ७ । ए सुद्ध जाति विकृतिस्वरनके मेलतें विकृति जाति होत है ॥ तहां शुद्ध जातिको लछन कहत हें जिनके नाम कह हें । न्यास स्वर । १ । वा अपन्यास स्वर । २ । वा ग्रहस्वर । ३ । वा अंस स्वर । ४ । इनके नामसो होय । ओर जितनें तार स्वर कहत हें ॥ ऊचि सप्तकको न्यास नहीं होय ओर जितनें सातो स्वर होय सो वे जाति सुद्ध जांनिये ॥ **इति सुद्ध जाति संपूर्णम् ॥**

अथ विकृतिनको लछन लिख्यते ॥ ये सात सुद्ध जाति ग्रहस्वर अंसस्वर आदिकके विकार तें विकृत जाति होत हें सो विकृत जाति ग्यारह जांनिये तिनके नाम कहत हें षड्ज कैशिकी । १ । षड्जोदीच्यवा । २ । षड्ज मध्यमा । ३ । गांधारोदीच्यवा । ४ । रक्त गांधारी । ५ । मध्यमोदीच्यवा । ६ । गांधार पंचमी । ७ । आंध्री । ८ । नंदयंति । ९ । कार्मारवी । १० । कौशिकी । ११ । **इति विकृत जातिके नाम संपूर्णम् ॥**

अथ ग्यारह विकृत जातिनकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ षाडजी । १ । गांधारी । २ । जातिके मेलतें षड्ज कैशिकि होय । १ । षाडजी ।२। मध्यमा । ३ । जातिके मेलतें षड्जमध्यमा होय । गांधारी । १ । पंचमी । २ । जातिके मेलतें । गांधारपंचमी होय । ३ । गांधारी । १ । आर्षभी । २ । जातिके मेलतें । आंध्री होय । ४ । षांडजी । १ । गांधारी । २ । धैवत जातिके मेलतें ॥ षड्जोदीच्यवा होय । ५ । नैषादी । १ । पंचमी । २ । आर्षभी । ३ । जातिके मेलतें

कार्मारवी होय । ६ । गांधारी । २ । पंचमी । २ । आर्ष भी । ३ । जातिके मेलतें नंदयंती होय । ७ । गांधारी । १ । धैवती । २ । षाडजी । ३ । मध्यमा । ४ । जातिके मेलतें गांधारोदीच्यवा होय । ८ । गांधारी । १ । धैवती । २ । पंचमी । ३ । मध्यमा । ४ । जातिके मेलतें मध्यमोदीच्यवा होय । ९ । गांधारी । १ । नैषादी । २ । पंचमी । ३ । मध्यमा । ४ । जातिके मेलतें रक्तगांधारी होय । १० । षाडजी । १ । गांधारी । २ । मध्यमा । ३ । पंचमी । ४ । नैषादी । ५ । जातिके मेलतें कैशिकी हाय । ११ । ये ग्यारे विकृत जाति कही है । अब ग्यारहतो विकृति जाति अरु सात सुद्ध जाति मिलिके अठारह जाति होय हें ॥ तिनमें सात जाति । षड्ज ग्रामकी षाडजी । १ । आर्षभी । २ । धैवती । ३ । नैषादी । ४ षड्ज कैशिकी । ५ । षड्जोदीच्यवा । ६ । षड्ज मध्यमा । ७ । ये षड्ज ग्रामकी होत हें ॥

अथ मध्यम ग्रामकी जाति ग्यारह लिख्यते ॥ गांधारी । १ । रक्तगांधारी । २ । गांधारोदीच्यवा । ३ । मध्यमा । ४ । मध्यमोदीच्यवा । ५ । पंचमी । ६ । गांधारपंचमी । ७ । आंध्री । ८ । नंदयंती । ९ । कार्मा रवि । १० । कैशिकी । ११ । यह ग्यारह जाति मध्यम ग्रामकी हें ॥ इति मध्यम ग्रामकी ग्यारह जाति नाम संपूर्णम् ॥ **इति शुद्ध विकृति संकर जातिनकी उत्पत्ति संपूर्णम् ॥**

अथ सातों सुद्ध जातिनमें प्रथम षाडजी जाति तिनको लक्षण लिख्यते ॥ जा जातिमें निषाद । १ । रिषभ । २ । ये दोनु स्वर विनो ओर स्वर सगरे अंस स्वर होय । गांधार पंचम ये न्यास अपन्यास होय । ओर षड्ज गांधारको । वा षड्ज धैवतको उच्चार होय ॥ अरु निषाद स्वर हीन होय । तव षाडव जांनिये ॥ ओर संपूर्णतो एक स्वरनमें होय तो निषाद काकली जांनिये ॥ अरु गांधारको अंस स्वर जांनिये । अरु गांधारको उच्चार बार बार होय । उत्त-

रायता मूर्छनामें होय ओर षड्ज स्वरमें न्यास होय । अरु ग्रह हू षड्जहींमें जांनिये । सो षाडजी जाति जांनिये ॥

अथ वा षाडजी जातिके गायवेको फल लिख्यते ॥ हाथी पांच हजार । । ५००० । सुवरनके साजके । आजिवकासहित दीये तें सो । १०० । अश्वमेध कीयेतें कोटि । १ । कन्यादानके तथा योग्य विवाह कीयेतें । ओर भली भांति जो फल होय ॥ इन दान कीये-तें । सो सब शिवपूजनमें षाडवी जातिके सुनवे गायवेमें फल होय हे ॥ इति षाडजी जातिको गायवेको फल संपूर्णम् ॥ याकी ताल चंचतपुट, कलासह बारह मास । शृंगार सुद्ध विरह इन रसनमें गाई-ये ॥ **इति षाडजी जाति लछन संपूर्णम् ॥**

१. ॥ अथ षाडर्जा यंत्रमिदम् ॥

सा तं	सा ०	सा भ	सा व	पा ल	निध ला०	पा ०	धनि ट०	१
री न	गम य०	गा ना	गा ०	सा म्बु	रिग जा०	धस ००	धा धि	२
रिग कं०	सा ०	री ०	गा ०	सा ०	सा ०	सा ०	सा ०	३
धा न	धा ग	निध सू०	निस ००	निध नु०	पा म	सा ण	सा य	४
नी के	धा ०	पा लि	धनि ००	री स	गा मु	सा ०	गा द्ध	५
सा वं	धा ०	धनि ००	पा ०	सा ०	सा ०	सा ०	सा ०	६
सा स	सा र	गा स	सा कु	मा त	मा ति	मा ल	मा क	७
सा पं	पस ००	मा ०	धनि का०	निध नु०	पा ले	गा प	रिग ००	८

मा नं	गा ०	गा ०	गा ०	सा ०	सा ०	सा ०	सा ०	९
धां प	सा ण	री मा	गरि ००	सा मि	मा का	मा ०	मा म	१०
धा दे	नी ०	पा हैं	धनि ००	री ध	गा ना	री ०	सा न	११
रिग लं०	सा ०	री ०	गा ०	सा ०	सा ०	सा ०	सा ०	१२

अथ आर्षभिजातिको लछन लिख्यत ॥ जा जातिमें रिषभ धैवत निषाद ये अंसस्वर होय और षड्ज धैवत ताको संग उच्चार होय। अरु पांचवो स्वर दूर किये तें षांडव होय। वा षड्जहीन कियो सों षांडव होय। और षड्ज पंचम ये दोनु स्वर दूरि किये तें। औडव होय तामें मर्छना सुद्ध जांनिये। और ताल चंचतपुट रिषभ स्वर न्यास जांनियें॥ यांके अंसस्वर हैं॥ सो हि अपन्यास स्वर हैं॥ आठ कलाहैं॥ अर चोसटि याकी॥ ६४॥ मात्रा हे वीर। १। रौद्र। २। अद्‌भुत रसमें गाईये सो आर्षभीजाति जांनिये॥ आर्षभी जातिते देसी आदि रागनीकी उतपत्ती होत हैं॥

अथ आर्षभिजाति गायवेंको फल कहेहैं ॥ जो प्रयागतीर्थ प्रभासक्षेत्र श्रीपुष्कर ॥ इनमें जाय मनविकारमें दिसे बावरे वो तीर्थ पथुहक जा तीर्थको तो किंकर्मे ॥ पिबवो कहतहें ॥ तहां अरु चतुर्थी कहिये ॥ सालगरामजी क्षेत्रमें ॥ अरु कपालमोचनतीर्थ तहां। इन तीर्थनकी सेवा किये जो फल होय सो फल शिवपूजनमें आर्षभी जातिके गायवे में होत है ॥ **इति आर्षभी जातिको लछन वा फल संपूर्णम् ॥**

२. ॥ अथ आर्षभी यंत्रमिदम् ॥

री गु	गा ण	सा लो	रिग ००	मा च	रिम ना०	गा ०	रिरि ०धि	१
री क	री प	निध न०	निध ००	गा न्त	रिम प०	मा म	पनि र०	२

गा म	धा ज	नी र	धा म	पा ०	पा ०	सा क्ष	गा य	३
नी म	धनि जे०	री ०	गरि ००	सधं ००	गरि ००	री यं	री ०	४
री प्र	मा ण	गरि ००	सधं मा०	सस ००	रिस ००	रिग मि०	मम दि॒व्य	५
निध म०	पा णि	री द	री ०	रिप पं०	गरि णा०	सध ००	सा म	६
रिस ल०	रिस नि०	रिग के०	रिग ००	मा ०	मा ०	मा तं	गरि ००	७
पा भ	नी व	नी म	मग मे०	री ०	सध ००	गरि ००	गरि यं०	८

॥ इति आर्षभी जाति प्रस्तार यंत्र समाप्तम् ॥

अथ गांधारीजातिको लछन फल लिख्यते ॥ जा जातिमें रिषभ धैवत विना सिगरे स्वर अंस होय ॥ अरु जामें षड्ज पंचम अपन्यास होय । रिषभ गांधार कहू । २ । अपन्यास होय ॥ धैवत तें रिषभको अवरोह कीजिये ॥ ऐसें सिगरे स्वरनमें कीजिये ॥ अरु गांधार स्वर न्यास जांनिये ॥ अरु रिषभ स्वरहीन कियेतो षांडव होय ॥ अरु रिषभ धैवत दोय स्वर हीन कीये तो औडव होय ॥ यामें उत्तरायता मूर्छना जांनिये ॥ ओर यामें ताल । चंचत-पुट है । सोलह कला हे ।१६। एकसोअठाईस ।१२८। जाकी मात्रा हें करुणा-रसमें गाईये ॥ याको गांधारी जाति जांनियें ॥ यासों वेलावली देसी । आदिक राग होत हें ।

याको गायवेको फल कहत हें । श्रीगंगातीर्थमें बिल्वक पर्वतमें । नीलपर्वतमें । कुशावर्ततीर्थ । इन तीर्थनमें दस अश्वमेध कीयतें जो फल होय । सो शिवपूजनमें गांधारि जाति गायवेको फल होत हें ॥ **इति गांधारी जाति-को फल लछन संपूर्णम्** ॥

३. ॥ गांधारि जाति यंत्र ॥

गा ए	गा ०	सा ०	नीं ०	सा तं	गा ०	गा ०	गा ०	१
गा र	गम ज०	पा नि	पा व	धप धू०	मा ०	निध मु०	निसं ख०	२
निध वि०	पनि ००	मा ०	मपरि भ्र००	गा म	गा ०	गा दं	गा ०	३
गा नि	गम शा०	पा म	पा य	धप व०	मा रो	निध ००	निसं रु०	४
निध त०	पनि व०	मा मु	मपरि ख००	मा वि	गा ला	मा ०	सा स	५
गा व	सा पु	गा श्चा	गा रु	गा ०	गम म०	गा म	गा ल	६
गा मृ	गम दु०	पा कि	पा र	धप ण०	मा ०	निध ००	निसं ००	७
निध म०	पनि मृ०	गा त	पमरि भ००	गा वं	गा ०	गा ०	गा ०	८
री र	गा ज	मा त	पध गि०	रीं रि	गा शि	सा ख	सा र	९
नीं म	नीं णि	नीं श	नीं क	नीं ल	नीं शं	नीं ०	नीं ख	१०
गा व	गम र०	पा यु	पा व	धप ति०	मा दं	निध ००	निसं त०	११
निध पं०	पनि ००	मा क्ति	मपरि नि००	गा भं	गा ०	गा ०	गा ०	१२
नी प्र	नी ण	पा मा	नी ०	गा मि	मा प्र	गा ण	सा य	१३

गा	सा	गा	गा	गा	गम	गा	गा	१४
र	ति	क	ल	ह	र०	व	तु	
गा	पा	मा	मा	निध	निसं	निध	पनि	१५
दं	०	०	०	००	००	००	००	
मा	परिग	गा	गा	गा	गा	गा	गा	१६
श	शि००	०	०	०	नं	०	०	

अथ मध्यम जातिको लछन लिख्यते ॥ जा जातिमें रिषभ गांधार मध्यम पंचम धैवत ये । अंस स्वर होय । अर ये हि अपन्यास होय ॥ और षड्ज स्वर अर मध्यम स्वर ये जामें बहुत होय । अरु गांधार थोरो होय अरु गांधार दूरि किये ते षांडव होय अरु निषाद गांधार दूर किये औडव होय हे ॥ जामें रिषभादिक मूर्छना होय । ताल जामें चंचतपुट होय । अर आठ जाकी कला होय । ८ । मात्रा चौसट होय । ६४ । और मध्यम स्वर-न्यास होय । सो जाति मध्यम जांनिये । या जातिम अंधावलि आदिक राग होत हैं ॥ याके सुनिवेको फल होत हैं ॥ जो छह शास्त्र च्यारो वेदनके अंग इनको श्रद्धासों सुनतें ॥ जो फल होय सो शिवपूजनमें मध्यमाके जातिके सुनेतें होत हैं ॥ **इति मध्यम जातिनके फल लछन संपूर्णम्** ॥

४. ॥ अथ मध्यमा जाति यंत्रम् ॥

मा	मा	मा	मा	पा	धनि	नी	धप	१
पा	०	०	तु	भ	व०	मू	००	
मा	पम	मा	सा	मा	गा	री	री	२
र्ध	जा०	०	०	न	नं	०	०	
पा	मा	रिम	गम	मा	मा	मा	मा	३
कि	री	ट०	००	०	०	०	०	
मा	निध	निसं	निध	पम	पध	मा	मा	४
म	णि०	द०	००	पं०	००	णं	०	
नीं	नीं	री	री	नीं	रीं	री	पा	५
गौ	०	री	०	क	र	प	०	

नीं ल	मप वां	मा ०	मा ०	सा गु	सा लि	सा ०	सा सु	६
गा त	नी ०	सा ०	गा ०	धप ००	सा ०	धनि जि०	सा तं	७
पा सु	सा कि	पा र	निधप ०००	मा णं	मा ०	मा ०	मा ०	८

अथ पंचमी जातिको लछन लिख्यते ॥ जा जातिमें रिषभ पंचम अंस स्वर होय और जामें षड्ज गांधार मध्यम थोडे होय ॥ अर रिषभ पंचम निषाद अपन्यास होय। और निषाद गांधार दूर कीये ते औडव हे । और कछुक गांधार दूर कीये ते षाडव कहे हें ॥ ये संपूर्ण होय तो गांधार । अर निषाद रिषभ धैवत मिले होय । रिषभादिक मूर्छना होय । आठ ज्यामें कला होय चौसट जामें ।६४। मात्रा और ताल चंचतपुट सो पंचमी जाति जांनिये। याके सुनिवेको फल कहत हें ॥ सो अस्वमेध यज्ञ राजसूय यज्ञ गोमेध यज्ञ किये ते फल होय ॥ सो फल शिवपूजनमें पंचमी जातिके सुनेतें होय । १ । **इति पंचमी जातिके लछन संपूर्णम्** ॥

५. ॥ अथ पंचमी जाति ॥

पा ह	धनि र०	नीं मू	नी ०	मा र्ध	नी जा	मा ०	पा न	१
गा नं	गा म	सा हें	सा ०	मां श	मां म	पां म	पां र	२
पां प	पां ति	धां बा	नीं ०	नीं हु	नीं स्तं	गा ०	सा भ	३
पा न	मा म	धा नं	नी ०	निध तं०	पा ०	पा ०	पा ०	४
पा प्र	पा ण	रीं मा	रीं ०	रीं मि	री पु	रीं रु	रीं ष	५

मां	निंगं	सा	सध	नी	नी	नी	नी	६
मु	ख०	प	द्म०	०	ल	०	क्ष्मी	
सा	सा	सा	मा	पा	पा	पा	पा	७
ह	र	मं	०	बि	का	०	प	
धा	मा	धा	नी	पा	पा	पा	पा	८
ति	म	जे	०	यं	०	०	०	

अथ धैवत जातिको लछन लिख्यते॥ जा जातिमें धैवत रिषभ अंस होय ॥ ओर आरोहमें षड्ज पंचम नहीं होय । रिषभ धैवत पंचम ये । अपन्यास होय ओर धैवतन्यासस्वर होय ॥ ओर कहुक रिषभको दूरि कीये तें औडव होय॥ ओर कहूक षड्ज पंचमको दूरि कीये तें औडव होय। ओर कहूक षड्ज पंचम ये दोनुं मिले होय ॥ रिषभादिक जामें मूर्छना होय ताल जामें चंचतपुट होय । बारह । १२ । जामें कला हें ॥ छन्नव । ९६ । जामें मात्रा हें ॥ अर बिभत्स भयानक अर वीररस इनमें गाईये सो धैवत जाति जांनिये ॥ या जातिमें हिंदोल आदिक राग होत हें । याके सुनवेके महाफल कहेहें ॥ जो फल अग्निष्टोम याग ॥ ओर गोसवयज्ञ ॥ पुंडरीक यज्ञ ॥ ओर बहुसुवर्ण यज्ञ ॥ ओर अस्वमेध यज्ञ किये तें फल होय ॥ सो फल शिवपूजनमें धैवती सुने होय हे ॥ **इति धैवत जातिको फल लछन संपूर्णम् ॥**

६. ॥ अथ धैवती जातिको फलचक्रम् ॥

धा	धा	निध	पध	मा	मा	मा	मा	१
त	रु	णा०	००	म	लें	०	दु	
धा	धा	निध	निस	सा	सा	सा	सा	२
म	णि	भू०	००	षि	ता	०	म	
धन	धा	पा	मध	धा	निध	धनि	धा	३
ल०	शि	रो	००	०	००	जं०	०	
सा	सा	रिग	रिम	सा	रिग	सा	सा	४
भु	ज	गा	००	धि	पै०	०	क	

धां	धां	धीं	पां	धां	पां	मां	मां	५
कुं	०	ड	ल	वि	ला	०	स	
धां	पां	पां	मंधं	धां	निंधं	धंनिं	धां	६
कु	त	शो	००	०	००	भं०	०	
धा	धा	निसं	निसं	निध	पा	पा	पा	७
न	ग	सू	००	नु	ल	०	क्ष्मी	
रिग	सा	सा	सा	नीं	नीं	नीं	नीं	८
दे०	हा	०	०	धे	मि	०	श्रि	
सा	रिग	रिग	सा	नीं	सा	धा	धा	९
त	श०	री०	०	०	०	रं	०	
रीं	गंरिं	मंगं	मां	मां	मां	मां	मां	१०
प्र	ण	मा०	०	मि	भू	०	त	
नी	नी	धा	धा	पा	रिग	सा	रिग	११
गी	०	तो	०	प	हा०	०	र०	
पा	धा	सा	मा	धा	नी	धा	धा	१२
प	रि	तु	०	०	०	ष्टं	०	

अथ नैषादीको लछन लिख्यते ॥ जा जातिमें रिषम गांधार निषाद अंस होय ॥ अरु षड्ज मध्यम पंचम धैवत बहुत होय ॥ और अंसही । अपन्यास होय ॥ निषाद जामें न्यासस्वर होय । ओर गांधारादिक मूर्छना होय ॥ चंचतपुट ताल होय ॥ सोलह तामें कला होय । १६ । मात्रा तामें । १२८ । एकसोअठाईस होय ॥ ओर करुणारस भयानकरसमें गाईये ॥ सो नैषादि जाति जांनिये ॥ या जातितें देसी वेलावली राग ॥ आदिक सब होत हैं । याके सुनिवेको फल कहत हें गुरु देव साधु ब्राह्मण वा वृद्ध पुरुष अरु पूज्य इनकी भलि भांति कोमल मनसों ॥ दयाल शिवकी सेवा कीये तें जो फल होय ॥ सो फल शिवपूजनमें ॥ नैषादि जातिके सुनें तें होत हें ॥ **इति नैषादि जातिको फल लछन समाप्तम्** ॥

७. ॥ अथ नैषादि जातिको यंत्र लिख्यते ॥

नी	नी	नी	नी	सां	धा	नी	नी	१
तं	०	सु	र	वं	०	दि	त	
पा	मा	सा	धां	नीं	नीं	नीं	नीं	२
म	हि	ष	म	हा	०	सु	र	
सा	सा	गा	गा	नी	नी	धा	नी	३
म	थ	न	मु	मा	०	प	तिं	
सां	सां	धा	नी	नी	नी	नी	नी	४
भो	०	ग	यु	तं	०	०	०	
सा	सा	गा	गा	मां	मां	मां	मां	५
न	ग	सु	त	का	०	मि	नी	
नीं	पां	धां	पां	मां	मां	मां	मां	६
दि	०	व्य	वि	शे	०	ष	क	
रीं	गां	सां	सां	रीं	गां	नी	नी	७
सू	०	च	क	शु	भ	न	ख	
नी	नी	पा	धनि	नी	नी	नीं	नी	८
द	०	पं	ण०	कं	०	०	०	
सा	सा	गा	सा	मा	मा	मा	मा	९
अ	हि	मु	ख	म	णि	ख	चि	
मां	मां	मां	मां	नीं	धां	मां	मां	१०
तो	०	ज्ज्व	ल	नू	०	पु	र	
धा	धा	नी	नी	री	गा	मां	मां	११
बा	ल	०	भु	जं	ग	०	म	
मां	मां	पां	धां	नीं	नीं	नीं	नीं	१२
र	व	क	लि	०	तं	०	०	
पां	पां	नीं	नीं	री	री	री	री	१३
द्रु	त	म	भि	त्र	जा	०	मि	

री	मा	मा	मा	री	गा	सा	सा	१४
श	र	ण	म	निं	०	दि	त	
धा	मा	री	गा	सा	धा	नी	नी	१५
पा	०	इ	यु	ग	पं	०	क	
पां	मां	री	गां	नी	नी	नी	नी	१६
ज	वि	ला	०	सं	०	०	०	

अथ ग्यारह विकृति हें तिनमें प्रथम षड्जकैशिकी जाति ताको लछन लिख्यते ॥ जा जातिमें षड़ज गांधार पंचम ये अंश होय। अरु रिषभ पंचम मध्यम थोडे होय। धैवत निषाद जामें थोडे होय ॥ अरु कहूक वहुत होय गांधार ज्यामें न्यास होय ॥ और षडज निषाद पंचम जामें अपन्यास होय ॥ जामें चंचतपुट ताल होय ॥ कला सोलह होय। मात्रा जामें एकसो अठाईस होय। १२८। शृंगार हास्य करुणा रसमें गाईये सो विकृति जाति षड़जकेशिकी जांनिये। या जातिमें गांधार—पंचम। १। हिनदोल—देसी। २। वेलावली आदिकराग होयेहं **इति षड़जकैशिकी जातिको लछन संपूर्णम्** ।

८. ॥ अथ षड़जकैशिकी यंत्रमिदम् ॥

सा	सा	मां	पां	गरि	मग	मा	मा	१
दे	०	०	०	००	००	०	०	
मा	मा	मा	मा	सां	सां	सां	सां	२
वं	०	०	०	०	०	०	०	
धा	धा	पा	पा	धा	धा	री	रिम	३
अ	स	क	ल	श	शि	ति	ल०	
री	री	नीं	नीं	नीं	नीं	नीं	नीं	४
कं	०	०	०	०	०	०	०	
धा	धा	पा	धनि	मा	मा	पा	पा	५
द्वि	र	द	ग०	तिं	०	०	०	
धा	धा	पा	धनि	धा	धा	पा	पा	६
नि	पु	ण	म०	तिं	०	०	०	

सा	सा	सा	सा	सा	सा	सा	सा	७
मु	०	ग्ध	०	मु	खां	०	बु	
धा	धा	पा	धा	धनि	धा	धा	धा	८
रु	ह	दि	०	व्य०	कां	०	तिं	
सा	सा	सा	रिग	सा	रिग	धा	धा	९
ह	र	मं	००	बु	दों०	०	द	
मा	धा	पा	पा	धा	धा	नी	नी	१०
धि	नि	ना	०	दं	०	०	०	
री	री	गा	सा	सां	सां	सां	गां	११
अ	च	ल	व	र	सू	०	नु	
धां	रिंसं	रीं	संरिं	रीं	सां	सां	सां	१२
दे	००	ह्रा	००	र्धं	मि	०	श्रि	
सा	सरि	री	सरि	री	सा	सा	सा	१३
त	श०	री	००	रं	०	०	०	
मा	मा	मा	मा	निध	पध	मा	मा	१४
प्र	ण	मा	०	मि०	तम	हं	०	
नी	नी	पा	पम	पा	पम	पध	रिग	१५
अ	नु	प	म०	मु	ख०	क०	म०	
गा	गा	गा	गा	गा	गा	गा	गा	१६
लं	०	०	०	०	०	०	०	

अथ षडजोदीच्यवा जातिको लछन लिख्यते ॥ जा जातिमें षड्ज मध्यम निषाद धैवत अंश होय ॥ और स्वर मिलेहु होय ॥ मंद्रा गांधार जामें बहुत होय और तार रिषभ षड्ज बहुत होय और रिषभके गाये तें। षांडवहु होय है ॥ रिषभ धैवत दूरि कीये तें औडव है॥ अरु यामें मध्यम न्यास हैं ॥ षडज धैवत जामें पअन्यास हैं ॥ गांधारादिक मूर्छना हैं और [illegible] तामें ताल हैं बारहतामें कला हैं। और छान्नव जामें, मात्रा हैं शृंगारहास्य रसमें गाईये। सो विकृति जाति षड्ज दीच्यवा जांनिये ॥ इति ॥

९. ॥ अथ विकृति जाति षड्जोदिच्यवंत्री यंत्रं ॥

सा शै	सा ०	सा ०	सा ०	मां ले	मां ०	गां ०	गां ०	१
गा श	मा ०	पा सू	मा ०	गा ०	मा ०	मा ०	धा नु	२
सा शै	सा ०	मा ले	गा ०	पा श	पा सू	नी ०	धा नु	३
धा प	नी ण	सा य	सा ०	धा प	नी सं	पा ०	मा ग	४
गां स	सा वि	सा ला	सा ०	सा स	सा खे	सा ०	गां ल	५
धा न	धा वि	पा नो	धा ०	पा ०	नी ०	धा दं	धा ०	६
सा अ	गां ०	गां धि	गां ०	गां क	गां ०	सा ०	सा ०	७
नी मु	धा ०	पा खें	धा ०	पा ०	धा ०	धा ०	धा दु	८
सां अ	सां धि	मा क	गा ०	पा मु	पा खें	नी ०	धा दु	९
धा म	नी य	सा नं	सां ०	धा न	नी मा	पा ०	मा मि	१०
गां दे	सा ०	सा वा	सा ०	सा सु	सा रे	सा ०	गां श	११
धा त	धा व	पा रु	धा चि	मां रं	मां ०	मां ०	मा ०	१२

अथ विकृति जाति षड्ज मध्यमाको लछन लिख्यते ॥ जा विकृति जातिमें सातों स्वर अंस होय ॥ और परस्पर मिले होय ॥ अरु निषाद जामें थोडो होय ॥ निषाद दूर किये षाडव होय । अरु निषाद गांधार दूर

कीये औडव होय ॥ मध्यमादिक जामें मूर्छना होय ॥ अरु षड्ज मध्यम न्यास होय ॥ सातोंही स्वर अपन्यास होय ॥ चंचतपुट तामें ताल होय अरु बारह ।१२। कला होय । मात्रा जामें छन्नव होय । ९६ । सो विकृति जाति षड्ज मध्यमा जांनिये ॥ इति विकृति जातिनके लछन संपूर्णम् ॥

॥ १०. अथ विकृति जाति षडज मध्यमा यंत्रम् ॥

मा र	गा ज	सग नि०	पा व	धप धू०	मा ०	निध मु०	निम ख०	१
मां वि	मां ला	सां ०	रिंग स०	मंम लो०	निध ००	पध ००	पा च	२
मा नं	गा ०	री ०	गा ०	मा ०	मा ०	सा ०	सा ०	३
म म	मगम वि००	मा क	मा सि	निध त०	पध कु०	पम मु०	गमम द००	४
धा द	पध ल०	परि फे०	रिग न०	गम सं०	रिग ००	सधस ०००	सा नि	५
निध भं०	सा ०	री ०	मगम ०००	मा ०	मा ०	मा ०	मा ०	६
मां का	मां ०	मंगंमं मिं००	मंधं ज०	धंपं न०	पंधं न०	पंमं य०	गंमंगं न००	७
धा ह	पध द०	परि या०	रिग भि०	मग नं०	रिग ००	सधस ०००	सा दि	८
मा तं(नं)	मा ०	धनि ००	धस ००	धप ००	मप ००	पा ०	पा ०	९
मां प्र	मंगंमं ण००	मां मा	निंधं ००	पंधं मिं०	पंमंगं दे००	गां वं	मां ०	१०
धा कु	पध मु०	परि दा०	रिग धि०	मम वा०	रिम ००	सधस ०००	सा सि	११
निध नं०	सा ०	री ०	मगम ०००	मा ०	मा ०	मा ०	मा ०	१२

अथ विकृति जाति गांधारोदिच्यवाको लछन लिख्यते ॥ जा विकृति जातिमें षड्ज मध्यम अंस होय । ओर रिषभ गांधार पंचम धैवत निषाद थोडे होय ॥ अरु रिषभको दूरि कीयेतें षाडव होय ॥ तव निषाद धैवत पंचम गांधार थोडे होय ॥ अरु रिषभ धैवत कोमल होय ॥ जामें धैवतादिक मुर्छना होय ॥ अरु मध्यम न्यास होय ॥ षड्ज धैवत अपन्यास होय चंचत्पुट तामें ताल होय अरु सोला कला । १६ । होय ॥ अरु मात्रा तामें एकसोअठाविस । १२८ । होय । सो विकृति जाति गांधारोदिच्यवा जानिये ॥ **इति विकृति जाति गांधारोदिच्यवाको लछन संपूर्णम् ॥**

११. ॥ अथ विकृति जाति गांधारोदिच्यवा यंत्रम् ॥

सा सो	सा ०	पा ०	मा ०	पा ०	धप ००	पा ०	मा ०	१
धा म्य	पा ०	मा ०	मा ०	सा ०	सा ०	सा ०	सा ०	२
धा गो	नी ०	सा री	सा ०	मा मु	मा खां	पा ०	पा बु	३
नी रु	नी ह	नी दि	नी ०	नी व्य	नी ति	नी ल	नी क	४
मा प	मा रि	धा चुं	निस ००	नी बि	नी ता	नी ०	नी र्चि	५
मा त	पा सु	मा पा	परिम ०००	गा दं	गा ०	सा ०	सा ०	६
गा प्र	मग वि०	पा क	पध सि०	मा त	धनि ह०	पा ०	पा म	७
री क	गा म	सा ल	सध नि०	नी भं	नी ०	धा ०	धा ०	८
गा अ	रिग ति०	सा रु	सनि चि०	गा र	रिग कां०	सा ०	सा ति	९

सा न	सा ख	सा द	मा ०	मनि पं०	धनि णा०	नी ०	नी म	१०
मा ल	पा नि	मा के	परिग ०००	गा तं	गा ०	सा ०	सा ०	११
गा म	सा न	गा सि	सा ज	मा श	पा री	मा र	परिगं ०००	१२
गा ता	मा ०	गा ०	सा ड	गा नं	गा ०	गा ०	सा ०	१३
नी प्र	नी ण	पा मा	धा ०	नी मि	गा गौ	गा ०	मा री	१४
नी च	नी र	धा ण	पा यु	धा ग	पा म	मा नु	पा प	१५
धा मं	पा ०	सा ०	सा ०	मा ०	मा ०	मा ०	मा ०	१६

अथ विकृति जाति रक्त गांधारीको लछन लिख्यते ॥ जा विकृति जातिमें षड्ज गांधार मध्यम पंचम निषाद ये पांच स्वर अंस होय ॥ षड्ज अरु गांधार कोमल होय ॥ रिषभको दूरि किये ते ॥ षाडव होय रिषभ धैवतको दूरि किये तें औडव होय । सात स्वरमें होय ॥ जब निषाद धैवत बहुत होय ॥ अरु जामें रिषभादिक मूर्छना होय ॥ गांधार ज्यामें न्यास होय ॥ अरु मध्यम अपन्यास होय ॥ जहां ताल चंचतपुट होय ॥ सोळे । १६ । जामें कला होय॥ अरु मात्रा जामें एकसो अठाइस । १२८ । होय । जाको शृंगार रससमें गाईये सो विकृति जाति रक्त गांधारी जांनिये ॥

१२. ॥ रक्त गांधारी यंत्र ॥

पा तं	नी ०	सा बा	सा ०	गा ल	सा र	पा ज	नी नि	१
सा क	सा र	पा ति	पा ल	मा क	मा भू	गा ०	गा ष	२

मा ण	पा वि	धा भु	पा ०	मा ०	पा ०	धप ००	मग ००	३
मा तिं	मा ०	मा ०	मा ०	मा ०	मा ०	मा ०	मा ०	४
धां ०	नीं ०	पां ०	मंपं ००	धां ०	नीं ०	पां ०	पां ०	५
मां ०	पां ०	मां ०	धंनिं ००	पां ०	पां ०	पां ०	पां ०	६
री प्र	गा ण	मा मा	पा ०	पा मि	पा गौ	मा ०	पा री	७
रीं व	गां द	मां ना	पां ०	पां र	पां विं	मां ०	पां ०	८
पा दं	पा ०	पा ०	पा ०	पा ०	पा ०	पा ०	पा ०	९
री प्री	गा ०	सा ति	सा क	री रं	गा ०	गा ०	गा ०	१०
गां ०	गां ०	पां ०	धंमं ००	धां ०	निंधं ००	पा ०	पा ०	११
गां ०	पां ०	मां ०	पंरिंगं ०००	गां ०	गां ०	गां ०	गां ०	१२

अथ विकृति जाति कौशिकीको लछन लिख्यते ॥ जा विकृति स्वरमें निषाद धैवत अंस होय तीन स्वर कोमल तब पंचम स्वर न्यास होय अरु जब गांधार न्यास होय तब दोय श्रुतिको निषाद अरु धैवत अंस होय ॥ अरु कोईक मुनीश्वर ऐसें कहें हें ॥ मध्यम निषाद गांधार मध्यम न्यास होय हें ॥ अरु निषाद धैवत अंस हें ॥ ओर रिषभ दुर किये तें षांडव होय ॥ अरु रिषभ धैवत दूर किये औडव हु जांनिये ॥ ओर जब सात स्वरमें होय तब रिषभ थोडे होय ॥ अरु निषाद पंचम बहोत होत हें ॥ अंस स्वर परस्पर मिले होय ॥

जामें गांधारादिक मूर्छना होय ॥ और गांधार पंचम न्यास होय ॥ रिषभ विना छह स्वर अपन्यास होय ॥ चंचतपुट तामें ताल होय ॥ बारह कला होय ॥ मात्रा जाकी छान्नव होय । षांडव जातिनके रसनमें गाईये ॥ सो विकृत कैशिकी जांनिये ॥ इति विकृति जाति कैशिकी संपूर्णम् ॥

१३. ॥ अथ विकृति जाति कैशिकीको यंत्र ॥

षा	धनि	पा	धनि	गा	गा	गा	गा	१
के	००	ली	००	ह	०	त	०	
पा	पा	मा	निध	निध	पा	पा	पा	२
का	०	म	त०	नु०	०	०	०	
धा	नी	सा	सा	री	री	री	री	३
वि	०	भ्र	म	वि	ला	०	सं	
सा	सा	सा	री	गा	मा	मा	मा	४
ति	ल	क	यु	तं	०	०	०	
मां	धां	नीं	धां	मां	धां	मां	पां	५
मू	०	र्धो	०	र्ध्वं	बा	०	ल	
गा	री	सा	धनि	री	री	री	री	६
सो	०	म	नि०	भं	०	०	०	
गा	री	सा	सा	धा	धा	मा	मा	७
मु	ख	क	म	लं	०	०	०	
गा	गा	गा	मा	मा	निधनि	नी	नी	८
अ	स	म	०	हा	०००	ट	०	
गा	मा	नी	नी	गा	गा	गा	गा	९
क	स	रो	०	जं	०	०	०	
गा	गा	नी	नी	निध	पा	पा	पा	१०
ह	दि	सु	ख	दं०	०	०	०	
मा	पा	मा	पा	पा	पा	मा	मा	११
प्र	ण	मा	०	मि	लो	च	०	
सा	मा	गा	निधनि	नी	नी	मा	गा	१२
न	वि	शे	०००	षं	०	०	०	

अथ विकृति जाति मध्यमोदीच्यवाके लछन लिख्यते ॥ जा विकृति जातिमें पंचम स्वर अंस होय ॥ और जामें सातों स्वर होय ॥ और रिषभ गांधार पंचम धैवत निषाद थोडे होय ॥ अरु रिषभ धैवत कोमल होय जाम मध्यम न्यास होय ॥ अरु षड्ज धैवत अपन्यास होय ॥ मध्यमादिक मूर्छना होय ताल तामे चंचतपुट होय ॥ और सोलह कला होय । १६ । और मात्रा तामें एकसोअठाविस । १२८ । होय सो विकृति जाति मध्यमोदीच्यवा जांनिये ॥ **इति विकृति जाति मध्यमोदीच्यवाको लछन संपूर्णम् ॥**

१४. ॥ विकृति जाति मध्यमोदीच्यवा ॥

पा	धनि	नी	नी	मा	पा	नी	पा	१
दे	००	हा	०	र्ध	रू	०	प	
री	री	री	गा	सा	रिग	गा	गा	२
म	ति	कां	०	ति	म०	म	ल	
नी	नी	नी	नी	नी	नी	नी	नी	३
म	म	लें	०	दु	कुं	०	द	
नी	नी	धप	मा	निध	निध	पा	पा	४
कु	मु	द०	नि	भं०	००	०	०	
पा	पा	री	रीं	री	री	री	री	५
चा	०	मी	०	क	रां	०	बु	
मा	रिग	सा	सधं	नीं	नीं	नीं	नीं	६
रु	हृ०	दि	००	०	व्य	क्तां	ति	
मा	पा	नी	सा	पा	पा	गा	गा	७
प्र	व	र	ग	ण	पू	०	जि	
गा	पां	मां	निंधं	नीं	नीं	सा	सा	८
त	म	जे	००	यं	०	०	०	
पां	पां	मां	धंनिं	पां	पां	पां	पां	९
सु	रा	भि	ष्ट०	त	म	नि	ल	
मां	पां	मां	रिग	गा	गा	गा	गा	१०
म	नो	ज	००	व	०	मं	बु	

गा	पा	मा	पा	नी	नी	नी	नी	११
दो	०	द्	धि	नि	ना	०	द्	
मा	पा	मा	परिग	गा	गा	मा	गा	१२
म	ति	हा	०००	सं	०	०	०	
गां	गां	गां	गां	मां	निंधं	नीं	नीं	१३
शि	वं	शां	०	त	म०	सु	र	
नी	नी	धप	मा	निध	निध	पा	पा	१४
च	मू	म०	थ	नं०	००	०	०	
रीं	गां	सां	सां	मां	निंधांनिं	नीं	नीं	१५
वं	०	दे	०	त्रै	लो००	क्य	०	
नीं	नीं	धां	पां	धां	पां	मां	मां	१६
न	त	च	र	णं	०	०	०	

अथ विकृति जाति कार्मारवीको लछन लिख्यते ॥ जा विकृति जातिमें निषाद धैवत रिषभ पंचम अंस होय ॥ ओर गांधार मध्यम षड्ज बहुत होय ॥ ओर रागमें विचित्रताको दिखाव होय ॥ गांधार अंत्य बहुत होय ॥ ओर अं॥ स्वर परस्पर मिले होय ॥ जामें पंचम स्वर न्यास होय ॥ अंस स्वरही अपन्यास होय ॥ धैवतादिक मूर्छना होय ॥ चंचतपुट तामें ताल होय कला जामें सोलह होय । १६ । मात्रा तामें एकसोअठाविस होय । १२८ । सो विकृति जाति कार्मारवी जांनिये ॥ **इति विकृति जाति कार्मारवीको लछन संपूर्णम् ॥**

१५. ॥ अथ विकृति जाति कार्मारवीको यंत्र ॥

री	री	री	री	री	री	री	री	१
तं	०	स्था	०	णु	ल	लि	त	
मा	गा	सा	गा	सा	नी	नी	नी	२
वा	०	मां	०	ग	स	०	क्त	
नीं	मां	नीं	मां	पां	पां	गा	गा	३
म	ति	त	०	जः	प्र	स	र	

गा	पा	मा	पा	नी	नी	नी	नी	४
सौ	०	धां	०	शु	कां	०	ति	
रीं	गां	सां	नीं	रीं	गां	रीं	मां	५
फ	णि	प	ति	मु	खं	०	०	
री	गा	री	सा	नी	धनि	पा	पा	६
उ	रो	वि	पु	ल	सा०	०	ग	
मां	पां	मां	पंरिंगं	गां	गां	गां	गां	७
र	नि	के	०००	तं	०	०	०	
री	री	गा	सम	मा	मा	पा	पा	८
सि	त	पं	००	न	गं	०	द्र	
मा	पा	मा	गरिग	गा	गा	गा	गा	९
म	ति	कां	०००	तं	०	०	०	
धा	नी	पा	मा	धा	नी	सा	सा	१०
ष	०	ण्मु	ख	वि	नो	०	द	
नी	नी	नी	नी	नी	नी	नी	नी	११
क	र	प	०	ल्ल	वां	०	गु	
मां	मां	धां	नीं	सनिनि	धा	पा	पा	१२
लि	वि	ला	०	स००	की	०	ल	
मा	पा	मा	गरिग	गा	गा	गा	गा	१३
न	वि	मो	०००	दं	०	०	०	
नी	नी	पा	धनि	गा	गा	गा	गा	१४
प्र	ण	मा	००	मि	दे	०	व	
सां	रीं	गां	सां	नीं	नीं	नीं	नीं	१५
य	०	शो	०	प	वी	०	त	
नीं	नीं	धां	धां	पां	पां	पां	पां	१६
कं	०	०	०	०	०	०	०	

अथ विकृति जाति गांधार पंचमी ताको लछन लिख्यते ॥ जा विकृति जातिमें पंचम अंस होय ॥ अरु गांधार निषाद रिषभ धैवत मिले होय

गांधार जामें न्यास होय ॥ रिषभ पंचम अपन्यास होय ॥ गांधारादिक जामें मूर्छना होय ॥ चंचतपुट तामें ताल होय सोलह । १६ । तामें कला होय ॥ ओर मात्रा तामें एकसोअठाविस । १२८ । होय सो गांधार पंचमी विकृति जाति जांनिये ॥ इति विकृति जाति गांधार पंचमी ताको लछन संपूर्णम् ॥

१६. ॥ अथ विकृति जाति गांधार पंचमीको यंत्र ॥

पा कां	मप ००	मध ००	नी ०	धप ००	मा ०	धा ०	नी ०	१
सनिनि ०००	धा ०	पा तं	पा ०	पा ०	पा ०	पा ०	० ०	२
धा वा	नी ०	सा भै	सा ०	मा क	मा दे	पा ०	पा श	३
नी पें	नी ०	नीं खो	नी ०	नी ळ	नी मा	नी ०	नी न	४
नी क	नी म	धप ळ०	मा नि	मिध भं०	निध ००	पा ०	पा ०	५
पा व	पा र	री सु	री र	री भि	री कु	री सु	री म	६
मा गं	रिग ००	सा धा •	सध ००	नी धि	नी वा	नी ०	नी सि	७
नी त	नी म	सां नो	रिंसं ००	रीं ज्ञ	रीं ०	रीं ०	रीं ०	८
नी न	गा ग	सा रा	निग ००	सा ज	नीं सू	नीं ०	नीं नु	९
नीं र	मां ति	नीं रा	मां ०	पां ग	पां र	मा भ	गा स	१०
गा के	पां ०	मां ळी	पां ०	नीं कु	नीं च	नीं ०	नीं ग्र	११

मा	पा	मा	परिग	गा	गा	गा	गा	१२
ह	ली	लं	०००	तं	०	०	०	
नीं	नीं	पां	धां	नीं	गा	गा	गा	१३
प्र	ण	मा	०	मि	दे	०	तं	
नीं	नीं	नीं	नीं	नीं	नीं	नीं	नीं	१४
चं	०	द्रा	०	र्ध	मं	०	डि	
मां	मां	धां	नीं	सनिनि	धा	पा	पा	१५
व	वि	ला	०	सक्षी०	ख	०	०	
मा	पा	मा	परिग	गा	गा	गा	गा	१६
न	वि	नो	०००	दं	०	०	०	

अथ विकृति जाति आंध्रीको लछन लिख्यते ॥ जामें निषाद रिषभ गांधार पंचम अंस होय ॥ ओर निषाद धैवत रिषभ गांधार इनको परस्पर मेल होय ॥ अरु गीन जहां तांई समाप्त होय ॥ तहां तांई अंसनके क्रमसों मिले होय ओर न्यास तें लेकें अंस स्वर तांई उलटो उच्चार कीजिये ॥ जामें गांधार न्यास होय अर अंस स्वर ही अपन्यास होय ॥ मध्यमादिक जामें मूर्छना होय ॥ चंचतपुटतामें ताल होय ॥ सोलह जामें । १६ । कला होय ॥ एकसोअठाविस । १२८ । तिनमें मात्रा होय सो विकृति जाति आंध्री जानिये ॥ इति विकृति जाति आंध्रीको लछन संपूर्णम ॥ अथ यंत्र प्रस्तारचक्रमिदं ॥

१७. ॥ अथ विकृति जाति आंध्रीको यंत्र ॥

गा	री	री	री	री	री	री	री	१
त	रु	णं	०	द्रु	कु	सु	म	
री	गा	री	गा	री	री	री	री	२
ख	चि	त	ज	टं	०	०	०	
री	री	गा	गा	री	री	मा	मा	३
त्रि	दि	व	न	दी	स	लि	ल	
री	गा	सा	धनि	नीं	नीं	नीं	नीं	४
धौ	०	त	मु०	खं	०	०	०	

नीं	रीं	नीं	रीं	धंनिं	धंनिं	पां	पां	५
न	म	सू	०	नु०	०प्र	ण	यं	
मां	पां	मां	रिंग	गा	गा	गा	गा	६
वे	०	द	नि०	धिं	०	०	०	
रीं	रीं	गा	सस	मा	मा	पा	पा	७
प	रि	णा	००	हि	तु	हि	न	
मां	पां	मां	रिंग	गा	मा	गा	मा	८
शै	०	ल	गु०	हं	०	०	०	
धां	नीं	गा	गा	गा	गा	गा	गा	९
अ	मृ	त	भ	वं	०	०	०	
पा	पा	मा	रिंग	गा	गा	गा	गा	१०
गु	ण	र	हिं०	तं	०	०	०	
नी	नी	नी	नी	री	री	री	री	११
त	म	व	नि	र	वि	श	शि	
रीं	रीं	गा	नी	सा	सा	नी	नी	१२
ज्व	ल	न	ज	ल	प	व	न	
पां	पां	मां	रिंग	गां	गां	गां	गां	१३
ग	ग	न	त०	नुं	०	०	०	
रीं	रीं	गां	समं	मां	मां	पां	पां	१४
श	र	णं	००	व्र	जा	०	मि	
मां	मां	नीं	नीं	सां	रीं	गां	पां	१५
शु	भ	म	ति	क्ट	त	नि	ल	
रिंगं	गां	गां	गां	गां	गां	गां	गां	१६
यं०	०	०	०	०	०	०	०	

अथ विकृत जाति नंदयंतीको लछन लिख्यते ॥ जा विकृति जातिमें पंचम अंस होय ॥ अरु पंचम ग्रह स्वर होय ॥ अरु जब सात स्वरनमें होय ॥ तब मंद्र षड्ज बहुत होय ॥ अरु षड्ज दूर कीयेतें षांडव होय ॥ अरु गांधार न्यास होय ॥ मध्यम पंचम अपन्यास स्वर होय ॥ पंचमादिक उसको मूर्छना

होय ॥ अरु चंचतपुट तामें ताल होय ॥ ओर सोलह जाकी कला होय अरु मात्रा तामें एकसोअठाविस । १२८ । होय ॥ सो विकृति जाति नंद्यंती जांनिये ॥ इति विकृति जाति नंद्यंतीको लछन संपूर्णम ॥

१८. ॥ अथ विकृति जाति नंद्यंती यंत्र ॥

गा सा	गा ०	गा ०	गा ०	पा ०	पा ०	धप ००	मा ०	१
धा ०	धा ०	धा ०	धा ०	धा ०	नी ०	सनिनि ०००	धा ०	२
पां म्यं	पां ०	पां ०	पां ०	पां ०	पां ०	पां ०	पां ०	३
धां वे	नीं ०	मां दां	पां ०	गां ग	गां वे	गां ०	गां द्र	४
मा क	री र	गा क	गा म	गा ल	गा यो	गा ०	गा नि	५
मा त	मा मो	पा र	पा जो	धा वि	निध व०	पा ०	पा ०	६
धा जि	नी तं	मा ०	पा ०	गा ०	गा ०	मा ०	गा ०	७
गम हरं	पा ०	पा ०	पा ०	मा ०	मा ०	गा ०	गा ०	८
धा भ	नी व	मा ह	पा र	गा क	गा म	गा ल	गा ग	९
मा हं	मा ०	मा ०	मा ०	मा ०	मा ०	मा ०	मा ०	१०
री शि	गा वं	मा शां	पा ०	पम तं०	पा सं	पा ०	नी नि	११
रीं वें	रीं ०	रीं श	रीं म	पां म	पां पू	मां ०	मां वँ	१२

धां	नीं	सनिंनिं	धां	पां	पां	पां	पां	१३
भू	ष	०००	ण	ली	०	लं	०	
धां	नीं	मां	पां	गां	गां	गां	गां	१४
उ	र	गे	०	श	भो	०	ग	
गा	पा	पा	पा	धा	मा	गा	मा	१५
भा	०	सु	र	शु	भ	पृ	थु	
धा	धा	नी	धा	पा	पा	पा	पा	१६
लं	०	०	०	०	०	०	०	
री	गा	मा	पा	पम	पा	पा	नी	१७
अ	च	ल	प	ति०	सु	०	नु	
रीं	रीं	रीं	रीं	पां	पां	पां	पां	१८
क	र	पं	०	क	जा	०	म	
पा	पा	पा	पा	धा	मा	मा	मा	१९
ल	वि	ला	०	स	की	०	ल	
नीं	पां	गां	गंमं	गां	गां	गां	गां	२०
न	वि	नो	००	दं	०	०	०	
रीं	रीं	गां	मां	मां	मां	मां	मां	२१
स्फ	टि	क	म	णि	र	ज	त	
नी	पा	नी	मा	नी	धा	पा	पा	२२
सि	त	न	व	दु	कू	०	ल	
सां	सां	धनि	धा	पा	पा	पा	पा	२३
क्षी	०	रोद्	०	सा	०	०	ग	
मा	पा	मा	परिग	गा	गा	सां	सां	२४
र	नि	का	०००	शं	०	०	०	
री	री	गा	गा	मा	मा	पा	पा	२५
अ	ज	शि	रः	क	पा	०	ल	
री	री	री	गा	मा	रिग	मा	मा	२६
पृ	थु	भा	०	०	ज०	नं	०	

मा	नी	पा	नी	गा	गा	गा	गा	२७
वं	०	दे	०	सु	ख	दं	०	
मा	मा	पा	पा	धा	धनि	निध	मा	२८
ह	र	दे	०	ह	म०	म०	ळ	
धा	धा	सा	नी	धा	नी	पा	पा	२९
म	धु	सु	०	द	नं	०	सु	
रीं	रीं	रीं	रीं	मा	पा	धा	मा	३०
ते	०	जो	०	धि	कं	०	सु	
नी	नी	नी	नी	धा	पा	मा	मा	३१
ग	ति	यो	०	०	०	०	०	
मा	परिग	गा	गा	गा	गा	गा	गा	३२
०	०००	निं	०	०	०	०	०	

।। जाति तालिका ।।

जातिसंख्या	जातिनामानि	अंशाः	न्यासाः	अपन्यासाः	मूर्छनाः	षाडवद्वेषिस्वराः	औडवद्वेषिस्वराः
१	षाड्जी	सगमपध	स	गप	उत्तरायता	नि	०
२	आर्षभी	रिधनि	रि	रिधनि	शुद्धषड्जा	स	सप
३	गान्धारी	सगमपनि	ग	सप	पौरवी	रि	रिध
४	मध्यमा	सरिमपध	म	सरिमपध	कलोपनता	ग	गनि
५	पञ्चमी	रिप	प	रिपनि	कलोपनता	ग	गनि
६	धैवती	रिध	ध	रिमध	अभिरुद्गता	प	सप
७	नैषादी	सगनि	नि	सगनि	अभिरुद्गता	प	सप
८	षड्जकैशिकी	सगप	ग	सपनि	…………	०	०
९	षड्जोदीच्यवा	समधनि	म	सध	अश्वक्रान्ता	रि	रिध
१०	षड्जमध्यमा	सरिगमपधनि	सम	सरिगमपधनि	मत्सरीकृता	नि	गनि
११	गान्धारोदीच्यवा	सम	म	सध	पौरवी	रि	०
१२	रक्तगान्धारी	सगमपनि	ग	म	कलोपनता	रि	रिध
१३	कैशिकी	सगमपधनि	गपनि	सगमपधनि	हारिणाश्वा	रि	रिध
१४	मध्यमोदीच्यवा	प	म	सध	सौवीरी	०	०
१५	कार्मारवी	रिपधनि	प	रिपधनि	शुद्धमध्या	०	०
१६	गान्धारपञ्चमी	प	ग	रिप	हारिणाश्वा	०	०
१७	आन्ध्री	रिगपनि	ग	रिगपनि	सौवीरी	स	०
१८	नन्दयन्ती	प	ग	मप	हारिणाश्वा	स	०

प्रथमस्वराध्याय–गीतिप्रकरण.

अथ सात शुद्ध जातिनमें ताल । १ । कला । २ । रस । ३ । इनको प्रमाण लिख्यते ॥ जहां ताल नही कह्यो तहां चंचतपुट आदि पांच । ५ । मार्गी ताल एक कला ।१। द्विकला । २। चतुष्कला। ३ । जांनिये ॥ इन जातिनमें जे कला लिखी है ते दक्षिण मार्ग ।१। जांनिये ॥ और वार्तिक मार्गमें लिखी कलानसों दुणी ।२। जांनिये ॥ चित्र मार्गमें लिखी कलानसो चौगुणी जांनिये ॥ अर इन जातिनके राग विकृति जाति है ते जो जाति, जा रसमें कही ताही, रसमें गाईये ॥ सो ये जाति श्रीमहादेवजीके स्तुतिके पदनमें गावे सो पांचे स्वरनसों गुरुनसो सास्त्रसों संगीत विधान जांनिके ॥ इन जातिनकों शिवजीकी स्तुति पदनमें गावे ॥ वह गायनवारो वा मुनिवेवारो दोन्हु ब्रह्महत्यादिक पापन सों छुटे जो रिगवेद । १ । यजुर्वेद । २ । सामवेद । ३ । उनके स्वर सहित पाठ किये तें जो फल होय सो फल इन जातिनके पढवे तें सुनवे गायवे तें वा याकी चरचा किये तें वा इनके लछन विचार कियेते । यह जाति वेद समान जांनिये ॥

॥ इति सात सुद्ध जाति प्रमाण संपूर्णम् ॥

अथ षांडजी आदिक सात सुद्ध जातिनके कपालनकी उत्पत्ति लछन लिख्यते ॥ शिवजीनें भरतादि मुनीको संगीतशास्त्र पढायवेको प्रथम तांडव नृत्य कीनो तब षांडजी । आदिक सात सुद्ध जातिनको अलाप कीनो, तो, शिवजीको परम आनंद भयो तब शिवजीके शिसमें जो, चंद्रमा, तातें, अमृतकी बूंद शिवजीके गलेमें जो कंठमाला, तापें, पडी तब वे रुंडमालामें, जे मस्तक हते, संजीवन भये के जातिनके राग हर्ष सों गावत भये सो उन कपालनके गाये जो, गीत तिनको, तीन नाम कपालनके है ॥ और जातिनतें उत्पन्न भये जो रागनी, तिनके सरूप न्यारे न्यारे ॥ तीन गीतनमें गाये जाय, ते, कपाल गीत कहिये। जैसें मनुष्यनके स्वरूप भेद मुख्य देखवेतें पहचानें ऐसेंहि कपालसो रागके भेदसरूप जांनिये ॥

अथ प्रथम षांडजी जातिके कपालनको लछन लिख्यते ॥ जो कपालमें ग्रह अंस षड्ज स्वर होय, षड्ज स्वरही अपन्यास होय अरु गांधार न्यास होय

अरु निषाद धैवत पंचम रिषभ थोडे होय ॥ और कहुक रिषभ दूर कीये षांडव होय हें ॥ मध्यम गांधारको बहुत उच्चार होय जामें बारह कला होय ॥ सो गीतको नाम षांडजी कपाल जांनिये ॥ **इति षांडजी कपाल लछन संपूर्णम्॥**

अथ षांडजी कपाल पद लिख्यते ॥ झण्टुं झण्टुं ॥१॥ खट्वाङ्गधरं ॥२॥ दंष्ट्राकरालं ॥ ३ ॥ तडितसदृशजिह्वं ॥४॥ हौ हौ हौ हौ हौ हौ हौ हौ॥ ५ ॥ बहुरूपवदनं ॥ ६ ॥ घनघोरनादं ॥ ७ ॥ हौ हौ हौ हौ हौ हौ हौ हौ ॥ ८ ॥ ऊं ऊं न्हां रौं हौं हौं हौं हौं॥ ९ ॥ नृमुंड मंडितं ॥ १० ॥ हूं हूं क ह क ह हूं हूं ॥ ११ ॥ कृतविकटमुखं ॥ १२ ॥ नमामि देवं भैरवं । १३ । **इति षांडजी कपाल पद संपूर्णम् ॥**

अथ आर्षभी कपाल गीतको लछन लिख्यते ॥ जहां रिषभ अंस स्वर अरु अपन्यास स्वर होय ॥ और मध्यम स्वर न्यास होय ॥ अरु निषाद धैवत थोडे होय ॥ अरु षांडवमें स्वर थोडे होय ॥ आठजाकी कला होय सो गीत आर्षभी कपाल जांनिये ॥ **इति आर्षभी कपाल गीतको लछन संपूर्णम् ॥**

अथ आर्षभी कपाल पद लिख्यते ॥ झण्टुं झण्टुं ॥१॥ खट्वाङ्गधरं ॥२॥ दंष्ट्राकरालं॥३॥ तडितसदृशजिह्वं ॥४॥ उं उं न्हों त्रैं हौ हौ हौ हौ॥ ५॥ हौ हौ हौ ऐं हौ हौ हौ हौ ॥ ६ ॥ वर सुरभि कुसुम चार्चितगात्रं ॥ ७ ॥ कपालहस्तं ॥ ८ ॥ नमामिदेवं ॥ ९ ॥ **इति आर्षभी कपाल पद संपूर्णम् ॥**

अथ गांधारी कपाल गीतको लछन लिख्यते ॥ जहां मध्यम स्वरमें ग्रह होय अरु अंस होय न्यास होय अपन्यास होय जामें धैवत बहुत होय ॥ अरु षड्ज रिषभ गांधार थोडे होय ॥ अरु रिषभ पंचम दूर किये औडव होय अर जामें आठ कला होय ॥ सो गीत गांधारी कपाल जांनिये ॥ **इति गांधार कपाल गीतको लछन संपूर्णम् ॥**

अथ गांधारी कपाल पद लिख्यते ॥ चलत रंग भंगुरं ॥ १ ॥ अनेकरेणु ॥ २ ॥ पिंजरं सुरासुरैः ॥ ३ ॥ सुसेवितं ॥ ४ ॥ पुनातु जान्हवी ॥ ५ ॥ जलं मां ॥ ६ ॥ विंदुभिः ॥ **इति गांधारी कपाल पद संपूर्णम् ।॥**

अथ मध्यमा कपाल गीतको लछन लिख्यते ॥ जहां अंस ग्रह

न्यास अपन्यास मध्यम होय ॥ अरु निषाद पंचम रिषभ गांधार ये थोडे होय ॥ और जामें, नौ, कला होय । सो गीत मध्यमा कपाल जांनिये ॥ **इति मध्यमा कपाल गीतको लछन संपूर्णम ॥**

अथ मध्यमा कपाल पद लिख्यते ॥ शूल कपाल ॥ १ ॥ पाणि त्रिपुरविनाशि ॥ २ ॥ शशाङ्कधारिणं ॥ ३ ॥ त्रिनयन त्रिशूलं ॥ ४ ॥ सतत मुमया सहितं ॥ ५ ॥ तं वन्दं है है है है॥ ६ ॥ है है है है है ॥ ७ ॥ है है है है है ॥ ८ ॥ स्वामि महादेवं ॥ ९ ॥ **इति मध्यमा कपाल पद संपूर्णम ॥**

अथ पंचमी कपाल गीतको लछन लिख्यते ॥ जहां रिषभमें ग्रह अंस न्यास होय ॥ अरु निषाद धैवत षड्ज गांधार मध्यम ये थोडे होय ॥ और ज्यामें आठ कला होय ॥ सो गीत पंचमी कपाल जांनिये ॥ **इति पंचमी कपाल गीतको लछन संपूर्णम ॥**

अथ पंचमी कपाल पद लिख्यते ॥ जय विषमनयन ॥ १ ॥ मदन-तनु दहन ॥ २ ॥ वर वृषभगमन ॥ ३ ॥ त्रिपुरदहन ॥ ४ ॥ नत सकल-भुवन ॥ ५ ॥ सित कमलवदन ॥६॥ भव मे भय हरण ॥ ७ ॥ भवशरणं॥ ८ ॥ **इति पंचमी कपाल पद संपूर्णम ॥**

अथ धैवती कपाल गीतको लछन लिख्यते ॥ जहां रिषभ गांधार थोडे होय ॥ अरु येहि अपन्यास होय ॥ मध्यम जामें बहुत होय ॥ अरु येहि अंस होय धैवतमें ग्रह स्वर, न्यास स्वर होय ॥ अरु आठ ज्यामें कला होय ॥ कहूंक रिषभ दूरि किये तें षाडव होय ॥ सो गीत धैवती कपाल जांनिये ॥ **इति धैवती कपाल गीतको लछन संपूर्णम ॥**

अथ धैवती कपाल पद लिख्यते ॥ अग्नि ज्वालाशि ॥ १ ॥ खाव-लि ॥ २ ॥ मांस शोणित ॥ ३ ॥ भाजिनि ॥ ४ ॥ सर्वाहारिणि ॥ ५॥ निर्मांसे ॥६॥ चर्ममुंडे ॥ ७ ॥ नमोस्तुते ॥ ८ ॥ **इति धैवती कपाल पद संपूर्णम ॥**

अथ नैषादी कपाल गीतको लछन लिख्यते ॥ जहां ग्रह अंस न्यास अपन्यास षड्जमें हो ॥ अर रिषभ गांधार थोडे होय ॥ निषाद धैवत पंचम बहुत होय ॥ अरु आठ जामें कला होय सो गीत नैषादी कपाल जांनिये॥ **इति नैषादी कपाल गीतको लछन संपूर्णम ॥**

अथ नैषादी कपाल पद लिख्यते ॥ सरसगजचर्मपटं ॥ १ ॥ भीम भुजंगमानद्धजटं ॥२॥ कह कह हुंकृत विकृत मुखं ॥ ३ ॥ नम तं शिवं हरमजितं ॥ ४ ॥ चंद्ररुंडमजेयम् ॥ ५ ॥ कपाल मंडित मुकुटं ॥ ६ ॥ कामदर्पविध्वंस करं ॥७॥ नम तं हरं परमशिवं ॥ ८ ॥ **इति नैषादी कपाल पद संपूर्णम् ॥**

अथ कंबलकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ पहले कंबल ॥ १ ॥ अश्व-तर ॥ २ ॥ नाम नाग राजानें शिवजीके कानके कुंडल होय वेकों शिवजीको प्रसन्न करिवेकौ पंचमी सुद्ध जातिके स्वरनको थोडे बहुत करिकें गीतमें शिव-जीके गुणानुवाद गाये तब शिवजि प्रसन्न होयके कंबल ॥ अरु अश्वतर दोनु कानके कुंडल करिके काननमें पहरे ॥ तब तें कंबल नाम नाग राजानें गाये जे गीत तिनको नाम कंबलके गीत कहत हें ॥ जहां ग्रह अंस अपन्यास पंचम होय ॥ अरु जांमें रिषभ बहोत होय ओर षड्जमें न्यास होय ॥ अरु म-ध्यम गांधार थोडो होय पंचमी जातितें उपज्यो होय ॥ सो गीत कंबल जांनिये ॥ या कंबल गीतके भेद पंचमी जातिके जे स्वर, तिनको क्रमतें कहुं थोडे बहुत किये तें ॥ अनेक कंबल गीतके भेद होत हें ॥ सो ब्रह्माजी वा शिवजि वा भरत मतंगादिक मुनीश्वर कहत हें ॥

अथ कंबल गीतके गाईवेकों वा सुनिवेकों वा जांनिवेकों फल लिख्यते ॥ शिवजी वे कंबलगीत सुनिके राजी भये ॥ कंबल वा अश्वतर दोनु नाग राजाको काननके कुंडल दिये ॥ अरु यह कही शुद्ध विकृति जातिनके कपाल कंबलगीत तुम गाये ॥ तातें प्रसन्न होयकें तुमको मे वर दान कीयो हें ॥ जो कोई नरनारी इनको गावे सुनें इनके मार्गमें सुकृताके उपर प्रसन्न होयकें सकल मनोरथ पूर्ण करु यह कही ॥ यातें इन गीतनको विचारिये ताको फल सुद्ध जातिनसों जांनिये ॥ **इति कंबल गीतकी उत्पत्ति लछन संपूर्णम् ॥**

अथ जातिनको वरताव गीतनमें होय हें यातें गीतको लछन लिख्यते ॥ च्यार वर्ण कहिये, स्थाई ॥ १ ॥ आरोही ॥ २ ॥ अवरोही ॥ ३ ॥ संचारी ॥ ४ ॥ ये वरन अरु इनके अलंकार त्रेसटि । ६३ । तिन करिकें जुक्त अरु विलंबित । १ । मध्य । २ । द्रुत । ३ । य तीनों लयनको लिये शब्द ॥ राम । कृष्ण । शिव । आदि जामें होय एसों जो स्वरनको प्रस्तार ॥ सो

आरोह अवरोह करिकें रचियें ॥ ताकें गाइवेकी जो क्रीया सो गीत जांनिये ॥ सो गीत च्यार प्रकारको है ॥ मागधी । १ । अर्धमागधी । २ । संभाविता । ३ । पृथुला । ४ । ये च्यार हैं ॥

अथ प्रथम मागधी गीतको लछन लिख्यते ॥ जामें तीन कला होय तहां पहली कलामें विलंबित लय ॥ सो एकसंगगावनो ॥ ओर दुसरी कलामें मध्यम लय कहिये ॥ विलंबित लयको आधो समय सो मध्यम लय जांनिये ॥ ता मध्यम लय सों पहली कलामें गायो जो शब्द सो दुसरे सब्द सहित गाईये ॥ ऐसों दोय सब्द गाईये ॥ एक तो पहली कलाको ओर दुसरो शब्द ओर लगावनों ॥ अरु तीसरी कलामें द्रुत लय कहिये ॥ मध्यम लयको आधो समयको द्रुतलय जांनिये ॥ या द्रुत लयसों पहली कला दुसरी कलामें गाये जे दोय सब्द ते तीसरी सब्द सहित गावनें ॥ ऐसें तीसरी सब्द दुसरी कलामें गावनें दोय सब्द तो पहली दोय कलानकें लेनें ॥ तीसरी कलाको ओर सब्द लगावनों ॥ ऐसें कलानमें गायवेके शब्दनकी रीति जांनिये अरु स्वरनकी रीति जा जातिमें गावनी होय ता जातीको लेना ऐसो गीतको मागधी गीत जांनिये ॥ **इति मागधी गीति लछन संपूर्णम् ॥**

मागा	माधा	धनि	धनि	सनि	धा
दे०	वं०	दे०	वं०	रु०	द्रं

रिग	रिग	मग	रिसा
देवं	रुद्रं	वं०	दे०

अथ अर्ध मागधीको लछन लिख्यते ॥ जा जातिमें तीन कला होय ॥ तहां पहली कलामें विलंबित लय सों एक शब्द गाईये ॥ अरु दुसरी कलामें पहली कलामें गायो जो शब्द ॥ ताको पिछलो आधो गायकें । ओर एक शब्द गाईये ऐसें वम् , सब्द मध्यम लयसों गाईये । अरु तीसरी कलामें दुसरी कलामें गायो जो दुसरो शब्द ताको पिछलो आधो गायके एक ओर सब्द गाईये ॥ ऐसें वम्, शब्द द्रुतलय सों गाईये । ऐसें गायवेकी रिति जा गीतमें होय सो अर्ध मागधी जांनिये ॥ **इति अर्ध मागधीके लछन संपूर्णम ॥**

मा	री	गा	सा
दे	०	वं	०

सा	सा	धा	नी
वं	रु	द्रं	०

पा	धा	पा	मा
द्रं	वं	दे	०

अथ संभाविताको लछन लिख्यते ॥ जा, गीतमें कलाके जितने स्वर होय ॥ तिन स्वरनमें कोई कोईक स्वर सब्दके ॥ अक्षरनमें लगाईके गाईये ॥ और कोई कोई स्वर विना अक्षरके भये तिनमें उच्चार कीजिये ॥ ऐसें गायवेकी रिति होय, सो, संभाविता गीत जांनिये ॥ **इति संभाविता गीत लछन संपूर्णम्** ॥

मा	मा	मा	मा
दे	०	वं	०

धा	सा	धा	नी
दे	वं	रु	द्रं

पा	निध	मा	मा
रु	द्रं०	वं	दे

॥ इति संभाविता गीति जंत्र संपूर्णम् ॥

अथ प्रथुला गीतको लछन लिख्यते ॥ जाके शब्दनमें गुरु अक्षर होय ॥ ओर कहूंक गुरु अक्षरके स्थान दोय लघु होय ॥ ऐसें सुद्ध असुद्धन सों जहां कला गाईये ॥ सो प्रथुला गीत जांनिये ॥ **इति प्रथुला गीति संपूर्णम्** ॥

मा	गा	री	गा
सु	र	न	त

सा	धनि	धा	धा
ह	र०	प	द

धा	सा	धा	नि
यु	ग	लं	०

पा	निधप	मा	मा
ष	ण००	म	त

अथ पहले कही जे च्यार मागधि आदिक गीत तिनके दुसरे कला लछन भरतादि मुनिनें कहे सो कहत हें ॥

अथ मागधी गीतको दुसरो लछन लिख्यते ॥ जहां चंचतपुट तालके पहले जो दोय गुरु तिनमें एक एक गुरु सो चित्र मार्गमें चंचतपुट तालको निर्वाह कीजीये ॥ अथवा एक एक गुरु सों छह छह मात्रा लगावनी ॥ तब एक गुरुकी दोय मात्रा ॥ अरु छह मात्रा ओर मीलायदीजिये ॥ ऐसें आठ मात्रा होय । ऊन आठो मात्रानमें दक्षीण मार्ग सों ध्रुवकादिक आठ मात्रा वरतिकें एक कला चंचतपुट तालको ॥ सरूप बांधिके ॥ जब कोऊ जाति गाईये तब वह तालके खंड करिकें गायवेकी जो रीति ॥ सो मागधी जाति जांनिये ॥ **इति मागधी गीतिको लछन संपूर्णम् ॥**

अथ अर्ध मागधी गीतको दुसरो लछन लिख्यते ॥ जहां चंचतपुट तालको तीसरो अंग जो लघुता सों तीन मात्रा ओर मिलायकें च्यार मात्रा कीजिये ॥ अरु ऊन च्यार मात्रानमें धविका ॥ १ ॥ सर्पिणी ॥ २ ॥ ये दोनु मात्रा अरु पताका ॥ ७ ॥ पतिता ॥ ८ ॥ ये दोय पिछली मात्रा वरतीकें एक कला चंचतपुट तालको ॥ आधो सरूप बांधिकें जब जाति गाईये ॥ अथवा चंचतपुटको चोथो ॥ अंगप्लुत तीन मात्राको तासो नों । ९ । मात्रा ओर मीलाईये । बारह । १२ । मात्रा कीजीये ॥ अरु उन बारह मात्रानमें ॥ ध्रुवकादिक आठ कला क्रमसों वरतीये आठ मात्रामें ॥ अरु बाकीकी च्यार मात्रानमें पिछली दोय मात्रा पताका अरु पतिता ये दोय वेर वरतिये ॥ तहां पताका । १ । पतिता । २ । पताका । ३ । पतिता । ४ । या रीतीसों च्यारो मात्रा पूर्ण कीजिये ॥ ऐसें एक कला चंचतपुट तालको टडो रूप बांधिये ॥ जब कोउ जाति गाइये ॥ तब ताल खंड करिकें गावे की जो रीती सों अर्ध मागधी गीति जांनिये ॥ इति अर्ध मागधी गीतिको लछन संपूर्णम् ॥ ये दोनो गीत

यां रीतीसों पांचो मार्गी तालमें जांनिये ॥ अथ संभाविता गीतिको दूसरो लछन लिख्यते ॥ जहां कला चंचतपुट तालकी मात्रामें बहोत गुरु अक्षर राखिकें ॥ तहां द्विकल चंचतपुटकी सोलह मात्रा होत हैं तिनमें आठ गुरु राखिये ॥ ऐसें कार्तिक मार्गमें द्विकल चंचतपुट ताल बांधिकें जो कोऊ जाति गाईये ॥ सो वह गाईवेकी रीती सों संभाविता जांनिये ॥ **इति संभाविता गीतको लछन संपूर्णम् ॥**

अथ पृथुला गीतको दूसरो लछन लिख्यते ॥ जहां चतुष्कल चंचतपुट तालकी मात्रानमें ॥ लघु अक्षर राखिकें । तहां चतुष्कल चंचतपुट तालकी बत्तीस मात्रा हैं ॥ तिनमें बत्तीस लघु अक्षर राखिये ॥ ऐसें चतुष्कल चंचतपुट ताल बांधिके दक्षिण मार्गमें जो कोऊ जाति गाईये ॥ सोवह गाईवेकी रीतीसों पृथुला गीत जांनिये ॥ **इति पृथुला गीतको दूसरो लछन संपूर्णम् ॥**

॥ जामें गांधार तीव्र होय कोमल धैवत मेल ॥

॥ षांडव ॥

१	१	२	३	४	५		१
स		स	स	स	स		
रि		ग	रि	रि	रि		
ग		म	ग	ग	ग		
म		प	प	म	प		
प		ध	ध	ध	ध		
नी		नि	नि	नि	नि		

॥ औडव ॥							
२	३	३	४	४	५		स
स	स	स	स	स	स		रि
ग	रि	रि	ग	रि	रि		ग
प	ग	ग	म	म	ग		म
ध	ध	ध	म	म	ध		प
नि	नि	नि	ध	ध	ध		धनि

॥ संपूर्णम् ॥	॥ पांडव ॥				॥ औडव ॥		
स	१	२	३		०	०	०
ग	स	स	स		१	२	३
म	रि	ग	रि		स	स	स
प	ग	म	ग		रि	ग	रि
प	प	प	प		ग	ग	प
ध	ध	ध	ध		ध	म	ध
नी	नी	नी	नि		नि	नि	नि

॥ धैवत कोमल औडव ॥							
४			१	३	४	५	६
स	स		स	स	स	स	स
ग	रि		रि	ग	रि	रि	रि
म	ग		ग	म	म	म	ग
ग	प		प	ध	ध	ध	ध
नि	नि		नि	नि	नि	नि	नि

॥ जामें रिषभ कोमल तिव्रतर मध्यम ॥							
१	२	३	४	५	६	१	
स	स	स	स	स	स	स	प्र
म	रि	रि	ग	ग	ग	रि	ध्रि
प	म	ग	म	म	प	ग म	नु
ध	ध	म	ध	प	म	प ध	च
नि	नि	ध	नि	ध	ध	धनि	पं

॥ जामें कोमलधैवत संपूर्णम् ॥							
१	स	रि	म	प	ध	नि	सं
२	स	रि	ग	म	ध	नि	पू
३	स	रि	म	म	प	ध	णं

॥ रिषभकोमल तीव्रतर मध्यम ॥

१	२	३		१		१
स	स	स		स		स
रि	रि	रि		रि		रि
म	ग	म		ग		म
ध	म	प		म		प
नि	ध	ध		पधनि		धनि

॥ षांडव ॥ ॥ औडव ॥

२	३		१	२	३	
स	स		स	स	स	
रि	रि		रि	रि	रि	
प	ग		म	प	ग	
म	म		ध	ध	ध	
धनि	धनि		नि	नि	नि	

संपूर्ण		षांडव			औडव	
१		१	२		१	
स		स	स		स	
रि		रि	रि		रि	
ग		ग	ग		म	
म		प	प		ध	
प		ध	ध		नि	
धनि		नि	नि		०	

॥ गीतमें रिषभकोमल धैवतकोमल पूर्वनिषाद ॥

॥ मध्यम तीव्रतर धैवतकोमल निषाद तीव्रतर ॥

स १		१	२	३		स १
रि		स	स	स		रि
ग		ग	रि	रि		ग
म		म	ग	ग		म
प		प	म	म		प
ध		ध	प	प		ध
नि		नि	धनि	ध		नि

॥ धैवत कोमल निषाद तीव्रतर ॥						
१	२	३		औ	ड	व
स	स	स		१	२	३
ग	रि	रि		स	स	स
म	ग	ग		ग	रि	ग
प	म	म̄		म	ग	म
ध	ध	प		ध	म	प
नि	नि	ध		नि	ध	ध

॥ मध्यम संपूर्णम् ॥						
स १	१	२	३	१	२	३
रि	स	स	स	०	०	०
ग	ग	रि	रि	स	स	स
म	म	ग	ग	ग	रि	ग
प	प	म	म	म	ग	म
ध	ध	ध	प	ध	म	प
नि	नि	नि	नि	नि	ध	प

॥ प्रथमस्वराध्याय समाप्त ॥

॥ शुद्ध व विकृत स्वर यंत्र ॥

श्रुति.	शुद्ध स्वर.		विकृत स्वर.					शुद्ध व विकृतस्वर.		मुख्य व गौण स्वर.	शुद्ध व विकृत स्वर.
	षड्ज ग्राम	मध्यम ग्राम	संगीतरत्नाकर व संगीतदर्पण.	रागविबोध.		संगीत-पारिजात.		आधुनिक प्रचार.			स्वसंमत
				शास्त्रोक्त	देशी लक्ष्य	कोमल	तीव्र	महाराष्ट्र व उ० हिंदुस्थान	कर्नाटक	पाश्चात्य राष्ट्रें	
१			११ कैशिकी निषाद	६ कैशिकी नि.	१२ षट्श्रुति धै. १३ कै. नि.		२० तीव्र नि.		१४ षट्श्रु धै. १५ कै शि० नि.		१५ तीव्र निषाद.
२			१२ काकली निषाद	७ काकली नि.	१४ काकली नि.		२१ तीव्रतर नि.	१२ तीव्र नि.	१६ काकली निषाद.	१२ नि. (तीव्र) (शार्प)	१६ तीव्रतर निषाद
३			१ च्युत षड्ज	१ च्युत षड्ज मृदु. स.	१५ मृदु षड्ज	(मृदु स.)	२२ तीव्रतम नि.				
४	स	स	२ अच्युत षड्ज	(स)				१ स (शुद्ध)	१ स (शुद्ध)	१ स.	१ स
५						१ पूर्व रि.					२ अतिकोमल ऋषभ
६						२ कोमल रि.		२ कोमल रि.		२ रि. (को.) (फ्लॅट)	३ कोमल ऋषभ
७	रि	रि	३ चतुःश्रुति ऋषभ	(री)		३ पूर्व गां.			२ शुद्ध रि.		शुद्ध ऋषभ (ऋ.)
८					१ चतु. रि. (तीव्र)	४ कोमल गां.	५ तीव्र रि.	३ तीव्र रि.	३ चतुःश्रुति रि.	३ रि (तीव्र) (शार्प)	४ तीव्र ऋषभ
९	ग	ग		(ग)	२ पंचश्रु. रि. (तीव्रतर)		६ तीव्रतर रि.	४ कोमल गां.	४ शुद्ध गां.	४ ग (कोमल) (फ्लॅट)	५ कोमल गांधार.
१०			४ त्रिश्रुति गां. (साधारण गां.)	३ साधारण गांधार तीव्र गां.	३ षट्श्रु. रि. (तीव्रतम) ४ साधा० गां.		७ तीव्र गां.		५ षट्श्रु. रि. ६ साधा गां.		६ तीव्र गांधार.

११			५ चतुःश्रु.गां. (अंतर गां.)	३ अंतर गां. तीव्रतर गां.	५ अंतर गां. (तीव्रतर गां.)		८ तीव्रतर गां.	५ तीव्र गां.	७ अंतर गां.	५ ग (तीव्र) (शार्प)	७ तीव्रतर गांधार.
१२			६ च्युत मध्यम	४ मृदु मध्यम (गांधारभेद)	६ मृदु मध्यम	(मृदु मध्यम)	९ तीव्रतम गां.				
१३	म	म	७ अच्युत मध्यम	(म)	७ षट्श्रु. गां. (तीव्रतम.)		१० अति तीव्रतम गांधार.	६ कोमल म.	८ शुद्ध मध्यम.	६ म (को.) (फ्लॅट.)	८ कोमल मध्यम.
१४							११ तीव्र म.				
१५					८ षट्श्रु. म. (तीव्रतम म.)		१२ तीव्रतर मध्यम	७ तीव्र म.	९ प्रति मध्यम	७ म (ती.) (शार्प)	९ तीव्र मध्यम
१६		प	८ त्रिश्रुति पंचम	५ मृदु पं. (मध्यमभेद.)	९ मृदु पंचम	(मृदु पंचम)	१३ तीव्रतम मध्यम				
१७	प		९ चतुःश्रुति पंचम	(प)				८ प (शुद्ध)	१० प (शुद्ध)	८ प	१० प
१८						१४ पूर्व धैवत					११ अति कोमल धै.
१९					,,	१५ कोमल धैवत		९ कोमल धै.		९ ध. (को.) (फ्लॅट.)	१२ कोमलधैवत
२०	ध	ध	१० चतुःश्रुति धैवत.	(ध)		१६ पूर्व नि.			११ शुद्ध धै०		(शुद्ध धैवत) (को०)
२१					१० चतुःश्रुति धैवत	१७ कोमल नि.	१८ तीव्र धै.	१० तीव्र धै.	१२ चतुःश्रुति धैवत	१० ध (ती.) (शार्प)	१३ तीव्र धैवत.
२२	नि	नि		(नि)	११ पंचश्रुति धैवत.		१९ तीव्रतर धैवत	११ कोमल नि.	१३ शुद्ध नि.	११ नि.(को.) (फ्लॅट)	१४ कोमल निषाद.

॥ रागोंसें नाम मिले हुये मुख्य २३ मेल ॥

क्र.	मेलके नाम.	पृष्ठकी क्रमसंख्या	कितने विकृत स्वर	स्वर							मेलमें अंतरभूत होनेवाले राग.
१	मुखारी	१	सब शुद्ध	स	रि	ग	म	प	ध	नि	मुखारी, हुसेनीतोडी इ.
२	रेवगुप्ति	५	१ वि०	स	रि	अं. ग	म	प	ध	नि	रेवगुप्ति इ०
३	सामवराली	१४	,,	स	रि	ग	म	प	ध	का. नि	सामवराली, वसंतवराडी इ०
४	तोडी. ...	४२	२ वि०	स	रि	सा. ग	म	प	ध	कै. नि	तोडी, हुसेनीतोडी इ०
५	नादरामक्री	४४	,,	स	रि	सा. ग	म	प	ध	मृ. स	नादरामक्री इ०
६	भैरव ...	५०	,,	स	रि	अं. ग	म	प	ध	कै. नि	भैरव, पौरविका इ०
७	वसंत ...	५१	,,	स	रि	अं. ग	म	प	ध	का. नि	वसंत, टक, हिजेज, [illegible]ल इ०
८	वसंतभैरवी	५८	,,	स	रि	मृ. म	म	प	ध	कै. नि	वसंतभैरवी, मारवी इ०
९	मालवगौड	६०	,,	स	रि	मृ. म	म	प	ध	मृ. स	मालवगौड, शुद्धगौडी, चैत्तीगौडी, पूर्वी, पहाडी, देवगांधार, गौडक्रिया. कुरंजी, बहुली, गमक्रिया, पावक, आसावरी, पंचम, बंगाल, शुद्धललिता, गुर्जरी, परज, विशुद्धगौड इ०
१०	रीतिगौड	८४	,,	स	रि	ग	म	प	ती. तर ध शु. नि.	कै. नि	रीतिगौड इ०
११	आभीरनाट	६१	३ वि०	स	ती. तर रि	सा. ग	म	प	ध	मृ. स	आभीरनाट इ०
१२	हम्मीर ...	७७	,,	स	ती. तर रि	मृ. म	म	प	ध	मृ. स	हम्मीर, बिहंगड, केदार इ०
१३	शुद्धवराली	१६५	,,	स	रि	सा. ग	ती. तम म	प	ध	मृ. स	वराटी.
१४	रामक्री ... (देशकार)	२०७	,,	स	रि	मृ. म	ती. तम म	प	ध	मृ. स	[illegible], जैताश्री, त्रिवर्णी, देशी, ललित (विभासभेद.)
१५	श्रीराग ...	३३	४ वि०	स	ती. रि	सा. ग	म	प	तीव्र ध	कै. नि	श्रीराग, मालवश्री, धन्याशी, भैरवी, धवलाधनाश्री, मेवाडी, सैंधवी (सिंधोडा) इ०
१६	कल्याण	१०४	,,	स	ती. तर रि	सा. ग	मृ. प	प	ध	मृ. स	कल्याण इ०
१७	कांबोदी	१४०	,,	स	ती. तर रि	अं ग	म	प	ती. तर ध	का. नि	कांबोद, देवकी इ०

॥ रागोंसें नाम मिले हुवे मुख्य २३ मेल ॥

क्रम.	मेलके नाम.	मेलकी क्रमसंख्या.	कितने विकृत स्वर	स्वर							मेलमें अंतरभूत होनेवाले राग.
				स	रि	ग	म	प	ध	नि	
१८	मल्लारि	१६२	४ वि०	स	ती. तर रि	मृ. म	म	प	ती. तर ध	मृ. स	मल्लारि, नटमल्लारि, पूर्वगौड, भूपाळी, गौड, शंकराभरण, नटनारायण, नारायण गौड, केदार, (दुसरा), सालंकनाट, वेलावर्ली, मध्यमादि, सावेरी, सौराष्ट्री इ०
१९	सामंत	२४५	,,	स	ती.तम रि	अं. ग	म	प	ती.तम ध	का. नि	सामंत इ०
२०	कर्णाटगौड	२५९	,,	स	,,	मृ. म	म	प	ती. ध	कै. नि	कर्णाटगौड, अड्डाण, नागध्वनि, विशुद्धबंगाल, वर्णनाट, तुरुष्कतोडी इ०
२१	देशाक्षी	२६४	,,	स	,,	,,	म	प	ती. तर ध	मृ. स	देशाक्षी इ०
२२	शुद्धनाटी	२६७	,,	स	,,	,,	म	प	ती.तम ध	,,	शुद्धनाट इ०
२३	सारंग	१४४	५ वि०	स	ती. तर रि	ती.तम ग	मृ.प	प	ती.तम ध	,,	सारंग इ०

॥ श्रीमल्लक्ष्यसंगीतम्–द्विसप्ततिमेलसमर्थनम् ॥

चतुर्दंडिप्रकाशिकायाम्

द्विसप्ततिमेलकानां निर्माता व्यंकटेश्वरः ।
स्वकीये ग्रंथके ब्रूते स्पष्टं तत्सृष्टिकारणम् ॥
ननु द्विसप्ततिर्मेला भवता परिकल्पिताः ।
प्रसिद्धाः पुनरेतेषु मेला कतिचिदेव हि ॥
दृश्यन्ते नतु सर्वेऽपि तेन तत्कल्पनं वृथा ।
कल्पनागौरवन्यायादिति चेदिदमुच्यते ॥
अनंताः खलु भेदास्ते देशस्था अपि मानवाः ।
तेषु सांगीतिकैरुच्चावचसंगीतकोविदः ॥
ये कल्पयिष्यमाणाश्च कल्प्यमानाश्च कल्पिताः ।
अस्मदादिभिरज्ञाता ये च शास्त्रैकगोचराः ॥
ये च देशीयरागास्तद्रागसामान्यमेलकाः ।
संग्रहीतुं समुन्नीता एते मेला द्विसप्ततिः ।

कर्नाटकी मेलके यंत्र.

चक्र.	क्रमसंख्या.	शुद्धमध्यम-मूलक. मेल.	स्वरस्थान. रि ग ध नि	प्रतिमध्यम-मूलक. मेल.	क्रमसंख्या.	चक्र.
१ लें.	१	कनकांगी	शु. शु. शु. शु.	सालग	३७	७ वें.
	२	रत्नांगी	,, ,, शु. कै.	जलार्णव	३८	
	३	गानमूर्ति	,, ,, शु. का.	झालवराळी	३९	
	४	वनस्पति	,, ,, च. कै.	नवनीत	४०	
	५	मानवती	,, ,, च. का.	पावनी	४१	
	६	तानरूपिणी	,, ,, ष. का.	रघुप्रिय	४२	
२ रें.	७	सेनापति	शु.सा. शु. शु.	गवांभोधि	४३	८ वें.
	८	हनुमत्तोडी	,, ,, शु. कै.	भवप्रिय	४४	
	९	धेनुक	,, ,, शु. का.	शुभपंतुवराळी	४५	
	१०	नाटकप्रिय	,, ,, च. कै.	षड्विधमार्गिणी	४६	
	११	कोकिलप्रिय	,, ,, च. का.	सुवर्णांगी	४७	
	१२	रूपवती	,, ,, ष. का.	दिव्यमणि	४८	
३ रें.	१३	गायकप्रिय	शु. अं. शु. शु.	धवलांबरी	४९	९ वें.
	१४	वकुळाभरण	,, ,, शु. कै.	नामनारायणी	५०	
	१५	मायामालवगौळ	,, ,, शु. का.	कामवर्धनी	५१	
	१६	चक्रवाक	,, ,, च. कै.	रामप्रिय	५२	
	१७	सूर्यकांत	,, ,, च. का.	गमनश्रम	५३	
	१८	हाटकांबरी	,, ,, ष. का.	विश्वंभरी	५४	
४ थें.	१९	झंकारध्वनि	च. सा. शु. शु.	श्यामलांगी	५५	१० वें.
	२०	नटभैरवी	,, ,, शु. कै.	षण्मुखप्रिय	५६	
	२१	कीरवाणी	,, ,, शु. का.	सिंहेंद्रमध्यमा	५७	
	२२	खरहरप्रिय	,, ,, च. कै.	हेमवती	५८	
	२३	गौरीमनोहारि	,, ,, च. का.	धर्मवती	५९	
	२४	वरुणप्रिय	,, ,, ष. का.	नीतिमती	६०	
५ वें.	२५	माररंजनी	च. अं. शु. शु.	कांतामणि	६१	११ वें.
	२६	चारुकेशी	,, ,, शु. कै.	रिषभप्रिय	६२	
	२७	सरसांगी	,, ,, शु. का.	लतांगी	६३	
	२८	हरिकांबोधी	,, ,, च. कै.	वाचस्पति	६४	
	२९	धीरशंकराभरण	,, ,, च. का.	मेचकल्याणी	६५	
	३०	नागानंदिनी	,, ,, ष. का.	चित्रांबरी	६६	
६ वें.	३१	यागप्रिय	ष. अं. शु. शु.	सुचरित्र	६७	१२ वें.
	३२	रागवर्धनी	,, ,, शु. कै.	ज्योतिष्मती	६८	
	३३	गांगेयभूषणी	,, ,, शु. का.	धातुवर्धनी	६९	
	३४	वागधीश्वरी	,, ,, च. कै.	नासिकाभूषणी	७०	
	३५	शूलिनी	,, ,, च. का.	कोसल	७१	
	३६	चलनाट	,, ,, ष. का.	रसिकप्रिय	७२	

Poona Gayan Samaj.

AN APPEAL.

The Samaj was established in 1874 with marginally noted objects and its work has been mainly educational. It is giving gratuitous instruction to the music classes attached to three aided institutions in all about 1000 pupils as an accomplishment in addition to their regular studies and the direction in which its work has been carried on has been in editing text books on music, and old standard works like the "Sangitsar." Musical meetings and concerts, Prize giving ceremonies &c., have been periodically held. In this age of institutions a Society like the Samaj can not carry on its work without adequate funds. These are badly wanted, to secure its permanency. There is a crying need for a building to accommodate special music classes, a library and a museum in which the Society can be permanently housed. To equip the institution so as to make it lasting and effective for accomplishing the above objects a sum of Rs. 75000 in all is required. It is earnestly requested that all lovers of music and the generous public will come forward to help the cause in a handsome manner.

I.—Establishing schools for regular instruction in Music, or aiding the formation of such schools.

II.—Affording opportunities for occasional lectures in Music.

III.—Encouraging the revival of the study of singing and popularizing of old Sanskrit works on Music.

IV.—Adopting measures to reduce Indian Music to writing.

V.—Awarding prizes for special skill in vocal or instrumental Music.

VI.—Holding periodical meetings for musical entertainments in view to the gradual development of a taste for the Art and to afford additional means of special recreation and amusement.

VII.—Holding annual concerts as the Samaj's means and circumstances would permit.

VIII.—Devising and adopting any other means for the encouragement of Indian Music in general.

The payment of a donation of Rs. 100 or more will entitle the donor to be enrolled as a Life-member.

It is requested that donations may be paid to the undersigned or into the Indian Specie Bank Limited Bombay or its Branch at Poona.

The Poona Gayan Samaj,
No. 12 Shanwar Peth,
Poona, 25th June 1910.

B. T. SAHASRABUDDHE,
Honorary Secretary,
Poona Gayan Samaj.

पूना गायनसमाज.

अपील.

समाज सन् १८७४ ई. मे स्थापित हुई। इसके उद्देश मार्जिनमें दिए हुए हैं यह तीन पाठशालाओंमें १००० विद्यार्थिओंकों मुफ्तमें संगीतसम्बन्धनी शिक्षा देती है। साथ ही साथ समाज संगीतकी टेक्स्ट बुक्स् (Text Books) और प्राचीन ग्रन्थोंकों प्रकाशित करती रही, और समय समय पर जलसे वगैरह करातीं रही है।

(१) संगीत पाठशालाओंको भिन्नस्थानोंमें स्थापित करना, अथवा ऐसे पाठशालोंके स्थापनमें सहायता देना।

(२) समय समयपर संगीतविषयक व्याख्यानोंका प्रबन्ध करना।

(३) संगीतके अध्ययनमें लोगोंके उत्साहको बढाना और प्राचीन संस्कृत संगीत ग्रन्थोंका प्रचार करना।

(४) हिंदी संगीतको लिखनेका प्रयत्न करना।

(५) गाने या बजानेमें जो लोग विशेषरूपसे प्रवीण है, उनको पुरस्कार देना।

(६) समय समयपर गानेबाजेके जलसें करना जिसमें, लोगोंकी रुचि रस और ज्यादा होके लोगोंके विनोद और मनोरंजनकी साधन हो।

(७) प्रतिवर्ष संगीत उत्सवको मनाना, यदि समाजकी साम्पत्तिक दशा और अवस्था इसके अनुकूल हो।

(८) और भारतीय संगीतके प्रचारार्थ अन्य साधनोंका अवलम्बन करना।

आजकल जब चारो तरफ सभा, समाजें काम कर रहीं हैं, इस समाजका विना काफी फन्ड (Fund) के काम करना असंभव्य है। रुपयेकी बडी अवश्यकता है।

समाजको स्थायु (Permanent) बनानेके लिए एक समाज मन्दिर की, जिसमें संगीतके पढानेका विशेष प्रबन्ध होसके, एक पुस्तकालयकी, और एक म्युजियम (Museum) की सख्त जरुरत है। उपयुक्त उद्देशोंको सफल करनेके लिए ७५००० रुपया चाहिए। अतएव निवेदन है कि संगीतरसिक और उदार सर्वसाधारण उदाररूपसें इस कार्य्यमें सहायता करने की कृपा करें।

१०० रुपये देनेवाले सज्जन जीवनभरके लिए सभासद होगें।

यह प्रार्थना है कि जो सज्जन लोग सहायतामें दान दें उसे वे यह तो निम्न लिखितके पास या इन्डियन स्पिसी बैंक लिमिटेड बम्बई (Indian Specie Bank Limited Fort Bombay) या इसकी पूनाकी शाखाके पतेसें भेजें।

पूना गायनसमाज,
नंबर १२ शनवार पेठ,
पूना—२५ जून १९१०.

बळवंत त्रियंबक सहस्रबुद्धी,
सेक्रेटरी,
गायनसमाज, पूना.

The Poona Gayan Samaj.

SANGIT SAR

COMPILED BY

H. H. MAHARAJA SAWAI PRATAP SINHA DEO OF JAIPUR

IN SEVEN PARTS.

PUBLISHED

BY

B. T. SAHASRABUDDHE

Hon. Secretary Gayan Samaj, Poona.

PART II

WADYADHYAYA.

(Instruments & Instrumental Music.)

Price of the complete Work in seven parts

Rs. 10-8, or Rs. 2 each.

POONA:

PRINTED AT THE 'ARYA BHUSHANA' PRESS BY NATESH APPAJI DRAVID.

1910.

पूना गायन समाज.

संगीतसार ७ भाग.

जयपूराधीश महाराजा सवाई प्रतापसिंह देवकृत.

प्रकाशक

बलवंत त्रियंबक सहस्रबुद्धी
सेक्रेटरी, गायन समाज, पुणें.

भाग २ रा.

वाद्याध्याय.

पूना 'आर्यभूषण' प्रेसमें छपा.

संपूर्ण ग्रन्थका मूल्य रु. १०॥,
और प्रत्येक भागका मूल्य रु. २.

१९१०.

श्रीराधागोविंद संगीतसार.

द्वितीय वाद्याध्याय—सूचिपत्र.

विषयक्रम. पृष्ठ.

विधान कीजिये ॥ सो मेरु दोय आंगुलको उंचो राखिये ॥ औरवांही दंडमें मेरुके सनमुख मेरुसों एक तिलमात्रा उंचो कर्ह राखिये ॥ लौकिकमें तारोंको आसरो जो कांठ ताको नाम मेरु हें वे मेरु ओर कर्ह दोन्यो च्यार आंगुल उंचे कीजिये ॥ वा कर्हमें ॥ एक एक जवके प्रमानसों ॥ तारोनको राखवेके आकार करनें ॥ सो क्रमसों चढतें उतरतें करनें पहले आंका ॥ सो दूसरो आंका उंचो करनो या भांति । ४ । च्यार प्रकार करनें ये आंका ऐसें होय ॥ जो तारके बजायवेमें सुखकारी होय वह तूंबा कहेहे ॥ ताको दंडके मुखपें लगावें ताको लौकीकमें घोडची कहत हें । फिर वां मेरुसों एक आंगुल नीचो ओर कर्ह तें दोय मूठी उंचो ॥ दोय तुंबा लगावनें ॥ अर दंड ॥ और तुंबा ईनके बीचमें चुनकण लगावनें ॥ अरु मेरुके बांई और उपरको मोरनी स्थान कीजिये ॥ वा मोरनीके आश्रमसों मेरु त ओर कर्हके बीचमें च्यार तार कीजिये ॥ ऊनतारोंमें सातों स्वरकी स्थिति कीजिये । ऊन तारोंमें प्रथम जो तार तामें । षड्ज रिषभ गांधार मध्यम ये च्यार स्वर राखिये ॥ और दूसरे तारमें पंचम धैवत निषाद ये तीन स्वर राखिये ॥ और बाकीके तीसरे चोथे तार मंद्रध्वनियुक्त कीजिये ॥ तहां तीसरे तारमें षड्ज । १ । रिषभ । २ । गांधार । ३ । मध्यम । ४ । ये च्यारों स्वर मंद्रध्वनिसों राखिये ॥ और चोथे तारमें पंचम । १ । धैवत । २ । निषाद । ३ । ये स्वर मधुरध्वनि जानिये ॥ अरु दंडके दाहिनी तीन तार और लगाईये ॥ स्वरनके सहाय करिवेको वे तीनों तार श्रुति स्वरको बतावे हैं ॥ सो वह तीनों तार पहले तारतें ॥ आठवें आठवें अंस तें मोटे होय ॥ ओर तारनतें पहले तार आठवें अंस करिके मोटो होय ॥ पहलेसों दूसरो तार ॥ आठवें अंस करि मोटो होय ॥ दूसरेसों तीसरो तार आठवे अंस करि मोटो होय । अरु उन तारोनमें सुंदरध्वनिके लिये ॥ औरोंकी अथवा पक्के बांसकी छालिकी ॥ अथवा रेसमी डोराकी जीवा कहे हैं ॥ ...ाना ॥ याको लौकिकमें जवारि कहत हैं ॥ सो जीवा ... घडचपें ... या च्यार तारकें बिचि लगाय दीजीये ॥ सो जीवा तारको ढालो करिकें कोऊ ... स्थान उपजत है ... करे हैं ॥ अरु वा दंडमें मागसों सारि जमाये ॥ षड्ज आदि स्वरनकी सिद्धि करिवेकों ॥ जितने जितने । स्थानमें स्वर सिद्ध होय तह

राखिये ॥ ऐसो लछन जामें होय सो रुद्रवीणा जानिये ॥ सो यह रुद्रवीणा शिवजीकों अति प्यारी हें । यातें याको रुद्रवीणा नाम हें ॥ सदा सर्वदा सब सभेमें सिगरनको सुख करि हें ॥

अथ रुद्रवीणामें जहां जहां ऐसो देवताको स्थान हो सो लिख्यतें ॥ जो वीणाको दंडनाम तामें शिवजीको वासो हें ॥ तांत-नमें श्रीपार्वतीजीको वासो हें ॥ अरु ककुभमें श्रीविष्णु भगवानको वासो हें ॥ अरु पत्रिकामें श्रीलक्ष्मीको वासो हें ॥ अरु तूंबानमें श्रीब्रह्माजीको वासो हें ॥ अरु नाभीनमें श्रीग्वावादिनीको वासो हें ॥ अरु मोरानमें श्रीवासुकी नागराजाको वासो हें ॥ अरु जीवामें विमारीश चंद्रमाको वासो हें ॥ और मोरनीमें नवग्रह देवताको वासो हें ॥ अरु मेरूमें सिगरे सिगरे देवतानको स्थान हें । सर्व देवता-मयि विणा हें । यातें वीणा सर्वमंगलका कहिये ॥

अथ वीणा बजायवेवारेके लछन लिख्यतें ॥ भले सुंदर जाके नेत्र होय ॥ और सरल होय ॥ और मुख होय बडो रूजुक वारो होय ॥ जाको आसन बेठिवो दृढ होय । सो घणी बेर बेठिवेकी शक्ति होय ॥ और । राग । १ । रागांग । २ । भाषांग । ३ । क्रियांग । ४ । उपांग । ५ । उनभेदन सिगरे जानि ववारो होय । श्रुति । १ । जाति । २ । स्वर । ३ । ग्रह । ४ । म. ।क्ष । ५ । इनमे घणों विचक्ष होय ॥ और जाको स्वरूप सुंदर होय । देखतेंही मनोहर होय ॥ आछे जाके हातोंके नख होय ॥ और सावधान होय ताको खेद नहीं व्यापे ॥ ऐसो होय गायनमें प्रवीन होय ॥ और सब रागनके मेलनको जानें ॥ जाकी अंगुली राग बजायवेमें सरल होय । ऐसो वीणा बजायवेवारो पु रुष कहिये ॥ **इति वीणा बजायवेवारेको लछन संपूर्णम् ॥**

अथ वीणा सीखेको चाहे ताको लछन लिख्यते ॥ जा पुरुषमें बजाय- गुन होय ॥ और जाको चित शुद्ध होय ॥ धरम करममें सावधान होय ताको जानें ॥ ऐसो पुरुष होय । ताको वीणा बजायवेमें शिष्य करि सरू [illegible] ना

[illegible] पश्चात शिष्यके लछन कहत हें ॥ जो गुरुसें कपट राखे । गुरुके गुण पें दाह उपजे ॥ और सद्गुरुके गुण तो नहीं कहे । अवगुणको

बार बार प्रगट करे ॥ ताकों खोटो शिष्य कहे हें । ऐसें पुरुषकों वीणा विद्या नही सिखाये ॥ सिखाइये तें गुरुको अपजस होय ॥ सदगती नही होय । इति विणाके बारेमे बुरे शिष्यको लछन संपूर्णम ॥

अथ बाजा बजायवेको लछन लिख्यते ॥ दाहिनें हातकी पहली आंगुरी अंगुठाके पासिकीको नाम तर्जनी हें ॥ तासों जो वीणा बजायवें वारे कीया होय सो क्षमा जांनिये ॥ या क्षमाहिको नामनि जानिये । १ । याहे निविकी क्रियासो तारको बजायवे सो घात जानिये ॥ दाहिनें हातिकी बीचिकी आंगुरी मध्यमा तासो जो तारको बजायवे सो मध्यमा जांनिये । २ । सो घातको स्थान जहां जहां वीणामें षड्जादिक स्वरनकी सारि हे तहां जांनिये ॥ यह अवनद्ध वीणामें घात विचार हें ॥ ओर जा वीणामें स्वरनकी सारि न होय सो अनिबद्ध वीणा जांनिये । ॥ अनिबद्ध वीणामें आपकी बुद्धि सों स्वरनको स्थान समझिके घात स्थान जानिये ॥ यह प्रकारको जा तारमें राग वीणामें बजाईये, ताको जांनिये ॥ ओर वाको सहाय करिवेको पासको जो तार ताकी दाहिनें हातकी चढी अंगुरीसों बजाइये ॥ तालकी गतिसों ताल जांनिये ॥

अथ वीणा बजायवेमें वीणा धारको लछन लिख्यते ॥ जब स्वरनका आरोह करनो होय, तब ॥ बांये हात चढी आंगूरी सों तार दाबिये ॥ ओर स्वरनके अवरोहमें । बांयें हातकी पहली आंगुलिसों तार दाबिये ॥ जो स्वर रागमें चाहिये । ता स्वरनके स्थानको तार दाबिये । सो यह रुद्रवीणामें स्वरमें जेसी गमक चाहिये तेसी गमक राखणा ॥ ऐसें प्रकारसों जो वीणा बजावे तासों श्रीलक्ष्मीनारायणजी प्रसन्न होय हे जो स्वर दाहिने हातसों एकवार तारसों ताडन करिके ॥ ओर वांहीकी ध्वनिमें दुसरो स्वर दिखावनो सो अनुस्वर जांनिये ॥ जहां गीत प्रबंध छंदमें जितने गुरु लघु अक्षर होय ॥ तितनेवार वीणाके तारको ताडन कीजिये ॥ जहां केवल. गंकार होय तहां अनुस्वर जांनिये । जहां कोऊं रागमें क्षमा घात कीजिये । रागमें मध्यम घात कीजिये ॥ यह प्रकार सिगरि वीणा बजायवेमें एक रिती जांनिये यह पंडित कहे हें ॥ इति वीणा बजायवेको लछन संपूर्णम् ॥

अथ या वीणाके भेद ॥ नकुली वीणा ॥ या रुद्रवीणामें दोय तार लगाइये तब याको नाम, नकुली जांनिये ॥ १ ॥ या रुद्रवीणाके तीन तार लागें तब त्रितंत्रि जांनिये ॥ २ ॥ या रुद्रवीणाके जब च्यार तार लागें तब राजधानी जांनिये ॥ ३ ॥ या रुद्रवीणाके पांच तार लागें तब विपंची वीणा जांनिये ॥ ४ ॥ या रुद्रवीणाके जब छ तार लगायें तब सार्वरी वीणा जांनिये ॥ ५ ॥ या रुद्र वीणाके जब सात तार लागे तब परिवादिनी जांनिये ॥ ६ ॥ इन छ वीणाके बजायवेको प्रकार पहले कह्यो है सो जांनिये ॥ **इति रुद्रवीणाके लछन भेद संपूर्णम्** ॥

अथ ब्रह्मवीणाको लछन लिख्यते ॥ यही रुद्रवीणाको जो काठहीके, तांबानसों, रचिये ॥ तब याको ब्रह्मवीणा कहत हैं ॥ सो ब्रह्मवीणाके नीचलो भाग कछुइक रुद्रवीणातें चोडो कीजिये ॥ और दीर्घपणो रुद्रवीणा जितनो जानिये ॥ और स्वरनकी सारि रुद्रवीणाकीसी जांनिये ॥ या ब्रह्मवीणामें सात तार लगाये ॥ तहां दोय तार पहले लोहके होय । व षड्ज स्वरके स्थानमें राखिये ॥ और इन दोऊ तारनतें ॥ आठवें वाटासों पुष्ट तीसरो पांचवों तार लोहकी कीजिये ॥ और चोथो छटवों तार सात धातुको कीजिये ॥ सो तीसरे पांचवे तारसों आठ वांटासों मोटो होय ॥ और एक सातवों तार स्वरके सहारेकों राखिये ॥ वा नहीं राखिये याको नेम नहीं ॥ याहूको रुद्रवीणाकी नाई बजाइये ॥ और स्वरनमें बहुत गमक लिजिये **इति ब्रह्मवीणाको लछन संपूर्णम** ॥

अथ तुंबर नाम गंधर्वके बजायवेकी वीणाको नाम तंबूर ताको लछन लिख्यते ॥ याको लौकिकमें तंबूरा कहत हैं ॥ यह तंबुरा काठका कीजिये ॥ एक और आधो तांबा लगायवाको काठकी पतरी पटुलासों मढिये ॥ वांहां तार लोहकी लगाइये तीन वा च्यार, तहां एक तार स्वरके सहारेको राखिये वाकीके तार एक स्वरमें मीलाईके,॥ याकी धुनिमें मिलिके गान कीजिये । यह तंबुरा दोय प्रकारका हैं । एक निबन्द ॥ १ ॥ दुसरो अनिबन्द ॥ २ ॥ तहां जा तंबुरामें राग वरतीवेकों स्वरके स्थानमें तार बांधिये ॥ और ऊन तारको

बंधनसों राग वरतिये ॥ सो निबद्ध तंबूरा जांनिये । याको लौकीकमें सितार कहे है ॥ ओर जहां तांतिके बंधन नही कीजिये ॥ सो अनिबद्ध जांनिये ॥ याकी धुनिमें मिलिकरि राग गाईये ॥ या तंबूरवीणाको दीर्घपणो ॥ रुद्रवीणा-कोसो जांनिये । तहां निबद्ध तंबूरामें । स्वरनके स्थानसों डांडीमें तात राखि बांधिये ओर दोय मूठी डांडीकी ओरकी ॥ तोंबा ऊपरकी पटुली छोडिके ॥ तारके आसेरेसों बिचमें घोडच राखिये ॥ ओर जैसो तार सुखसों बजायवेमें आवें तैसें घोडच राखिये ॥ ऐसें तो निबद्ध तंबूरा जांनिये ॥१॥ ओर जहां सात, वा पांच, वा च्यार तार होय डांडीमें स्वरके स्थानकमें ॥ तांतिकें बंधन नही होय ॥ ओर सब रीति निबद्ध तंबूराकी तरह होय ॥ गायवेमें स्वरकी सहाय करे ॥ सो अनिबद्ध तंबूरा जांनिये ॥

अथ स्वर मंडल वीणाको लछन लिख्यते ॥ या वीणामें स्वर मंडल रचिये हें ॥ स्वर मंडल कहतें स्वरकी संप्रककी लीजिये ॥ सो या वीणामें एक एक आंगुली लेके अंतरसों षड्जादिक स्वरनकी तोलसों तारां राखिये ॥ मंद्र स्थानके षड्जमें लेकें ॥ मध्यम स्थानके षड्ज तांइ ॥ आठ तार होय । ते स्वर जमायवेके लिये । क्रमसों चाटि बाधि कीजिये ॥ ऐसें जैसें आरोह क्रम-सों । ऊन तारनमे षड्जादिक स्वर विनादाबे प्रगट नही होय ॥ ओर यह स्वर मंडलवीणाको ॥ छोटे बडे तार राखिवेके लिये ॥ पांचकोण कीजिये ॥ ऐसें हि मध्य स्थानके षड्जादिक सात स्वरनके ॥ ओर तार स्थानके षड्जादिक सात स्वरनके जुदे जुदे तार राखिये ॥ ओर मंद्र स्थानके जे तार हे ते धुनिकी विचित्रताके लिये कछु क्रमसों पतरे मोटे कीजिये इहां मंद्र स्थानके निचलेनिचले तार मोटे कीजिये ॥ उपरलेउपरले तार ऊंचे स्वरके पतरे कीजिये ॥ या स्वर मंडल वीणाके बजायवेमें ॥ एक हातमें काठको बजायवेको स्वरसाधन लेके तारनको ताडन कीजिये ॥ तब यासों चाहले राग माईये ॥ या वीणामें आरोह वा अवरोहमें बाये हातमें काठको जंत्र लेके तारकों छुवायके ॥ दाहिनें हातकी मध्यम अंगूलसों तारनको ताडन कीजिये तब स्वरनमें गमक ऊपजे हें ।

अथ स्वरमंडल मत्तकोकिलाके मतसों लछन लिख्यते ॥ जहां स्वरमंडलके सात तार ॥ सूधे वीणाकीसह, स्वरमंडलमें लगाईये ॥ तब

यांको, मत्तकोकिलावीणा जांनिये ॥ सो या, मत्त कोकिलावीणामें तार अष्ट धातुके लगाईये । ऊन तारनके चांड ओरको जीवारी राखिये ॥ ओर घोडचके बाहिरि, औंडव तारनमें । गमकको स्थान जांनिये ॥ ओर स्वरके कंपकी क्रिया दाहिनें हातकी आंगुरीसों तारनमें कीजिये ॥ इति स्वरमंडल मत्तकोकिलाको लछन संपूर्णम् ॥

रावण हस्तवीणा जो वीणा, साग, अरु काठकी बनाईये ॥ ताकी सागकी तो डांडी होय ॥ अरु काठको पट होय ॥ तुंबाकी जगेमें सो लंबो होय । सागके ऊपर काठको मेरुस्थान कीजिये ॥ ता मेरुमें तारोंके लिये खुंटी राखिये ॥ वे तार तांतके कीजिये ॥ ऊन तारनको अग्रभाग काठके तुंबाके कटिमें बांधिये ॥ ऐसें तीन तार वा च्यार तार लगाइये ॥ ओर घोडाके पूछके बालकी कमानसों पिनाकी वीणाकी सिनाइ । घरषण करि बजाइये ॥ इति रावणहस्तवीणाको लछन संपूर्णम् ॥ याको लौकीकमें सारंगी कहत हैं ॥ ऐसेंहि ओर तत बाजेके भेदसें जांनिये ॥ यह तत बाजेको लछन संगीत पारिजातमें कहे हैं ॥

अथ पिनाकीको लछन लिख्यते ॥ यह वीणा जो ॥ आगें वीणा कही ॥ ताके आधे प्रमानसों दीर्घ कीजिये ॥ या पिनाकी वीणामें तीन वा च्यार तार कीजिये तिनमें ॥ मंद्र ॥ १ ॥ मध्य ॥ २ ॥ तार ॥ ३ ॥ स्थानकी रचना जैसें चाहिये तेसें कीजिये ॥ ओर घोडाके पूछके बालकी कमानसों ॥ ऊन तारनसों मंद मंद घर्षण कीजिये ॥ तब वामें धुनि होत है ॥ तारके पकडवेके लिये ॥ कमानके घोडाके बालनमें मोम लगाइये ॥ नारेलके काठकी ॥ अथवा कांसिको पिनाकी वीणामें पट कीजिये ॥ ओर षड्जादिक स्वरके रचायवेमें ॥ बांये हातकी आंगुरीसों तार दाबिये ॥ घोडाके बालकी कमानसों गीतके अछर प्रमान लघु गुरु जेसें जोनें पढे तैसें बजाईये ॥ इति पिनाकीको लछन संपूर्णम् ॥

अथ किन्नरी वीणाको लछन वा भेद लिख्यते ॥ जो रुद्रवीणाकी सितर होय ॥ तीन तुंबा तामें लगे होय । सो किन्नरी वीणा जांनिये ॥ तहां किन्नरी वीणामें दोय तार एक स्वरके राखिये ॥ ऊन दोऊ तारनको मेरु सूधो ऊंचो बारह आंगुलको कीजिये ॥ सो वा मेरुमें सात आंगुलको तार एक मा-

रडीके सहारेसो न्यारो ओर बांधिये ॥ ओर पहले दोनु तारनको कहींमें सूधो एक गेहूं प्रमान अंतर राखिये ॥ ओर हूं दोय वा तीन तार स्वरके सहारेकों न्यारे लगाईये ॥ रागके बजायवेमें दोनु तार एक संगी बजाईये ॥ और स्वरनके विकाने वारे बायें हाथसों उन दोनुं तारनकों सारिकें उपर दाबिये ॥ तब स्वरनको प्रकास होय ॥ **इति किन्नरीवीणाका लछन संपूर्णम् ॥**

अथ **दंडीवीणाको लछन लिख्यते ॥** जहां वीणाके प्रमाण दंड करवे दंडके बांइतरफ तुंबा एक लगाइये ओर तारके सहारेकों मेरु नही कीजिये ॥ तूंबामें जो दंडको अग्रमूल गयो हें ॥ ताहीमें तार बांधिये ॥ सो वे तार तीन कीजिये ॥ दंडके जिवनीतरफ तूंबाके सनमुख कहींमें तारनकों बांधिये सो दंडीवीणा जांनिये ॥ तहां दंडीवीणा दोय प्रकारकी हें ॥ एकतो अनिबद्ध । १ । दूसरी निबद्ध । २ । तहां अनिबद्ध तो स्वरके सहारेकी जांनिये ॥ ओर जां स्वरनके सहारे स्थानसों डांडीमें ॥ तांतिके बंधन राखिके सारि राखिये ॥ तहां काठके दकसों बजाइये तब षड्ज आदि जुदे जुदे स्वर प्रगट होय ॥ जब स्वर वरतिवेकों तारको ताडन कीजिये ॥ तब गमकके लिये ॥ छातिको तूंबासों आघात कीजिये ॥ जेसें पाटस्वरसें ॥ अनुरंजन होय ॥ ऐसें कीजिये ॥ **इति दंडवीणाको लछन संपूर्णम् ॥**

अथ सर्व सिंगारशास्त्रमें अनुसारसों राजरिषिसारंगदेव । अनुष्टुप चक्रवरतीके मतसों । तत । १ । बितत । २ । सुषिर । ३ । घन । ४ । सो इन च्यारों बाजेनके च्यार प्रकारहें तिनके लछन लिख्यते ॥ शुष्क । १ । गीतानुग । २ । नृत्यानुग । ३ । गीतनृत्य । ४ । द्वयानुग । ५ । अब शुष्कको लछन कहेहें जो ये च्यारों बाजे ॥ विना गीत विना नृत्य कानके अनुरंजनांको तालकी गांनमें बजाइये । सो शुष्क जांनिये ॥ याको नाम गोष्टा है । १ । ये च्यारो बाजे गीतके संग बजे जहां गीत नही होय । सो नृत्यानुग जांनिये । २ । जहां च्यारौं बाजे गांन नृत्यके संग बजे सो गीत नृत्य द्वयानुग जांनिये ॥

अथ **च्यारो बाजेनकी उत्पत्ति लिख्यते ॥** जा समयमें दक्षप्रजापतिनें यज्ञ रच्यो तहां श्रीशिवजीकी प्रिया जो सती तानें अपनें पिताके मुखसों श्रीशिवजीकी निंदा सुनिके सतीनें पिताके ऊपर देह त्याग कीयो । तब श्रीशिव-

जीनें प्यारिसतीके वियोगतें । कोपसों दक्षके यज्ञ विध्वंस कियो ॥ तोभी शिवजीके मनको संताप गयो नही तब शिवजीनें मनकों प्रसन्नताके लिये ॥ चार प्रकारके बाजे उपजाये ॥ नंदिकेश्वर । १ । स्वातिगण । २ । तुंबूरगंधर्व । ३ । नारदमुनि । ४ । इन च्यारोंसो च्यारो बाजे बजवाये ॥ आप शिवजी गांन कियो तब श्रीशिवजी परमानंद पाये । तब यह अज्ञा करी ॥ जो इन च्यारों बाजेनको गीतनृत्य संग मंगलीक कारिजमें ॥ जो कोई पुरुष रचे रचाये ताके सकल मंगल कारिज सिद्धि होयगे ॥ यह वरदान दीयोहें यातें राजाके राजतिलकमें । १ । दिग्विजयकी यात्रामें । २ । सालगिरह आदिसिगरे उछवमें ओर सब मंगलीक कारीजमें । जनेऊ विवाह आदिक उछाहमें ॥ जो कोइ भूकंप आदि उत्पातकी शांति करिवेमें । वा संभ्रम आनंदमें जुद्धमें सुरवीरके हर्षवधायवेको । नाटकमें वीररस रौद्र रसमें । ये च्यारों बाजे बजाइये ॥ छोटे मोटे मंगल कारिजमें । जो बाजे मिले सो बजाइये ॥ इन बाजे बजायवेकों प्रयोजन कहे हैं ॥ जो नाटकमें नृत्य करिवेवारे । गायवेवारे पुरुष बाजेके संग मिलिकें नृत्य गांन करे तब ऊंनको वेदना नही होय । चित उछाह पावे सकल दुख दूरि होय ॥ ओर बाजेके संग जो गीत नृत्य होय तहां ॥ गीत नृत्यकी कसरी जानी नही पडे घणों सुख उपजावे ॥ **इति च्यारों बाजेनकी उत्पत्ति लछन संपूर्णम् ॥**

अथ च्यारों बाजेनके भेद लिख्यते ॥ तहां प्रथम तत बाजेके भेद लिख्यते ॥ तत बाजेके मुख्य वीणा कही हैं ॥ सो यह वीणा दोय प्रकारकीहैं सो जांनिये ॥ एक श्रुति वीणा । १ । दूसरी स्वर वीणा । २ । सो श्रुति वीणाको लछन स्वराध्यायमें कह्यो हैं ॥

अथ सर्वमत अनुसारसों सारंगदेव राजर्षिः । अनुष्टुप् चक्रवर्ती आदिक ब्रह्मरषिनके मतसों तत बाजेके भेद लिख्यते ॥ तहां मुख्य रुद्रवीणाहे ॥ एकतंत्री । १ । नकुली । २ । त्रितंत्री । ३ । चित्रावीणा । ४ । विपंची । ५ । मत्तकोकिल । ६ । आलापिनी । ७ । किन्नरी । ८ । पिनाकी । ९ । निशङ्कवीणा । १० । यह भेद दस जांनिये ॥

तहां तत बाजेमें मुख्य रुद्रवीणा हे सो संगीत पारिजातके मतसों पहले कहीहे अबतो रुद्रवीणाके दोय भेद हे तिनके स्वरूप लछन लिख्यते ॥

तहां प्रथम भेद सुद्ध मेलके वीणा दूसरो भेद । मध्य मेल वीणा । २ । इन दोऊनको लछन लिख्यते ॥ जा वीणाके ऊपरके तारनमें मंद्र । १ । मध्य । २ । तार ।३। इन तीनों स्थानको षड्ज समान पहलें राखिये । सो सुद्ध मेला नामकी रुद्रवीणा जांनिये ॥ जहां पंचम वा मध्यम इन दोऊमें । एक स्वर मुख्य होय ॥ सो मध्यमेला नाम रुद्रवीणा जांनिये । २ । तहां सुद्ध मेलाके दोय भेद हैं ॥ अखिल राग मेला । १ । राग मेला । २ । येही दोनों भेद ॥ मध्य मेला वीणाके जांनिये । तहां मध्य मेलाको प्रथम भेद ॥ अखिल राग मेला मध्य मेला । १ । राग मेला मध्य मेला । २ । अब इनके लछन कहे हैं ॥ जा वीणामें मंद्र मध्य तार ॥ इन तीनो स्थानककी समक तीन होय ॥ सो सुद्ध मेला अखिल मेला जांनिये ॥ यह ब्रह्माजी कहे हैं ॥ जा वीणामें मध्य स्थान ॥ तार स्थानमें स्वरनको मेल । एक एक रागको न्यारो होय । सो सुद्ध मेला वीणा एक राग मेला जांनिये ॥ आछे कारीगरसों वीणा सुंदर बनाईये ॥ वाके उपर च्यार तार लगाइये । दाहिनी तरफ ओर तीन तार न्यारे लगाइये । तहां ऊपरले च्यारों तारनमें पहले तारनमें अनुमंद्र षड्ज राखिये । दूसरे तारमें अनुमंद्र पंचम राखिये । तीसरे तारमें मंद्र षड्ज राखिये ॥ चोथे तारमें मंद्र मध्य राखिये ॥ दाहिनी तरफके तीन तारमें ॥ पहले तारमें मध्य ग्रामको षड्ज राखिये ॥ दुसरे तारमें मंद्र । १ । पंचम । २ । राखिये । तीसरे तारमें मंद्र । १ । षड्ज । २ । राखिये । इन तीनों तारनको नाम श्रुतिस्थान जांनिये ॥

अथ सारि, धरवेको प्रकार लिख्यते ॥ अनुमंद्र षड्जके तारमें । जहां रिषभ सुद्ध, तहां पहली सारि राखिये ॥ वाही तारमें जहां गांधार सुरू होय तहां दूसरी सारि राखिये । २ । वही तारमें साधारण गांधारके स्थानकमें तीसरी सारि राखिये । ३ । लघु मध्यमके स्थानके वही तारमें चोथी सारि राखिये । ४ । वही तारमें सुद्ध मध्यमके स्थानमें पांचमी सारि राखिये । ५ । वही तारमें लघु पंचमके स्थानके वही छटवी सारि राखिये । ६ । यह पहले तारके स्वरनको विचार जांनिये ॥

अब इन छह सारिनसों दूसरे तारमें छह स्वर होत हैं ॥ दुसरे तारमें

पहली सारिपें सुद्ध धैवत । १ । दुसरे तारमें दूसरी सारिपें सुद्ध निषाद । २ । दुसरे तारमें तीसरी सारिपें कैशिक निषाद । ३ । दुसरे तारमें चोथी सारिपें लघु षड्ज । ४ । दूसरे तारपें पांचमी सारिपें सुद्ध षड्ज । ५ । दूसरे तारपें छटवी सारिपें सुद्ध रिषभ । ६ । ऐसें अनुमंद्र पंचम जुत ॥ दूजे तारपें छटवी सारिसों ये स्वर जांनिये ॥ यहां मंद्र । १ । षड्ज । २ । जुत तीसरे तारमें छह सारिसों छह स्वर कहे हें ॥ तीजे तारमें पहली सारिमें । सुद्ध रिषभ । १ । तीजे तारमें दूजी सारिमें सुद्ध गांधार तीजे तारमें तीसरी सारिमें साधारण गांधार । तीजे तारमें चोथी सारिमें लघु मध्यम तीजे तारमें पांचवी सारिमें सुद्ध मध्यम ॥ तीजे तारमें छटवी सारिमें लघु पंचम । ऐसें जांनिये ॥

अब मंद्र मध्यम जुत चोथे तारमें छह सारिनिसों छह स्वर कहे हें ॥ चोथे तारमें पहली सारिमें लघु पंचम । १ । चोथे तारमें दूजी सारिमें सुद्ध पंचम । २ । चोथें तारमें तीसरी सारिमें सुद्ध धैवत । ३ । चोथे तारमें चोथी सारिमें सुद्ध निषाद । ४ । चोथे तारमें पांचवी सारिमें कैशिक निषाद ॥ चोथे तारमें छटवी सारिमें लघु षड्ज ॥ ऐसें च्यारों तारको विचार जांनिये ॥ ये छह सारिसों च्यार तारमें जे स्वर कहे ते श्रीशिवजीनें कहे हें । सो वीणामें ऐसें स्वरकों रचिये । कोऊ ओर तरे करे तो प्रमान नही हे । यह श्रीशिवजीकी आज्ञा है । इहां मंद्र । १ । अनुमंद्र । २ । मध्य । ३ । तार । ४ । स्वरन कहे हें ॥ सो एक एक श्रुतिके घटे वधे तें जांनिये वामें दोस नही हें । यासों ये सारि मध्यमसों तारमें ॥ तारसों अतितारमें ॥ जैसें जहां चाहिये तैसें तहां सारि राखिये ॥ इहां च्यारों तारमें ॥ षड्ज । १ । पंचम । २ । षड्ज । ३ । मध्यम । ४ । ये संवादी स्वर राखिये ॥ ऐसें सारिनमें परस्पर संवादि जांनिये ॥

अब मध्यम स्थानकी सारिनमें चोथे तारपें जो स्वर सोहि स्वर जांनिये ॥ इहा अंतर गांधार । १ । काकली निषाद । २ । इन दोनु स्वरनकी सारि नही कही ॥ यातें लघु षड्जमें ॥ एक श्रुति घाटि बजायके काकली निषाद कीजिये ॥ अरु लघु मध्यम एक श्रुति घाटि बजाइकें अंतर गांधार कीजिये ॥ इनकी न्यारि सारि कीये तें सारि संकीर्ण होय ॥

जासों बजायवो बनें नही ॥ यासों न्यारी नही करी ॥ यासों लघु षड्ज ॥ १ ॥ लघु पंचम ॥ २ ॥ इन दोनुनकी सारि एक श्रुति निचि सरकायकें बजावें तब काकली निषाद ॥ १ ॥ अंतर गांधार ॥ २ ॥ ये दोनु होत हें ॥ जेसें ओर स्वरनमें चढी उतरी धुनिसों चढे उतरे स्वरको भेद जांनिये ॥ तहां रिषभ । १ । धैवत । २ । च्यार श्रुतिके होय ॥ अरु मध्यम पांच श्रुतिको होय तहां । ऐसें सारिनिकों उंची निचि सरकायकें बजाइये ॥ ऐसें सुद्ध मेल वीणा जांनिये ॥

अब या सुद्ध मेल वीणाके च्यार भेद हें ॥ तिनमें पहलो भेद कह्यो ॥ अब सुद्ध मेल वीणाको ॥ दूसरो भेद कहतहे ॥ जा सुद्ध मेल वीणाके उपरले च्यार तारनमें पहलो तार ॥ अनुमंद्र षड्ज जुत कीजिये ॥ १ ॥ दूसरो तार अनुमंद्र मध्यम जुत कीजिये ॥ २ ॥ तीजो तार अनुमंद्र षड्ज जुत कीजिये ॥ ३ ॥ चोथो तार अनुमंद्र पंचम जुत कीजिये ॥ ४ ॥ पहले तारके छटवो सारिनमें क्रमसों सुद्ध रिषभ ॥ १ ॥ सुद्ध गांधार ॥ २ ॥ साधारण गांधार ॥ ३ ॥ लघु मध्यम ॥ ४ ॥ सुद्ध मध्यम ॥ ५ ॥ लघु पंचम ॥ ६ ॥ ये स्वर जांनिये ॥ १ ॥ दूजे तारनके छटवो सारिनमें क्रमसो। सुद्ध रिषभ ॥१॥ सुद्ध गांधार ॥ २ ॥ साधारण गांधार ॥ ३ ॥ लघु मध्यम ॥ ४ ॥ सुद्ध मध्यम ॥ ५ ॥ लघु पंचम ॥ ६ ॥ ये स्वर जांनिये ॥ चोथे तारके छटवो सारिनमें क्रमसों। सुद्ध धैवत ।१। सुद्ध निषाद ।२। कैशिक निषाद ।३। लघु षड्ज ।४। सुद्ध षड्ज ।५। सुद्ध मध्यम । ६ । ये स्वर जांनिये ॥ याभेदमें षड्जजुत तारनके स्वरनमें तीन श्रुतिको पंचम ॥ ओर च्यार श्रुतिको मध्यम जांनिये ॥ सो ये स्वर परस्पर मिले नही । जाको जे स्वर समानश्रुतिको होय ॥ सो संवादि स्वर मिले यातें दोनु स्वर षड्जमें नहि लीजिये ॥

अब सुद्ध मेल विणाको तीसरो भेद कहे हें ॥ सुद्ध मेल वीणाके उपरके च्यारों तारनमें । पहलो तार अनुमंद्र षड्ज जुत कीजिये ॥ १ ॥ दूजो तार अनुमंद्र मध्यम जुत कीजिये ॥ १ ॥ तीजो तार अनुमंद्र षड्ज जुत कीजिये ॥ १ ॥ चोथो तार दूजो तारनकी नांइ ॥ अनुमंद्र मध्यम जुत कीजिये ॥ १ ॥ जहां पहले तारके छटवो सारिमें क्रमसों सुद्ध रि-

षभ । १ । सुद्ध गांधार । २ । साधारण गांधार । ३ । लघु मध्यम । ४ । सुद्ध मध्यम । ५ । लघु पंचम । ६ । ये स्वर जांनिये ॥ दूजो तारके छटवो सारिनमें क्रमसों। लघु पंचम । १ । सुद्ध पंचम । २ । सुद्ध धेवत । ३ । सुद्ध निषाद । ४ । कैशिक निषाद । ५ । सुद्ध षड्ज । ६ । ये स्वर जांनिये । १ । तीजे तारनके छटवो सारिनमें क्रमसों । सुद्ध रिषभ । १ । सुद्ध गांधार । २ । साधारण गांधार । ३ । लघु मध्यम । ४ । सुद्ध मध्यम । ५ । लघु पंचम । ६ । ये स्वर जांनिये । ३ । चोथो तारनके छटवो सारिनमें क्रमसों ॥ लघु पंचम । १ । सुद्ध मध्यम । २ । सुद्ध धेवत । ३ । सुद्ध निषाद । ४ । कैशिक निषाद । ५ । सुद्ध षड्ज । ६ । ये स्वर जांनिये । १ । या भेदमें च्यार श्रुतिको मध्यम ॥ तीन श्रुतिको पंचम जांनिये ॥ ये दोनु स्वर अनुमंद्र षड्ज जुत तारके स्वरनमें नही कहे हें । रु। घाटि बांधि श्रुतितें संवादी नहीं हें ॥ यातें ये दोनु स्वर आपसमें मिले नही ॥ यातें मध्यम पंचम षड़जके तारमें नहीं लिजीये ॥

अब सुद्ध मेल वीणाके चोथो भेद कहे हें ॥ जा सुद्ध मेल वीणाके ऊपरके च्यारों तारमें पहलो तार अनुमंद्र षडज जुत कीजिये ॥ दुजो तार मंद्र पंचम जुत कीजिये ॥ तीजो तार अमुमंद्र षड्ज जुत कीजिये ॥ चोथो तार मंद्र पंचम जुत कीजिये ॥ जहां पहले तारके छटवो सारिनमें क्रमसों । सुद्ध रिषभ ॥ १ ॥ सुद्ध गांधार ॥ २॥ साधारण गांधार ॥ ३ ॥ लघु मध्यम ॥ ४ ॥ सुद्ध मध्यम ॥ ५ ॥ लघु पंचम ॥ ६ ॥ ये जांनिये ॥ दूजे तारके छटवो सारिनमें क्रमसों ॥ सुद्ध धैवत ॥ १ ॥ सुद्ध निषाद ॥ २ ॥ कैशिक निषाद ॥ ३ ॥ लघु षड्ज ॥ ४ ॥ सुद्ध षड्ज ॥ ५ ॥ सुद्ध रिषभ ॥ ६ ॥ ये जांनिये । या दुजे तारके स्वरनमें सुद्ध षड्ज ॥ सुद्ध रिषभ नही लीजिये ॥ तीजे तारके छटवो सारिनमें क्रमसों ॥ सुद्ध रिषभ ॥ १ ॥ सुद्ध गांधार ॥ २ ॥ साधारण गांधार ॥ ३ ॥ लघु मध्यम ॥ ४ ॥ सुद्ध मध्यम ॥ ५ ॥ लघु पंचम ॥ ६ ॥ ये जांनिये ॥ १ ॥ चोथा तारके छटवो सारिनमें क्रमसों ॥ सुद्ध धैवत ॥ १ ॥ सुद्ध निषाद ॥ २ ॥ कैशिक निषाद ॥ ३ ॥ लघु षड्ज ॥ ४ ॥ सुद्ध षड्ज ॥ ५ ॥ सुद्ध रिषभ ॥ ६ ॥ ये स्वर जांनिये ॥ या भेदमें मंद्र पंचम जुत तिनके स्वरनमें

सुद्ध षड्ज ॥ १ ॥ सुद्ध रिषभ ॥ २ ॥ ये दोऊ स्वर प्रयोगमें नही लीजिये ॥ ४ ॥ इति सुद्ध मेल वीणाके च्यार भेद संपूर्णम् ॥

अथ मध्य मेल वीणाको लछन लिख्यते ॥ या मध्य मेल वीणामें ॥ सुद्ध मेल वीणाकी सिनाई । उपर च्यार तार कीजिये ॥ जिन च्यारों तारनमें पहलो तार अनुमंद्र पंचम जुत कीजिये ॥ दुजो तार मंद्र षड्ज जुत कीजिये ॥ तीसरो तार अनुमंद्र पंचम जुत कीजिये ॥ चोथो तार मध्यम षड्ज जुत कीजिये ॥ ओर दहिनी औरके तीन तारनमें ॥ पहले तारमें मध्यम ग्रामको षड्ज राखिये ॥ दूसरेमें मंद्र पंचम राखिये ॥ तीसरे तारेंम मंद्र षड्ज राखिये । ये तीनो तार श्रुतिके स्थानमें जांनिये॥ या मध्य मेल वीणामें ॥ ऊपरले पहले ॥ दूसरे । तीसरे । तारनमें बरोबर श्रुतिके षड्ज स्वर । ओर रिषभ स्वर । ओर हूं स्वर होय ॥ तब अनुमंद्र मध्यम पंचम जुत तारके ॥ सुद्ध षड्ज ॥ १ ॥ सुद्ध रिषभ ॥ २ ॥ प्रयोगमें नही लीजिये ॥ यह मध्य मेल वीणामें ॥ ऐसें तारके स्वर जांनिये इहां पंचम जुतकी पहले तारकी । छटवो सारिनमें क्रमसों । सुद्ध धैवत । १ । सुद्ध निषाद । २ । कैशिक निषाद । ३ । लघु षड्ज । ४ । सुद्ध षड्ज । ५ । सुद्ध रिषभ । ६ । ये जांनिये । १ । इहां पंचम जुत तारके छटवो सारिनमें । सुद्ध षड्ज । सुद्ध निषाद नही ली-जिये ॥ षड्ज जुत दूजे तारके छटवो सारिनमें क्रमसों सुद्ध रिषभ । १ । सुद्ध गांधार । २ । साधारण गांधार । ३ । लघु मध्यम । ४ । सुद्ध मध्यम । ५ । लघु पंचम । ६ । ये जांनिये । १ । मृदपंचम जुत तीजे तारके छटवो सारि-नमें क्रमसों ॥ सुद्ध धैवत । १ । सुद्ध निषाद । २ । कैशिक निषाद । ३ । लघु षड्ज । ४ । सुद्ध षड्ज । ५ । सुद्ध रिषभ । ६ । या तीसरे तारकेहूं सुद्ध षड्ज । १ । सुद्ध रिषभ । २ । नही लीजिये । मंद्र षड्ज जुत चोथे तारके छटवो सारिनमें क्रमसों ॥ सुद्ध रिषभ । १ । सुद्ध गांधार । २ । साधारण गांधार । ३ । लघु मध्यम । ४ । सुद्ध मध्यम । ५ । लघु पंचम । ६ । ये जां-निये ॥ ऐसें प्रथम मध्य मेल वीणाके च्यारों तारनमें स्वर जांनिये ॥ यह पहिलो भेद है सो कहे हें ॥

या मध्य मेल वीणाको दूसरो भेद कहे हें ॥ जा मध्य मेल

वीणामें च्यारों तारनमें पहलो तार मंद्रमध्य जुत कीजिये। १। दूसरो तार मंद्र षड्ज जुत कीजिये। २। तीसरो तार मंद्रमध्य जुत कीजिये। ३। चोथो तार मंद्र षड्ज जुत कीजिये। ४। इहां मध्यम जुत तारके स्वरनमें मध्यम चार श्रुतिकों जांनिये ॥ ओर पंचम तीन श्रुतिकों। मध्यम पंचम दोऊ। षड्ज जुत तारनमें नही लीजिये ॥ ओर यासके तीनो तारके। स्वरनकी बराबर श्रुति जांनिये ॥ तहां पहले तारकी छटवो सारिनमें क्रमसों लघु पंचम। १। सुद्ध पंचम। २। सुद्ध धैवत। ३। सुद्ध निषाद। ४। कैशिक निषाद। ५। सुद्ध षड्ज ये जांनिये ॥ दूजे तारके छटवो सारिनमें क्रमसों। सुद्ध रिषभ। १। सुद्ध गांधार। २। साधारण गांधार। ३। लघु पंचम। ४। सुद्ध मध्यम। ५। लघु मध्मम। ६। ये जांनिये। १। यां दूजे तारके सारीनके स्वरमें सुद्ध मध्यम। १। लघु पंचम नही लीजिये ॥ तीजे तारके छटवो सारिनमें क्रमसों ॥ लघु पंचम। १। सुद्ध पंचम। २। सुद्ध धैवत। ३। सुद्ध निषाद। ४। कैशिक निषाद। ५। सुद्ध षड्ज। ६। ये जांनिये। १। चोथे तारके छटवो सारिनमें क्रमसों सुद्ध रिषभ। १। सुद्ध गांधार। २। साधारण गांधार। ३। लघु मध्यम। ४। सुद्ध मध्यम। ५। लघु पंचम। ६। ये जांनिये। या चोथे तारके सारिनके स्वरनमें। सुद्ध मध्यम। १। लघु पंचम। २। ये दोऊ दूर नही कीजिये। यातें इहां छटवो स्वर लीजिये ॥ यह दूसरो भेद जांनिये ॥ इहां मंद्र मध्य तार नादकी उतपत्ति वीणामें सरीर वीणामेंसों विपरित जांनिये ॥ इति **रुद्रवीणाके भेद सुद्धमेल वीणा। १। मध्यमेल वीणा। २। तिनके भेद लछन संपूर्णम् ॥**

अथ वाद्याध्यायमें जे जे कहिवेके वस्तुहै तिनके अनुक्रमसों नाम लिख्यते ॥ जहां तत बाजेके बजायवेकी रिति। १। अनेक प्रकारके करसारण। २। सुषिर वाद्य। ३। सुषिर वाद्यको पाट। ४। पाटछर। ५। पाटछरकी रचना। ६। पाटाछरके अनुस्वार। ७। बाजेके संबंधि॥ अबंध खंड। ८। मृदंग वाद्य। ९। मृदंग बजायवे वारेके भेद। १०। इनके गुणदोस। ११। इनको वृंद लछन। १२। हुडुका आदि बाजेनको अपने अपने पाटाछरके अनुस्वार

बजायबो । १३ । घन बाजेको स्वरूप बजायवेवारेके गुणदोस । १४ । बजायवे-बारेके थाथके गुणदोष । १५ । इतनी वस्तु वाद्याध्यायमें जांनिये ॥

अछे एकतंत्री वीणाके प्रमाण करिवेको पहले माप कहे हें ॥ इहां बाजेके मापवेमें ॥ अंगुठाके थोरु प्रमान तो अंगुला जांनिये ॥ ऐसें बारह आंगुलको विलसति एक जांनिये ॥ ऐसी दोय विलसतीको एक हात जांनिये ॥ या रितिसों सब बाजेके मापवेकी विधि जांनिये ॥

अथ एकतंत्री वीणाको लछन लिख्यते ॥ अब जामें ॥ गांठि छेद फांट बांक नहीं होय । ओर चिकनों सुद्धो खेरको वा ओर कोई पाको काठ होय ताको दंड गोल कीजिये । वा दंड तीन हात लंबो कीजिये । एक विलसतीकी परिधि कीजिये । दंड माहि सों पोलो कीजिये तहां दोऊ तरफके मोहरामें । डेड आंगुल माये या माफिक पोलो कीजिये ॥ बिचमें कनिष्ठ आंगुलि मावे । ऐसें तीन छेद करिये । अथवा अंगुठाके पासकी आंगुरी मावे । ऐसें दोय छेद कीजिये ॥ वा दंडके निचले भागमें । शंकुकी जाय डयोड आंगुलको चोडो खेरको । वा सारको ककुभ लगाइये ॥ ओर तिरछो लंबो आठ आंगुलको ककुभ होय । सो ककुभको मध्य ॥ बांयो दाहिनो एक एक आंगुल छोडीकें काछवाकी पीठकी सीनाई ढालु कीजे ता मध्यमें पटुकी जमायवेकों एक छिद्र कीजिये बादमें जोनिके आकार एक छिद्र कीजिये । वा छेदमें मावें ऐसे एक काठकी कील लगाइये । वा कीलमें दोय आंगुलकी चोडी आठ आंगुल लंबी पटुली अष्ट धातुकी बनायकें । ककुभके मध्यमें बाहरी ओर लगाइये । वा ककुभको मध्य निचो होय । ककुभके नीचे दोय छोटी दंडी लगाइये । फेर आठ आंगुलको लंबो गोल उपरको भाग तीन आंगुलको मोटो ॥ सुंदर जांको होय ॥ जाको मध्य काछवाकी पीठकी तरह ढालु होय ऐसो जाको उपरको भाग होय जाको निचलो भाग ॥ ऐसो होय जो दंडके मुखमें बेठे ऐसी एक काठकी कील करीकें ककुभमें लगाइ दंडमें लगाइये ऐसो दंडमें ककुम लगायके ॥ वा दंडके ऊपर नीचकों ॥ बांटो सतरे सतरे आंगुर छोडिके नीचेको दोय छेद कीजिये ॥ एक सूतसों । तहां एक छेद तो ककुभकी तरफ होय ॥ एक छेद परिधकी तरफ होय ॥ तहां दो बड़ा तांत्ति पहले छेदमें डारिकें दुसरे छेदमें काढि लीजिये । फेर वां तांतको ऊल-

टिकें । थोरिसी बाहर राखिं । फेर वा छेदमें डारिकें पहले छेदमें काढि लीजिये । ऐसें तांत घालिये । आठ आंगुलके ऊंचे पक्के दोय तूंबा लीजिये । तिनको गला बारह आंगुलको ऊंचो होय ॥ और अडतालीस आंगुलको उंचो पेट होय । ऐसें तूंबा दोय गोल होय ॥ सो वा दंडके लगाइये । तहां तूंबाके वृन्त स्थानमें कंठके निचें । तीन आंगुलकी चोडी बीचमें जाके छिद्र होय नीचेंको जाको मुख होय ॥ एसी नाभि लगाइये । और नारेलीको टूक दोऊ तूंबाके भीतर धरिकें वामें दोऊ छेदकी दोऊ तांत लगाइये । नारेलीके टुकके नीच छोटीसी कील दोवडा । तांनके फदामें । देके वह कील फेरिये । एसी फेरीये जेसी तूंबाकी नाभि दंडसो गाढी चिपें हाले नही याको चिबुक कहतहें ॥ ऐसें तूंबा दोऊ दंडमें गांठ लगाइये ॥ और रेसमको अथवा भिहि सूतको डोरा एकले करिकें ॥ दोहरी तांनको नाग पासमें बांधिकें ॥ जेसें तूंबा गाढ रहें ॥ एसें तूंबाके उपरे दंडमें गाढो डोरो ॥ अरु नागपास लपटये ॥ वह या नागपासके लपटवेंमें वीणाके दंडके अंतमें दाबिये ॥ फेर ककुभको दंडमें तांतसों गाढो बांधिये ॥ फेर पक्के बांसकी छालीकी दोय आंगुल लंबी ॥ एक जो प्रमान चोडी जीवा पटुली तारके बिचमें लगाइये ॥ याको लौकिकमें जीवारि कहे हें । या जीवारीसों तारकी मधुर धुनि होय हें ॥ अथवा रेसमके डोराकी जीवारी कीजिये ॥ और पक्के बांसकी छाल लंबी बारह आंगुल अरु चढी आंगुलके नख प्रमान चोडी ॥ तूंबाके निचे तीन ॥ आंगुल निचें दंडमें लपेटिये ॥ यासें मंद्रस्थानको भेद जान्यो परे । या भांति सास्त्रकी रीतिसों जो वीणा होय सो एकतंत्री जानिये ॥ और सब वीणा या वीणाको भेद हें ॥ यातें या वीणा मुख्य प्रकृति हें ॥ यातें दरसन परसनतें । धरम । अरथ । काम । मोक्ष । ये च्यारों पावत हें । और ब्रह्महत्यादिकनें आदि लेयर सिगरे पापतें वोह पुरुष छुटत हें । या वीणाके दंडारिकके देवता पहले रुद्रवीणामें कहेहें सो जानि लीजिये ॥

अथ या वीणाके धारिवेकी विधि कहे हें ॥ नीचेकों दोउ तूंबा होय ॥ ओर नीचेंको वीणाको मुख रहे ओर ऊपरको तार रहें। याके मोराके स्थानको बांये कंधापें राखे । ककुभको दाहिणें पावकी एडीपें राखिये ॥ बांये हातकी चटी । आंगुरीकी पिछिपें कम्रिका राखिये ॥ याको सारण तें सारह कहे हें ॥

ओर चटीआंगुलीके पासकी आंगुलीकी कीयासों हू सारणां कहेहें ॥ ओर मध्य-आंगुरीकों कछूइक टेडी करि अंगुठाके पासकी आंगुरीके ॥ अग्रसों मीलायकें ॥ अपनी छातीके पास वीणा दाबिकें राखिये । मंद्र । १ । मध्य । २ । तार । ३ । की सिद्धिके वास्ते ॥ दाहिणे हातसों तारके नीचे ऊपर ताडन कीजिये ॥

अथ कम्रिकामका लछन लिख्यते ॥ जीवातें एक विलस्तिभरि-तार छोडिके स्वरकी सिद्धिके अरथ तार दाबि ताडन कीजिये ॥ यह क्रिया अपनि छाति तांइ कीजिये छातिसों ऊपर मही कीजिये ॥ या क्रियाको नाम कम्रिका हे सो यहि सारणा च्यार प्रकारकी है ॥ उत्क्षिप्ता । १ । सन्नि-विष्टा । २ । उभयी । ३ । कंपिता । ४ । यह च्यार प्रकारकी जानिये ॥

अथ इन च्यारनको लछन लिख्यते ॥ जहां वीणाके तारकों दा-बिकें फेर आंगुली उठालिकें ओर स्वरकी तार दाबिये ॥ सो उत्क्षिप्ता सारणा जांनिये । १ । जहां वीणाके तारके हलवेंसी अंगुली लमाय ॥ ओर ठोर अं-गुरी चलाइये । सो सन्निविष्टा सारणा जांनिये । २ । जहां वीणाके तारकों दाबि आंगुली उठालिकें ओर जगो तारको हलवे आंगूली लगाइये ॥ सो उभयी सारणा जांनिये ॥ तारकों स्थानमें दाबिकें कंपायवेकी क्रिया जो आंगुरी-में कीजिये ॥ सो कम्रिकासारणा जांनिये ॥ इति **च्यार प्रकारको सार-णाको लछन संपूर्णम्** ॥

अथ दाहिनें हातकी नव व्यापार हें तिनको नाम लछन लिख्यते ॥ जहां बिचलि आंगुरी अंगुठा पासकी ॥ अंगुलीके ऊपर लगाइकें अंगुठा पासकी अंगुलीसों तार बजाइये सो घात जानिये । १ । अंगुठाके पासकी अकेलि अगुलीसों तार बजाइये सो पात जांनिये । २ । अंगुठाके पास आंगुलीकें अग्रसों भीतरि ओर तार बजाइये सो संलेख जांनिये । ३ । बिचली आंगुलीसों भीतरिसों तार बजाइये ॥ सो ऊलेख जांनिये । ४ । बिचली आंगुरीसों बारली ओर तार बजाइये सो अवलेख जांनिये । ५ । ओर मुनीश्वर जुदि तरहको संलेख अवलेख कहत हें । जहां च्यार आंगुरीसों तार बजाइये । सों संलेख हे । अरु तीन अंगुरीसों तार बजाइये सो उलेख हें । दोय आंगुरीसो तार बजा-इये । सों अवलेख हें । अथवा आंगुरीसों भीतरली तरफ तार [illegible]इये । सों

संलेख है । बारली ओर तार बजाइये । सों अवलेख है संलेख । उल्लेख ॥ अवलेख । एह भेद जानिये तारकों च्यारों आंगुलीसों क्रमसों सिताबि ताडन कीजिये सो भ्रमर जानिये । ६ । बीचलि आंगुलि चटी आंगुलिके पासकी इन दोऊनसों बारली । ओरको तार बजाइये । सों संधित जानिये । ७ । तारके पास अंगुठा पासकी आंगुली लगाइकें चढी आंगुरीके पासकी अंगुरीसों तार बारली ओर बजाइये । सों छिन्न जानिये । ८ । क्रमसों सिताबि च्यारों आंगुरीके नखसों तार बजाइये । सों नखकर्तरी जानिये । ९ ।

अथ बांये हातके दोय व्यापार लिख्यते ॥ जहां स्वरके कंपमें बांये हातकी आंगुरी तारसों लगायकें ॥ इत उत सरकाइये । सो स्फुरित जानिये ॥ १ ॥ जहां बार बार बांये हातकी आंगुरी तारसों घसिये सो खसित जानिये ॥ २ ॥

अथ मिले दोउ हातनके तरह व्यापार हैं तिनके नाम लछन लिख्यते ॥ दाहिनें हातके अंगुठा तारसों लगाय ओर दाहिनें हातके च्यार नखसों क्रमसों तार बजाइये बांये हातकी चढी । आंगुरीसों तार दाबिये । सो घोष जानिये । १ । दाहिनें हातकी चढी आंगुरीके पासकी आंगुरीको नख तारके नीचे लगाइ बांये हातकी बिचली आंगुरीसों उपरते तार बजाइये सो रेफ जानिये ।२। या क्रियामें रकार प्रगट । दाहिनें हातकी चटी आंगुरीके पासकी आंगुरीसों छुटो तार बजायकें बांये हातके अंगुठाके पासकी आंगुरीसों जो तार दाबिये । तब गकार होय । सो बिंदु जानिये ।३। जहां दोनु हातकी च्यारों आं-गुरीसों तार सिताबि क्रमसों बजाइये । सो कर्तरि जानिये । ४ । जहां दाहिनें हातकी च्यारों आंगुरीसों तार बजाइये ॥ ओर बांये हातकी आंगुरीसों दाबि-वेकी सारणासों तारको ताडन कीजिये । सो अर्धकर्तरी जानिये ।५। जहां बांये हातसों तार दाबि बांये हातकी आंगुरी सरकाइये । दाहिनें हातके ॥ अंगुष्ठाके पासकी आंगुरीसों तार बजाइये ॥ सो निष्कोट जानिये ।६। जहां बांये हातसों तार दाबिकें फेर बांये हातकी आंगुरी उठालिकें तारकों ओर जाय दाबिये बीचमें दाहिनें हातके च्यारों नखनसों क्रमसों तार बजाइये ॥ सो स्वलित जा-निये । ७ । जहां बांये हातके । अंगुठाके पासकी आंगुरीसों तार दाबिकें

दांहिणे हातके । अंगूठासों अरु अंगूठा पासकी आंगुरीसों तार बिचिकें उपरको खिचि छोडिये सो शुकवक्त्र जांनिये । ८ । जहां दाहिणे हातसों तारके बजायवेमें भ्रमण कीजिये ॥ अरु बांये हातसों स्वर कंपक्रिया कीजिये सो मूर्छना जांनिये । ९ । जहां उलटे दांहिनें हातसों तार बजायके बांये हातकी अंगुठा पासकी अंगुरी तारमें लगाइये । सो तलहस्त जांनिये । १० । जहां तार दाहिनें हातसों बजायकें । बांये हातके अंगुठा अर चटी अंगुलीसों तार पकड लीजिये ॥ सो अर्धचंद्र जांनिये । ११ । जहां दाहिनें हातकी च्यारों आंगुरी मिलायकें तार बजाइये । बांये हातकी चटी आंगुरी अंगुठा पासकी आंगुरी तारमें लगाइये ॥ सो प्रसार जांनिये । १२ । जहां दांहिनें हातके ॥ अंगुठाकी अंगुरी कछुक संकोच करिकें तार बजाइये । बांये हातकी चटी आंगुरी ओर अंगुठा तारसों लगाइये॥ सो कुहर जांनिये । १३ । इति दोन्यों हातनके तार बजायवेके तेरह व्यापार संपूर्णम् ॥

ये चोबिसों व्यापारको नांव वीणा हस्त कहे हें ॥ ऐसें हातसों वीणाको बजायवो ताको वादन कहे हें ॥ सों वादन दस प्रकारको जांनिये॥ जहां खसित ।१। स्फुरित । २ । ये दोऊ व्यापारतें मंद्र स्थानको तार स्थान ताईं बजाये सों छंद जांनिये । १ । जहां स्खलित । १ । मूर्छना । २ । कर्तरी । ३ । रेफ । ४ । उल्लेख । ५ । फर रेफ । ६ । ऐसें छह व्यापार होय । सों धारा जांनिये । २ । जहां शुकवक्त्र । १ । स्फुरित । २ । घोष । ३ । अर्ध कर्तरि । ४ । एसें च्यार व्यापार होय । सो कैकुटी जांनिये । ३ । जहां स्फुरित । १ । मूर्छना । २ । कर्तरी । ३ । नख कर्तरी । ४ । अर्ध कर्तरी । ५ । यह व्यापार होय सो कंकाल जांनिये । ४ । जहां कर्तरी । १ । खसित । २ । कुहर । ३ । यह तीन व्यापारसों तारस्थानके स्वर बजाइये सो वस्तु जांनिये ।५। जहां कर्तरी । १ । खसित । २ । कुहर । ३ । रेफ ।४। भ्रमर । ५ । घोष ।६। ये व्यापार होय । सो द्रुत जांनिये ।६। जहां मूर्छना बहुत होय स्फुरित । १ । कर्तरी । २ । खसित । ३ । घोष । ४ । ये च्यार व्यापार होय सो गजलील जांनिये । ७ । जहां स्खलित । १ । मूर्छना । २ । कर्तरी । ३ । रेफ । ४ । खसित । ५ । ये पांच व्यापार होय सों दंडक जांनिये । ८ । जहां तारके उपरले भागमें रेफ

होय । १ । तारके नीचले भागमें कर्तरी होय । २ । निस्कोटिक । ३ । तल हस्त । ४ । ये होय सों उपरों वाद्यक जांनिये । ९ । जांमें सिगरे चोवीस व्यापार कीजिये क्रमसों । सों पक्षिरुत जांनिये । १० । इति बजायवेके दस भेद संपूर्णम् ॥

या बाजेके दोय प्रकार हे । सकल । १ । निष्कल । २ । यह दोय जांनिये जो तारके दाहिणी तरफ तें लेके जिवाताई दाहिणे हातसों तार बजाइये । बांये हातकी अंगुठा पासकी आंगुरी विना । ओर अंगुरीसों स्वरनको प्रकास कीजिये । सो सकल जांनिये । १ । जहां निषादस्वरके स्थानतें बांये हातसों दाबिकें ॥ दाहिनें हातसों बजावत अवरोह क्रमसों निचे निचे स्वरनको प्रकास करि सो निष्कल जांनिये । २ । ऐसे अभ्यास कीयेतें बजायवो आवे ॥

अब गीतप्रबंध आदि वीणामें प्रगट करिवेकी रीत कहेहें ॥ बारह आंगुलकी बांसकी मुरली कीजिये ॥ तहां एक अंगुरको अग्रभाग छोडिकें एक एक आंगुलके आंतरे ॥ सात छेदन कीजिये ॥ अरु ऊपरले भागमें ॥ एक ओर छेद न्यारो बजायवेको कीजिये ॥ जब वा मुरलीकों बजाय क्रमसों सात छेदसों मुंदे तब जो सात स्वर होय ॥ उनके उनमानसों वीणामें पहली सप्तक जांनिये ॥ दूसरी सप्तक या मंद्र सप्तकसों दूणी जांनिये ॥ मध्य सप्तकसों दूणी तार सप्तक जांनिये ॥ इन सप्तकनमें विकृत सुद्ध स्वर मूर्छना तांन आदि भेद समझिके गीतादिक रचना रचिये ॥ इति एकतंत्री वीणाको लछन संपूर्णम् ॥

अथ नकुलि आदि वीणाको लछन.

नकुलि वीणा—या वीणामें दोय तार लगाइये सों नकुली होय ॥ १ ॥

चित्रा—या वीणामें सात तार लगाइयेते चित्रा होय ॥ २ ॥

विपंची—या वीणामें नव तार लगाये ते विपंची होय ॥ ३ ॥

मत्तकोकिला—(स्वरमंडल) या वीणामें इकवीस तार लगाये तें मत्तकोकिला होय ॥ ४ ॥

इह इकवीस तारनमें क्रमसों तीन सप्तक कीजिये । यह मत्तकोकिला सिगरि वीणामें उतम जांनिये ॥ याको नाम स्वरमंडल हें ॥

अथ इन वीणाके करण लिख्यते ॥

जामें दुरंग जुत अणु आदिक अछिरनकुं करवेको तोल होय सो करण जांनिये ॥ सो करण छह प्रकारको है ॥ जहां मत्तकोकिला ओर विपंची आदि वीणा ॥ या सब वीणा एक संग बजाइये तब रूपकरण होत हैं ॥ तहां मुख्य वीणामें गुरु आछिर बजाइये ॥ तो विपंची आदि वीणामें गुरु अछिरकी तोलसुं दोय लघु बजाइये ॥ जो मुख्य वीणाके एक लघु बजाइये ॥ तो विपंची आदिविणामें दोय द्रुत बजाइये ॥ ऐसें अछिरनकी तोल जामें होय ॥ सो रूपकरण जांनिये ॥ १ ॥

या रूपकरणकी रिति वीणा न्यारीन्यारी बजाईये ॥ जुदो जुदो अछिरनको तोल करवो सो कृतमतिकृत जानिये ॥ २ ॥

जहां रूपकरण विपरित ॥ कीजिये । सो मत्तकोकिलामें दोय लघु बजाइये ॥ विपंची आदिकमें गुरू बजाइये ॥ ऐसेंहि मत्तकोकिलामें ॥ दोय द्रुत विपंची आदिकमें एक लघु ॥ ऐसें विपरिति करि उच्चार कीजिये ॥ सो प्रतिभेद जांनिये ॥ ३ ॥

जहां विदारी कहिये गीतको प्रथम खंड ॥ आधो मत्तकोकिलामें बजाइये ॥ आधो विपंची आदि वीणामें वरतिये ॥ ऐसें एक गीत दोय जगा वरतिये ॥ सो रूपशेष जांनिये ॥ ४ ॥

जहां मत्तकोकिलादि मुख्य वीणामें विलंबीत लय कीजीये ॥ ओर विपंची आदि वीणामें ॥ द्रुत लय एक संग वरतिये ॥ ओर बडी वीणा छोटि वीणाको ताल भंग नही होय ॥ सो ओघ जांनिये ॥ ५ ॥

जहां अंस स्वरके ओर संवादि स्वरके बीचले स्वर बडी वीणा छोटि वीणाकी ॥ एक तारमें प्रगट कीजिये ॥ सो प्रतिशुष्क करण जांनिये ॥ ६ ॥ इति छह करण संपूर्णम् ॥

अथ वीणाके बजायवेकों पुष्टि करिवेके ताईं चोतिस धातुको नाम लिख्यते ॥ जे ताडनतें उपजे जे स्वर ते धातु जांनिये सो धातु च्यार

प्रकारको हैं ॥ विंस्तार । १ । करण । २ । अविद्ध । ३ । व्यंजन । ४ । ये च्यार जांनिये । तहां विस्तारके च्यार भेद हैं । विस्तारज । १ । संघातज ।२। समवायज । ३ । अनुबंध । ४ । तहां संघातज च्यार प्रकारको हैं । द्विरुत्तर । १ । द्वीरधर । २ । अधराद्युत्तरांतक । ३ । उत्तराद्यधरान्तक । ४ । समवायज आठ प्रकारको हैं । त्रिरुत्तर । १ । त्रिरधर । २ । द्विरुत्तराधरोधरान्त । ३ । उत्तरादिद्विरधर । ४ । अधरादिद्विरधर । ५ । मध्योत्तरद्विरधर । ६ । मध्याधर । ७ । द्विरुत्तर । ८ । तारमें तीन वेर ताडन कीयेतें ॥ जो स्वर होय ॥ सो समवायज धातु हैं । ताके यह भेद जांनिये ॥ जहां एक जातिके न्यारि जातिके स्वर बंध भेद मिले सों अनुबंध धातु जांनिये ॥ ऐसें चोदहें प्रकारको विस्तारज धातु जांनिये । करण धातुकें ॥ ५ ॥ पांच भेदहें । रचित । १ । उच्चय । २ । नीरटनर । ३ । उरद्वाम्द । ४ । अनुबंध । ५ । यह जांनिये ॥ आविद्धधातुके । ५ । पांच भेदहें, क्षेप । १ । प्लुत । २ । तिपात ।३। अतिकीर्ण । ४ । अनुबंधक । ५ । यह भेद जांनिये ॥ अथ व्यंजन धातुके दस भेद हैं ॥ पुष्प । १ । कल । २ । तल । ३ । बिंदु । ४ । रेफ । ५ । अनिस्वनित । ६ । निष्कोटि । ७ । उन्मृष्ट । ८ । अवमृष्ट । ९ । अनिबंध ।१०। ये दस भेद जांनिये ॥ ऐसें चोविस धातु जांनिये ॥ २४ ॥

अथ इन धातुनको लछन लिख्यते ॥ जहां ध्वनिकों विस्तार करिकें मंद्रस्थानमें भेद दिखायवो जो एकवार ताडनकी जलदी जो जुदेजुदे स्वर सुनिवेवारेको एकसें जानें परें सों विस्तारज धातु जांनिये ॥ सो या विस्तारज धातुमें स्वरको एक ताडन जांनिये ॥

अथ संधातक धातुको लछन ताके भेद कहे हैं ॥ जहां तारकु दोय वेर ताडन कीये सों स्वरसंधान जांनिये ॥१॥ जहां मंद्रस्थानके स्वरकों दोय बार उच्चार कीजिये सो धातु द्विरुत्तर जांनिये ॥ २ ॥ जहां तारस्थानके स्वरकों दोय वार उच्चार होय ॥ अरु दोय बार ताडन होय ॥ सो द्विरधर जांनिये ॥३॥ जहां तार स्वर प्रथम दोय बार उच्चार कीजिये । सो अधराद्युत्तरान्तक जांनिये ॥ ४ ॥ जहां पहले मंद्रस्थानको दोय वेर लीजिये ॥ अंतमें तार स्थानको स्वर दोय वेर लीजिये । सो उत्तराद्यधरान्त जांनिये ॥५॥ इति संधात्त भेद संपूर्णम् ॥

अथ समवायज धातुको लछन लिख्यते ॥ जहां स्वरमें तीन बार तारको ताडन कीजिये ॥ अथवा तीन वेर मुखसों उच्चार कीजिये सो समवायज धातु जांनिये ॥ ताके आठ भेद हें ॥ जहां स्वरनमें मंद्रस्थानके स्वर तीन वेर ताडन कीजिये । वा उच्चारन कीजिये सो त्रिरुत्तर धातु जांनिये ॥ १ ॥ जहां तीन वेर स्वरकों ताडन कीजिये । वा उच्चार कीजिये सो त्रिरधर जांनिये ॥ २ ॥ जहां मंद्रस्थानको स्वर दोय वेर उच्चार कीजिये ॥ वा ताडन कीजिये । तार स्वर दोय वेर अंतमें कीजिये ॥ सो द्विरुत्तराधरान्त जांनिये ॥ ३ ॥ जहां तारस्थानको स्वर दोय वेर ताडन उच्चार करि मंद्र स्वरकों उच्चार कीजिये । सो द्विरधरोत्तरान्त जांनिये ॥ ४ ॥ जहां तार स्वरकों एक वेर ताडन करि वा उच्चार करि दोय वेर मंद्र स्वरकों उच्चार कीजिये । सो उत्तरादिद्विरधर जांनिये ॥ ५ ॥ जहां मंद्र स्वरकों एक वेर ताडन वा उच्चार करि तार स्वरकों दोय वेरि उच्चार कीजिये सो अधरादि द्विरुत्तर जांनिये ॥ ६ ॥ जहां तार स्वरकों ताडन वा उच्चार दोय वेर करि बिचमें मंद्रस्थानके स्वरकों एक वेर ताडन वा उच्चारन कीजिये ॥ सो मध्योत्तरद्विरधर जांनिये ॥ ७ ॥ जहां मंद्रस्थानके स्वरकों एक वेर ताडन उच्चार करि तार स्थानको उच्चार कीजिये ॥ अंतमें मंद्रस्थानके फेर उच्चार कीजिये । सो अधरमध्यद्विरुत्तर जांनिये ॥ ८ ॥ **इति समवायज धातुके आठ भेद संपूर्णम् ॥**

अथ अनुबंध धातुको लछन लिख्यते ॥ जहां स्वरको इन धातु तिनोंनके लछन सों मिल्यो ताडन वा उच्चार कीजिये ॥ ऐसें अपनि जातिके स्वर । अपनि जातिनके स्वरनको मिलाप होय सो अनुबंध जांनिये ॥ १ ॥ **इति विस्तार धातुके चोदह भेद संपूर्णम् ॥**

अथ कर्ण धातुको लछन लिख्यते ॥ जहां गुरु अक्षर थोरे होय ॥ लघु अक्षर घणो होय सो कर्ण धातु जांनिये ॥ सो या कर्णके पांच भेद हें ॥ जहां दोय लघु अंतमें ॥ एक गुरु वीणामें वजाइये । सो रिभित धातु जांनिये ॥ १ ॥ इहां च्यार लघु एक गुरु जांनिये सो उच्चय धातु जांनिये ॥ २ ॥ जहां छह लघु एक गुरु बजाइये । सो निरटित जांनिये ॥ ३ ॥ जहां आठ लघु एक गुरु होय सो ह्राद जांनिये ॥ ४ ॥ जहां करण धातुके यह च्यार भेद हें ॥

तामें दोय तीन च्यार भेद मिले सो करणको अनुबंध जांनिये ॥ ५ ॥ इति करण धातु भेद संपूर्णम् ॥

अथ आविद्ध धातुको लछन लिख्यते ॥ जहां गुरु अक्षर घणो होय लघु थोरो होय । सो आविद्ध धातु जांनिये ॥ अथवा गुरु अक्षर नही होय सो आविद्ध धातु जांनिये ॥ याके पांच भेद कहे हैं । जहां एक लघु दोय गुरु बजाइये सो क्षेप जांनिये । १ । जहां एक लघु, गुरु, लघु, बजाइये । सो प्लुत जांनिये । २ । जहां दोय लघु दोय गुरु होय सो अतिपात जांनिये । ३ । जहां च्यार लघु, च्यार गुरु होय सो अतिकीर्ण जांनिये । ४ । जहां आविद्धके यह च्यारनमें दोय वा तीन वा च्यार भेद मिलें । सो आविद्ध धातुको भेद । अनुबंध जांनिये ।५। अथवा दोय लघुको भेद ताको जो क्षेप । १ । तीन लघुको प्लुत । २ । च्यार लघुको अतिपात । ३ । नव लघुको अतिकीर्ण । ४ । ऐसें च्यारों भेद कोऊ आचार्य कहहैं ॥ इति आविद्ध धातुके भेद संपूर्णम ॥

अथ व्यंजन धातुको भेद लिख्यते ॥ अंगुठा आंगुरीसों स्वरको बजायवो । सो व्यंजन धातु जांनिये ॥

अथ व्यंजन धातुको भेद लिख्यते ॥ जहां एक तारमें दोय वेर अंगुठासों ॥ एक वेर चटी आंगुरीसों स्वर बजाइये ॥ सो पुष्प जांनिये । १ । जहां दोय तारमें एक वेर दोनु हातके अंगुठासों न्यारे न्यारे स्वर बजाइये सो कल जांनिये । २ । जहां बांये हातके अंगुठासों तार दाबिके दाहिनें हातके अंगुठासों बजाइये । सो तल जांनिये । ३ । जहां एक तारमें गाढो ताडन करें सों भारी नाद होय सो बिंदु जांनिये । ४ । जहां क्रमसों च्यारों आंगुरीसों एक स्वर एक तारमें बजाइये सो रेफ जांनिये ।५। जहां बांये हातके अंगुठासों तार दाबिकें दाहिणें हातसों अंगुठासों निचलों स्वर बजाइये सो निस्वनित जांनिये। ६ । जहां बांये हातके अंगुठानें तार दाबिकें निचले भाग दाबी तारकों ताडन कीजिये ॥ सो निष्कोटित जांनिये ।७। जहां मधुर धुनि जुत स्वर । अंगुठाके पास की आंगुरीसों बजाइये । सो उनमृष्ट जांनिये ।८। जहां दोनु हातनकी चटी आंगुरीसों दोनु हातके अंगुठासों अवरोह क्रमसों तीन्यो तारमें । तीनो स्थानकको एक स्वर बजाइये । सो अवमृष्ट जांनिये । ९ । जहां व्यंजनके नव भेद हैं ।

तिनमें दोय तीन च्यार पांच ऐसें भेदसों लेकें नव भेद तांइ मिलें सो अनुबंध जांनिये ॥ ऐसेंहि जाहां आंनु धातुके दोय तीन भेद मिलें सोहू अनुबंध जांनिये । १० । ये च्योतिस धातु च्यारों प्रकारके बाजेनमें कीजिये ॥ अपनें अपनें वृत्तीमें अपनें स्थान रचिये ॥ **इति चोतीस धातु भेद संपूर्णम् ॥**

अथ चोतीस धातु वृत्तिमें बरतियेसो वृत्तिको लछन लिख्यते ॥ जहां वाद्य । १ । गीत । २ । इन दोनूनमें कोउ मुख जांनि परे कोऊ साधारण जांनिपरें । क्रियाकी चतुराइसों न्यून अधिक जांनि परे सो वृत्ति जांनिये। सो वृत्तिके तीन भेद हें । चित्रा । १ । वृत्ति । २। दक्षिणा । ३ । ये जांनिये। जहां बाजो मुख जांनि परें सो साधारण जांनिपरें । सो चित्रा वृत्ति जांनिये ।१। जहां गीत । १ । वाद्य । २ । बराबर होय सो वृत्ति नामको दूसरो भेद वृत्तिवृत्त जांनिये । २ । जहां गीत मुख्य होय । वाद्य साधारण होय सो दक्षिणावृत्ति जांनिये । ३ । कोनु मुनीश्वर वृत्तिनमें । क्रमसों द्रुत । १ । लघु चित्रामें मध्य लय वृत्तमें । २ । विलंबित लय ।३। दक्षिणामें ऐसें समा जांनिये ॥ चित्रामें । १ । स्रोतागता निवृत्तमें ।२। गोपूछा यति दक्षिणामें । ३ । ऐसें इन तीनों वृत्तिनमें । मागधी । १ । संभाविता । २ । पृथुला । ३ । ये गीत ऐसों तत्व अनुगत ओघ । वार्तिक । १ । चित्र मार्ग । २ । दक्षिणा मार्ग । ३ । ये तीम मार्ग । अनागत ग्रह । १ । समग्रह । २ । अतीत ग्रह । ३ । ये रिति तिनों वृत्तिमें क्रमसों कहत हें ॥ **इति वृत्ति लछन संपूर्णम ॥**

अब वृत्तिनमें तत्व ओर बाजोंको प्रकार कह्योहें । ताके तीन भेदहें सो लिख्यते ॥ जहां गीतके संग बजाईये सो बाजो तीन प्रकारको हें । तत्व । १ । अनुगत । २ । ओघ । ३ । ये जांनिये जहां द्रुत आदि लघु । १ । चंचित पुट । २ । आदि तालकी समाप्त । ३ । समाकी इक जाति । ४ । मागधी आदि गीति । ५ । एक कल आदि द्विकल चतुस्कल तालके भेद । ६ । इन गीतकी सामग्री जा बाजेमें प्रगट दिखावत गीतमें । मिलाप बजाइये सो तत्व बाजो जांनिये । १ । जहां बाजेमें कछुइक गीतकी सामग्री प्रगट करिये कछु नहीं कीजिये ॥ जेसें तालको विराम गीत वाद्यमें बराबर होय ॥ विश्राम न्यारो होय ॥ जेसें गीतमें विलंबीत लय होय वाद्यमें द्रुतलय होयसो ताल भर दीजिये ।

ऐसें गीतके पीछे वाद्य चले सो अनुगत वाद्य जांनिये। २। जहां गीतकी सामग्री नही दिखावें आपनी चतुराइसों गीतके तालसों निर्वाह करिसों सुनिवे वारो न्यारो बाजो नहीं जाने सों ओघ वाद्य जांनिये। ३। जो इकइस तारको वीणामें विस्तारसों धातुको बजाइ वासों एक तंत्रि वीणामें धातुको संक्षेपसों बजाइये ॥ ऐसें दोय तंत्री तीन तंत्री पांच तंत्री ॥ सात तंत्री नव तंत्री। वीणामें तारकें माफिक बजाइये ॥ ऐसेंहि वंशि बजायवेंमें। वा अलगे सहनाइ। आदि मुखकें बजायवे बाजेनमें जांनिये ॥ सो गीतानुग वाद्य जांनिये ॥

अथ गीतविना वीणा बजायवेके दस भेदहें तिनके नाम शुष्क वाद्य हे तिनके लछन लिख्यते ॥ आस्रवण ॥ १ ॥ आरंभविधि ॥ २ ॥ चक्रपाणि ॥ ३ ॥ संखोटना ॥ ४ ॥ परिघट्टना ॥ ५ ॥ मार्गासारित ॥ ६ ॥ लीलाकृत ॥ ७ ॥ एक कल आसारित ॥ ८ ॥ द्विकल आसारित ॥ ९ ॥ त्रिकल आसारित ॥ १० ॥ यह दस भेद जांनिये ॥ तहां विस्तार धातुके चोदह भेद हें ॥ तिनमें दोय दोय भेदको प्रयोग सात वेर कीजिये ॥ प्रथम दुसरो ॥ १ ॥ तीसरो चोथो ॥ २ ॥ पांचवों छटो ॥ ३ ॥ सातवों आठवों ॥ ४ ॥ नवमों दसमों ॥ ५ ॥ ग्यारमो बारमों ॥ ६ ॥ तेरमों चोदमों ॥ ७ ॥ ऐसें कीजिये। सो शुष्कवाद्य आस्रवण जांनिये ॥ १ ॥ अब देवनातें, वरदान पायवेके अरथ अपनें स्वामितें सकल मनोरथ पायवेके अरथ आस्तवीणा सुस्क वाद्यमें कहेहें ॥

अथवा नाम तीन खंडकी रचना करिवेको प्रकार ब्रह्म कुल मंडन मुनीश्वर श्रीविशाखिलके मतमों कहेहें सो लिख्यते ॥ जहां विस्तार धातुके भेद स्वरको गुरु लघु अक्षरनमें प्रयोग कीजिये द्रुत आदिक, लयनसों ध्रुवा हें ॥ तहां पहले खंडमें पहलो ॥ १ ॥ दुसरो ॥ २ ॥ ग्यारमों ॥ ११ ॥ चोदमों ॥ १४ ॥ पंदरमों ॥ १५ ॥ चोविसवों ॥ २४ ॥ य अक्षिर गुरु होय ॥ ओर अठारह लघु होय ॥ ऐसें चोइस अक्षिरको प्रथम खंड रचिये। ऐसेंहि चोइस अक्षिरको दुसरो खंड रचिये। तीसरे खंडकी रचनामें तीसरो ॥ ३ ॥ आठवों ॥ ८ ॥ पंदरमों ॥ १५ ॥ य तीन अक्षर गुरु होय ॥ बारह । १२। लघु होय ॥ ऐसें पंधर अक्षिरनको तीसरो खंड रचिये ॥ १ ॥ ऐसें तीन खंडकी ध्रुवा जांनिये यह वीणामें गावे सुनें सों मन चाही सिद्धि पावे ॥

अब वीणाकी पातकला विधिको लछन कहे हें ॥ तहां कोनु ध्रुवामें बाइस कला कहे हें ॥ कोनु ध्रुवामें अठाइस ॥ २८ ॥ कला कहे हें कोऊ ध्रुवामें बत्तीस कला कहे हें इन तीन भेदमें तालको प्रकार कहे हें ॥ जहां बाइस कला होय तहां ताल पातविधि कहे हें। जो पहले विना ताल गीतको आरंभ करि पहली ॥ १ ॥ दुसरी ॥ २ ॥ तीसरी ॥ ३ ॥ कलामें संगात कहिये । सब्दविना तालकी क्रिया कीजिये । चोथी ॥ ४ ॥ पांचमी ॥ ५ ॥ छटमी ॥ ६ ॥ कलामें सब्द सहित तालकी क्रिया कीजिये । ओर तालकी बराबर गीतको उच्चार करि। सातई ॥७॥ आठई ॥८॥ कलामें विना शब्दकी तालकी क्रिया कीजिये । नवमी ॥ ९ ॥ दसमी ॥ १० ॥ कलामें सहित तालकी क्रिया कीजिये । ओर ग्यारह ॥ ११ ॥ कलामें क्रियाउपरांति गीतको आरंभ करि सब्दविना तालकी क्रिया कीजिये । बारह ॥ १२ ॥ कलामें सब्द सहित तालकी क्रिया कीजिये । बारह ॥ १२ ॥ कलाको प्रथम खंड कीजिये ॥ १ ॥ दुसरो खंडमें छह ॥ ६ ॥ कला कीजिये सो छहतालो जो षट्पितापुत्र ताल ॥ ताके एक एक तालमें एक एक कला कीजिये ॥ ऐसें छहों तालानमें एक षट्पितापुत्रताल पूरन होय ॥ ताके नि ॥ १ ॥ स ॥ २ ॥ ता ॥ ३ ॥ स ॥ ४ ॥ नि ॥ ५ ॥ स ॥ ६ ॥ सो दुसरो खंड जांनिये ॥ २ ॥ तीसरे खंडमें च्यार कला कीजिये । तिनमें चोतालोको चंचतपुट ताल ताके एक एक तालमें एक एक कला कीजिये ॥ ऐसें च्यार कलामें एक चंचतपुट पूरन होय ॥ या चंचतपुटमें च्यार ताल हें तिनके । स ॥ १ ॥ ता ॥ २ ॥ स ॥ ३ ॥ ता ॥ ४ ॥ याके ये अक्षिर रहें ॥ सो तिसरो खंड जांनिये ॥ १ ॥ ऐसें बाइस कलाकी ध्रुवाको विचार जांनिये ॥ अब अठाविस ॥ २८ ॥ कलाकी तालको ध्रुवाको विचार कहे हें ॥ जहां पहलो खंड बारह कलाको कीजिये ॥ तामें तीन कला विना सब्दकी तालकी क्रियासों होय ॥ तीन कला सब्दजुत क्रियासों होय ॥ ओर दोय कला विना सब्दकी क्रियासों होय ॥ दोय कला सब्दजुत क्रियासों होय । एक कला सब्द विना क्रिया सों होय ॥ अर एक कला सब्दजुत क्रिया सों होय सो ॥ ऐसें बारह कलाको प्रथम खंड होय । १ । दूजे खंडमें बारह कला होय ॥ सो द्विकलक षट्पितापुत्रके बारह तालनमें कीजिये । इन बारह कलानमें

दूनो षट्पितापुत्र ताल पुरो होय ताके । अक्षर । नी । १ । म । २ । ता । ३ । स । ४ । नि । ५ । गा । ६ । नि । ७ । स । ८ । ता । ९ । म । १० । नि । ११ । स । १२ । यह बारह जांनिये ॥ ऐसें बारह कलाको दूसरो खंड जांनिये । २ । तीसरे खंडमें च्यार कला होय ॥ सो एक कला चौतालो चंचतपुटके चार तालमें कीजिये ॥ इन च्यार कलामें चोतालो चंचतपुट पूरन होय ॥ ताके अक्षर । स । १ । ता । २ । स । ३ । ता । ४ । यह जांनिये ॥ ऐसें च्यार कलाको तीसरो खंड कहीये । ३ । ऐसें अठाविस ध्रुविकाको । २८ । विचार जांनिये ॥ अबे बत्तीस कलाकी ॥ ध्रुविकाको विचार कहेहें ॥ तहां पहले खंडकी दूसरे खंडकी बारह बारह कला कीजिये ॥ सो दोउ खंड अठाइस । २८ । कलांमे पहले दुसरे खंड कहते सों जांनिये । २ । तीसरे खंडमें आठ कला होय ॥ सो द्विकल चंचतपुटके ॥ आठ तालनमें कीजिये । नि । १ । म । २ । नि । ३ । ता । ४ । स । ५ । म । ६ । नि । ७ । प । ८ । ऐसें आठ ताल द्विकल चंचतपुट पूरो होय ॥ ताके अक्षर जांनिये ॥ ऐसें तीसरो खंड जांनिये ॥ ऐसें बत्तीस कलाकी ध्रुविकाको विचार जांनिये ॥

अथ ध्रुविकाकी विदारि कहे हें ॥ विदारि कहतें गीतको प्रथम खंड ताको लछन लिख्यते ॥ जहां विदारिक न्यारि होय ॥ तहां बाइस कलामें । सातकला नई इनहीसों रचिये ॥ तहां पहले खंडकी बारह कलामें ॥ पहली तीन कलाकी एक कला कीजिये ॥ ताउपरांत तीन कलाकी एक कला दूसरी कीजिये ॥ फेर दोय कलाकी एक कला तीसरी कीजिये । फेर दोय कलाकी एक कला चोथी कीजिये ॥ फेर दोय कलाकी एक, कला पांचमी कीजिये ॥ फेर दूसरे खंडकी छटवी कला हे ॥ ताकी एक कला छटि कीजिये ॥ फेर तीसरे खंडकी च्यार कला हे ॥ तिनकी एक कला सातवी कीजिये ॥ ऐसें सात कलाकी एक विदारि होत हे ॥ सो गीतको प्रथम खंड हे ॥ याको लौकीकमें पीडाबंधन कहेहें ॥ सो याके तीन प्रकार हे ॥ इहां दोय खंडकी जो अठारह कला हे । तिनमें द्विकल चंचतपुटसों आठ कलाकी एक कला पहली कीजिये । सो फेर द्विकल चंचतपुटसों आठ कलाकी एक कला दूसरी कीजिये ।

बाकीकी दोय कला विना सब्दकी क्रिया। सों लीजिये सो तीसरी कला कीजिये॥ ओर तीसरी खंडकी चंचतपुट जुत च्यार कलानकी एक कला चोथो कीजिये ॥ सो च्यार कलाकी विदारि जांनिये । १ । अबे दूसरो बिदारिको भेद कहेहें ॥ जो तीनों खंडकी बाइस कलाहे तिनमें । द्विकल चंचतपुटसुं आठ कलाकी एक कला पहली कीजिये । फेर द्विकल चंचतपुटसों आठ कलाकी एक कला दूसरी कीजिये । बाकीकी छह कला षट्पितापुत्र तालसों लेकें उनकी एक कला तीसरी कीजियें ॥ सो यह तीन कलाकि विदारि जांनिये ॥ अबे तीसरी विदारिको भेद कहेहें ॥ तीसरे भेदमें पहले खंडकी बारह कलातें तीन कला विना सब्दकी क्रियासों ओर तीन कला तालसों अरु दोय कला विना सब्दकी क्रियासों ॥ ओर दोय कला सब्दकी ओर एक कला विना सब्दकी क्रियासों एक कला शब्दकी क्रियासों । इन बारह कलाकी ॥ एक कला पहली कीजिये ओर दूजे खंडकी छह कला षट्पितापुत्र तालसों लेके उनकी एक कला दूसरी कीजिये ॥ ओर तीसरे खंडकी च्यार कला एक कला चंचतपुटसों लेके उनहीकी एक कला दूसरी कीजिये ॥ ओर तीसरे खंडकी च्यार कला चंचतपुटसों लेके उनहीकी एक कला तीसरी कीजिये ॥ ऐसों तीन खंडकी तीन कला कीजिये ॥ सो तीसरी विदारिको भेद जांनिये । ३ । ऐसी भांत विदारिजुत तीन खंडकी ध्रुवा जहां कीजिये ॥ सो शुष्क वाद्य आस्त वीणा जांनिये ॥ **इति आस्त वीणा भेद संपूर्णम् ॥**

अथ आरंभविधि शुष्क वाद्यको भेद लिख्यते ॥ जहां विस्तारज धातुके चोदह भेद । आरोह अवरोहसों वरतिये। एक एक भेदकों आरोह अवरोह करिके बीचमें । तल धातु । १ । रिभित धातु । २ । न्हाद धातु ।३। ये तीन धातु वरतिये ॥ ऐसें क्रमसों चोदह भेद कीजिये । पीछे करण धातुके भेद रिभिस्तको दोय तीनवार वरतीये ॥ फेर ऐसें विस्तार धातुको प्रयोग कीजिये ॥ यह रीतिसों या उपरांत करण धातुके बाकी दूसरे भेदेसों ॥ जे भेद या रीतीसों वरतिये ॥ सो आरंभ विधि जांनिये ॥

आरंभविधिकी ध्रुवा कहेहें ॥ जामें पहले आठ । ८ । गुरु अक्षर होय॥ बारह । १२ । लघु होय । पांच । ५ । गुरु होय । ऐसें पचीस अक्षरकी आदि

खंड कीजिये। १। जहां आठ । ८ । लघु एक । १ । गुरु होय च्यार । ४ । लघु । १ । एक गुरु फेर । ४ । च्यार लघु ॥ एक ।१। गुरु होय ॥ ऐसें उगनीस अछरनको दूजो खंड कीजिये । २ । जहां आठ लघु होय एक गुरु होय । अंतमें ऐसें नव अछिरनको तीसरो खंड कीजिये । ३ । ऐसें तीन खंडकी ध्रुवा जांनिये ॥ तांहां पहले खंडमें इकइसके अछिरपें विश्राम कीजिये । दूसरे खंडमें चोदह अछिरपें विश्राम कीजिये । २ । तीसेर खंडकी पीछले गुरुपें विश्राम कीजिये ॥ ३ ॥ यहां पहले खंडमें बारह कला । १ । दूसरे खंडमें छह कला । २ । तीसेर खंडमें च्यारह कला । ३ । ये जांनिये ॥

अब इन खंडनको ताल विचार कहेंहें ॥ तहां पहले खंडमें पहली तीन कला सब्दसहित क्रियाजुत कीजिये ॥ अरु एक कला विना सब्दकी क्रियासों कीजिये ॥ फेर दोय कला सब्दसहित क्रियासों कीजिये ॥ फेर दोय कला सब्दविना क्रियासों कीजिये ॥ फेर दोय कला सब्दसहित क्रियासों कीजिये ॥ फेर दोय कला सब्दविनाक्रियासों कीजिये ॥ ऐसें बारह कला प्रथम खंडसें जांनिये । १ । दूसरे खंडकी छहकलासों षट् तालो जो षट्पितापुत्र ताल ताके एक एक ताल लीजिये । ऐसें एक ताल षट्पितापुत्र छह कलामें पूरन कीजिये ॥ ऐसें दूसरो खंड जांनिये । २ । तीसेर खंडमें च्यार कला हे । सो चोताले चंचतपुटके । एक एक तालसों एक एक कला लीजिये ॥ ऐसें च्यार कलामें एक चंचतपुट ताल पूरन कीजिये ॥ ऐसें तीसरो खंड जांनिये । ३ । इहां षट्पितापुत्रको चंचतपुटके अक्षर जांनिये ॥ इति शुष्कबाजेमें आरंभविधि ध्रुवालछन संपूर्णम् ॥

अथ वक्त्रपाणि शुष्कवाद्यको लछन लिख्यते ॥ जहां वीणा बजायवेमें करणधातु आविद्ध धातुके भेद तो बहुत वरतिये । अरु व्यंजनधातुके भेद थोरे होय ओर विस्तारधातुके भेद जहां नहि लीजिये ॥ सो वक्त्रपाणि जांनिये ॥ या वक्त्रपाणि मुख प्रतिमुख । २ । ये दोनु तालके अंग कीजिये ॥ अथवा प्रवृत । १ । एक वर्णांक । २ । कीजिये ॥ अब ध्रुवा कहतहें ॥ जहां पहली पांच गुरु होय ॥ फेर छह लघु होय ॥ फेर छह गुरु होय ॥ ओर दोय लघु होय ॥ ओर गुरु च्यार होय ॥ ओर लघु तीन होय ॥ ओर गुरु आठ होय । यह लघुके अंतमें होय ॥

इनकी चोइस कला कीजिये । वक्त्रपाणिकी ध्रुवा जांनिये ॥ जो इहां चोइस कला कीजिये । तहां पहली आठ कलामें द्विकलचंचतपुट तालके आठ ताल कीजिये ॥ आठ तालनसों आठ कला कीजिये ॥ यह तालको प्रथम अंग मुख्य जांनिये ॥ १ ॥ ऐसेंहु दुजी आठ कलामें कीजिये ॥ ऐसेंही तीसरी आठ कलामें कीजिये ॥ द्विकल चंचतपुटकी तीन वेर आवृत्ति करि । वाके तिनु खंडकी चोइस कला कीजिये ॥ अबे प्रतिमुख कहे हें ॥ इहां पहली षट्कलामें षट्पितापुत्र ताल कीजिये ॥ ओर दूसरी छह कलामें चोथी छह कलामें षट्-पितापुत्र ताल कीजिये ॥ ऐसें च्यार वेर षट्पितापुत्र तालकी आवृत करे । ताके चोइस तालनकों चारों खंडकी चोइस कला कीजिये । यह प्रतिमुख नाम तालको दूसरो अंग हें ॥ ओर याकी जब विदारि कीजिये । तब द्विकल चंचत-पुटके । आठ तालनसों आठ कला लेके । एक मात्रा कीजिये । ऐसी तीन मा-त्रासों चोइस कलाकी एक विदारि जांनिये ॥ इति **वक्त्रपाणि संपूर्णम** ॥

अथ संखोटनाको लछन लिख्यते ॥ जहां अंगूठासों तार दाबिके ॥ अंगूठा पासकी आंगूरीसों तारको ताडन करि ॥ बिंदु गमकजुत वादि संवादि स्वर मिलाइकें । अनुवादि स्वर दिखायकें । थोरेसे विवादि स्वर बजाइये ॥ फेर उनही स्वरनमें विस्तार धातुके भेद ॥ ओर धातुनके भेदसों मिले बजाय ॥ ऐसें दोय तीन वेर ॥ फेर फेर जुदे जुदे धातोकों दोय वेर बजावे ॥ ओर धातु हू रचे सो संखोटना जांनिये ॥ अबें ध्रुवा कहे हें ॥ प्रथम दोय गुरु होय ॥ आठ लघु होय ॥ एक गुरु होय ॥ ऐसें सताइस अछिरनकी ध्रुवा होय सों संखोटना-की ध्रुवा जांनिये ॥ इहां अठारह कला कीजिये ॥ तहां पहलो खंड छह कला-को कीजिये ॥ तहां षट्पितापुत्रके छह तालसों छह कला कीजिये । ऐसें एक षट्पितापुत्रमें पहलो खंड जांनिये ॥ १ ॥ दूसरे खंडकी बारह । १२ । कला हें ॥ तिनमें द्विकल षट्पितापुत्रके बारह ताल कीजिये ॥ ऐसें दूसरे खंडमें एक द्विकल षट्पितापुत्र जांनिये । २ । ऐसें अठारह । १८ । कलाके दोय खंड जांनिये ॥ अथवा अठारह कलाको तीन खंड रचिये ॥ एक एक खंडमें छह कला कीजिये । उन छह कलामें एक कला षट्पितापुत्र जांनिये ॥ इति **शुष्क वाद्य संखोटना संपूर्णम्** ॥

अथ शुष्क वाद्य परिघट्टनाको लछन लिख्यते ॥ जहां व्यंजन धातुके दस भेदसों मिलकर करणधातुके पांच भेदसों मिलेहातकी चतुराइसों सुंदरतासों बजावे ॥ तामें आरोह बहुत होय । अवरोह थोरो होय ॥ सो परिघट्टनां जांनिये ॥ अब ध्रुवा कहे हें ॥ जहां आठ प्रथम गुरुअक्षर होय ॥ चोइस लघु होय ॥ दोय गुरु होय ॥ सोलह लघु होय । एक गुरु होय ॥ सो ध्रुवा परिघट्टना जांनिये । यह इक्कावन अछिरनकी हें ॥ इहां ध्रुवाकी अठाइस कला कीजिये ॥ तहां पहले खंडकी दस कला होय । सो पांच तालको संपक्केष्टाक ताल दोय वेर लेकें । वांके दस तालनसों । पहले खंडकी दस कला लीजिये ॥ ओर दूसरे खंडकी बारह कला कीजिये सो द्विकल संपक्केष्टाके बारह तालसों दूसरे खंडकी बारह कला कीजिये ॥ ऐसें दोय खंडकी ध्रुवा कीजिये ॥ अथवा या ध्रुवाकी अठारह ॥ १८ ॥ कला कीजिये तहां पहले खंडकी छह कला एक कला संपक्केष्टाके तालके छह तालसों लीजिये ॥ ऐसें पहलो खंड जांनिये ॥ दूसरे खंडमें बारह कलासों द्विकल संपक्केष्टाके तालके बारह कलासों लीजिये ॥ ऐसें दोय खंड कीजिये ॥ **इति परिघट्टना लछन संपूर्णम्** ॥

अथ मार्ग सारिताको लछन लिख्यते ॥ तहां विस्तार । १ । करण । २ । आविद्ध । ३ । इन धातुनके भेद कल धातु । १ । तल धातु । २ । सों मिलायकें क्रमसों वरतिये ॥ अथवा करण धातुके पांच भेद कल । १ । तल । २ । धातुसों मिलायकें क्रमसों वरतिये ॥ सो मार्ग सारिता जांनिये ॥ अथ यांकि ध्रुवा कहेहें । जामें पहले च्यार गुरु होय ॥ फेर आठ लघु होय ॥ फेर दोय गुरु होय ॥ फेर आठ लघु होय ॥ एक अंतमें गुरु होय ॥ सो तेइस अक्षिरको खंड होय ॥ सो प्रथम ॥ खंड जांनिये ॥ ऐसे दूसरो तीसरो खंड कीजिये ॥ ऐसें तीन खंडकी ध्रुवा होत है अब याको ताल विचार कहे हें ॥ जहां तीनों खंडमें सोलह सोलह कला कीजिये ॥ तहां पहली च्यार कला चंचतपुटके च्यार तालसों लीजिये ॥ फेर छह कला षट्पितापुत्रके छह तालसों लीजिये ॥ ऐसें अठारह कला प्रथम खंडकी । जांनिये ॥ याहि रितिसों दूसरे तीसरे खंडकी कला अठारह । १८ । रचिये ॥ **इति मार्ग सारिता शुष्क वाद्य संपूर्णम्** ॥

अथ लीलाकृतको लछन लिख्यते ॥ जहां षड्ज ग्रामकी षाड्जी जातिके अंस स्वरमें । वार्तिक । १ । मार्गसों । २ । जो अभि सृत नामको गीत कहाहें सों ओर मध्यम ग्रामकी मध्यमा जातिके अंस स्वरनमें वार्तिक मार्गसों ॥ परिसृत मामको जो गीत कह्यो सो ओर तालाध्यायमें मार्ग लयसों दूनें लयमें कह्यो जो लयांतर नामको गीतसों । यह तीन गीत वीणामें सुंदरता सों वरतिये ॥ अनु रंजनके अरथ सो लीलाकृत शुष्क वाद्यको लछन जांनिये ॥ याके ध्रुवा होय हे ॥ अर्थजुत पदनकी । १ । विना अरथ पदनकी । २ । इहां वीणामें लिलाकृतकी ध्रुवा तालसों बजाईये । ७ ।

अथ तीन आसारित शुष्क वाद्यको लछन लिख्यते ॥ तहां चंचत-पुट ताल एक षट्पितापुत्र ताल दोय वरतिये ॥ सो कनिष्ठासारित होय ॥ सो कनिष्ठासारित दूनि लयसों दूनो मार्गमें लीजिये ॥ तब लयांतर नाम आसारित होय । १ । जहां द्विकल षट्पितापुत्र ताल तीनवेर वरतिये । सो मध्यम आसारित होय । सो द्विकल षट्पितापुत्रकी एक आवृतमें बारह कला हें ॥ सो बारह कलाको खंड जांनिये ॥ तहां पहले खंडमें तीन कला नही कीजिये ॥ तब दूसरो मध्यमा सारित होय । २ । जहां चतुष्कल षट्पितापुत्रकी तीन आ-वृति कीजिये । सो जेष्टा सारिव होय ॥ तहां चतुष्कल षट्पितापुत्रकी एक आवृतमें चोईस कला होय सो । चोइस कलाको एक खंड जांनिये । जहां पहले खंडमें सात । ७ । कला नही लीजिये । तब जेष्टा सारित होय । ३ । तीनों आसारितके तीन तीन भेद हे ॥ यथाक्षर । १ । द्विसंख्यांत । २ । त्रिसंख्यांत । ३ । एक वेरके उच्चार सों वरतिये । सो अक्षर । १ । दोय वेरके उच्चार सों वरतिये सो द्विसंख्यांत । २ । तीन वेरके उच्चारसों वरतिये सो त्रिसंख्यांत ।३। ऐसें तीन भेद एक एक आसारितके जांनिये ॥ तहां यथाक्षर चित्रा । १ । वृत्ति । २ । दक्षिणा । ३ । इन तीनों वृत्तमें वरतिये । सो द्विसंख्या वृत्ति । १ । दक्षिणा । २ । में वरतियेसो अरु त्रिसंख्यांत दक्षिणा वृत्तिमें वरतिथे । ३ । च्यारों मार्गनमें यथाक्षर वरतिये । वार्तिक । १ । दक्षिणा । २ । मार्गमें । द्वि-संख्यांत वरतिये । २ । दक्षिणा मार्गमें त्रिसंख्यांत वरतिये । ये तीनों आसा-रितकी आवृत स्थाई । १ । आरोहि । २ । अवरोहि । ३ । संचारी । ४ ।

इन च्यारों वरनजुत त्रेसटि । ६३ । अलंकारजुत तत्वादि तीनों बाजेनसों तीनों वृत्तिसों करण धातुके भेदनमें सुंदर रीतिसों वीणामें बजाइये तब तीनों आसारित होय ॥ **इति दस शुष्क वाद्य लछन संपूर्णम् ॥**

यह मत्तकोकिलाको जो बजायवेको प्रकार है । सोहि नकुलि आदि वीणामें बजाइये ॥ **इति नकुली वीणामें बजायवेको प्रकार संपूर्णम् ॥**

अथ आलापिनि वीणाको लछन लिख्यते॥ आलापिनि वीणाको दंड पहलि वीणासोकरि ॥ लंबो नव मुठिको कीजिये ॥ तामें परिघ दोय आंगुलीकी होय दोय आंगुलको लंबो ॥ आधे आंगुलको चोडो ककुभ लगाईये ककुभके आधे भागमें विना पटुली होय ॥ जाके कीला काठको होय सो दंड लगाइये ॥ और वा दंडको कीला काठको च्यार आंगुलको लंबो होय बीचमें मोठो होय ॥ या वीणाके तुंबा बारह आंगुलको ऊंचो होय ॥ मुखको विस्तार च्यार आंगुलको होय होति दांतकी नाभि होय या दंडमें उपर निचेके भागसों पोणा दोय दोय मुठी छोडिके तुंबा लगाइये ॥ इहां तुंबा दोनुको गाठी तांतसों बांधिये तो तार लगाइये ॥ दंड खेरकी लकडीको दस मुठि प्रमाण कहतहैं ॥ इहां तुंबा बांधिवेको कठोर रेसमकी अथवा मुतकी हु करत हैं । कोउ मुनि ऐसें कहतहैं ॥ सिगरे वीणानके दंड रक्तचंदनकी लकरीके कीजिये ॥

अथ वीणाके बजायवेको प्रकार लिख्यते ॥ छातिके पास तुंबा राखिके ॥ बांये हातको अंगुठा दंडपे राखिये । बांये हातकी अंगूठा पासकी आंगुलीसों तार दाबि दाहिणें हातसों बजावना बिंदु धातुकी क्रियासों ॥ वा मंद्र । १ । मध्य । २ । तार । ३ । इन तीनों स्थानमें । निबध्द । १ । अनिबध्द । २ । गीत गाइये ॥ **इति आलापिनी लछन संपूर्णम् ॥**

अथ किन्नरी वीणाको लछन लिख्यते ॥ किन्नरी वीणा दोय प्रकारकी है एक तो लघु । १ । दुसरी बृहत । २ । अथ लघु वीणाको लछन कहे है बांसको दंड तीन विलस्ति । अरु पांच आंगुल लंबो होय । और पांच आंगुली मावे ऐसो मोटो होय ॥ और या दंडमें बावर काठको ककुभ कीजिये । ककुभ पांच आंगुल लंबो ॥ आठ आंगुल चोडो कीजिये । या ककुभमें सारे च्यार आंगुल लंबे । दोय आंगुल चोडो बीचमें काछवाके पिठनाई उंची लोहकी

पटूली लगाइये ॥ ओर गीधके हाड्डीकी भोंगली चटि आंगुली समान मोटि चौदे पांखकी भोंगली कीजिये ॥ गीधकी पांख नही मिले तो लोहकी अथवा कांसिकी चोदह भोंगली करि ॥ सो चोदह भोंगली दंडकी पीडमें ॥ दोय सप्तकके चोदह स्वरनके स्थान मोमके वस्त्रसुं चोपि दीजिये ॥ तहां दूसरी सप्तकको निषाद जहां सुद्ध होय ॥ तहां पहली सारि राखिये ॥ धैवतकी सारि वांसों एक आंगुल उपर राखिये । वासों उपरांत पंचम तें लेकें षड्ज तांई । पांच सारि पहले अंगुलसों कछू कछू वधाय वधाय राखिये ॥ ऐसें दोय आंगुलके आंतर रिषभ राखिये । रिषभसों तीन आंगुलको आंतर षड्ज राखियें । ऐसें दूसरी सप्तक रचिये ॥ अबें निषादतें लेकें षड्ज तांइ । पहली सप्तककी सात सारि । तीन आंगुलतें वधनी कछू कछू ऐसें राखिये । जेसें पहली सप्तकके षड्जकों ॥ अरु रिषभकों च्यारे आंगुलको अंतर होय ॥ ऐसें रचिये । इहां एक तूंबा दंड ककुभकें संधिमें नीचें बांधिये ॥ यातें कछुइक बडो दूसरो तूंबा तीसरी चोथी सारिके बीचमें दंडके नीचे छेद करि तांत बांधियें ॥ तहां तांतके अग्रभागमें लोहकी टिकडीमें ॥ छेद करि तांतकों अग्रपोहिकें तांतके अग्रमें गाठि दीजिये । सो टिकडी तूंबाके गरमें अटकायकें तांत दंडमें खेंचि दीजिये । तब तूंबा गाढो होय ॥ ऐसें तूंबा लगाइये ॥ ओर मेरुके ठिकाणे तीरकीसी फोय सरिसों कील बनाय ठोकिये तहां हातिके बालकीसी मोटि मोटि लोहकी तांति ककुभमें बांधिके वा फोयमें धरिकें । एक वा मेरुके उपरे ढीलि पटिकें कंठमें लपेटिकें फेर वा खुंटीको इतनी मरोडीये । जेसें वा तारमें दोय सप्तकके स्वर वरतिवेमें आवे । यह एक तारकी छोटि किन्नरी जांनिये । याको नाम लघु किन्नरी वीणा हे । १ । इहां बांये हातकी तीन आंगुरीनसों स्वरके स्थान तार दाबिकें दाहिणें हातसों अंगुठा पासकी अंगुरीसों बजाइये ॥ याहि वीणामें तीन तूंबा लगाइये । तांतको तार तीन बांधिये काठके जबसों बजाइये ॥ तब याको बृहत किन्नरी जांनिये ॥ **इति किन्नरी वीणाको लछन संपूर्णम् ॥**

अथ देसी बाजेके किन्नरीके तीन भेद हें तिनके लछन लिख्यते ॥ लघु । १ । मध्य । २ । बृहत । ३ । इन तीनुनको लछन लिख्यते ॥ जाके तुस उतारिकें छह जव बराबर आडे धरिये ॥ इतीने प्रमान आंगुल एक

होय ऐसें पचास आंगुलको दंड होय । वामें छह आंगुलकी परिघ कीजिये यह अंगुल चोडो छह आंगुल लंबो । अग्रदंडमें लगाइये । अग्रके दंडके मध्यमें च्यार आंगुल लंबो होय । दो आंगुल चोडो ककुभ लगाइये । वा छह आंगुलके अग्रमें ॥ कछूवाके पीठकी तरह बीचमें उंची लोहकी पटुली लगाइये ॥ वीणाके मस्तकतें दोय आंगुल नीचें एक आरपार छेद करि तहां ढिलि खुटि राखिये । वासों ककुभ बांधिये ककुभसों उंचो शिरके नीचे एक मेढ बांधिये ॥ फेर वामें जेसें जहां चाहिये ॥ तैसें स्वरके स्थान मोमसों चोदह सारि राखिये ॥ अथवा तेरह सारि राखिये ॥ ओर पहलीकी सिनांई तूंबा तीन लगाइये बजायवेको लोहको अथवा तांतिको तार लगाइये ॥ तांति अनुक्रमसों दोऊ सप्तकके स्वर लगाइये ॥ ऐसें बृहत किन्नरी जांनिये ॥ १ ॥ ओर मध्यमा किन्नरीको तियांलीस । ४३ । आंगुलको दंड कीजिये ॥ दोय जो घाटि छह आंगुलकी परिघ कीजिये ॥ साडेतीन आंगुलको लंबो ककुभको अग्र कीजिये ॥ इहां दंड सीरके मध्यमें, तीसरे अंगुलमें तीहांही घाटकी तीन अंगुलको ककुभ कीजिये ॥ ओर दंडके अंतमें एक आंगुल छोडिकें मेढ लगाइये ॥ फेर वहां स्वरनके ठिकानें । सारि राखिये, पहलिकीसि, तार बांधिकें दोनु सप्तकके स्वर वरतिये । ऐसें मध्यम किन्नरी वीणा जांनिये । २ । ओर लघु किन्नरी वीणामें पेतीस आंगुलका दंड करिये । तीन आंगुलको लंबो चोडो ककुभको अग्र कीजिये । पहली वीणाकी तरह ककुभमें ठोकि दीजिये । ओर पहली रितिसों स्वरके स्थानमें सारि रचिये तूंबा बांधिये लोहके तार लगायके स्वर बजाइये ॥ किन्नरी वीणाके अनेक भेद हें । उन सबनमें पचास अंगुलतें वधती तीस आंगुलतें घाटि दंड लंबो नही कीजिये ॥ सास्त्रके प्रमान दंड नही करे तो । अनुरंजनकी धुनि नहि होत हें ॥ ३ ॥ **इति तीन प्रकारकी किन्नरी वीणा संपूर्णम** ॥

अथ वीणानमें राग बजायवेको प्रकार लिख्यंत ॥ तहां मध्यमादि रागनिके, आलापनिकी, च्यार स्थान कहत हें ॥ पहली सप्तकको मंद्र मध्य स्वर स्थाई कीजिये ।१। अथवा, चढी मध्यम स्वर स्थाई होय ॥ फेर आरोह क्रमसों पंचम स्वरसों लेकें, मध्यम ग्रामके षड्ज ताईं ॥ धैवत छोडिकें तीन स्वरकों

आरोह कीजिये ॥ फेर मध्यम स्थानके षड्जतें लेके अवरोह क्रमसों, पहली सप्तकके, मध्यम स्वर तांई उच्चार कीजिये । इहां धैवत स्वर लीजिये तो रागबीगरे नहि । अरु जो नहि लिये, तोहू, राग बिगरे नहि । ऐसें अवरोह करि मध्यम स्वरमें आवे । तब मध्यमादि रागनिको पहलो स्थान होय । फेर आरोह क्रमसों । फेर पंचम निषादको उच्चार करि । फेर अवरोह क्रमसों निषाद धैवत पंचमको उच्चार करि मध्यम स्वरमें आवे तब दूसरो स्वरस्थान जांनिये । २ । फेर पंचमतें लेकें मध्यमकी सप्तकके लेकें गांधारतांई ॥ आरोह करिये ॥ ओर मध्यमसों गांधारतो अवरोह क्रमसों पहले मध्यममें आवे तब तीसरो स्वरस्थान जांनिये । ३ । ओर पंचमतें लेकें मध्यमकी सप्तककें मध्यमतें अवरोह क्रमसों पहले मध्यममें आवतमें चोथो स्वरस्थान जांनिये । ४ । इन च्यारों स्वर स्थानमें आरोहमें ॥ धैवत छोडि दीजिये । अरु अवरोहमें धैवत लीजिये ॥ अथवा नहि लीजिये । इहां दूसरो तीसरो चोथो स्थान वरतिकें पंचम निषाद षड्ज स्वरकों आरोह क्रमसों उच्चार करि अवरोह क्रमसों या षड्जतें मध्यम स्वरमें आवनो सब ठोर । इहा सब रागनके, वरतावमें जहां जो स्वर नहि होय॥ तहां अवरोह क्रममें वा स्वरकों छोडिकें यातें आगलो स्वर लीजिये ऐसें क्रमसों आरोह कीजिये ॥ ओर अवरोहमें छोटे स्वर लीजिये अथवा नहि लीजिये । यह रिति सब रागनमें जांनिये ॥ **इति मध्यमादि रागनिके बजायवेको प्रकार संपूर्णम् ॥**

अथ बंगाल राग बजायवेको लछन लिख्यते ॥ जहां मध्यम स्वर स्थाई करि । अवरोह क्रमसों गांधारपें आवे । फेर गांधारतें निषादतांई आरोह करे । फेर निषाद तांई अवरोह करि स्थाई स्वरनमें आवें । फेर निषादतांई आरोह करि निषादतें । अवरोह क्रमसों स्थाईमें आवे तब बंगाल राग उपजे ॥ **इति बंगालके उपजायवेको प्रकार संपूर्णम् ॥**

अथ भैरव रागके बजायवेको प्रकार लिख्यते ॥ जहां धैवत स्वर स्थाई करिकें अवरोह क्रमसों स्थाईन । तीसरे चोथे स्वर तांई जायकें । फेर वाहातें स्थाई तांई आरोह कीजिये ॥ फेर स्थाई तें अवरोह क्रमसों तीसरे स्वरको उच्चार करि, स्थाईकों उच्चार कीजिये तब भैरव राग उपजे । वीणामें भैर-

वको स्थाई मंद्र निषाद हैं ॥ इति भैरव रागके उपजायवेको प्रकार संपूर्णम् ॥

अथ वराटी रागके उपजायवेको प्रकार लिख्यते ॥ जहां धैवत स्वर स्थाई कीजिये । फेर अवरोह क्रमसों पंचमको उच्चार करि धैवततें लेकें मध्यमकी सप्तकके गांधार होय ॥ आरोह करि मध्यमकी सप्तकके रिषभको ओर पहली सप्तकके निषादकों दोय वेर उच्चार कीजिये ॥ फेर धैवतकों उच्चार कीजिये ॥ तब वराटी राग उपजे । वीणामें वराटिको स्थाई रिषभ है ॥ इति वराटी रागके उपजायवेको प्रकार संपूर्णम् ॥

अथ गुर्जरी रागके उपजायवेको प्रकार लिख्यते ॥ जहां मध्यम स्थानके रिषभको स्थाई करि तास्थाईतें नीचले षड्जकी निषादतांई ॥ अवरोह करि, फेर रिषभ तें लेकें मध्यम तांई आरोह कीजिये ॥ फेर या मध्यमतें लेकें, निषादतांई, अवरोह कीजिये ॥ फेर निषादतें, अवरोह क्रमसों रिषभ तांई उच्चार कीजिये तब गुर्जरी रागको ग्रह स्वर उत्तरगांधारमें जांनिये ॥ इति गुर्जरी रागको प्रकार संपूर्णम ॥

अथ वसंत रागको प्रकार लिख्यते ॥ जहां मध्यम ग्रामके षड्जकों स्थाइ करिकें । अवरोहमें षड्जतें तीसरो स्वर धैवतको उच्चार कीजिये ॥ फेर तातें नीचलें पंचमको उच्चार कीजिये । फेर मध्यम स्थानके रिषभतें लेकें मध्यम तांई आरोह करि । या मध्यमतें रिषभ तांई । अवरोह कीजिये । फेर षड्ज स्वरमें न्यास कीजिये । तब वसंत राग उपजे । ओर वीणामें वसंतको ग्रहस्वर रिषभहें ॥ इति वसंत रागके प्रकार संपूर्णम् ॥

अथ धन्नासि राग वजायवेको प्रकार लिख्यते ॥ जहां मध्यम स्थानको षड्ज स्वर करिकें ओर मध्यम स्थानके गांधार । १ । मध्यमको ।२। उच्चार कीजिये फेर रिषभ । १ । गांधार । २ । को उच्चार करि मध्यम । १ । पंचमको उच्चार कीजिये । फेर पंचमतें लेके ओर रिषभ छोडिकें पहली सप्तकके मिषाद तांई । अवरोह करि ग्रह स्वरमें ॥ पीछे मध्यम स्थानके गांधार । १ । मध्यम । २ । को उच्चार करि फेर गांधारकों उच्चार कीजिये ॥ फेर

ग्रह स्वर षड्ज है ताको उच्चार कीजिये ॥ तब धनाश्री राग उपजे। वीणामें धनाश्रीको स्वर पंचम है ॥ **इति धन्नासि रागको प्रकार संपूर्णम् ॥**

अथ देशी रागके उपजवेको प्रकार लिख्यते ॥ जहां रिषभ स्वर मध्यम स्थानको स्थाइ होय और गांधारको उच्चार करि ॥ एक छिन विलंब करि पंचमको कंप कीजिये आंदोलनामें ममक सों फेर मध्यम । १ । गांधारको । २ । उच्चार कीजिये फेर ग्रह स्वरों निचले दोय स्वरकों अवरोह करि ॥ फेर आरोह करि । फेर आरोह क्रममें गांधारको उच्चार कीजिये ॥ फेर रिषभमें उच्चार कीजिये तब देसी राग होय ॥ और गांधार स्वरमें देसी रागकों ग्रह स्वर कहे हें ॥ **इति देशी रागको प्रकार संपूर्णम् ॥**

अथ देसाख्य रागको प्रकार लिख्यते ॥ जहां मध्यम स्थानको गांधार स्थाइ होय । फेर अवरोह क्रमसों निषाद उच्चार करि ॥ या निषादतें पंचमतांई आरोह करे फेर पंचमतें निषाद तांई अवरोह करि मध्यम स्थानके षड्ज तांई उच्चार करि गांधारमें न्यास कीजिये तब देसाख्य राग उपजे । या देसाख्व रागको वीणामें मध्यम स्वर ग्रह हें ॥ **इति देसाख्य राग प्रकार संपूर्णम् ॥**

याहि क्रमसों औरहु रागनके स्थाइ स्वर देखिकें ग्रह अंस न्यास वरतिये । तब ये रागके न्यारे प्रकार प्रगट होत हें । **इति रागांग रागनके बजायवेको प्रकार संपूर्णम् ॥**

अथ भाषांग रागनके बजायवेको प्रकार लिख्यते ॥ तहां प्रथम (डोंबकी) भूपाली ताको प्रकार कहे हें । जहां मध्यम स्थानको षड्ज स्वर ग्रह करिकें ॥ आरोह क्रमसों रिषभको उच्चार कीजिये । फेर पहली सप्तकके धैवतको उच्चार करि एक छिन विलंब करि मध्यम स्थानके मध्यमको उच्चार कीजिये । पीछे पहलि सप्तकके धैवत पंचमको वा मध्यम स्थानके रिषभ षड्ज अवरोह करि ताइ धैवतको वा रिषभको उच्चार कीजिये । फेर स्थाइ मध्यममें न्यास कीजिये । तब भूपाली राग उपजे । भूपाली रागमें मध्यम स्थानकों मध्यम स्वर स्थाइ जांनिये । **इति भूपाली रागको प्रकार संपूर्णम् ॥**

अथ प्रथम मंजरीको प्रकार लिख्यते ॥ जहां मंद्रस्थानको **पंचम**

स्थाइ होय । या पंचमसों लेकें मध्यम स्थानको मध्यम तांई आरोह कीजिये । या मध्यमतें अवरोहमें रिषभको विलंब करि । षड्जको कंप करि पंचम तांई । अवरोह करि पंचममें विश्राम कीजिये । तब प्रथम मंजरी उपजे याको वीणामें स्थाइमें मंद्र गांधार जांनिये ॥ **इति प्रथम मंजरीको प्रकार संपूर्णम् ॥**

अथ कामोदको प्रकार लिख्यते ॥ जहां धैवत स्वर स्थाइ करि । तासों पहलों स्वर पंचम ताको आंदोलना मार्गमें कंप कीजिये । फेर धैवतसों लेकें मध्यम स्थानके रिषभस्वर तांई वा गांधारतांई आरोह करि । या गांधारतें पहलि सप्तकके मध्यमतांई । अवरोह करि मध्यममें विश्राम कीजिये तब कामोद होय । या कामोदको मध्यम स्वर ग्रह है । यह कामोदका प्रकार हैं । **इति कामोदको प्रकार संपूर्णम् ॥**

ऐसो रितीसों प्रकार भाषांग राग जांनिये । **इति भाषांग राग प्रकार संपूर्णम् ॥**

अथ क्रियांग रागनको लछन लिख्यते ॥ राम कृति । राम कलि जहां मध्यम स्थानको षड्ज स्वर ग्रह करि । या षड्जतें लेकें मध्यम स्थान तांई वा गांधारतांई ॥ आरोह करिकें फेर मध्यम स्वरकों विलंब करि या मध्यमतें । अवरोहमें गांधार । १ । रिषभ । २ । को थोरो उच्चार करि षड्जमें न्यास कीजिये ॥ तब रामकलि उपजे ॥ **इति रामकलि प्रकार संपूर्णम् ॥**

अथ गौडकृति रागके बरतिवेको प्रकार लिख्यते ॥ जहां मध्यम स्वर स्थाई करि ॥ अवरोह क्रमसों षड्जकों उच्चार करि या षड्जतें गांधार तांई अवरोह करि पंचमको उच्चार कीजिये । या पंचमतें षड्जतांई अवरोह करि या षड्जतें गांधार तांई आरोह करि या गांधारकों पंचम कंप करिकें मध्यममें न्यास कीजिये ॥ तब गौडकृति राग उपजे । या गौडकृतिको वीणामें स्थाई पंचम हैं ॥ **इति गौडकृति रागके प्रकार संपूर्णम् ॥**

अथ देवकृति रागको प्रकार लिख्यते ॥ जहां मध्यम स्थानकों षड्ज स्वर ग्रह करि पहली सप्तकके निषादको उच्चार करि षड्जको उच्चार कीजिये ॥ पीछे मध्यम स्थानकें गांधारमें मध्यमको उच्चार करि ॥ पंचम स्वर कंपाय ॥ मध्यमको उच्चार करि ॥ गांधार षड्जको उच्चार कीजिये ॥ फेर

रिषभको कंप करि गांधार बजाय ॥ षड्जमें न्यास कीजिये ॥ तब देवकृति राग उपजे ॥ वीणामें देवकृतिको मध्यम स्वर न्यास कीजिये ॥ इति देवकृतिको प्रकार संपूर्णम् ॥ ऐसें क्रियांग राग अनुक्रमसों वरतिये ॥ **इति क्रियांग रागनि संपूर्णम् ॥**

अथ उपांग रागको प्रकार लिख्यते ॥ तहां प्रथम भैरवी कहे हैं ॥ जहां धैवत स्थाई करि अवरोह क्रमसों पंचमको उच्चार करि मध्यमको उच्चार होये । फेर मध्यम सों धैवत तांई उच्चार करि या धैवतसों मध्यम तांई अवरोह करि उच्चार कीजिये ॥ फेर पहली सप्तकके धैवतसों लेकें मध्यम स्थानके षड्ज-तांई आरोह करि । या षड्जसों मंद्र सप्तकके गांधार तांई अवरोह करि मध्यमकों उच्चार कीजिये फेर धैवतकों कंपाय निषाद । १ । षड्ज । २ । को उच्चार करिये । निषादको फेर उच्चार कीजिये ॥ फेर धैवत पंचमको उच्चार करि मध्यममें न्यास कीजिये तब भैरवी होय । या भैरवीको वीणामें गांधार स्वर स्थाई है ॥ **इति भैरवीको प्रकार संपूर्णम् ॥**

अथ छायानट्टको प्रकार लिख्यते ॥ जहां मंद्रस्थानकों षड्ज ग्रह करि या षड्ज तें मध्यम स्थानके षड्ज ॥ तांई आरोह करि । या मध्यम स्थानके षड्जतें पहलें षड्ज तांई अवरोह कीजिये ॥ फेर षड्ज । आरोह क्रमसों पंचममें आवे या पंचमको विलंब करि धैवतकों उच्चार करि ॥ धैवतसों अवरोह क्रमसों षड्जमें आवे ॥ तब छायानट्ट उपजे ॥ **इति छायानट्ट प्रकार संपूर्णम् ॥**

अथ बहुली रामक्रीको प्रकार लिख्यते ॥ तहां मध्यम स्थानकों षड्ज ग्रह करि । रिषभ । १ । गांधार । २ । को उच्चार करिये ॥ फेर पंचम धैवतकों उच्चार करि ॥ इन दोनुको अवरोह कीजिये ॥ फेर गांधार तें षड्जतांई । अवरोह कीजिये ॥ फेर मध्यम गांधार स्वरकों अवरोह करि । फेर मध्यम स्वरको कंप करि पंचम स्वरकों उच्चार करि षड्जमें न्यास कीजिये ॥ तब बहुली रामक्री उपजे ॥ **इति बहुली रामक्रीको प्रकार संपूर्णम् ॥**

अथ मल्लार राग उपजायवेको प्रकार—लछन लिख्यते ॥ तहां धैवत स्वर स्थाई करि निषाद स्वरमें विलंब होये ॥ और धैवततें अवरोह

क्रममें ॥ धैवतको ऐसाको उच्चार करि मध्यम स्वर छोडिकें गांधार स्वरकों उच्चार कीजिये । एक छिन विलंब करि फेर गांधारतें लेकें ॥ मध्यम स्वर छोडि मध्यम स्थानके षड्ज तांई अवरोह करि । एक छिन विलंब कीजिये । फेर निचिले निषादकों थोडो उच्चार करि फेर धैवतसों लेकें । मध्यम स्थानके षड्ज तांई ॥ अवरोह करि धैवतकों उच्चार करि धैवतमें न्यास कीजिये ॥ तब मल्लार राग उपजे ॥ या राग वीणामें पंचम स्वर स्थाई जांनिये ॥ इति मल्लार राग प्रकार संपूर्णम ॥

अथ गौड कर्णाट उपजायवेको प्रकार लिख्यते ॥ जहां मध्यम स्वर स्थाई होय ॥ ओर मध्यम स्थानके षड्जतें लेकें मंद्रस्थानके मध्यम तांई अवरोह करि ॥ फेर पहली सप्तकके धैवतकों उच्चार करि । या मंद्र-स्थानसों लेकें मध्यम स्थानके रिषभ तांई आरोह करि । फेर मध्यम स्थानके मध्यमकों उच्चार करि ॥ मध्यमकी सप्तकके गांधारकों विलंब करि ॥ मध्यम स्थानके षड्जमें न्यास कीजिये ॥ तब गौड कर्णाट राग उपजे ॥ याको वीणामें स्थाई स्वर पंचम हें ॥ इति गौड कर्णाट प्रकार संपूर्णम ॥

अथ तुरुष्क गौडकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ तहां निषाद स्वर ग्रह करि । मध्यम स्थानके षड्जको उच्चार करिये । फेर आरोह क्रमसों मध्यम स्थानके रिषभ गांधारकों उच्चार करि मंद्र निषाद मध्यम स्थानके षड्जकों उच्चार कीजिये ॥ या षड्जतें पहले मध्यम तांई अवरोह करि ॥ मंद्र रिषभकों उच्चार करि मंद्र मध्यमकों उच्चार कीजिये ॥ फेर मंद्र पंचमकों उच्चार करि धैवतकों उच्चार कीजिये । फेर मध्यम स्थानके षड्जकों उच्चार करि । मंद्र निषादमें न्यास कीजिये ॥ तब तुरुष्क गौड राग उपजे ॥ याको नाम मालवी कहे हें । याको वीणामें स्थाई स्वर पंचम हें ॥ इति गौड तुरुष्क राग उपजायवेको प्रकार संपूर्णम् ॥

अथ द्राविड गौडको उपजायवेको प्रकार समग्र लिख्यते ॥ जहां मंद्र निषाद ग्रह करि मध्यम स्थानके षड्जको उच्चार करि ॥ रिषभकों छोडिकें गांधारतें लेकें पंचम तांई आरोह कीजिये ॥ या पंचम स्वरतें गांधार तांई अवरोह करि । रिषभकों कंप कीजिये ॥ फेर मध्यम स्थानके षड्जकों उच्चार करि ॥ मंद्र निषादमें

उच्चार करिये । तब द्राविड गौड राग उपजे॥ याकों सालक हू कोऊ कहत हैं । या रागकों स्थाई पंचम हें ॥ इति द्राविड गौड रागको प्रकार संपूर्णम् ॥ ऐसें ओर उपांग राग जांनिये ॥ **इति उपांग राग प्रकार संपूर्णम् ॥**

अथ देसी रागनमें ललित राग बजायवेको प्रकार लिख्यते ॥ जहां धैवत स्वर स्थाई करि । या धैवतमें मंद्र मध्यमतांई अवरोह करि मंद्र रिषभकों उच्चार कीजिये ॥ फेर गांधारकों उच्चार करि ॥ मंद्र पंचमको उच्चार कीजिये ॥ फेर धैवतमें विलंब करि फेर पंचको थोरो उच्चार करि ॥ फेर पंचमको मध्यमको उच्चार करि ॥ पंचमको विलंब कीजिये ॥ फेर गांधारको उच्चार करि ॥ अवरोह क्रमसों ॥ रिषभ षड्जकों उच्चार करि कंपजुत गांधारमें न्यास कीजिये ॥ तब ललित राग उपजे । या रागके वीणामें गांधार स्वर स्थाई हे ॥ **इति ललित राग प्रकार संपूर्णम् ॥**

ऐसें यह कितनें हु राग बुद्धिविलास करिवेकों कहे हें ॥ या रितमों जांनिये ॥ किन्नरीवीणा जो ग्रहस्वर होय तामें अंस स्वरको विचार करि न्यास स्वरपर्यंत आलाप कीजिये । जैसें राग प्रगट होय तैसें आरोह क्रममें स्वर वरतिये । इहां किन्नरि आदि वीणामें जो जो स्थानके जे जे स्वरसों राग प्रगट होय वहि स्वर उन स्थानकके वंसी आदि पोंनके वाजे हें तिनमें वरतिये । जब राग प्रगट होय ॥ **इति किन्नरी वीणामें राग वरतिवेको प्रकार संपूर्णम् ॥**

अथ पिनाकी वीणाको लछन लिख्यते ॥ तहां पिनाकी वीणाको दंड धनुसकें आकार कीजिये ॥ सो चालिस आंगुलको लंबो कीजिये ॥ ओर दंड चोडावमें उपर नीचे पतलो होय । मध्यम चोडो सवादोय आंगुल कीजिये । ओर वा दंडके निचले भागमें । एक आंगुलके प्रमान अग्रमिहि कीजिये उपरले भागमें सवा आंगुलके प्रमान अग्रमिहि कीजिये ॥ यह अग्रको नीचलो भाग अधर शिखा ऊपरको आग्रको भाग उपर शिखा जांनिये ॥ इन दोमू अग्रमें एक आंगुलके दीर्घ पोणा पोणा आंगुलकी जिनके घुंमी होय । ऐसें दोय मुहरा उनमें लगाइये । उन दोनु मुहरा लगाये पीछे पोंणा दोय दोय आंगुलको उपरले नीचले छेदको विस्तार जांनिये । इन दोनु छेद्रनमें सुंदर बजायवे लायक तांतको तार बांधिये । ओर या दंडके नीचे पहलीकोसिनाई तूंबा बांधिये । या वीणाको

कमानसो बजाइये । सो कमानको प्रमाण कहे हैं । बजायवेकीं कमानकी दंड इकईस आंगुलको लीजिये ओर या कमानकी मूठिमें विस्तार तीन आंगुलको जांनिये । निचलो अग्र एक आंगुलको प्रमान छोडिकें । या बजायवेकी कमानमें घोडाकी पूछके बाल बांधिये । या नाकी षिणाको नीचलो तूंबा दोय पावनमें राखिये । वाकी आधार सिखाधरतिमें राखिये । उपरलो तूंबा कांधेपे राखिये । बांई कांखिमें तूंबाको दाबि । बांये हांतसों स्वरके स्थान तार दाबिकें । दाहिनें हातमें । वा कमान लेकें याकें घोडाके बाल तांतिपे रगडीये । तब स्वर उपजे । इहां स्वरनके स्थानकमें राल लगाइके षड्जादि स्वरनें स्वरनकों रचाईये । **इति पिनाकी वीणाको लछन संपूर्णम् ॥**

अथ निसंक वीणाको लछन लिख्यते ॥ जहां वीणाकें च्यार हातकी लंबि तांति लेकें याको एक छोर वीणाके कहांके निचे बांधिये । फेर उपरले भागमें । मरुके ठिकाणेके काठमें डोड हात तांति बजायवेके बांधिये ॥ ओर वीणाके दंडके बिचमें ओर काठ लगायकें ॥ वह डोड हातकी बाकीजो तांत ताको अग्र बांधिये वा काठको प्रमान । डोड हातको जांनिये ॥ सो काठ बांई जांघ पिंडीके संधिमें दाबिके वीणाको निचलो भाग धरतीमें राखिये ॥ ऐसें वीणा धारण करि बांये हातसों स्वरनकें स्थान तार दाबिकें पिनाकी वीणाकी सीनांई दाहिनें हातमें कमान लेकें बजाईये तहां स्वर दाबिवेकों बांये हातमे चांमकों दसता पहिरवा सों स्वरके तारस्थन दाबिये ॥ ऐसें जहां होय सो निसंक वीणा जांनिये । तब या निसंक वीणामें मंद्र । १ । मध्य । २ । तार । ३ । इन तीनों स्थाननके स्वर जुदे जुदे प्रगट होय हैं ॥ **इति निसंक वीणाको लछन संपूर्णम् ॥**

इहां शास्त्रकी रीत कहिहें । सो यह तत वाद्य श्रोतानकों अनुरंजन करे जैसें आछो स्वर निकसे तैसें आपनी बुद्धिसों विचारिये । यहां मुख्य भेद वीणाके कहेहें ॥ इनकी रितिसों । ओरहू अनेक वीणाके भेद जांनिये ॥

॥ श्लोक ॥ यो वीणावादनं वेत्ति तत्त्वतः श्रुतिजातिवित् ।
तालपात कलाभिज्ञः सोऽक्लेशान्मोक्षमृच्छति ॥ १ ॥

अर्थ इनको कहेहें ॥ जो पुरुष वीणा बजाय जानें । ओर बाइस श्रुति-

नकी जातिकों तत्व जानें चंचतपुट ताल । आदिनकी सब्दसहित क्रिया । ओर विना सब्दकी क्रियाकों जानें । सो बिना परिश्रमही मुक्ति पावे ॥ **इति तत बाजेको लछन संपूर्णम् ॥**

अथ आनबद्ध बाजेको नाम लिख्यते ॥ पटह यांकों लौकिकमें ढोल कहतहें । १ । हुडका । २ । करटा । ३ । मर्दल । ४ । त्रिवली । ५ । डमरू । ६ । रुंजा । ७ । काहुडा । ८ । सेलुका । ९ । वड । १० । डकुली ।११। तुक्का । १२ । ढमस । १३ । दुंदुभि । १४ । निसाणकी । १५ । भेरी ।१६। ऐसें बाजे अनेक ओरहु यारीतिके जांनिये ॥ इन बाजनके चर्मसों मुख मढे जात हें । यातें इनकों आनबद्ध कहेंहें ॥ **इति आनबद्ध बाजेके नाम लछन संपूर्णम् ॥**

अथ घन बाजेके नाम लिख्यते ॥ ताल । १ । कांस्य ताल । २ । घंटा । ३ । जयघंटा । ४ । पटकम्रा । ५ । ऐसें ओरहू घन बाजेके भेद जांनिये ॥ **इति घन बाजेके भेद लछन संपूर्णम् ॥**

अथ सुषिर बाजेके नाम लिख्यते ॥ वंसी । १ । मुहरि । २ । पाविका । ३ । पावक । ४ । मुरली । ५ । तितिरी । ६ । संख । ७ । काहल । ८ । स्रंग । ९ । ऐसें ओरहूं सुषिर बाजे अनेक होतहें ॥ **इति सुषिर बाजेके नाम संपूर्णम् ॥**

अथ च्यार प्रकारको बाजेकी क्रियभेद लिख्यते ॥ एकहस्त । १ । द्विहस्त । २ । कुहूपा घातज । ३ । गोलकाहनत । ४ । धनुराघर्ष संभव । ५ । हूत्कार जांनित । ६ । बहु रंगीक । ७ । ये जांनिये ॥

अथ इन भेदनको लछन लिख्यते ॥ विवाहमें । १ । परिक्षामें । २ । उत्सावमें । ३ । दानकर्ममें । ४ । जहां ओरहूं उछाह होय । मंगलिक सगरे काममें । जो बाजो एक हातसों बजे सों एकहस्त जांनिये । १ । जो दोय हातसों मृदंगादिक बाजेसों द्विहस्त जांनिये । २ । जो काठके डंका सों बजाइये । नगारासों कुडया घात जांनिये । ३ । जो गोलक कहिये । काठको जवार्त सो बजाईये । सो सारंगी आदिक धनुराघर्ष संभव जांनिये । ४ । जो बाजो मुखके योनिसों बजाइये ॥ सो मूरलि आदिक भूतकार जांनिये । ५ । जो

ताल झांझिवाजे आपसमें बजाइय। सो बहु रंगीक जांनिये । ६ । **इति वाद्य भेद लछन कहेहे ॥**

प्रथम पटहके दोय भेद हें ॥ देसी । १ । मार्गी । २ । जहां मार्गीको लछन लिख्यते ॥ जाको विस्तारमें परिधि अठाइस अंगुलकी लंबी होये ॥ ओर मध्य देस साठि आंगुलको होय ॥ तहां दाहिणें मुख विस्तारमें ॥ साडेग्यारह आंगुल होय ॥ बांये मुख विस्तारमें साडिदस आंगुल होय ॥ ये दोऊ मुख गोल कीजिये ॥ तहां दाहिणें मुखपें लोहको दंड कडा हासिलिके ठिकाणे पहराईये ॥ ओर बांई तरफ मुखपें काठकी हांसिकी पहराईये ॥ सो बांई तरफकी काठकी हासिलि छह वरखको छडो मारनो होय ताके योधडाकीनसासों वा शालसों लपेटिये ॥ ऐसें जेवर करवाइये मुख पहराईये ॥ या बांये ओर बांये कमलपर्म । सात छेद करि तें च्यारों तरफमें । तिनमें मिहि डोरा सात रेसमके बांधि उनमें कलस सात । ७ । छोटे छोटे च्यार आंगुल लंबे सोनेके तथा दावेके तथा पीतलके वा लोहके बांधिये ॥ फेर तीन आंगुलकी चोडी लोहकी पटि आछि लंबि बनाये । वह हासिलि जोग ॥ या वास्ते ढोलकी राखिके वास्ते ढोलकी उपर च्यारों तरफ लपेटिये ॥ फेर चोपद पसूको चाम जबरो मोटो लेके वो मुख मडिये सो बांये मुखको केवल लोहकी पटि जवर होये तेसें मढिये ॥ फेर दाहिणें मुखपें । सुक्ष्म चांमसों मडिये । बाकी जो बांई तरफकी तरह मडिये फेर दाहिणी हांसिलिमें छेद करि । झबर डोरी डाबीके। बांई हांसिलिके छेदमें काढिये ॥ फेर वांहि डोराकुं लेके कलसाल गाय दाहिनि हासिलिके उपर करि छेदनमें गाढि बांधि दीजिये । ये कलसा चढाविपे उतारिवेकों काम कहेहें ॥ इनहि कलसांसों षड्जादि स्वर जाने परे हें ॥ याको डोरीसों बांधिगरेमें लटकाय बजायवे याको लौकिकमें ढोल कहते हें ॥ **इति मारगी पटह लछन संपूर्णम् ॥**

अथ देसी पटहको लछन लिख्यते ॥ ड्योड हातको लंबो होय सात आंगुलको दाहिनो मुख होय । साढि छह आंगुलको बायो मुख होय । ओर पसूंके आछे चांम होय तासों मढे ॥ ओर मारगी ढोलकी तरह बनाइये । मारगी । १ । देसी । २ । ढोल दोनू खेरके काठके कीजिये । या

देसी ढोल जेसा बडा अथवा छोटा ढोल आपनी इछासों कीजिये । जैसा चाहे तैसो कीजिये । मारगी । १ । देसी । २ । पटहके । ३ । भेद हैं । उत्तम । १ । मध्यम । २ । अधम । ३ । जो सास्त्रमें कह्यो सो प्रमानसों उत्तम जांनिये । १ । या प्रमानसों बारह घाटि होय । सो मध्यम जांनिये । २ । या प्रमानसों छटे वांट घाटिसों अधम जांनिये । ३ । अथ ढोलके पाठाछर लिख्यंते ॥ क । ख । ग । घ । ट । ठ । ड । ढ । ण । त । थ । द । ध । न । र । ह । यह सोले अछिर हैं ॥ इनमें बजायवेमें बोल रचिये । किण । खण । जिण । घण । टण । ठण । तण । थण । दण । धण । हण । या भांतिसों इन सोलहें अछिरसों अनेक पाटि कीजिये । याको डंकासों बजावे सो कहे हैं ॥ अठारह आंगुल लंबो ॥ अग्रजाको पतरो होय पीठजाको चढतो होय ॥ ऐसो दंड उतार चढावकों करि वांके पकरवेकी ठोरसों मोमको कपडो लगाइये ॥ तहां हातसों पकरि बजाइये ॥ पटहको बजावे तब । पद्मासन करि बेठे । दोनु जांघनपें ढोलको रखिये । डंकासों बजावे । राजसभामें सबठोर मंगलकारिजमें बजावे ॥ **इति पटह लछन संपूर्णम ॥**

अथ पाठाछर सोलह कहे तिनके उलटेपलटे ते अनेक पाट होत हैं ॥ तहां श्रीशिवजीके पांचो मुखतें पाट उपजे हे तिनके नाम भेद लिख्यंते ॥

प्रथम सद्योजात मुखसों नागबंधन पाट भयो । १ । वामदेव मुखसों स्वस्तिक नाम भयो । २ । अघोरा मुखसों अलग्न नाम भयो । ३ । तत्पुरुषसों शुद्धि नाम भयो । ४ । इशाना मुखसों । समस्खलित नाम भयो । ५ । यह पांचों पाट सिगरे पाटनमें मुख्य हे । इन पांचो पाटनके देवता कहे हैं । पहलीको देवता । ब्रह्मा । १ । विष्णु । २ । शिव । ३ । सूर्य । ४ । चंद्र । ५ । ये अनुक्रमसों पांचो पाटके देवता जांनिये ।

अथ नागबंधनके सात भेद कहे हैं ॥ टनागिम गिननगि । याको नाम नागबंध हे । १ । ननगिड गिडदगि । याको नाम पवन हैं । २ । गिड गिडदत्थ । याको नामण कहे । ३ । किटतत । याको नाम एक सर हैं । ४ । नखु नखु । याको नाम द्विसर हैं । ५ । खिरतकिट । याको नाम संचार हैं । ६ । थोंगि थोंगि । याको नाम विक्षेप हैं । ७ । **इति नागबंधन भेद संपूर्णम ॥**

अथ दूसरो स्वस्तिकके भेद लिख्यते ॥ ततकिटकि । याको नाम स्वस्तिक कहे हैं । १ । थों हंता । याको नाम वलिकोहन्त । २ । थोंथों गोंगों । याको नाम कुंडलि विक्षेप । ३ । थोंगिन थोंगिन थोंगिन । याको नाम फुल विक्षेप । ४ । थोंगिनतत्ता । याको नाम संचारिविल्हखी । ५ । किटथोंथों गिनखेंखें । याको नाम खण्ड नागबंध । ६ । टकु । झंझं । याको नाम पृश्क हैं । ७ । **इति स्वस्तिकके सात भेद संपूर्णम ॥**

अथ अलग्नके सात भेद लिख्यते ॥ नन गिडगिड दगिदा । याको नाम अलग्न हें । १ । दत्थरिकि दत्थरिक । याको नाम उत्सार हें । २ । तकि थिकि तकि थिकि । याको नाम विश्राम कहे हें । ३ । टगुनगु टमुटगु । याको नाम विषमखल्ली । ४ । खिरितु खिरितु । याको नाम सरी । ५ । खिरि खिरि । याको नाम स्फुरी । ६ । नरकित्थरिकि । याको नाम स्फुरण । ७ । **इति अलग्नके सात भेद संपूर्णम ॥**

अथ शुद्धिके सात भेद लिख्यते ॥ दरिमिड गिडदगिदा । याको नाम शुद्धि । १ । टटकुटट । याको नाम स्वरस्फुरण । २ । ननगिन खरिखरि । याको नाम उच्छाल । ३ । दखें दखें दखें खे । याको नाम वलत । ४ । थों गिनगि थों गिनगि । याको नाम अघट । ५ । तत्ता । याको नाम तकार । ६ । धिधि याको नाम माणिक्यवल्ली । ७ । **इति शुद्धिके सात भेद संपूर्णम ॥**

अथ समस्खलितके सात भेद लिख्यते ॥ तझं तझं झं । याको नाम समस्खलित । १ । गिरिग्ड गिरिग्ड । याको नाम विकट । २ । कण कणकि । याको नाम सद्दस । ३ । धिधि किटकी । याको नाम स्खलित । ४ । दिगिनगि दिगिनगि । याको नाम अडुखली । ५ । धरकट धरकट । याको नाम अनुछला । ६ । दोंनकट दोंनकट । याको नाम खुत्त । ७ । **इति शिवजीके पांचो मुखके सात भेद हें ॥ तिनके पेंतिस भेदके हस्तपाठ संपूर्णम् ॥**

अथ नंदिकेश्वरके मुखसों निकसे च्यार पाठाक्षर तिनके नाम लिख्यते ॥ कोणाहत । १ । संभ्रांत । २ । विषम । ३ । अर्धसम । ४ ।

ये च्यार जांनिये ॥ खुंखुंधरि खुंखुंधरि कर गिड कर गिड ॥ याको नाम कोणाहत । १ । जहां चटी अंगुरी अंगुठासों बाकी अंगुरी छोडिकें बाजो डंकासों अक्षर बजाईये सो कोणाहत जांनिये ॥ दरगिड दरगिड गिरि-गिड्द दाणकिट मटटकु ॥ याको नाम संभ्रांत । २ । दन्हें दन्हें खुंखुं दन्हें खुंखुं दन्हें ततकि ततकि । याको नाम विषम । ३ । जहां पंजाके कंपसों ओर आंगुरीकी चालके कंपसों । अक्षरके अनुसार बजावे । सो विषम जांनिये । ३ । दद्दगिद गिगिरिकिटदगि थों थों गिद्थोंगिद । याको नाम अर्ध सम । ४ । जहां कछूइक अंगको कंप लीजिये । कछूक विनां कंपसों मूधी आंगूरीसों अक्षर अनुसार बजाइये । सो अर्ध सम जांनिये ॥ इति **नंदिकेश्वरके मुखसों च्यारों हस्तपाठ संपूर्णम्** ॥

॥ हस्तपाठ २१ ॥

१ **उत्फुल्ल** कन्हे कन्हे जो नखनसों अक्षर बजाईये ॥ सो उत्फुल्ल जांनिये । १ ।

२ **खलक** दांगिड गिड गिदा । जहां अंगुठा फेलाय सुकचुंचं गमककी मुद्रासों या न्यारि न्यारी अंगुठासों अक्षर अनुसार बजाईये । सो खलक जांनिये । २ ।

३ **पाण्यन्तरनिरकुट्टक** दगिडदां खरिक्कदां खरिक्क खरिक्कदां खरिखरिदां गिडदां । जहां दाहिणे हाथके अंगुठा पासकी अंगुरी अंगुठा इन दोनुनसों अक्षर बजाइये ओर बांये हातसों रेफ गमककी मुद्रासों क्रम व्यूतक्रमसों बजाइये । सो पाण्यन्तरनिकुट्टक जांनिये । ३ ।

४ **दंडहस्त** दातारिकिटदां खरिखरिदां । जहां पताका मुद्रासों एक उपरकों ताडन करे फेर दोय वार रेफ मुद्रासों ताडन करि सों दंडहस्त जांनिये । ४ ।

५ **पिंडहस्त** थरिकिटझें थरिकिटझें जहां बजायवेमें पहलें दोनु हातकी क्रिया कीजिये ॥ पिछे एक हातसों अक्षरको निवहि कीजिये । सो पिंड-हस्त जांनिये । ५ ।

६ **युगहस्त** द्रेंद्रें दांदां । जहां रेफकी मुद्रासों दोनु हातसों उपरको ताडन कीजिये ॥ जेसें पाठाक्षर बनें । अक्षिरके अनुसार बजावे । सो युगहस्त जांनिये । ६ ।

७ **ऊर्द्धहस्त** दरगिड दांदां । जहां दाहिणें हातकी हतलीसों उपरकों घात कीजिये । सो ऊर्द्धहस्त जांनिये । ७ ।

८ **स्थूलहस्त** खुंखुंदखुंखुंद जहां ऊर्द्धहस्तकी मुद्रासों दोय वेर बाजेके मुडा दोऊ बजाइये । फेर तलहस्तसों एक वेर बजाइये सो स्थूलहस्त जांनिये । ८ ।

९ **अर्धार्धपाणि** खुंदा खुंदा । जहां अर्द्धहस्तकी मुद्रासों दोनु हातसों बजाइये। सो अर्धार्धपाणि जांनिये । ९ ।

१० **पार्श्वपाणि** थरगिड दागिड दगिड दगिड । जहां नखके अग्रभागसों बजाइये । सो पार्श्वपाणि जांनिये । १० ।

११ **अर्धपाणि** दगिड दगिड दरगिड दरगिड । जहां एक हाथके अग्र सों बजाइये । सो अर्धपाणि जांनिये । ११ ।

१२ **कर्तरी** टिरि टिरि टिरि किटथों दिगिदां तिरि टिरि किटझेंझे तकिकिट । जहां बाये हाथकी चलती अंगुरीसों अक्षरके अनुसार बजाइये । सो कर्तरी जांनिये । १२ ।

१३ **समकर्तरी** झिनकिट कनकिट किटझंथों दिगिद तिरिटि तिरिटिकि । जहां दोनु हातकी चलति अंगुरीसों बजाइये । सो समकर्तरी जांनिये ।१३।

१४ **विषमकर्तरी** टिरि टिरि थों दिगिद टिरि टिरि किद । जहां एक हातकी चलती अंगुरीसों बजाइये दुसरे हातसों साधारण ताडन कीजिये । सो विषमकर्तरी जांनिये । १४ ।

१५ **समपाणि** दां गिड गिड दांदां। जहां दोनु हातकी अंगुरी अगुठा मिलायके बजाइये । सो समपाणि जांनिये । १५ ।

१६ **विषमपाणि** दांदां गिड गिड दांदां । जहां दोनु हाथकी अंगुरी अंगुठासों उलटा बजाइये । कोइ अंगुरीसों कबहू कोऊ ऐसें क्रमविना बजाइये। सो विषमपाणि जांनिये । १६ ।

१७ **पाणिहस्त** तरगिड दरगिड । जहां दोनु हातकी न्यारी न्यारी वा अंगुरीसों एक संग बजाइये। सो पाणिहस्त जांनिये । १७ ।

१८ नागबंधक तत गिडिकिट । जहां दाहिनें हातसों बांये पुठ बजाइये बांये हातसों मृदंग आदिकको दाहिणें पुठ बजाइये ॥ ऐसे अकेले हातसों बजाइये अथवा मृदंग आदिककी एक एक पुठमें दोऊ हातसों पाठाछर बजाइये । सो नागबंधक जांनिये । १८ ।

१९ अवघट ततागिड गिड दगिटन गिनगिननगि । जहां मृदंग आदि वाद्यको पुडीको हतलीसों ताडन करि अंगुठा अंगुरीसों बजाइये । एकही हात-सों बजाइये सो अवघट जांनिये । १९ ।

२० स्वस्तिक तकिट तकिटतकि । जहां दोऊ हातसों अंगुरी समेटी बजावे । सो स्वस्तिकके लछन जांनिये । २० ।

२१ समग्र तकिट किटतक । जहां एक संग दोऊ हातनसों मृदंगके पुडाकों ताडन कीजिये ॥ अथवा हतलीसों बजाइये ॥ अंगुठा आंगुरी नही लगाइये सो समग्र जांनिये ।२१। **इति इकवीस हस्तपाठ संपूर्णम्॥**

॥ अथ सोलह हस्तक लिख्यते ॥

१ उल्लोल झेंथां झेंथां थांथां झें ॥ जहां दाहिणें हातकी बीचली अंगुरी अंगु-ठासों मृदंगको दाहिणें पुट ताडन कीजिये ॥ अथवा पहले अंगठा छुवा फेर सब अंगुरीसों ताडन कीजिये । सो दक्षिण हस्त देई दक्षिण हातसों दाहिनें हातकी अंगुरी नही लगाइये ॥ ओर दाहिणें हातकी अंगुरीनसों बजाये ॥ ओर बांयो हात उछलसो चले । सो उल्लोल जांनिये । १ ।

२ पाणयन्तर नखें नखें नखें खेंखेंखें नखें नखें नखें खेंखेंखेंखें दखुं खुंद खुंद ॥ जहां दाहिणे हाथके अंगुठासों दाहिण हात पुडाको ठोकिये । बांये हातमें बाये पुडामें तरत कीजिये । सो पाणयन्तर जांनिये । २ ।

३ निर्घोष नखखि थोंथों दिगिदा ॥ जहां मृदंगके पुडाको कि न्यारो बजाइये अथवा डंकासों बजाइये । सो निर्घोष जांनिये । ३ ।

४ खण्डकर्तरी दां खुखुदां २ खुखुग थोंटझेंदें झेंदों गिथोंट ॥ जहां दाहिणे हातकी चटि अंगुरीसों बजाइये । अरु बांये हाथके अंगुठासों गति साधिये । सो खण्डकर्तरी जांनिये । ४ ।

५ दंडहस्त खखुणं खखुणं झेंदझेंद टिरिटिरि ॥ जहां दाहिणे हातकी अंगुरी लगाय । अंगुठासों ताडन कीजिये। बांये हातसों गुंकारधुन धुनि काढिये। सो दंडहस्त जांनिये । ५ ।

६ ममनख रह रह तरकिट धिकिट तकिथकि टेंहेंटहेंत्र॥ जहां अंगुरीसों नखसों मृदंग ताडन करि । पाठाछर समान कीजिये । सो ममनख जांनिये । ६।

७ बिंदु देंदिगि देंदिगि गिरिगिड ॥ जहां बांये हातसों वायों पुट सब्दसहित दाबिकें दाहिनें हातके अंगुठा पासकी अंगुरीसों । दाहिनें पुटको ताडन कीजिये। तब अनुस्वारकों गंकार होय। सो बिंदु जांनिये । ७ ।

८ यमलहस्त कुंद कुंद झेंद झेंहें झेंहें ॥ जहां बांये हातसों पुडा दाबिकें दाहिणें हातसों । ककनरको सो सब्द रचिये । सो यमलहस्त जांनिये । ८ ।

९ रचित देंदें थांथों देंदें नखझें । नह न हटें ॥ जहां बाजेकी धुनिकें चढा-यवेमें बंधा फरकायकें अंगुठासों अंगुठा पासकी अंगुरीसों गाढो ताडन कीजिये । सो रचित जांनिये । ९ ।

१० भ्रमर खिखेणं खुंखुणं खु ३ णं झेंद्र २ णह करेंसें ॥ जहां हाथकी अंगुरीसों थोरि संकोचिये । ऊभी अंगुरीसों मधुर धुनिकें लिये । ताडन कीजिये । सो भ्रमर जांनिये । १० ।

११ विग्रद्विलास तणे ३ तिर झोंझों द्रि ३ थों ॥ जहां अर्धार्धपाणिकी रितिसों दोऊ हातके अंगुठासों ॥ ओर अंगुठा पासकी अंगुरीसों दोऊ मृदंगसों पुडा एक संग बजाइये ॥ विचित्र गतिसों बजाइये सो विग्र-द्विलास जांनिये । ११ ।

१२ अर्धकर्तरी दोखुंखुं ३ ग्रह थेट ३ झेंहें धिगिगि थोंटें ॥ जहां दाहिणे हातकी अंगुठा पासकी अंगुरी ओर बीचकी अंगुरी । ओर चटी पासकी अंगुरीकों इनकों बहोत सुधी करि तिनों अंगुरीनसों एक संग ताडन करे । सो अर्धकर्तरी जांनिये । १२ ।

१३ अलग्न खुंखुं २ नखें झेंहगि २ थोंटें ॥ जहां दोऊ हातनकी अंगु-रीसों पहले दोऊ पुडा स्पर्श करिकें । फेरु बजावे सो अलग्न जांनिये।१३।

१४ रेफ हनथों झेंझें द्रं २ झेंद्र झेंहेंद्र ॥ जहां कांधो ऊंचो करि दोऊ हाथनकी सब अंगुरीसों बजाइये तालमें । सो रेफ जांनिये । १४ ।

१५ समपाणि ननगि २ देगि थों गिनह २ झें ॥ जहां समपाणिकी रीतिसों छटी अंगुरी करबजावें बहुत वेर लगी सो समपाणि जांनिये ।१५।

१६ परिवृत्तहस्तक झें थें ४ गिणना ३ ॥ जहां दोऊ पुडकों एक धुनिमें मिलायकें बजाइये सो ।परिवृत्तहस्तक जांनिये। १६ । **इति सोलह हस्तक लछन संपूर्णम** ॥

॥ अथ अष्टावपाठहस्तक लिख्यंते ॥

१ तलप्रहार दे थों द्रें धिकिट किट झेंधितिरि। जहां बांये हातसां बायों पुट बीचमें पहले दाबि फेर सिताविसों बायों हातसों ताडन करे। सो तलप्रहार जांनिये । १ ।

२ प्रहर झेदां थों गिदिगिद । २ । किट थों थों । जहां हत रिसों ताडन करि अंगुठा सों बजाइये । सो प्रहर जांनिये। २ ।

३ वलित खुंखु दरि । दां थोंगि थोंगि । जहां नगारेमें अंगुठापासकी आंगुरीसे चांम दाबिकें दाहिणें हातसों बजाइये । सों वलित जांनिये। ३ ।

४ गुरुगुंजित थुकर । ४ । थोंरागिडिदा । २ । धिकि थेंटें । ४ । जहां दाहिणे हातके अंगुठा ओर चटि आंगुरीके पासकी अंगुरीसों । दाहिनो पुडा क्रमसों सितावि बजावे जैसें । २ । सब्द होय । अरु बांये हातसों ठहरि बजावे । सो गुरुगुंजित जांनिये। ४ ।

५ अर्धसंच प्रपंच खें खें दरि । २ । खें खेंट। २ । जहां । वामपगमों नितंब कंपन करि दाहिणों हात उछालि बजाइये। सो अर्धसंच पपंच जांनिये। ५।

६ त्रिसंच खेंद खें खें दखेंद । ६ । जहां पीठको फरकाय कंबा हिलावे । बांये हाथके अंगुठातें गति साधिये । सो त्रिसंच जांनिये । ६ ।

७ विषमहस्तक खेंदं धरि । २ । थों दिगिधरिखें । ४ । खरकट । २ । जहां विषमहातसों बांयेकी जगां दाहिणे हाथ ॥ दाहिणेकी जगां । बांये हातसों उलटो मृदंग ओर वाद्य धरिकें हातकी बजायवेकी चतुराइ दिखायवेकों बजाइये । सो विषमहस्तक जांनिये । ७ ।

८ अभ्यस्तक खणगिणखड्डि । २ । नकिधिकित्त । जहां हातकी चलाकीसों विना पाठाछर कानकों मनोहर धुनि होय । सो अभ्यस्तक जांनिये । ८ । ये आठ विना पाटाछरके हस्तपाट है ॥ सो अभ्यास करि सीखे तब आवे ॥ यातें अष्टाव पाटहस्त कहत हैं ॥ इति अष्टावपाठहस्तक संपूर्णम् ॥

अथ अलग पाठ दोय लिख्यते संच ॥ थुकर । २ । गिणणं । २ । जहां अंगुरीके आगे अग्रसों बजाइये। सो संच जानिये। १। बिछुरित झेंद्र। २। झेंगरि गिड्दिा नगिरि गिडनम्। जहां संच हस्तकी रीतिसों। अंगुरीनके अग्रसों अरु अंगुठासों क्रमसों सिनावि बजाइये। सो विछुरित जांनिये।२। इति दोय अलग पाठ संपूर्णम् ॥

अथ दोय चित्रपाट लिख्यते भ्रमर ॥ दं थं दें झेंद्र । ४ । खुंखुंधरि । १ । दथोंगिं ।१। कुंजित खुंखुंधरि ।२। धरिगिगिड ।२। दन्हं । २ । खुंखुं दन्हें । २ । गिरिगिडिद् । २ । दत्थोंगि थोंगि । २ । जहां तल प्रहार हस्त वलि तलहस्तकके भेदसों मिले तहां कुंजित जांनिये॥२॥ और भ्रमर हस्तकके भेद सों मिले दोय चित्रपाट जांनिये ॥ २ ॥ इति अठायर्मी हस्तक-पाठ संपूर्णम् ॥

अथ पटह । १ । हुडुक्का । २ । आदिकके पाठाछर बजावे तें कंप करिये । ताको नाम संच है । सो पांच प्रकारको जांनिये ॥

कंधको । १ । कहणीके उपर भागको । २ । अंगुठाको । ३ । पहुंचा-को । ४ । बांये पगको । ५ । ये संच कहावे । जहां अंगुठाको । १ । पऊंचे । २ । कंप होय सो श्रेष्ठ पाठकों वरतिबे बारो हैं ॥

जहां कंध । १ । भुजाको उपरको कंप होय सो मध्यम पाट वरतिबे वारो हैं । जहां बांये चरनको कंप होय सो पाट वरतिबे वारो है सो अधम है ॥ इति संचनके भेद संपूर्णम् ॥

अथ बारह पाट विन्यास भेद ताको नाम लछन लिख्यते ॥ जहां नाना प्रकारके पाट आपनी बुधिसों रचिये तहां यह कीजिये। जहां पहले खंडके आदि मध्य अंतमें देंकार घणो आवे अरु दूसरे खंडमें ऐसेंहि गु-आवे सो वोल्लावणी जांनिये । १ ।

जहां धाठाछरको समूह न्यारे न्यारे अछिरको होय। तहां देंकारादिकको प्रयोग कीजिये। सो चह्लावणी जांनिये। २। ।

जहां बांये हातसों तलहस्तकी रीति कीजिये॥ दाहिनें हातसों उताव-लसों। अंगुली सकोडी बजाइये। सो उडुव जांनिये। ३।

जहां स्वस्तिक हस्तकी रितिसों बजाईये॥ जामें खोंकार घणों देरसें। सो कुचुम्बिणी जांनिये। ४।

जहां क्रमसों वा एक संग दोनु हातसों घणे पाठाछर गहरी धुनिसों वर-तिये। सो चारुस्रवणिका जांनिये॥ यह चारुस्रवणिका सुद्ध पाठसों होय। सो शुद्धा। १। ओर नाना प्रकारके पाठसों होय। सो चित्रा। २। ऐसें दोय भेद चारुश्रवणिकाके जांनिये। ५।

जहां डंका वा अंगुरीकी किनारसों विना लगाये॥ पुडासों बजाय मधुर धुनि काढिये। सो अलग्न जांनिये। ६।

जहां समपाणि हस्तक। १। कर्तरीहस्तक। २। दोनु मिलाय बजाई। सो परिस्रवणिका जांनिये। ७।

जहां दोनु हातनसों एक संग पुडाकों ताडन कीजिये। सो समप्रहार जांनिये। ८।

जहां डंकाके ताडनसों पाठाक्षर वरतिये। सो कुडुपवारणा जांनिये। ९।

जहां हातसों पाठाक्षर वरतिये। सो करवारणा जांनिये। १०।

जहां दोनु हातनसों बजावें। तहां दाहिनें हातसों कोमल बजावे बांये हातसों तीक्षन बजावे। सो दंडहस्त जांनिये। ११।

जहां एक हातसों वा दोऊ हातसों गहरि धुनिसों निरंतर पाठाक्षर विना विश्राम बजाइये। सो घनरव जांनिये॥ १२॥ इति बारह पाठ विन्यास नाम–लछन संपूर्णम्॥

अथ तेरह बजायवेमें गमककी रचनाहे तिनके नाम–लछन लिख्यते॥

जहां बजायवेमें कांधो पहुचामेंकी अंगुरी इनकों कंपकरि लहरि उप-जावे। सो वली जांनिये। १।

जहां पहले जो पाठ कहे तिनकों। आधा वा एक मिलायते जो पाठ बजाइये। सो वलि पाठ जांनिये। २।

जहां वोल्लावणीको प्रथम खड में कारजुत। तालनी वर्द्ध रीतिसों बजावें। सो धत्ता जांनिये। ३।

जहां अनेक बाजनके पाठाछर मिलाव। सबके जोगसों जो पाठाछर होय। सो भेद जांनिये। ४।

जहां आदि। १। मध्य। २। अंत्यमें। ३। अनेक बाजनको पाठ क्रमसों मिलाइये। सो झडप्पर्णा जांनिये। ५।

जहां पाठके अछिर बार बार जांनिपरे। सो अनुस्रवणिका जांनिये। ६।

जहां दोय वा च्यार वा आठ वा सोलह खंड रचि पाठ वरतिये॥ सो हस्त हैं वांके च्यार भेद हैं॥ जहां चंचतपुट आदि ताल वरतिये। सो चतुरस्र हैं। १। जहां चंचतपुट ताल वरतिये॥ सो त्र्यस्त्र है। २। जहां मिले ताल वरतिये। सो मिश्र हैं। ३। जहां खंड ताल वरतिये। सो खण्ड है ऐसें च्यार भेदको होय। सो हस्त जांनिये। ७।

जहां आधो वा चोथाई वा आठमों भाग कहि। २। संपूर्ण पाठ वरतिये॥ अखंड तालमें। सो जोडणी जांनिये। ८।

जहां तिन खंड रचिये॥ सो प्रथम खंड एक गुनो। १। दुसरो खंड दुगुनों। २। तिसरो खंड तीगुनों। ३। ऐसें करि तीन खंडमें वरतिये। सो त्रिगुणा हैं। सो तीन प्रकारकी है॥ जहां तीनों खंड रचि पहले दोय खंड फेर रचिये सो प्रसाद्य जांनिये। १। जहां तीन खंड रचि। प्रथम खंड रचिये। सो दूसरो भेद जांनिये। २। जहां तीन खंड रचि। मध्यम खंड रचिये। सो तीसरो भेद है। ३। जहां तीनो खंड रचि। दूसरो खंड दोय वार रचिये। सो चोथो भेद हैं। ४। जहां पिछले खंड दोय वेर रचिये। फेर दूसरो खंड रचिये। सो पांचवों भेद हैं। ५। जहां तीनो खंड रचि फेर पहले दोय खंड रचि। अरु दूसरो खंड रचिये। सो छटो भेद हैं। ६। जहां पहले दोय खंड रचिके। तीसरो खंड दोय वेर बजाइये। फेर दूसरे खंड रचिये। सो सातवों भेद। ७।

जहां तीनो खंड रचि। फेर तीसरों खंड दोय वेर रचि ॥ दूसरो खंड रचिये। सो आठमों भेद हें। ८। ऐसें तीन प्रकार त्रिगुणा आठ प्रकारके है। ९।

जहां हस्तपाठ मिलायकें। हातनके सब्दसों वरतिये। सो पंच-हस्त जांनिये। १०।

जहां अर्द्ध पाणि आदिके पाणिहस्तकी रितिसों पाठाछर होय। सो पंचपाणि जांनिये। ११।

जहां कर्तरी हस्तककी तरह पाठाछरकों थोरो थोरो अंस मिलाइये। सो पंचकर्तरी जांनिये। १२।

जहां चंद्रमाकिसि तरह। मात्रा घटि वधि होये। सो चंद्रकला ताल जांनिये। १३।

ये तेरह वाद्य रचना हुडक्कामें होत हें। ओर हूं अपनी बुद्धिसो रचिये ॥ इति तेरह वाद्य संपूर्णम् ॥

अथ वाद्यके प्रकार बजायवेमें प्रबंध तियालीस हें तिनको नाम—लछन लिख्यते ॥ सब प्रबंधनमें दंकार आदि वर्ण कीजिये ॥ सो सुंदर अछिर तालसों वरतिये सोअछिर सुनतहि। सुनिवेवारेकों आनंद होय ॥

१ यति गड्दगथों गक्कथोंटें गड्दगथों गक्कथोंटें गड्दगथों गक्कथोंटें। जहां वाद्य खंड अनेक विराम कहिये। सम लगायके बजाये। सो यति जांनिये ॥ १ ॥

२ ओता तकथों रेगड तक्थों रेगडथों रेगड्तक्धिक् थोंगटे। जहां बहुत दंकार होय ॥ हंतालिकी ताडन बहुत होय। ऐसें पाठाछर कीजे। सो ओता जांनिये। कोइक आचारिजके मतसों याको दंकार नहि कीजिये ॥ २ ॥

३ गजर तड्दग्थों गक्कथों हरघटेंथों हटें। जहां आदिमें एक ताली तालसों। पाठाछर वरतिये। फेर ओर तालसों वरतिये। सो गजर जांनिये ॥३॥

४ रिगोणी टेथोंटेगें थोधित्तोङ्गिधहटे॥ तकगंदडरद गडकृधिक गदउदधिक तकगदड-ङ्कथों गतक्धिक् धिक् कुधिटेंगेनथों थोंग थोंगकथों। जहां तीन खंड शुद्ध पाठके होय॥ ओर खंड कूट कहिये। सो संकरिण पाठ जांनिये। उन शुद्ध कूट ताडनकों गजरि धुनिव बजाइये। सो रिगोणी जांनिये ॥४॥

५ कवित्त गडदकु दगिनदं दगिनथोंग धिकों तकाधिंतक देहं। कद गदृद्द- रिक।२। कथरीकु। जहां पहलो खंड छोटो शुध्द पाठनसों रचिये। अथवा सुधे अछरनसों ऐसो एक कीजिये॥ ऐसें खंडके उद्ग्राह।१। ध्रुव।२। को अंतरा कीजिये। जहां उद्ग्राहके अंतमें॥ अथवा आधे उद्ग्राहमें तालकों पूरन कीजिये। सो कवित जांनिये॥ ५॥

६ पद तकिट धिकिट धिधिकिट धिक्किटगांड्गियकतक धिकथों तकिट धिधिकिट धि- किगग धिधिकिट धिक्किगुड्ग गधिधिग किडगुडागधिं गथों। जहां उद्ग्रा- हनिपाठ थोरो होय॥ ओर ध्रुवा घणि बडी नहि होय अथवा पाठाछर सुं कीजिये॥ अंतमें पाठाछर छोडिये सो पद होय। अथवा प्रबंधके बिचमें यति बजायकें पाठाछरसों छोडिये। सो पद जांनिये॥ ६॥

७ मेलापक थोंगटें गड्द्गथोंगटें। जहां एकताली तालके द्रुतमांनमें॥ ओर नृत्यके आरंभमें बरोबर बांयीलि बाजेके बजायवेमें। छोटो बाजा बजायवेको खंड बार बार अभ्यास कीजिये। प्रबंध पूरन करिवेकेलिये। सो मेला- पक जांनिये॥ ७॥

८ उपशम टेंथोंकगे थोंटटे थोंहटग थायें थोंटे। जहां एक खंड सुध्दादिकपाठ- नसों। वा शुध्द। अछिरनसों लघु प्रमान कोमल धुनिसों। कोमल अछिरनसों नृत्यमें वरतिये। सो उपशम जांनिये॥ ८॥

९ उद्ग्राह तेटें है तद्दं तक्ततटे। जहां वाद्य प्रबंधको प्रथम खंड हकाको शुध्द पाठाछरनसों रचिये। सो खंड प्रबंध पूरन होय तहांतांई एक वेर तथा दोय वेर वरतिये। सो उद्ग्राह जांनिये॥ ९॥

१० प्रहरण कथोंगक्क थोंगतथोंगटथोंगक थोग थोगथोक् कथोगक् थोंकट थोग- क्थोकट थोंगक्। गड्दकाथिक थोंगक्। टंगं दंथोंड्। दिड्गिनकुकु- थित्थो हथिक्कं धिटें। जहां ध्रुवामें वा अभोगमें कूट कहिये। अनेक पाठनसों उंची धुनिजुत खंड कीजिये। सो खंड एक दोय वेर। अनेक पाठ एक ताली आदि तालसों वरतिये। ओर ठोर तो इछा होय तब कीजिये। अरु नृत्यमें अवश्य कीजिये। सो प्रहरण जांनिये॥ १०॥

११ **वत्सक** गड्दग्दंदंगड्दक्थिकट तकधिकट तक्धिक्कक्। खडि खडि खखनख खिदक् झंखखनख खिदक्कदक धिक्कक कगिणनग थोंगदिहिकिं थोंग-दिहिकि तक धिकथोंगटे गडक् तकधिक थोंगटें। झक झखिखिन्नखनख-खित न्हें खखनखझें खन खरिब तुडि हिदिहि। कथोंगक्। तकधिक तक्करे घटथथोंगक्क थोंगक्टं। जहां उदग्राहको खंड रचिये आगें शुद्ध पाठसों वा कूटपाठसों वा शुद्ध अछिरनसों खंड रचिये। ये दोनु खंड दोय वेर वरतिकें। फेर पहलो खंड पहले वरति। दूसरो खंडकों आधो पाटअछिर वरतिये। छोटिकें फेर वाद्यकी भरतीसों खंड पूरो कीजिये। सो वत्सक जांनिये ॥ ११ ॥

१२ **च्छण्डग** उद्गुंदं गुंदे दग्नथों हटहटहें याहथों तकथों तकथों धिकथों तक-थिधिथोंथों थैटैथैथों तथोंटे। जहां कूट अछिर अथवा शुद्ध अछिरनसों खंड रचि वरतिये। फेर छोडिये जो वाद्यकी भरतीसों खंडकों पमान साधिये। सो च्छण्डण जांनिये ॥ १२ ॥

१३ **तुडुक** टें दंदगित थोंगटें धिकतः तथतटे हकथोंटे गेधिकतटथों गणनगिथोंगतक धिकथोंगटे। तहां उदग्राह ध्रुवा आभोगमें छोटो खंड पाठाछरकों वरतिये ॥ अथवा ध्रुवका आभोग वरतिके। फेर उदग्राह वरतिये। सो तुडुक जांनिये ॥ १३ ॥

१४ **मलप** गड्दक् तच्छित्थों हथोंहरे थैटें गणनगतक धिकक थों हटें हैं थोदगक्। तक्क तहधिक थोकथोहक थो३ हहे डिं खिखरखिखिखेरथैटें हैं थो-हगक्। दिहं कटरहं कटगड्द गथरिकटं २ थरिकटतक३ ततक धिधिक थो३थोंदटें। जहां उदग्राह एक वेर वा दोय वेर वरतिये। ओर ध्रुवका एक ठोर बार बार वरतिये। जहां व्यापक पाठाछर होय। थैटें। इन अछ-रनसों खंड बनाय वरतिये। यति निरंतर होय। सो मलप जांनिये ॥ १४ ॥

१५ **मलपांग** जहां मलप वरतिकें। ओर मलपको एक खंड थोंटें। अक्षरकों वर-तिये। सो मलपांग जांनिये ॥ १५ ॥

१६ **मलपपाट** जहां विषम खंड कहते पाटि बांधि खंडरचि मिलपकीसोनांई वरतिये। सो मलपपाट जांन्यिये ॥ १६ ॥

१७ छेद जहां सितार्वासितायी हतेलीसों रूप रीतिसों रहि रहिके वाद्य बजाईये। ताल तूटें नहि। सो छेद जांनिये ॥ १७ ॥

१८ रूपक जहां दोय वार वा एक वेर उद्‌ग्राहके पाठाछर मिलाय उच्चार कीजिये। बीचमें लय छोडि। फेर पाठाक्षर जोडीये। द्रुतजामें। कीजिय। सो रूपक जांनिये ॥ १८ ॥

१९ अंतर जहां बाजेमें तालसहित गीतकों क्रम कीजिये। सो अंतर जांनिये ॥१९॥

२० अंतरपाट जहां निबद्ध कहिये ताल छंदजुत गीत बजाये। फेर वांके पाठाक्षर बजाइये। सो अंतरपाट जांनिये ॥ २० ॥

२१ खोज जहां हातकी चलाकीसों कोमल गहरि धुनिसों पाठाक्षर वरतिये। सो खोग जांनिये ॥ २१ ॥

२२ खंडयति जहां पाठाक्षरकों खंड रचि यतीकी रीनाई वेरवेर वरतिये। जहां तांइ प्रबंध संपूर्ण होय। सो खंडयति जांनिये ॥ २२ ॥

२३ अवयति जहां तालके अंतमें विश्राम है। टें टें। ऐसें अक्षरनसों होय। ऐसो जो पाठाक्षरको खंड। यतिकी रितसों वेरवेर वरतिये। सो अवयति जांनिये ॥ २३ ॥

२४ खंडपाट जहां बाजेमें पाठाक्षरके समुहके अक्षर खंड न्यारे न्यारे करि वरतिये। सो खंडपाट जांनिये ॥ २४ ॥

२५ खंडछेद जहां पाठाक्षरके खंड छोटे छोटे खंड करिकें प्रबंधनमें वरतिये। अब दूसरो खंड कहे है। सो खंडछेद जांनिये ॥ २५॥

२६ खंडभेद जहां पाठाक्षरके खंडके छोटे छोटे खंड करि जुदे जुदे वरतिये दूसरी वेर मिलाय नही। फेर खंडनको मिलाय करि। एक खंड वरतिये। सो खंडछेदको प्रथम खंड जांनिये। सो खंडभेद जांनिये ॥ २६ ॥

२७ खंडक जहां खंड बजाइवेमें एक खंडके अनेक खंड न्यारे न्यारे करि चतुराई सों वरतिये। सो खंडक जांनिये ॥ २७ ॥

२८ खंडहुल्ल जहां श्रोता गम्य यतिमें पाठाक्षरके खंड वरतिये। सो खंडहुल्ल जांनिये ॥ २८ ॥

२९ सम जहां गीत नृत्यके समान प्रबंधकों पाठाक्षर तालके यति सहित बजाइये। सो सम जांनिये ॥ २९ ॥

३० पाटवाद्य जहां केवल पाठाक्षरहिसो प्रबंधकों निरवाहकरि ताल भरिये। सो पाटवाद्य जांनिये ॥ ३० ॥

३१ ध्रुवक जहां अनेक बाजेनमें वेरवेर बीचे बीचमें बजाइये। अनुरंजनकें वास्ते जो खंड रचिये। सो ध्रुवक जांनिये ॥ ३१ ॥

३२ अंग जहां तत खिट इन पाठाक्षर विनां केवल। देंदें टेंटें झेंझें। इन पाठाक्षर सों ताल पूरन कीजिये। सो अंग जांनिये ॥ ३२ ॥

३३ तालवाद्य जहां झेंझें अक्षरमें चंचतपुट तालसों चोसटि कलाको खंड वरतिये। सो तालवाद्य जांनिये ॥ ३३ ॥

३४ विताल जहां प्रबंधकी आदि। १। मध्य। २। अंत्य। ३। इनमें विताल कहिये। तालकी विकृत। जेसें गुरुके स्थान दोय लघु करि पूरिये अथवा दोय लघु एक गुरुसों पूरिये। सो विताल जांनिये ॥ ३४ ॥

३५ खलक जहां अंगुठा फेलायके सीधी अंगुरीनसों। क्रमतें पताक हस्तकी रीति सों पाठाक्षर वरतिये। सो खलक जांनिये ॥ ३५ ॥

३६ समुदाय जहां सब बाजेनमें। एक संग सब पाठाक्षर बजाइये। सो समुदाय जांनिये ॥ ३६ ॥

३७ जोडनी जहां कहे जे। अनेक पाठाक्षर तिन सबनके एक एकटक लेंनें वो पाठाक्षरको खंड रचि जुदे जुदे उनके तालनसों वरतिये। सो जोडनी जांनिये ॥ ३७ ॥

३८ उडव जहां लयसहित तालमें लय छोडिकें तालमें पाठाक्षर वरति चमत्कार दिखावें सो उडव जांनिये ॥ ३८ ॥

३९ तलपाट जहां मलपपाटकी रितिसों दोय च्यार पाठाक्षर मिलाय प्रबंधके अनुस्वार कीजिये। सो तलपाट जांनिये ॥ ३९ ॥

४० उड्डवणी जहां धेंटें। इन अक्षरनसों वा अपनें पाट अक्षरनसों आदि अंतमें देंकार लगाइये। विलंबित लयमें खंड रचिये। सो उड्डवणी जांनिये ॥ ४० ॥

४१ तुंडक जहां प्रबंध गीतकें आदि। १। मध्य। २। अंत्य। ३। में

बाजेकों एक देस करिये । गहरी धुनि वा तीछनि धुनिसों । हातकी चलाकीसो खंड बजाइये । सो तुंडक जांनिये ॥ ४१ ॥

४२ अंगपाट जहां सुधे सुधे पाठाक्षरनकों खंड बार बार वरतिये । सो अंगपाट जांनिये ॥ ४२ ॥

४३ पैसार जहां अनेक बाजेनमें एक खंडके जुदे जुदे खंड करि वे खंड न्यारे न्यारे बाजेनमें वरतिये । सब बाजेनमे एक तालकों निर्वाह कीजिये । सो पैसार जांनिये ॥ ४३ ॥

ऐसें तियालीस वाद्य प्रबंध जांनिये । इहां रिति दिखायवेमेंकों तियालीस वाद्य प्रबंध कहें है सो वाद्य प्रबंधको भेद तो अपार हें । या रितिसों । ओरहू समझिये । तहां पाठ भेद । १ । वाद्य रचना । २ । वाद्य प्रबंध । ३ । ये पटह बाजे कहे हें । ते मृदंगादिक सब अन्य बाजेनमें जानि लीजिये ॥ इति तियालीस वाद्य प्रबंध नाम लछन संपूर्णम् ॥

अथ मृदंगको लछन लिख्यते ॥ जहां सुंदर बिजेसारके काठ अथवा खेरको काठ । अथवा रक्तचंदनको काठ । घणो आछो सुद्ध जवर फाट गांठ सलहीन सुंदर काठ लीजिये । पीछे चतुर कारेगर होय । तापास मृदंग बनाइये । मृदंगको मध्य साडेइकईस आंगुल मोटो कीजिये ॥ ओर लंबो बारह मूठि प्रमान कीजिये । यह मृदंगको प्रमान हें ॥ दाहिणे भाग चोदह आंगुलको मोटो कीजिये । बांयो भाग कभि सतरह आंगुलको कीजिये ॥ ओर दोय लोहके अथवा काठके कडा । दोऊ मुखपें चढाईये । दोय कडामें । एक यव अंगुलके अंतरसों बीस बीस छेद राखिये । पीछे दोऊ मुख चांमसों मढिके वह चांम कडासों लपेटि गाढो दृढ कीजिये । फेर कडाके छेदमें चांमकी डोरि डारि दोंन तरफसों खेचिके । चांम दृढ कीजिये । जैसे वामें धुनि उपजे । पीछे तीन चांमके डोरेसों । पहले चांमके डोरानकों । गोमूत्रिकाके आकार ग्रंथिके । ऐसो गाढो कीजिये । जासों दोऊ मुखके चांम ढीले नहीं होय । तहां दाहिनें मृदंगके मुखकों चांम हें । तामें छह अंगुल प्रमान गोलाकार लोह चुरकी स्याई जमाइये । सो धुनि पिछ न होय ॥ ओर बांये मुखके चांम जब बजावनों होय । तब गहूंके चूनकी छह ॥ आंगुलकी पूरिके आकार गोल चूनकों पांनिसों सानिकें लगाइये

तब मेघकीसि गंभीर धुनि होय ॥ ऐसें या मृदंगमें और एक रेसमी वस्त्रकों। अथवा सूतको रंगीन वस्त्र घणों मोलको मिलायको कंठमें नांखि। अरु दाहिनी कांखिमें काढिये। मृदंगमें दूमो लपेटिकें। फंकाके आसेरेसों कमर कसिये। जैसें बजायवे वारो सुखसों आपकी मृदंग आप बजाय ले सो या मृदंगके तीन भेद हें। मृदंग। १। मुरज्ञ। २। मरदल। ३। इन तीनोंनको मृदंग कहत ह। या मृदंगके मध्यमें ॥ ब्रह्माजीको वास हें। बांये मुखमें श्रीविष्णुको वास हें दाहिनें मुखमें श्रीशिवजीको वास हें। मृदंगके काठमें वा तांतिमें वा कडामें तेतीस कोटि देवताको वास हें। यातें याको नाम सर्व मंगल हें। जो कोऊ सदा मंगलीक मृदंगको दरसन करे। मृदंगको निसदिन धुनि अथवा पाठाछर सहित। उच्चार गीत नृत्यादिकमें। सुनें सुनाय ताके खोटे सुपन खोटे सकुन वेरि समूह। राग आदि अरिष्टके सिगरे भये दूरि होइ। जो पुरुष या मृदंगके गुन रचना जानें। तिनको मनोरथ देव सफल करे ॥

अथ या मृदंगके पाठाछर लिख्यते ॥ तहां दाहिणें मुखमें। त। १। धि। २। थो। ३। ठें। ४। ने। ५। हें। ६। दे। ७। ये सात अछर जांनियें। ओर बांये मुखमें। ठ। १। ट। २। ल्हा। ३। द। ४। ध। ५। ला। ६। यह छह अछर जांनिये ॥ ओर पटहके ककारसों आदि लेकें सो-लह पाठाछर जांनिये ॥ इहा। त १। धि। २। थो। ३। डे। ४। न हि दें॥ इन केवल सुद्ध कहे हें ॥ इनमें मात्रासहित वा मात्राहिन ॥ आपसमें मिले अथवा जुदे जुदे व्यापक सोलह अछर ककारादिकनसों मिलाइये पहले अछर सात तब कूटसंजक होत हें। कट। १। खट। २। गट। ३। वट। ४। एसें जांनिये ॥ इन अछरनको जों पंडित होय सो आछे कविताकें। अछितरें एकांतमें वह बनाय सुंदर लयमें तालजुत गावे सो कवितकार वादक जांनिये ॥

अथ प्रसिद्ध पाठाछर लिख्यते ॥ तहां दधिगनथों यह तांनकी समा-प्तमें ॥ लय पूरिवेकों यह अछर आगेंको दीजिये ॥

अथ अकारादि स्वरनके उदाहरण लिख्यते ॥ जग। १। झग। २। टंकु। ३। थढ्ड। ४। णड। ५। तन। ६। थां। ७। दंदां। ८।

धलां । ९ । नग । १० । ननगि । ११ । किट । १२ । किड । १३ । क्रिण । १४ । किट । १५ । गिझि । १६ । ढिंढिकं । १७ । दिगि । १८ । धिगि । १९ । रिट । २० । कुकु । २१ । कुंदरिक । २२ । तुतु । २३ । क । २४ । झे । २५ । थे । २६ । थो । २७ । थों । २८ । थै । २९ । थैय । ३० ।

अथ अकारादि स्वरके प्रति उदाहरण लिख्यते ॥ झक । १ । तक । २ । धिक । ३ । नक । ४ । तुड । ५ । नड़ । ६ । किटदे । ७ । थैंय । ८ । किरंट । ९ । वल । १० । धल । ११ । धींहं । १२ । किट । १३ । किडि । १४ । गिड । १५ । धिमि । १६ । इगु । १७ । ऐसें हि ओरनके पाठाछर जांनिये ॥

जो कोई हस्तकमों मृदंग बजाइये ॥ तहां अंगुठासों चटि आंगुरी वा चटि आंगुरीक पासकी अंगुरी अनागिकासों धुनिकों दाबि रचना रचिये । तब तः ॥ १ ॥ अछर होय । याकी पिठिमें हातकी हतेलि लगाइये । मुखकें बीचमें टडि अंगुरिनसों ताडन कीजिये तब धि ॥ २ ॥ सब्द होय । ओर जहां चटि अंगुरिनसों चांमसों स्पर्श करि । अंगुठा पासकी दोऊ अंगुरीसों । छटवों ताडन कीजिये । तव । थों ॥ ३ ॥ सब्द होय । या मृदंगके मुखके कीनारेकी ओर नखकें छोटे घाटसों ताडन कीजिये । स्याहि छोडिकें । तव । नः ॥ ४ ॥ सब्द होय ॥ यह च्यार वरन । त ॥ १ ॥ धि थों न ॥ ४ ॥ दुने बजाइये । वा चोगने बजाइये । इहां ज्या वर्गको प्रथम अछर जा रितसों बजाये । ताहि रितसों वर्गको दूसरो अछर बजाइये ॥ जहां कटि जो कनिष्टा पासकी अनामिका दोऊ अंगुरीसों मृदंगके किनारे पताका रितीसों । ताडन कीजिये तब किः ॥१॥ यह सब्द होय । इन दोऊ अंगुरीनसों सिखरकी नांइ बजाइये । तव टः ॥ २ ॥ यह सब्द होय । ओर थकार पहले सब्द कीजिये । तब थकिट ऐसें सब्द होय । अथ इनको प्रस्तार कहे हें ॥ थकिट धिकिट ।२। थोंकिट ।३। नकिट । ४ । तथकिट । ५ । धिधिकिट । ६ । थोंथोंकिट । ७ । नंनाकिट । ८ । तत्ताथकिट किटकिट । ९ । धिधिधिकिट किटकिट । १० । थोंथों थोंथों किटकिट किकिनं नां नं किट किट किट ।११। ततत्ततथकिट किटकिट किट । १२ । थकिट थकिट किडकिट किटकिट ।१३। ऐसें ओर हू जांनिये । जहां हातको गोल करि चटि

अंगुरीसों मृदंगके मुखको चाम छूयकें ताडन कीजिये ॥ तब कूं । १ । यह सब्द होय ॥ जहां हातकी मूठिकों ॥ घसतो ताडन कीजिये । तब र । २ । यह सब्द होय ॥ जहां अंगुरी छीदि छिद्रीसों पताकाकी तरह ताडन कीजिये । तब कर्तरी गमक होय ॥ जहां जहां लयकी अंतमें दोय हातसों । तब थों । ३ । यह सब्द होय ॥ ओर कर्तरीके प्रमान विना सिगरे अछिर अपनी बुद्धिसों उपजाइये ॥ ओर दाहिणे हातके सहारेसों बांये हातसें ताडन कीजिये तब थों । ४ । यह सब्द होय ॥ अवे पाठाछरको उदाहरन कहेहें । कुंदरिकुं । १ । थरिकुकु ।२। कुंदकुकु ।३। कुंदकिट । ४ । अथवा तकिडिगिडि । १ । धिकिड-गिडि । २ । थोंगिडगिडगिड । ३ । तंगीडगिडगिड । ४ । जंगजगथो । ५ । दिगिदिगिदां । ६ । तग तग तग तग । ७ । ऐसें जांनिये ॥ अनेक प्रकारके ग्रंथ अदिक होय तहां भये विस्तार तें नही लिखे हें ॥ अपनि बुद्धिसों उदाहरण लिखे हें तासों सूक्ष्म दृष्टि करिकें समझिये ॥

अथ मृदंग बजायवे वारेको लछन कहे हें ॥ मृदंग बजायवेवारो बुद्धिवान होय । १ । अथवा सरिरमें पराक्रम होय । जाकी मधुर धुनि होय । २ । धीरो होय । ३ । लंबी भुजावारो होय । ४ । जो घणी वेरतांई आसन दृढ राखे । ५ । सास्त्रमें जो जो हस्तक कहे हें । तिनकुं जांनीवेवारो होय । ६ । पाठाछरकों रचायवेवारो होय । ७ । श्रुति ताल अथवा तालके दस प्राणमें महा प्रविण होय येलोग जो गीत गावे तामें अनुकूल होय । मृदंग बजायवेमें महाविचक्षण होय । सत्पुरुसको भक्त होय । ऐसो चाहिजे ॥

जामे ये गुन नही होय ॥ सो मृदंग बजायवेवारो नहि लीजिये ॥ तहां मृदंग बजायवेवारेको च्यार भेद कहे हें ॥ वादिक । १ । मुखरी । २ । प्रतिमुखरी । ३ । गीतानुम । ४ । इन च्यारोंनकों लछन कहे हें । जो बाजेकी चर्चामें अपनु मत पुष्टिकर बुद्धिसों दूसरेको मत खंडम करे सो बजायवे बारो वादी जांनिये । १ । जो चर्चामें वादीके मतकों अनुसार बजायकें । अपने मतके बाजेमें रस दिखावे सो बजायवेवारो मुखरी जांनिये । २ । जो चर्चामें दोऊ वादीके मतकों खंडन करि नई सास्त्रकी रीतिसों गीतआदिककों निर्वाह करे सो प्रतिमुखरी जांनिये । ३ । जो चर्चामें दोऊ वादिके मतसों । ओर आपना

प्रतिष्ठाके लिये । वादीनकों मानभंग करिवेकों अनेक प्रकारसों नये नये वाद्य करि दिखावे गीत नृत्यकों सम छोडि नही ताल सहित होय । सो गीतानुग जांनिये ॥ इति मृदंग बजायवेवारोंके च्यारी भेद लछन संपूर्णम् ॥

अथ मृदंग बजायवेवारेंकी रीतिमें च्यारोंनके लछन अनुक्रमसों लिख्यते ॥ जहां चर्चा होय तहां पहले त्राटनामको बाजमें बजाइये । सो त्राटन कहिये ॥ मृदंगके विना चून लगाये ॥ ताल विनाहि जो अजमायवेकी हडड हडड ऐसें धुनि होय सो त्राटन जांनिये ॥ यासों मृदंगकी सुद्ध । १ । असुद्धता । २ । जांनि परे । जो मृदंग सुद्ध होय तो ॥ चून लगाय बाजेकों वरताव कीजिये । १ । असुद्ध होय तो मृदंगको शुद्ध कीजिये । २ । ऐसें सुद्ध–असुद्धता देखे । हातकों सचावटके लीये ॥ ऐसेंहि मृदंगमें चाट वा झांझ या रीतिसों धुनि दोऊ मुखमें रचिये वासों हातकी सुद्ध–असुद्धता जांनि परे ॥ ऐसें हातकी असुद्धता जांनि ॥ फेर चून लगायकें ॥ दाहिणें मुखके कडासों ठोकिकें स्वर ठिकाणें लायकें बांये मुखमें गद्दगधो ऐसें धुनि बजाइये ॥ ओर गिडदां ऐसें धुनि दाहिणे मुखमें बजाइये ॥ पिछे मध्य लयसों चाहते तालमें दोऊ मुखमें गतिसों धुनि बजाइये ॥ तहां पहले विलंबित लयमें । १ । दूसरो मध्य लयमें । २ । तीसरो द्रुत लयमें । ३ । एक तालहीको वरतिवो । ऐसेंहि तहां विलंबित लयकी समाप्तमें ॥ एक थोंकार लेकें तालको मान पूरन कीजिये । यासों मृदंग बजायवेके हातनके अभ्यासकी परपाटी जांनिये ॥

अव गीत नृत्यमें बाजेके जमायवेको नाम स्थापन हें ताको लछन लिख्यते ॥ जो आलापकी रीतिसों ॥ मंद्र । १ । मध्य । २ । तार । ३ । इन तीनो स्थाननमें शुद्ध होय ॥ कानको प्रियलगे ऐसें दोऊ हातसों बजावेकी जो मधुरी धुनि ॥ सो स्थापन जांनिये । ऐसे स्थापन करि टाकणि वादन करिये ता टाकणि । १ । वादम । २ । के लछन कहे हें ॥ जहां आरंभ समाप्तिके बीचमें । थोंकार बहुत होय ॥ ओर चतुरस्र चंचतपुट ताल । १ । त्र्यस्र चंचतपुट ताल । २ । कहिये याकों मिश्र । षट्पितापुत्र देसी मार्गी ताल । इनमेंसों कोऊ जहां एक तालमें अनुरंजन सहित बजाइये । सो टाकणी । १ । वाद । २ । जांनिये ॥

अब या टाकणि वाद्यके दोऊ भेद हैं एक सरा । १ । दुसरो घोडा । २ । अब इनकों लछन कहे हैं ॥ जहां जो अष्ट कलादि ताल होय ताकि कलानमें कंप करि प्रस्तारकी रीतिसों कलानमें पहली ध्रुवाकों वाद्य खंड कीजिये । एक संग एक वार करे । सो एकसरा टाकणि जांनिये ऐसें एक वार । १ । दोय वेर । २ । तीन वेर । ३ । च्यार वेर । ४ । किये तें । शुद्ध अभ्यास होय तहां कला कंप जुत वाद्य खंडकों । उदाहरण कहे हैं । तद्धितोटें । १ । तत धिधिथों थोंटें टें । २ । ततधि धिधि थोंथों थोंटे टे टें । ३ । ततततधि धि धि धि थो थो थो थो टे टे टे टे । ४ । याको श्रम वहनी कहे हैं ॥ यह कला कंप जुत वाद्य खंड चंचतपुटकों जांनिये ॥

अब एक सर टाकणीको वाद्य खंड कहे हैं ॥ तकधिकट तकधिकट धिकटतक तकधिकट तकतक धिकट तधिकटतक धिकट में आठ वाद्य खंड आठ कलानके जांनिये । ये आठो कला एक वेर एक संग वरतिये । तब एक सरा टाकणी जांनिये ॥ १ ॥ ओर एक संग आठों कला क्रमसों दोय वेर वरतिये । तब जोडा टाकणी जांनिये ॥

अबें वाद्यको लछन कहे हैं ॥ जहां तालकी जितनी कला होय । तितनी कला खंड होय सो वह खंड पहले तो संपूरण वरतिये ॥ फेर एक एक कला दोय दोय वेर वरति पूरण कीजिये सो वाद्य जांनिये ॥ यामें दोय वेर खंड ऐसें बरतिये दंदं टीरीटीरी टिद्दिक डदगडें ॥ थरिक्क थरिटंक णगणथ रिग गणगणथरि । दत्थरि गडगद दत्थरि गडगद । दत्थरि दत्थरि । तगड्द कथरि ॥ तक्कट ततक ॥ इहां चंचतपुट धिकट हें । ताकी सोलह कलासों सोलह कलाकों ॥ एक वाद्य खंड रच्यो ॥ या वाद्य खंडको प्रथम तो एक संगपूरन कीजिये ॥ दूसरी वेर यांकी एक एक कला दोय दोय वेर कहिकें खंड पूरन कीजिये ॥ तब यह वाद्य नामकों बजायवो होय ॥ यह वाद्य एक वेर बजाइये ॥ तो एक सरां वाद्य जांनिये ॥ ऐसें हि याको दोय वेर बजाइये । तब घोडा वादन जांनिये ॥ ये टाकणी वाद जो रचे ॥ ताको वादी बजाइवेवारो जांनिये ॥ इहां त्राटनआदि जे बजायवेके प्रकार कहे ॥ तिनके पाठा छरनमें तकार लीजिये । यातें त्राट आदि वादनमें ॥ दिगिदिगिये वरतीलीजिये जहां जां खंड द्रुतलयमें वरतिये ।